मंगल समाचार

मत्ती मरक लूक योहन रचित

और

प्रेरितों की क्रिया ॥

THE

FOUR GOSPELS AND ACTS

IN THE

HINDU'I LANGUAGE.

—o—

CALCUTTA:—

PRINTED AT THE BIBLE PRESS, FOR THE AUXILIARY
BIBLE SOCIETY.

1842.
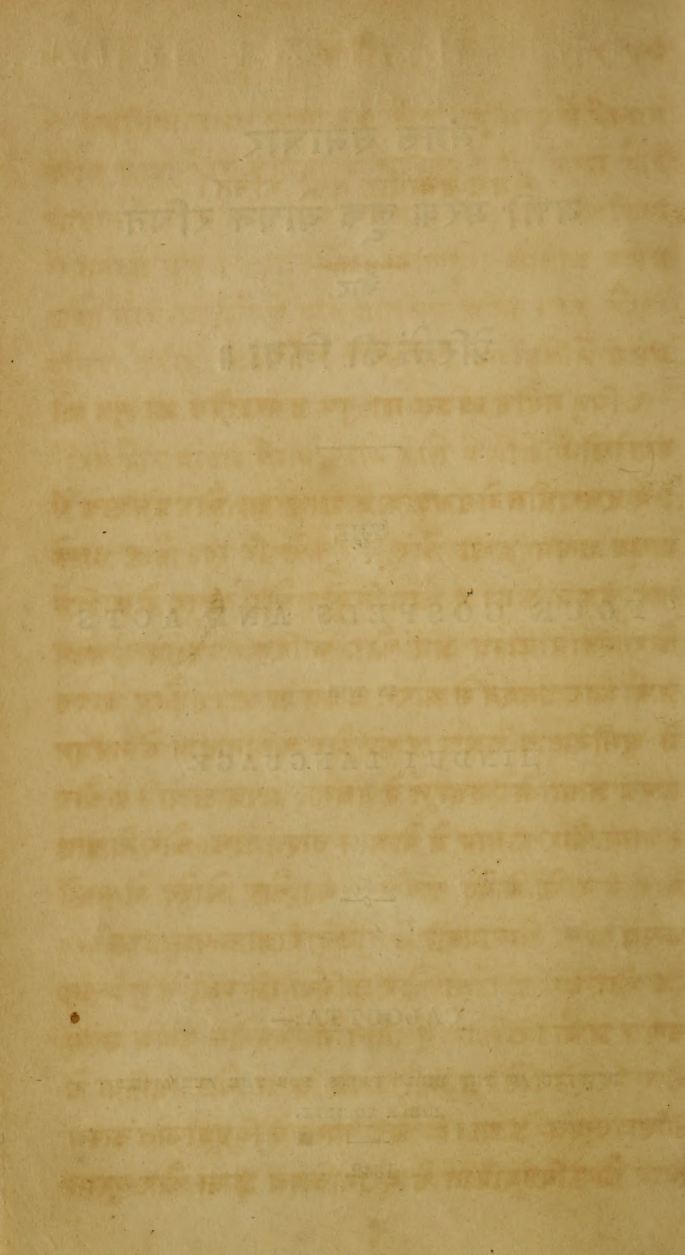
मंगल समाचार मत्तो रचित।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ यिशु मसीह दाऊद का पुत्र इबराहीम का पुत्र की बंशावली।

२ इबराहीम से इसहाक उत्पन्न ऊआ और इसहाक से याकूब उत्पन्न ऊआ और याकूब से यिहूदा और उसके भाई उत्पन्न ऊए। ३ और यिहूदा और तामर से फारिस और सराह उत्पन्न ऊए और फारिस से हसरुन उत्पन्न ऊआ और हसरुन से आरम उत्पन्न ऊआ। ४ और आरम से अमीनादाब उत्पन्न ऊआ और अमीनादाब से नहशून उत्पन्न ऊआ और नहशून से सलमन उत्पन्न ऊआ। ५ और सलमन और राहाब से बोआस उत्पन्न ऊआ और बोआस और रूत से ओबेद उत्पन्न ऊआ और ओबेद से यस्सी उत्पन्न ऊआ और यस्सी से दाऊद राजा उत्पन्न ऊआ। ६ और दाऊद राजा और ऊरिया की पत्नी से सुलेमान उत्पन्न ऊआ। ७ और सुलेमान से रिहबोम उत्पन्न ऊआ और रिहबोम से आबिया उत्पन्न ऊआ और अबिया से आसा उत्पन्न ऊआ। ८ और आसा से यिहूशाफात उत्पन्न ऊआ और यिहूशाफात से यूराम उत्पन्न ऊआ और यूराम

से ऊसनिया उत्पन्न ऊआ। ९ और ऊसनिया से योताम उत्पन्न ऊआ और योताम से आहास उत्पन्न ऊआ और आहास से हिसकिया उत्पन्न ऊआ। १० और हिसकिया से मनस्सा उत्पन्न ऊआ और मनस्सा से आमीन उत्पन्न ऊआ और आमीन से यूसिया उत्पन्न ऊआ। ११ और यूसिया से यीकानिया और उसके भाइ उन दिनों में उत्पन्न ऊए जब कि वे बाबल को पऊंचाये गये।

१२ और बाबल को पऊंचाये जाने के पीछे यीकानिया से शलतियेल उत्पन्न ऊआ और शलतियेल से सरबाबल उत्पन्न ऊआ। १३ और सरबाबल से अबियूद उत्पन्न ऊआ और अबियूद से इलियाकिम उत्पन्न ऊआ और इलियाकिम से आसोर उत्पन्न ऊआ। १४ और आसोर से सादुक उत्पन्न ऊआ और सादुक से आकिम उत्पन्न ऊआ और आकिम से इलियूद उत्पन्न ऊआ। १५ और इलियूद से इलियासर उत्पन्न ऊआ और इलियासर से मतान उत्पन्न ऊआ और मतान से याकूब उत्पन्न ऊआ। १६ और याकूब से यूसफ उत्पन्न ऊआ जो मरियम का पति था जिसके गर्भ से यिशु उत्पन्न ऊआ जो मसीह कहावता है। १७ सो सब पीढ़ी इबराहीम से दाऊद लों चौदह और दाऊद से बाबल को पऊंचाये जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबल को पऊंचाये जाने से मसीह लों चौदह पीढ़ी।

१८ अब यिशु मसीह का जन्म यों ऊआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसफ से ऊई, उनके एकट्ठे होने

से आगे वुह धर्मात्मा से गर्भिणी पाई गई। १९ तब उसके पति यूसफ ने धर्मी होके नचाहा कि उसे प्रगट में कलंकिनी करे उसे चुपके से छोड़ने का मन किया। २० परंतु इन बातों की चिंता करते ऐसा ऊआ कि ईश्वर के दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन देके कहा, कि हे दाऊद के पुत्र यूसफ अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से मत डर; क्योंकि जो उसकी कोख में है सो धर्मात्मा से है। २१ और वुह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यिशु रखना, क्योंकि वुह अपने लोगों को उनके पापों से बचावेगा। २२ अब यह सब ऊआ जिसतें ईश्वर का बचन, जो भविष्यद्वक्ता के द्वारासे कहा गया था, संपूर्ण होवे। २३ कि देखो एक कुआंरी गर्भिणी होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम अम्मानुईल रक्खेंगे जिसका अर्थ यह है कि ईश्वर हमारे संग। २४ तब यूसफ ने नींद से उठ के, जैसा कि ईश्वर के दूत ने उसे कहा था, तैसा किया और अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। २५ और जबलों वुह अपना पहिलौंठा पुत्र न जनी उस्से अज्ञान रहा और उसका नाम यिशु रक्खा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ अब हिरोद राजा के समय में जब यिशु का जन्म यिहूदियः के बेतलहम में ऊआ कि कई एक ज्ञानियों ने पूर्ब्ब से यिरूशालम में आके कहा। २ कि यिऊदियों का राजा, जो उत्पन्न ऊआ सो कहां है? क्योंकि पूर्ब्ब मे हम ने उसके तारे को देखा है और उसे पुजने को आये

हैं। ३ हिरोद राजा यह सुनके वुह और सारे यिरुशालम उसके संग व्याकुल ऊए। ४ और जब उसने लोगों के सब प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे किया उसने उनसे पूछा कि मसीह को कहां उत्पन्न होना है?। ५ तब उन्हों ने उसे कहा कि यिहूदियः के बेतलहम में क्योंकि भविष्यद्वक्ता ने ऐसा लिखा है। ६ कि हे यिहूदा देश के बेतलहम यिहूदा के प्रधानो में तू छोटा नहीं; क्योंकि तुझसे एक प्रधान निकलेगा जो मेरे इसराईल लोगों को चरावेगा। ७ तब हिरोद ने ज्ञानियों को चुपके से बुलाके यत्न से उन्हें पूछा कि तारा किस समय दिखाई दिया। ८ और उसने यह कहि के उन्हें बेतलहम में भेजा कि जाओ और यत्न से बालक को ढूंढ़ो और पाके मुझे संदेश देओ जिसतें मैं भी आके उसे प्रणाम करें। ९ राजा की सुनके वे चलेगये और वहीं वुह तारा जिसे उन्हों ने पूर्ब्ब में देखा था उनके आगे आगे गया और जहां वुह बालक था तहां ऊपर आ ठहरा। १० और वे उस तारे को देखके अत्यन्त आनंदित ऊए। ११ और घर में आके उन्हों ने उस बालक को उसकी माता मरियम के संग देखा और दंडवत करके उसकी पूजा किई और उन्हों ने अपने भंडार को खोलके उसे सोना और लोबान और गंधरस चढ़ाये। १२ और जिसतें वे हिरोद के पास फिर न जायें ईश्वर से स्वप्न में चिताये जाके, दूसरे मार्ग से अपने देशको चलेगये।

१३ और उनके जानेके पीछे ईश्वर का दूत स्वप्न में यू

सफ को दर्शन देके बोला कि उठ और बालक को और उसकी माता को लेके मिसरको भाग जा और जबलों मैं तुझे संदेश न देओं तबलों वहीं रह क्योंकि हिरोद इस बालक को नाश करने के लिये ढूंढ़ेगा। १४ तब वुह उठके बालक को और उसकी माता को लेके रातेरात मिसर को चलागया। १५ और हिरोद के मरने लों वहीं रहा जिसतें भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा हुआ ईश्वर का बचन पूरा होवे: कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर से बुलाया

१६ जब हिरोद ने देखा कि ज्ञानियोंने मुझसे ठट्ठा किया तो अति कोपित हुआ और उस समय के समान जैसा कि उसने उन ज्ञानियों से यत्न से पूछा था उसने लोगों को भेजके बेतलहम के, और उसके सारे सिवाने के, सारे बालकों को, दो बरस के और उससे छोटें लों, मारडाला। १७ तब यिरमिया भविष्यद्वक्ता का कहा हुआ यहबचन पूरा हुआ। १८ कि रामा में एक शब्द सुनागया कि हाहाकार और रोना पीटना और अति बिलाप राहील अपने पुत्रों के लिये बिलाप करती थी और शांत न होती थी क्योंकि वे नहीं हैं।

१९ परंतु हिरोद के मरने पर ईश्वर के दूत ने मिसर में यूसफ कोस्वप्न में दर्शन देके कहा। २० कि उठ और बालक को और इसकी माता को लेके इसराईल के देश को जाक्योंकि बालक के प्राण के गांहक मरगये। २१ तब वुह उठके बालक को और उसकी माता को लेके

इसराईल के देश में आया। २२ परंतु जब उसने सुना कि अरकिलाय ऊस अपने पिता हिरोद की संती यिहूदियः में राज्य करता है तो उधर जाने से डरा तिसपरभी स्वप्न में ईश्वर से चिताया जाके गालील की ओार चला-गया। २३ ओार आके नासिरीत नाम एक नगर में बास किया जिसतें भविष्यद्वक्तों की कही ऊई बात कि वुह नासरी कहावेगा पूरी होवे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ उन्हीं दिनों में यिहूदियः के बन में योहन स्नान-कारक आके प्रचार के कहने लगा। २ कि पछताओ ईसलिये कि स्वर्ग का राज्य समीप है। ३ क्योंकि यह वुह है जिस के विषय में यिशायाः भविष्यद्वक्ता ने कहा है कि किसी का शब्द बन में पुकारता है कि ईश्वर के मार्ग को सुधारो ओार उसके पथों को सीधा करो। ४ ओार उसी योहन का पहिरावा ऊंट के रोम का था ओार चमड़े का पटुका अपनी कटि में लपेटे था ओार उसका भोजन टिड्डी ओार बन मधु थीं।

५ तब यिरुशालम ओार सारे यिहूदीयः ओार यर्दन के आस पास के सारे देश उस पास निकल आये। ६ ओार अपने अपने पापों को मान मान के यर्दन में उससे स्नान पाते थे। ७ परंतु जब उसने बऊत से फिरूसी ओार सादूकियों को अपने स्नान के लिये आते देखा तो उसने उन्हें कहा कि हे सांपों के बंशों अवैया कोप से

भागने को तुम्हे किसने चिताया है। ८ इस लिये पछताव के योग्य का फल लाओ। ९ और अपने अपने मन में मत समझो कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम्हें कहताहों कि ईश्वर सामर्थी है कि इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये बालक उत्पन्न करे। १० और अभी कुल्हाड़ी पेड़ों के जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता काटा जाता और आग में झोंका जाता है। ११ निश्चय मैं तुम्हे पछताने के लिये जल से स्नान देताहों परंतु जो मेरे पीछे आता है सो मुझसे अधिक सामर्थी है जिसका जूता उठाने को मैं योग्य नहीं हों वुह तुम्हे धर्मात्मा से और आग से स्नान देगा। १२ उसके हाथ में एक सूप है और वुह अपने खलिहान को अच्छी रीती से झाड़ेगा और गोहूं को अपने खत्त में एकट्ठे करेगा परंतु भूसी को अबुझहा आगसे जलावेगा।

१३ तब यिशु गालील से यर्दन को योहन के पास आया कि उस्से स्नान किया जाय। १४ परंतु योहन ने यह कहिके उसे बर्जा कि मुझे आपसे स्नान किये जाने को आवश्यक है और आप मुझ पास आते हैं। १५ तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि अब होने दे क्योंकि हमें यों सकल धर्म पूरा करने को चाहिये तब उसने उसे न रोका। १६ और स्नान किया जाके यिशु ज्योंहि पानी से ऊपर आया त्योंहीं उस पर स्वर्ग खुल गये और उसने ईश्वर के आत्मा को कपोत के रूपमें उतरते और अपने ऊपर ठहरते

देखा। १७ और तत्काल आकाश बानी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं अति प्रसन्न हों।

४ चैाथा पर्व्व।

१ तब आत्मा से ईसा बनमें पहुंचाया गया जिसतें शैतान से परखा जाय। २ और चालीस रात दिन के उपवास के पीछे वुह भूखा हुआ। ३ तब परीक्षक ने उस पास आके कहा कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो आज्ञा कर कि ये पत्थर रोटी बन जायें। ४ परंतु उसने उत्तर देके कहा कि यह लिखा है कि केवल रोटी से नहीं परंतु हरएक वचन से जो ईश्वर के मुंह से निकलता है मनुष्य जीता रहेगा। ५ तब शैतान उसे पवित्र नगर में लेगया और मंदिर के एक कलश पर बैठाया। ६ और उसे कहा कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो नीचे गिर पड़ क्योंकि लिखा है कि वुह तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा और वे हाथों में तुझे उठा लेंगे जिसतें तेरा पांव पत्थर पर लगने न पावे। ७ यिशु ने उसे कहा कि यह भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर। ८ फेर शैतान उसे एक अति ऊंचेपहाड़ पर लेगया और उसे जगत का सारा राज्य और उनका विभव दिखाया। ९ और उसे कहा कि यदि तू नीचे झुकके मुझे प्रनाम करे तो यह सब मैं तुझे देऊंगा। १० तब ईसा ने उसे कहा कि अरे शैतान यहां से दूर हो क्योंकि यह लिखा है कि परमेश्वर अपने ईश्वर की पूजा कर और

केवल उसी की सेवा कर। ११ तब शैतान ने उसे छोड़ा और वहीं दूतों ने आके उसकी सेवा किई।

१२ जब यिशु ने सुना कि योहन बंधन में डाला गया तो वुह गालील को चलागया। १३ और नासरीत को छोड़ के कफरनाहूम में, जो समुद्र के तीर पर, जाबुलीन और नफताली के सिवाने में है, आके रहा। १४ जिसतें यिसाया भविष्यद्वक्ता का कहा हुआ बचन पूरा होवे। १५ कि जाबल और नफताली की भूमि समुद्र के मार्ग में यर्दन के पार अन्यदेश के गालील में। १६ जो लोग अंधियारे में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु की छाया और देश में बैठे थे उन पर उजियाला उदय हुआ। १७ उस समय से यिशु ने प्रचारना और यह कहना आरंभ किया कि पछताओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य समीप है।

१८ और यिशु गालील के समुद्र के तीर फिरते फिरते दो भाईयों को, अर्थात शिमन को जो पीथर कहावता है और उसके भाई अंद्रिया को, समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुए थे। १९ और उसने उन्हें कहा कि मेरे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें मनुष्यों का मछुआ बनाओंगा। २० तब वे तुरंत जालों को छोड़के उसके पीछे चलेगये। २१ और वहां से आगे बढ़के उसने और दो भाई यों को, अर्थात सबदी के बेटे याकूब को और उसके भाई यूहन्ना को, अपने पिता सबदी के संग नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा और उसने उन्हे बुलाया।

२२ तबवे तुरंत नाव को और अपने पिता को छोड़ के उसके पीछे होलिये।

२३ और यिशु सारे गालील में फिरता और उनकी मंडली में प्रचारता राज्य का मंगलसमाचार सुनावता और लोगों के सकल रोग और दुर्बलता चंगा करता गया। २४ और उसकी कीर्त्ति सुरिया के सर्बत्र फैल गई और उन्हों ने सारे रोगियों को जो भांति भांति के रोग और पीड़ा से, और पिसाचग्रस्तों को और मिरगिहों को और अर्धांगियों को उस पास लाये और उसने उन्हों चंगा किया। २५ और बड़ी बड़ी मंडली गालील से और दस नगरों से और यिरोशलीम से और यिहूदियः से और यर्दन पार से उसके पीछे पीछे चलीगईं।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ और मंडलियों को देखके वुह एक पहाड़ पर चढ़गया और जब बैठा उसके शिष्य उस पास आये। २ तब वुह मुंह खोलके उन्हें उपदेश करने लगा। ३ कि धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ शोकित लोग धन्य हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे। ५ कोमल धन्य हैं क्योंकि वे पृथिवी के अधिकारी होंगे। ६ धर्म के भूके पियासे लोग धन्य हैं क्योंकि वे तृप्त होंगे। ७ दयावंत धन्य हैं क्योंकि वे दया पावेंगे। ८ जिनका मन पवित्र हैं सो क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। ९ मिलापी धन्य हैं क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र कहावेंगे। १० धन्य वे जो धर्म

के लिये सताए जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ जब मनूष्य मेरे लिये तुम्हारी निंदा करें और तुम्हें सतावें और तुम्हारे विरोध में हर प्रकार की बुरी बात झूठाई से कहें तो धन्य हो। १२ आनंदित और अति आह्लादित होओ क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल है इस लिये कि उन्होंने तुम से आगे भविष्यद्वक्तां को इसी रीती से सताया था।

१३ तुम पृथिवी के लोन हो पर यदि लोन का स्वाद जाता रहे तो वुह किस्से स्वादित किया जायगा? वुह फिर किसी काम का नहीं केवल फेंकेजाने के और मनुष्य के पांव तले लताड़े जाने के। १४ तुम जगत के उंजियाले हो जो नगर पहाड़ पर बना है सो छिप नहीं सक्ता। १५ दीपक को बारके मनुष्य नांद तले नहीं रखते परंतु दीअट पर और वुह सारे घराने को उंजिआला करता है। १६ तुम्हारा उजिआला मनुष्यों के आगे ऐसाही चमके जिसतें वे तुम्हारे सुकर्म्मों को देख के तुम्हारे स्वर्गीय पिता की, महीमा करें।

१७ यह मत समझो कि मैं व्यवस्था को अथवा भविष्यवाणी को उठादेने आया हों मैं उठादेने को नहीं परंतु पूरा करने को आया हों। १८ क्योंकि मैं तुम्हे सच कहताहों कि जब लों स्वर्ग और पृथिवी बिलाय न जाय तब लों व्यवस्था में से एक बिंदु अथवा एक बिसर्ग बिलाय न जायगा जब लों सब पूरा न होवे। १९ इस लिये जो

कोई इन आज्ञा में से सब से छोटी को न माने और मनुष्योंको ऐसाही सिखावे सो स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा गिना जायगा परंतु जो कोई उन्हें माने और सिखावे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा। २० क्योंकि मैं तुम्हें कहताहों कि यदि तुम्हारा धर्म्म फरीसियों और अध्यापकों के धर्म्म से अधिक नहो तो तुम किसी रीति से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे।

२१ तुम ने सुना है कि प्राचीनों को कहागया था कि हत्या मत कर और जो कोई हत्या करेगा सो न्याय में दंड के योग्य होगा। २२ परंतु मैं उन्हें कहताहों कि जो कोई अपने भाई पर अकारण क्रोध करे सो न्याय में दंड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई को तुच्छ कहे सो सभा के दंड के योग्य होगा परंतु जो कोई कहे कि तू खल है सो नरक की आग के योग्य होगा। २३ इस कारण यदि तू अपनी भेंट को बेदी पर लावे और तुझे वहां चेत होवे कि मेरे भाई का कुछ बैर मुझ पर है। २४ तो वहां बेदी के आगे अपनी भेंट छोड़के चला जा पहिले अपने भाई से मिलाप कर तब आके अपनी भेंट चढ़ा। २५ जब लों तू अपने बैरी के संग मार्ग में है तुरंत उस्से मिलाप कर नहो कि बैरी तुझ न्यायी को सौंप देवे और न्यायी तुझे दंडकारी को सौंपे और तू बंधन में डाला जाय। २६ मैं तुझे सत्य कहताहों कि जबलों दुकरा दुकरा भर न दे तू किसी रीति से वहां से न छूटेगा।

२७ तुम ने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था कि परस्त्री गमन मत कर। २८ पर मैं तुम्हें कहता हों कि जो कोई कुइच्छा से स्त्री को ताके वुह अपने मन में उस्से व्यभिचार करचुका। २९ और यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल के अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अगों में से एक का नाश होना उस्से भलाहै कि तेरा सारा देह नरक में डाला जाय। ३० हां यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर दिलावे तो उसे काट डाल और अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अगों में से एक का नाश होना तेरे लिये उस्से भला है कि तेरा सारा देह नरक में डाला जाय।

३१ यह कहागयाहै कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे सो उसे त्याग पत्र देवे। ३२ परंतु मैं तुम्हें कहता-हों कि जो कोई परगमन बिना अपनी पत्नी को त्यागे सो उसे व्यभिचार करावताहै और जो कोई उस त्यागीगई को ब्याह करे सो व्यभिचार करता है।

३३ यह भी तुम सुनचुके हो कि प्राचीनों से कहागया था कि झूटी किरिया मत खा परंतु परमेश्वर के लिये अपनी किरियों को पूरा कर। ३४ पर मैं तुम्हें कहताहों कि किसी रीति से किरिया मत खाओ न तो स्वर्ग की क्योंकि वुह ईश्वर का सिंहासन है। ३५ न तो पृथिवी की क्योंकि वुह उसके चरण की पीढ़ी है न तो यिरोश-लीम की क्योंकि वुह महाराज का नगर है। ३६ और

अपने सिर की किरिया मत खा क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला नहीं कर सक्ता। ३७ परंतु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे क्योंकि जो इन से अधिक है सो बुराई से होती है।

३८ तुम सुन चुके हो कि कहागयाहै कि आंख की ३९ संती आंख और दांत की संती दांत पर मैं तुम्हें कहताहों कि बुराई का सामना मत कर परंतु यदि कोई तेरे दहिने गाल पर थपेड़ा मारे दूसरा भी उसे फेर दे। ४० और यदि कोई न्याय में तुजसे बिवाद करके तुम्हारी चादर लिया चाहे तो अंगाभी उसे दे डाल। ४१ और यदि कोई तुझे आध कोस परबस लेजाय तो उसके संग कोस भर चला जा। ४२ जो तुझसे मांगे उसे दे और जो तुझसे उधार मांगे उससे मुंह मत मोड़।

४३ तुम सुनचुके हो कि कहागया था कि अपने परोसी को प्यार कर और अपने बैरी से बैर। ४४ परंतु मैं तुम्हें कहताहों कि अपने बैरी को प्यार करो जो तुम्हें धिक्कारें उन्हें आशीष देओ जो तुमसे बैर करे उनसे भलाई करो और जो तुम्हें सतावें और दुःख देवें उनके लिये प्रार्थना करो। ४५ जिसतें तुम अपने स्वर्गीय पिता- के संतान होओ क्योंकि वुह अपने सूर्य्य को भलों और बुरों पर उदय करताहै और धर्म्मी और अधर्म्मी पर मेंह बरसाताहै। ४६ क्योंकि यदि तुम केवल अपने प्रेमियों से प्रेम करो तो तुम्हारा क्या फल है?। क्या पटवारी भी

ऐसा नहीं करते?। ४७ और यदि तुम केवल अपने भाई-यों को नमस्कार करो तो तुम ने अधिक क्या किया? क्या पठवारी भी ऐसा नहीं करते?। ४८ ईस लिये ऐसा सिद्ध बनो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ चैाकस होओ कि मनुष्यों को दिखाने के लिये अपना दान मत देओ नहीं तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता से तुम्हारा कुच्छ प्रतिफल नहीं। २ ईस लिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजा जैसे कि कपठि मंडलियों में और मार्गों में मनुष्यों से स्तुति पाने के लिये करते हैं मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि उन्होंने अपना प्रतिफल पाया है। ३ परंतु जब तू दान करे तव तेरा बांयां हाथ न जाने जो तेरा दहिना हाथ करता है। ४ जिस्तें तेरे दान गुप्त में होवें और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है अपही तुझे प्रगट में प्रतिफल देगा।

५ और जब तू प्रार्थना करे कपटियों के समान मत हो क्योंकि वे मनुष्यों के दिखाने के लिये मंडलियों में और मार्गों के कैानों में खड़े होके प्रार्थना करने को प्रीति रखते हैं मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि उन्होंने अपना प्रतिफल पाया है। ६ परंतु जव तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार को मूंदके अपने पिता की, जो गुप्त है, प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है सो तुझे प्रगट में प्रतिफल देगा। ७ परंतु जब तुम प्रार्थना करो तो

अन्यदेशियों की नाईं व्यर्थ बक बक मत करो क्योंकि वे समझतेहैं कि अधिक बोलने से हमारी सुनी जायगी। ८ इस लिये तुम उनके समान मत होओ क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से आगे जानताहै कि तुम्हें क्या क्या आवश्यक है। ९ इस कारण इसी रीति से प्रार्थना करो कि हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र कियाजाय। १० तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में तैसी पृथिवी में होवे। ११ हमारे प्रति दिन की रोटी आज हमें दे। १२ और हमारे अपराधों को ऐसा क्षमा कर जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं। १३ और हमें परीक्षा में न डाल परंतु दुष्ट से छुड़ा क्योंकि राज्य और पराक्रम और माहात्म्य सदा तेरे हैं आमिन। १४ क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के अपराधों को क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। १५ परंतु यदि तुम मनुष्यों के अपराधों को क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा न करेगा।

१६ फेर जब तुम ब्रत करो कपटियों के समान उदास रूप मत बनो क्योंकि वे अपने रूप को बिगाड़तेहैं जिसतें वे मनुष्यों को ब्रती दिखाई देवें मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि उन्होंने अपना प्रतिफल पाया है। १७ परंतु जब तू ब्रत करे अपने सिर को चिकना कर और अपने मुंह को धो। १८ जिसतें तू मनुष्यों को ब्रती नें दिखाई देवे परंतु

अपने पिता को जो गुप्त है, और तेरा पिता जो गुप्त में देखताहै प्रगट में तुझे प्रतिफल देगा।

१९ अपने लिये पृथिवी पर धन मत बटोरो जहां कीड़ा और काई बिगाड़तेहैं और जहां चोर सेंध देतेहैं और चुरावतेहैं। २० परंतु अपने लिये स्वर्ग पर धन बटोरो जहां कीड़ा और काई नहीं बिगाड़ते और जहां चोर सेंध नहीं देते न चुरातेहैं। २१ क्योंकि जहां तुम्हारा धनहै तहां तुम्हारा मन भी लगारहेगा। २२ शरीर का दीपक आंखहै इस लिये यदि तेरे आंख निर्मल होवे तो तेरा सारा शरीर उंजियाला होगा। २३ परंतु यदि तेरी आंख रोगी होय तो तेरा सारा शरीर अंधियारा होगा इस लिये यदि उंजियाला जो तुझ में है अंधियारा होजाय तो क्या बड़ा अंधियारा होगा। २४ कोई मनुष्य दो स्वामी की सेवा नहीं करसक्ता क्योंकि वुह एक से बैर रक्खेगा और दूसरे से प्रेम, अथवा वुह एक का पक्ष करेगा और दूसरे की निंदा तुम ईश्वर की और धन की सेवा नहीं कर सक्ते। २५ इसलिये मैं तुम्हें कहताहों कि अपने जीवन के निमित्त चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा हमक्या पीयेंगे न अपने शरीर के लिये कि हम क्या पहिनेंगे क्या जीवन भोजन से और शरीर वस्त्र से अधिक नहीं ?। २६ आकाश के पंछियों को देखो क्योंकि वे न बोते हैं न लवते हैं न बटोरते हैं तिस पर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें

पालताहै क्या तुम उन से अधिक मोल के नहीं हो ?। २७ चिंता करके तुम्में से कौन अपने डील को हाथ भर बढ़ा सक्ताहै ?। २८ और वस्त्र के लिये क्यों चिंता करते हो खेतके सोसन के फुलों को सोचो वे क्योंकर बढ़तेहैं वे परिश्रम नहीं करते न कातते हैं। २९ तिसपर भी मैं तुम्हें कहताहों कि सुलेमान भी अपने सारे बिभव में इन में से एक के समान विभूषित न था। ३० इस लिये यदि ईश्वर खेत की घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंकी जायगी यों पहिनाताहै तो हे अल्प बिश्वासियो क्या तुम्हें अधिक न पहिनावेगा। ३१ इस लिये चिंता से मत कहो कि हम क्या खायेंगे? अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या पहिनेंगे ?। ३२ क्योंकि अन्यदेशी इन सारी वस्तुन की खोज करतेहैं परंतु तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सारी वस्तुन का आवश्यक है। ३३ परंतु पहिले ईश्वर के राज्य का और उसके धर्म का खोज करो और ये सब तुम्हारे लिये उबरतेहुए अधिक किई जायंगी। ३४ इस कारण कल के लिये चिंता मत करो क्योंकि कल अपनेही लिये सिद्ध करेगा दिन का दुख दिनही के लिये बहुत है।

७ सातवां पर्व्व।

१ दोष मत लगाओ जिसतें तुम पर दोष न लागाया जाय। २ क्योंकि जिस रीति से तुम दोष लगाओगे उसी रीति से तुम पर भी दोष लगाया जायगा और

जिस नपुए से तुम नापतेहो उसी से तुम्हारे लिये फेर नापाजायगा। ३ परंतु उस किर्किरी को जो तेरे भाई की आंख में है क्यों देखताहै? परंतु उस लट्ठे को जो तेरी आंख में है नहीं देखता?। ४ अथवा तू अपने भाई को क्योंकर कहि सक्ता कि रहिजा किर्किरी को जो तेरी आंख में है निकाल देउं और देख तेरीही आंख में एक लट्ठा है। ५ अरे कपटी पहिले अपनेहीं आंख से उस लट्ठे को दूर कर तव तू फरक्काई से देखके अपने भाई की आंख से किर्किरी को निकाल सकेगा। ६ पवित्र बस्तु कुत्तों को मत देओ और अपनी मोतियों को सुअरोंके आगे मत फेंको नहो कि वे अपने पांव तले उन्हें रैांदें और फिरके तुम्हीं को फाड़ें।

७ मांगो और तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो और तुम पाओगे खटखटाओ और तुम्हारे लिये खोला जायगा। ८ क्योंकि जो कोई मांगताहै सो लेताहै और जो ढूंढ़ताहै सो पाताहै और जो खटखटाताहै उसके लिये खोला जाता है। ९ तुम्में कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उस्से रोटी मांगे क्या वुह उसे पत्थर देगा?। १० अथवा यदि वुह मछली मांगे क्या वुह उसे सांप देगा?। ११ इस लिये यदि अधम होके तुम अपने पुत्रों को अच्छा दान देने जानतेहो तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है क्या उन सभों को जो उस्से मांगतेहैं अधिक भली बस्तु न देगा?। १२ इस लिये जो व्यवहार तुम मनुष्यों से चाहते हो

तैसाही तुम उनसे करो क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता ऐही हैं।

१३ सकेत द्वार से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वुह द्वार और फैलाव है वुह मार्ग जो विनाश को पहुंचाताहै और बहुत हैं जो उस्से जातेहैं। १४ इस कारण कि सकेत है वुह द्वार और खड़बिड़ है वुह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पातेहैं।

१५ झूटे भविष्यद्वक्तों से चौकस रहो जो मेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आतेहैं परंतु मन में फड़वैये हुंडार हैं। १६ तुम उन्हें उनके फलों से पहिचानोगे क्या मनुष्य कांटों से दाख अथवा ऊंटकटारों से गूलर बटोरते हैं। १७ इसी रीति से हरएक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है परंतु बुरा पेड़ बुरा फल फलताहै। १८ अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फलसक्ता न बुरा पेड़ अच्छा फल फलसक्ता। १९ जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता सो सो काटाजाता और ईंधन बनता है। २० सो उन्हें उनके फलों से जानोगे।

२१ हरएक जो मुझे प्रभु प्रभु कहताहै स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा परंतु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। २२ बहुतेरे उस दिन मुझे कहेंगे कि हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से भविष्य नहीं कहा और तेरे नाम से पिशाचों को दूर नहीं किया? और तेरे नाम से बड़े आश्चर्य कर्म नहीं किये?।

२३ और तब मैं उन्हें कहोंगा कि मैं ने तुम्हें कभी न जाना अरे कुकर्म्मियो मुझ्से दूर होओ।

२४ इस लिये जो कोई मेरे ये बचन सुनताहै और उन्हें मानता है मैं उसे एक बुद्धिमान से उपमा देउंगा जिसने चटान पर अपना घर उठाया। २५ और मह बरसा और बाढ़ आये और बयार बहीं और उस घर पर बौछाड़ लगा और वुह न गिरा क्योंकि चटान पर उठायागया था। २६ परंतु जो कोई मेरे ये बचन सुनता है और उन्हें नहीं पालता सो एक मूर्ख मनुष्य से उपमा दिया जायगा जिसने अपना घर बालू पर उठाया। २७ और मेंह बरसा और बाढ़ आया और बयार बहीं और उस घर पर बौछाड़ लगा पड़ और वुह गिरा और उसका गिरना भयानक हुआ। २८ और ऐसा हुआ कि जब यिशु ने इन बातों को समाप्त किया तब मंडली उसके उपदेश से आश्चर्यित हुई। २९ क्योंकि उसने उन्हें पराक्रमी के समान सिखाया और अध्यापकों के समान नहीं।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ जब वह उस पहाड़ से उतरा बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे हो लिया। २ और देखो कि एक कोढ़ी ने आके दंडवत करके कहा कि हे प्रभु यदि आप चाहें तो मुझे पवित्र कर सक्ते हैं। ३ ईसा ने यह कहिके हाथ बढ़ाया और उसे छूके कहा कि मैं चाहताहों पवित्र होजा और

तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। ४ तब यिशु ने उसे कहा कि किसी से मत कह परंतु जाके अपने तईं याजक को दिखा और मूसा ने जो दान ठहराया है सो उनके साची के लिये दे।

५ और जब यिशु ने कफरनाहम में प्रवेश किया तो एक शत पति ने उस पास आके बिनती किई। ६ और कहा कि हे प्रभु मेरा सेवक अर्द्धांग के रोग से अति पीड़ित घर में पड़ा है। ७ यिशु ने उसे कहा कि आके मैं उसे चंगा करोंगा। ८ उस पति ने उत्तर देके कहा कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरी छत तले आवें परंतु केवल बचन कहिये और मेरा सेवक चंगा होजायगा। ९ क्योंकि मैं एक मनुष्य दूसरे के वश में हों और योद्धे मेरे वश में हैं और मैं एक को कहताहों कि जा और वुह जाताहै और दूसरे को कि आ और वुह आता है और अपने सेवक को कि यह कर और वुह करताहै। १० यिशु ने सुन के आश्चर्य्य किया और अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि मैं ने ऐसा बड़ा विश्वास इसराईल में भी न पाया। ११ और मैं तुम्हें कहताहों कि बहुतेरे पूरब और पच्छिम से आवेंगे और इबराहीम और इसहाक और याकूब के संग स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। १२ परंतु इस राज्य के संतान बाहर अंधियारे में डाले जायंगे जहां रोना और दांत किचकिचाना होगा। १३ तब यिशु न उस शतपति से कहा कि

जा और तेरे बिश्वास के समान तेरे लिये होवे और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा होगया।

१४ और जब यिशु पितर के घर में आया उसने उसकी सास को ज्वर से रोगी पड़ी देखा। १५ और उसने उसका हाथ छूआ तब ज्वर ने उसे छोड़ा और उसने उठके उनकी सेवा किई।

१६ जब सांझ हुई वे उसके पास बहुत से पिशाच ग्रस्तों को लाये और उसने बचन से आत्मां को दूर किया और सब रोगियों को चंगा किया। १७ जिसतें जो अशीया भविष्यद्वक्ता ने कहा था पूरा होवे कि उसने आप हमारी दुर्बलता को लेलिया और रोगोंको उठालिया।

१८ पर जब यिशु ने अपने आसपास बड़ी मंडलियों-को देखा उसने उसपार जाने की आज्ञा किई। १९ और किसी अध्यापक ने आके उसे कहा कि हे गुरु जहां कहीं आप जायंगे मैं आपके पीछे चलोंगा। २० तब यिशु ने उसे कहा कि लोमड़ियों के लिये मांदे हैं और आकाश के पंछियों के खोंते परंतु मनुष्य के पुत्र के सिर धरने का स्थान नहीं है। २१ और उसके शिष्यों मेंसे एक ने उसे कहा कि हे प्रभु मुझे जाने दीजिये कि पहिले अपने पिता को गाड़ों। २२ परंतु यिशु ने उसे कहा कि मेरे पीछे चलाआ और मृतक अपने मृतकों को गाड़ें।

२३ और जब वुह नाव पर चढ़ा उसके शिष्य उसके पीछे होलिये। २४ और देखो कि समुद्र में एक बड़ी

आंधी उठी यहां लों कि लहरों से नाव ढंप गई परंतु वुह नींद में था। २५ तब उसके शिष्यों ने आके उसे जगाके कहा कि हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं। २६ उसने उन्हें कहा कि हे अल्प विश्वासियो तुम क्यों डरते हो तब उसने उठके बयार और समुद्र को दपटा और बड़ा चैन होगया। २७ परंतु लोग अचंभित होके बोले कि यह किस रीति का मनुष्य है जिसके बशमें बयार और समुद्र भी हैं।

२८ और जब वुह पार गदरे के देश में पहुंचा दो पिशाच ग्रस्त मनुष्य समाधिन से निकल के उसे मिले जो यहां लों अति भयंकर थे कि उस मार्ग से कोई जा न सक्ता था। २९ और देखो कि उन्हों ने चिल्लाके कहा कि हे ईश्वर के पुत्र यिशु हमें आप से क्या काम क्या आप इधर आये हैं कि समय से आगे हमें पीड़ा देवें। ३० और उनसे दूर बहुत से सूअरोंका एक झुंड चरता-था। ३१ तब पिशाचों ने उसकी बिनती करके कहा कि यदि आप हमे दूर करें तो सूअरों के उस झुंड में पैठने दीजिये। ३२ उसने उन्हें कहा कि जाओ तब वे निकल के सूअरों के झुंड में पैठे और देखो कि सूअरों के सारे झुंड कड़ारे पर से झट समुद्र में जागिरे और जल में नष्ट हुए। ३३ तब उनके चरवाहे भागके नगर में गये और समस्त समाचारों को, जो पिशाच ग्रस्तों पर बीता था बर्णन किया। ३४ और देखो कि सारा नगर ईसा

की भेंट को बाहर निकल आये और जब उन्होंने उसे देखा तो बिनती किई कि हमारे सिवाने से बाहर जाइये ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ तब वुह नाव पर चढ़ के पार पहुंचा और अपने नगर में आया। २ और वहीं लोग खाट पर पड़ेहुए एक अर्द्धांगी को उस पास लाये और यिशु ने उनका बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी को कहा कि हे पुत्र सुस्थिर हो तेरे पाप क्षमा किये गये। ३ और अध्यापकों में से कितनों ने अपने अपने मन में कहा कि यह ईश्वर की अपनिंदा करता है। ४ यिशु ने उनकी चिंतों को जानके कहा कि किसलिये अपने अपने मन में बूरी चिंता करते हो। ५ क्योंकि क्या कहना सहज है, कि पाप क्षमा किये गये अथवा कहना कि उठ और चल। ६ परंतु जिसतें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का सामर्थ्य है उसने उस आर्द्धांगी को कहा कि उठ अपनी खाट उठा और अपने घरको जा। ७ तब वुह उठा और अपने घर को चला गया। ८ परंतु जब मंडली ने देखा तब उन्हों ने आश्चर्य करके ईश्वरकी स्तुति किई कि उसने ऐसा सामर्थ्य मनुष्यों को दिया है।

९ और यिशु ने वहां से बढ़के कर लेने के स्थान में एक मनुष्य को बैठे देखा जिसका नाम मत्ती था और उसने उसे कहा कि मेरे पीछे आ; तब वुह उठा और

उसके पीछे हो लिया। १० और यों हुआ कि जब यिशु घर में भोजन पर बैठा तो देखो कि बहुतसे करग्राहक और पापी आके उसके और उसके शिष्यों के संग बैठ गये। ११ और फरूसियों ने देखके उसके शिष्यों से कहा कि तुम्हारा गुरु करग्राहकों और पापियोंके संग क्यों भोजन करताहै। १२ परंतु जब यिशु ने सुना उसने उन्हें कहा कि भले चंगे को बैद्य का आवश्यक नहीं परंतु रोगियों को। १३ पर जाओ और इसके अर्थको सीखो कि मैं दया को चाहताहों और बलिदान को नहीं क्योंकि मैं धर्म्मियों को बुलाने नहीं आया परंत पापियोंको जिसतें पश्चात्ताप करें।

१४ तब योहन के शिष्यों ने उस पास आके कहा कि हम और फरूसी क्यों बारंबार ब्रत करते हैं परंतु आपके शिष्य ब्रत नहीं करते। १५ यिशु ने उन्हें कहा कि जबलों दूल्हा संग है बराती बिलाप करसक्ते हैं? परंतु वे दिन आवेंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे ब्रत करेंगे। १६ कोई मनुष्य नये कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्र पर नहीं जोड़ता क्योंकि वुह जो उसे सुधारने के लिये उसपर जोड़ा गयाहै बस्त्र से खैंचता है और फटा अधिक होता है। १७ मनुष्य पुराने कुप्पे में नया द्राखरस नहीं भरता नहीं तो कुप्पे फटते हैं और द्राखरस बहि जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परंतु नये कुप्पे में नये द्राखरस भरते हैं और दोनो जतन से रहते हैं।

१८ जब वुह उन्हें यह कहि रहा था एक अध्यक्ष ने आके उसकी बिनती करके कहा कि मेरी बेटी अभी मर-गई परंतु आइये और अपना हाथ उस पर रखिये और वुह जीएगी। १९ तब यिशु उठा और अपने शिष्य समेत उसके पीछे होलिया।

२० और एक स्त्री ने जिसको बारह बरस से रक्त बहने का रोग था पीछे आके उसके अंचल को छूआ। २१ क्योंकि उसने अपने मन में कहा कि यदि मैं केवल उसका अचंल छूओं तो चंगी होजाऊंगी। २२ परंतु यिशु पीछे फिरा और उसे देखके कहा कि हे पुत्री सुस्थिर हो तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया और वुह स्त्री उसी घड़ी चंगी होगई।

२३ और जब यिशु उस अध्यक्ष के घर में आया और बजनियों और लोगों को चिल्लाते देखा। २४ उसने उन्हें कहा कि अलग होओ क्योंकि कन्या मर नहीं गई पर सोती है और उन्हों ने उसे ठट्ठा किया। २५ परंतु जब लोग बाहर निकाले गये उसने भीतर जाके उसका हाथ पकड़ा और वुह कन्या उठी। २६ और यह कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई।

२७ और जब यिशु वहां से चला गया तो दो अंधे चिल्लाते और यह कहते उसके पीछे होलिये कि हे दाऊदके पुत्र हमपर दया करिये। २८ और जब वुह घर में आया वे अंधे उसपास आये और ईसाने उन्हें कहा

कि तुम बिश्वास रखतेहो कि मैं यह करसक्ता हों? उन्हों ने उसे कहा कि हां हे प्रभु। २९ तब उसने उनकी आखें छूके कहा कि तुम्हारे बिश्वास के समान तुम्हारे लिये होवे। ३० और उनकी आंखें खुल गईं और यिशु ने उन्हें चिता के कहा कि देखो कोई नजाने। ३१ परंतु उन्हों ने वहां से निकल के उसकी कीर्त्ति उस सारे देश में फैलाई।

३२ जब वे बाहर गये तो लोग एक पिशाच ग्रस्त गूंगे मनुष्य को उस पास लाये। ३३ और जब पिशाच निकाला गया वुह गूंगा बोला और मंडली आश्चार्य करके कहनेलगी कि ऐसा ईसराईल में कभी नदेखा गया था। ३४ परंतु फरीसियों ने कहा कि वुह पिशाचों के राजा की सहाय से पिशाचों को दूर करताहै।

३५ और यिशु ने सारे नगरों में और गांओं में जाके उनकी मडलियों में राज्य का मंगल समाचार प्रचारते और लोगों के हर एक रोग और हर एक दुख दूर करते सर्बत्र फिरा। ३६ पर जब उसने मंडलियों को देखा तो वुह उनपर दयाल हुआ इस कारण कि वे थके पड़े थे और उन भेड़ों के समान जिनका गड़रिया नहीं हो छिन्नभिन्न थे। ३७ तब उसने अपने शिष्यों से कहा कि कटनी तो बहुत हैं ठीक परंतु लवैये थोड़े। ३८ इस लिये कटनी केस्वामि की बिनती करो कि वुह अपनी कटनी में लवैयों को भेजे।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ श्रीर अपने बारह शिष्यों को बुलाके उसने उन्हें अपवित्र आत्मों को दूर करने का श्रीर समस्त प्रकार के रोग श्रीर हर एक रीतिके दुःख को चंगाकर ने का सामर्थ दिया। २ अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पथर कहावता है श्रीर उसका भाई अंद्रिया ज़बदीका बेटा याक़ूब श्रीर उसका भाई योहन। ३ फिलिप श्रीर बरतूलमा तूमा श्रीर मत्ती करग्राहक श्रीर हलफा का बेटा याक़ूब श्रीर लेबी जो तदी कहाव ता है। ४ शिमेन किनानी श्रीर यिहूदा ईस्करियती जिसने उसे पकड़वाया भी।

५ यिशु ने इन बारहों को भेजा श्रीर उन्हें आज्ञा करके कहा कि अन्य देशियों की श्रोर मत जाश्रो श्रीर सामरियों के नगर में प्रवेश मत करो। ६ परंतु निज करके इसराईल के घर की खोईऊई भेड़ के पास जाश्रो ७ श्रीर जाते ऊए प्रचार करके कहो कि स्वर्ग का राज्य समीप है। ८ रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों को पावन करो मृतकों को जिलाश्रो पिशाचों को दुर करो सेंत से पाएहो सेंत से देश्रो। ९ अपने बटुए में सोना अथवा रूपा अथवा पींतल मत सिद्ध करो। १० श्रीर यात्ता के लिये झोला अथवा दो बस्त्र अथवा जूता अथवा लाठी मत लेश्रो क्योंकि बनिहार अपने भोजनके योग्य है। ११ श्रीर जिस किसी नगर अथवा गांव में प्रवेश करो

बूझो कि उसमें योग्य कौन है और जब लों वहां से न जाओ वहीं रहो। १२ और जब तुम किसी घर में प्रवेश करो तो उसपर कल्यान कहो। १३ यदि वुह घर योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उसपर पहुंचे परन्तु यदि वुह अयोग्य होय तो तुम्हारा कल्याण तुम पर फिर आवेगा। १४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण नकरे और तुम्हारी बातें नसुने जब तुम उस घर से अथवा नगर से बाहर जाओ अपने पांव की धुल झाड़ो। १५ मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि बिचार के दिनमें उस नगर से सदूम और अमूरा देश के लिये अधिक सहज होगा।

१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ोकी नाईं झुंडारों में भेजताहों इस लिये सर्प्पके समान बुद्धिमान और कपोत के नाईं सूधे होओ परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें सभाओं में सोपेंगे और तुम्हें अपनी मंडलियों में कोड़े मारेंगे। १८ और मेरे कारण अध्यक्षों और राजाओं के आगे पकड़वाये जाओगे जिसतें उनपर और अन्यदेशियों पर साक्षी होवे। १९ परन्तु जब वे तुम्हे सौंपें तो चिन्ता मत करियो कि हम किस रीति से अथवा क्या कहें क्योंकि जो तुम कहोगे उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा। २० क्योंकि तुम नहीं परंतु तुम्हारे पिता का आत्मा जो तुम्में है कहता है। २१ तब भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये सौंपेंगे और बालक माता पिताके बिरोध में उठेंगे और उन्हें बधन करवावेंगे।

२२ और मेरे नाम के लिये सब तुम से बैर करेंगे परन्तु जो अंतलों सहेगा सो मुक्ति पावेगा ।

२३ परन्तु जब वे तुम्हें एक नगर में सतावें तो दुसरे को भाग जाओ क्योंकि मैं तुम्हें सच कहताहों कि तुम इसराईल के नगरों में सर्वत्र नफिरोगे जबलों मनुष्यका पुत्र न आले । २४ शिष्य गुरु से बड़ा नहीं न सेवक अपने स्वामी से । २५ बस है कि शिष्य गुरु के समान और सेवक अपने स्वामी के तुल्य होवे यदि उन्होंने घर के स्वामी को बालज़बूल कहा है तो कितना अधिक उसके परिवारों को कहेंगे । २६ इसलिये उन से मत डरो क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं जो प्रगठ नहोगी और नगुप्त जो जानी नजायगी । २७ जो कुछ मैं तुम्हें अंधियारे में कहताहों उसे उंजिआले में कहो और जो कुछ तुम काने कान सुनो कोठों पर से प्रचारो । २८ और देह के घात कोंसे मत डरो जो आत्मा को घात नहीं करसक्ते परन्तु निज करके उस्से डरो जो आत्मा को और देह के नरक में नाश कर सक्ता है । २९ क्या एक अधेले को दो चिड़ियां नहीं बिकतीं और बिना तुम्हारे पिता केउनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिरेगी । ३० परन्तु तुम्हारे सिर के बाल लों सब गिने ऊए हैं । ३१ इसलिये मत डरो क्योंकि तुम बक्रतसी चिड़ियों से अधिक मोल के हो । ३२ इस कारण जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मानलेगा उसे मैं भी अपने

पिता के आगे जो स्वर्ग में है, मानलेउंगा। ३३ परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुस्से मुकरेगा उस्से में भी, अपने पिता के आगे जो स्वर्ग में है मुकरोंगा।

३४ मत समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने को आयाहों मैं मिलाप करवाने को नहीं परंतु तलवार चलवाने को आयहों। ३५ क्योंकि मैं मनुष्य को उसके पिता से और कन्या को उसकी माता से और पतोह को उसकी सास से फूट करवाने आयाहों। ३६ और मनुष्य के बैरी उनके घरही के लोग होंगे जो माता अथवा पिताको मुस्से अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो बेटा अथवा बेटीको मुस्से अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नहीं। ३७ और जो अपने क्रूश को उठाके मेरे पीछे न आवे सो मेरे योग्य नहीं। ३८ जो आपने प्राण को बचाताहै सो उसे गवांवेगा और जो मेरे निमित्त अपना प्राण गवांताहै सो उसे पावेगा। ३९ जो तुम्हे ग्रहण करताहै सो मुझे ग्रहण करताहै और जो मुझ ग्रहण करता है सो मेरे भेजने वाले को उसे ग्रहण करताहै। ४० वुह जो भविष्यद्वक्ता के नाम से भविष्यद्वक्ता को ग्रहण करता है सो भविष्यद्वक्ता का प्रतिफल पावेगा और जो धर्मी के नाम से धर्मी को ग्रहण करता है धर्मी का प्रति फल पावेगा। ४१ और जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा शितल जल पिलावेगा मैं तुम्हे सत्य कहताहों कि वुह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोवेगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब यिशु अपने बारह शिष्यों को आज्ञा करचुका तब वुह वहां से चलागया कि उनके नगरों में सिखावे और प्रचारे। २ और योहन ने बंधन में मसिह के कार्यों को सुनके अपने शिष्यों में से दो को भेज के। ३ उसे पुछवाया कि क्या जो आवने पर थे सो आपहैं अथवा हम दुसरे की बाट जोहें। ४ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि जाओ और जो कुछ कि तुम सुनते और देखते हो सो योहन से कहो। ५ अंधे दृष्टि पाते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवित्र कियेजाते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को मंगलसमाचार सुनायाजाता है। ६ और धन्य वुह जो मेरे कारण ठोकर नखावे।

७ उनके जानेके पीछे यिशु योहन के बिषय में मंडलियों को कहनेलगा कि बन में तुम क्या देखने को निकले क्या एक नरकट पवन से हिलताहुआ ?। ८ फेर क्या देखने को बाहर निकले क्या कोमल वस्त्र पहिनेहुए मनुष्य को ? देखो जो कोमल पहिनते हैं सो राजभवनों में हैं। ९ परन्तु क्या देखने को बाहर निकले क्या एक भविष्यद्वक्ताको ? हां मैं तुम्हे कहताहों कि एक भविष्यद्वक्ता से श्रेष्ट। १० क्योंकि यह बुह है जिसके बिशय में लिखा है कि देखो मैं अपना दूत तेरे आगे भेजताहों जो तेरे मार्ग को तेरे आगे सुधारेगा। ११ मैं तुम्हे सत्य कहता-

हों कि स्त्रीबंसों में से कोई योहन स्नानकारक से बड़ा प्रगट नहीं ऊआ तिसपर भी जो स्वर्ग के राज्य में अति छोटा है सो उस्से बड़ा है। १२ और योहन स्नानकारक के दिनों से अबलों स्वर्ग का राज्य बल सहता है और बलवन्त उसे झपटके लेता है। १३ क्योंकि सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था ने योहन लों भविष्य कहा। १४ और यदि तुम ग्रहण किया चाहो तो इलिया जो आने पर था सो यही है। १५ जो सुन्ने का कान रखता है सो सुने। १६ परन्तु मैं इस पीढ़ी का किस्से उपमा देउं वे उन बालकों के से हैं जो हाटों में बैठ के अपने संगियों का पुकारते हैं। १७ और कहते हैं कि हम तुम्हारे लिये बांसली बजायेकिये और तुम न नाचे हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम नरोए। १८ क्योंकि योहन खाता पिता नहीं आया और वे कहते हैं कि उसनें पिसाच है। १९ मनुष्य का पुत्र खाता पिता आया और वे कहतेहैं कि देखो एक भोजनी और मद्यप करग्राहकों और पापियों का मित्र परन्तु बुद्धि अपने पुत्रों से निर्दाेष ठहराई गई है।

२० तब जिन नगरों में उसने बऊत पराक्रम दिखाया उन्हें ओरहना देनेलगा क्योंकि वे न पछताए। २१ हे कोरज़ीन हाय तुझपर हे बैतसैदा हाय तुझपर क्योंकि जो पराक्रम तुझमें प्रगट ऊए यदि सूर और सैदा में प्रगट होते तो वे बऊत दिन से टाट और राख में पछ-

ताते। २२ परन्तु मैं तुम्हें कहताहों कि बिचार के दिन में सूर श्रीर सैदा के लिये तुमसे अधिक सहज होगा। २३ श्रीर हे कपरनाह्रम जो स्वर्ग लों बढ़ाया गयाहै नरक लों गिराया जायगा क्योंकि जो पराक्रम तुझमें प्रगट ज्ञए यदि सदूम में प्रगट कियेजाते तो वुह आजलों बना रहता। २४ परन्तु मैं तुम्हे कहता हों कि न्याय के दिन में सदूम के देश के लिये तुझसे अधिक सहज होगा।

२५ उस समय में यिशु ने उत्तर देके कहा कि हे पिता स्वर्ग श्रीर पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानताहों इस कारण कि तूने इन बातों को बुद्धिमानें श्रीर चतुरें से गुप्त रक्खा श्रीर उन्हें बालकों पर प्रगट किया। हां हे पिता ऐसा होने में तुझे अच्छा लगा। २६ सब कुछ मेरे पिता मुझे सैांपा। २७ पिता को छोड़ कोई पुत्र को नहीं जानता श्रीर पुत्र को छोड़ कोई पिता को नहीं जानता श्रीर वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे। २८ हे सारे लोगो जो थके श्रीर बड़े बोझ से दबेहो मेरे पास आश्रो श्रीर मैं तुम्हे सुख देउंगा। २९ मेरा जुआ अपने ऊपर लेश्रो श्रीर मुझ सीखो क्योंकि मैं कोमल श्रीर मन में दीन हों श्रीर तुम अपने अपने प्राणें में सुख पाश्रोगे। ३० क्योंकि मेरा जुआ सहज श्रीर मेरा बोझ हलुक है।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

उस समय ईसा विश्राम के दिन अन्न के खेतों में होके चला जाता था और उसके शिष्य भूखे होके बालों को तोड़ तोड़ खानेलगे। २ परन्तु फरूसियों ने यह देखा उन्हें कहा कि देखिये जो कार्य्य विश्राम के दिन में करना योग्य नहीं सो आप के शिष्य करते हैं। ३ परन्तु उसने उन्हें कहा कि अपने साथियों समेत जब दाऊद भूखा था उसने क्या किया क्या तुमने नहीं पढ़ा। ४ उसने क्योंकरईश्वर के मन्दिर में जाके भेंट की रोटी को खाई जोउसे और उसके संगियों को खाना योग्य नथा परन्तु केवल याजकों को ?। ५ अथवा क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक विश्राम के दिनों में मन्दिर में विश्राम का आदर नहीं करते और निर्दोष हैं ?। ६ परन्तु मैं तुम्हें कहता हो कि इस स्थान में एक मन्दिर से भी एक बड़ा है। ७ परन्तु यदि तुम इसका अर्थ जाने होते कि, मैं दया चाहताहों और बलिदान नहीं, तो निर्दोषियों को दोषी न ठहराते। ८ क्योंकि मनुष्य का पुत्र विश्राम दिन का भी प्रभु है।

९ और वुह वहां से सिधार के उनकी मंडली में गया। १० और देखो कि वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था और उन्हों ने उसपर दोष लगा के लिये उस्से यह कहके पूछा क्या विश्राम दिनों में चंगा करना योग्य है?। ११ तब उसने उन्हें कहा कि तुम्हें

कौन ऐसा मनुष्य है जिसके एक भेड़ होय और यदि वुह बिश्राम के दिन गड़हे में गिरपड़े क्या वुह उसे पकड़ के बाहर न निकालेगा ?। १२ फेर मनुष्य भेड़ से कितना भला है इस कारण बिश्राम दिनों में भला करना योग्य है। १३ तब उसने उस मनुष्य को कहा कि अपना हाथ बढ़ा उसने बढ़ाया और वुह दूसरे के समान नीरोग होगया। १४ तब फरीसियों ने बाहर जाके उसके बिरोध में सभा किई कि उसको किस रीतिसे नाश करें।

१५ परन्तु यिशु यह जान वहां से जाता रहा और बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे पीछे गई और उसने उन सभों को चंगा किया। १६ और उन्हें आज्ञा किई कि मुझे प्रगट मत करो। १७ जिसतें वुह बचन जो अशाया भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा गया था पूरा होवे। १८ कि देखो मेरा सेवक जिसे मैं ने चुनाहै मेरा प्रिय जिसपर मेरा मन अति प्रसन्न है जिसपर मैं अपना आत्मा रक्खोंगा और वुह अन्य देशियों पर न्याव प्रगट करेगा। १९ वुह न झगड़ेगा न चिल्लायेगा और मार्गों में कोई उसका शब्द न सुनेगा। २० वुह कुचलेहुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआं उठतेहुए सन को न बुझावेगा जबलों न्याय को जय लों न पहुंचावे। २१ और उसके नाम पर अन्यदेशी आशा रक्खेंगे।

२२ तब लोग एक अंधे गूंगे पिशाच ग्रस्त को उस पास

लाये और उसने उसे चंगा किया यहांलों कि वुह अंधा गूंगा देखा और बोला। २३ और सारे लोग आश्चर्यित होके बोले कि क्या यह दाऊद का पुत्र नहीं है?। २४ परन्तु जब फरीसियों ने सुना वे बोले कि यह पिशाचों के राजा बालज़बूल बिना पिशाचों को दूर नहीं करता। २५ और यिशु ने उनकी चिन्ता जानके उन्हें कहा कि जो जो राज्य अपने बिरोध में दो भाग होवे सो सो उजाड़ होता है और जो जो नगर अथवा घर अपने बिरोध में दो भाग होवे सो सो स्थिर न रहेगा। २६ और यदि शैतान शैतान को दूर करे तो वुह अपने बिरोध में बिभाग हुआ फेर उसका राज्य क्योंकर स्थिर रहेगा। २७ और यदि मैं बालज़बूल से पिशाचों को दूर करताहों तो तुम्हारे पुत्र किस्से दूर करते हैं? इसलिये वे तुम्हारे न्यायी होंगे। २८ परन्तु यदि मैं ईश्वर के आत्मा से पिशाचों को दूर करता हों तो ईश्वर का राज्य तुम लों पहुंचा है। २९ नहीं तो कोई एक बलवन्त के घरमें क्योंकर पैठ सके और उसकी सामग्री को लूटे जबलों पहिले वुह उस बलवन्त को न बांधे? और तब वुह उसके घर को लूटेगा। ३० जो मेरा साथी नहीं सो मेरा बैरी है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता सो बिथराता है। ३१ इसलिये मैं तुम्हें कहता हों कि मनुष्य के लिये समस्त प्रकार का पाप और अपनिन्दा क्षमा किई जायगी परन्तु आत्मा

की अपनिन्दा क्षमा न किई जायगी। ३२ और जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में बात कहे वुह उसके लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो धर्मात्मा के बिरोध में कहेगा वुह उसके लिये क्षमा न किई जायगी न इस लोक में न पर लोक में। ३३ पेड़ को अच्छा करो और उसके फल को अच्छा अथवा पेड़ को बुरा करो और उसके फल को बुरा क्योंकि पेड़ फल से जानाजाता है। ३४ हे सर्प बंशियो तुम बुरे होके क्योंकर भला कहि सक्तेहो? क्योंकि मनकी भरपूरी से मुंह बोलताहै। ३५ उत्तम मनुष्य मन के उत्तम भंडार से उत्तम बस्तु बाहर निकालता है और अधम मनुष्य मन के अधम भंडार से अधम बस्तु बाहर निकालता है। ३६ परन्तु मैं तुम्हें कहता हों कि हर एक व्यर्थ बचन जो मनुष्य कहते हैं वे बिचार के दिन में उसका लेखा देंगे। ३७ क्योंकि तू अपने वचन से निर्दोष ठहरेगा और अपने वचन से दोषी ठहर जायगा।

३८ तब कई एक अध्यापकों और फरीसियों में से उत्तर देके कहनेलगे कि हे गुरु हम आप से एक लक्षण देखा चाहते हैं। ३९ परन्तु उसने उन्हें उत्तर देके कहा कि एक बुरी और व्यभिचारी पीढ़ी लक्षण ढूंढ़तीहै परन्तु युनस भविष्यद्वक्ता के लक्षण को छोड़ उन्हें कोई लक्षण न दिखाया जायगा। ४० क्योंकि जिस रीतिसे युनस तीन रात दिन मछली के पेट में था उसी रीति से

मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन धरती में रहेगा। ४१ ननिवी के लोग न्याय के दिन में इस पीढ़ी के संग उठेंगे और उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि वे युनस के उपदेश से पछताये और देखो कि युनस से भी बड़ा यहां है। ४२ दक्खिन की रानी इस पीढ़ी के संग न्याय के दिन में उठेगी और उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वुह पृथिवी के अंत्य सिवाने से सुलेमान का ज्ञान सुन्ने को आई और देखो कि सुलेमान से भी बड़ा यहां है।

४३ जब अपवित्र आत्मा मनुष्य से निकल जाताहै वुह सूखे स्थान में जा जा के विश्राम ढूंढ़ता फिरताहै और नहीं पाता। ४४ तब वुह कहताहै कि मैं अपने घर में, जहां से निकला, फेर जाऊंगा और आके उसे सूना और झाड़ा सुधारा पाता है। ४५ तब वुह जाताहै और अपने संग और सात आत्मा को लेताहै जो उस्से अधिक दुष्ट हैं और वे भीतर जाके बास करते हैं तब उस मनुष्य की पिछली दशा अगिली से अधिक बुरी होतीहै इसी रीति से इस समय के दुष्ट पीढ़ी की भी होगी।

४६ जब वुह लोगों से कहि रहा था उसकी माता और उसके भाई बाहर खड़े हुए उस्से बात करने चाहतेथे। ४७ तब किसी ने उसे कहा कि देखिये आप की माता और आप के भाई बाहर खड़ेहुए आप से बातें करने चाहतेहैं। ४८ परन्तु उसने उसे उत्तर देके

कहा कि कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?। ४९ तब उसने अपने शिष्यों की ओर अपना हाथ बढ़ा के कहा कि देख मेरी माता और मेरे भाई। ५० क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है सोई मेरा भाई और बहिन और माता है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ उसी दिन यिशु घर से निकल के समुद्र तीर जा बैठा। २ और बड़ी बड़ी मंडली उसके पास एकट्ठी ऊई यहां लों कि वुह एक नाव पर चढ़ बैठा और सारी मंडली तीर पर खड़ी रही। ३ और वुह उन्हें बऊत सी बातें दृष्टांतों में कहीं।

४ देखो एक बोवैया बोने को निकला और उसके बोने में कुछ मार्ग की अलंग गिरे और पंछियों ने आके उन्हें चुग लिया। ५ कुछ पत्थरैली भूमि पर गिरे जहां उन्होंने गहिरी मिट्टी नपाई और उनके अंकुर निकले इस कारण कि उन्होंने मिट्टी की गहिराई नपाई। ६ और सूर्य उदय होने से वे झौंस गये और जड़ नरखने के कारण मुरझा गये। ७ और कितने कांटोंमें गिरे और कांटों ने बढ़के उन्हें घोंट डाला। ८ परन्तु कितने अच्छी भूमि में गिरे और बालें लाये कितने तो सौ गुने कितने साठ कितने तीस गुने। ९ सुन्नेके लिये जो कान रखते हैं सो सुनें।

१० तब शिष्यों ने आके उसे कहा कि आप उन्हें दृष्टांतों में क्यों कहते हैं?। ११ उसने उत्तर देके उन्हें कहा इस कारण कि तुम्हें स्वर्ग के राज्य का भेद जान्ने को दिया गया है परन्तु उन्हें नहीं दिया गया। १२ क्योंकि जिस पास है उसे दिया जायगा और उसको अधिक बढ़ती होगी परन्तु जिस पास नहीं है उस्से वुह भी जो उस पास है लिया जायगा। १३ इसलिये मैं उन्हें दृष्टांतों में कहता हों जिसतें देखते हुए वे न देखें और सुनते हुए न सुनें और न समझें। १४ और उनपर यिशाया की भविष्य कही हुई बातें पूरी हुई कि सुनते हुए तुम सुनोगे पर न समझोगे और देखतेहुए देखोगे परन्तु न सूझेगा। १५ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा है और कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपनी आंखें उन्होंने मूंद लियाहैं नहो कि वे कभी आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिरजायें और मैं उन्हें चंगा करों। १६ परन्तु धन्य तुम्हारी आंखें क्योंकि वे देखतीहैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुमसे सच कहताहों कि जो तुम देखते और सुनते हो सो बहुत से भविष्यद्वक्तों और धर्म्मियोंने देखने और सुन्ने चाहा पर उन्होंने न देखा और न सुना।

१८ इसलिये तुम बोवैये का दृष्टान्त सुनो। १९ जब कोई उस राज्य का बचन सुनताहै और नहीं समझता

तब वुह दुष्ट आता है और जो कुछ उसके मनमें बोया गया था छीन लेताहै यह वही है जिसने मार्ग की अलंग बीज को पाया। २० परन्तु जिसने बीज को पत्थरैली भूमि में पाया सो वही है जो बचन को सुनताहै और तुरन्त आनन्द से ग्रहण करताहै। २१ तिस पर भी उसमें जड़ नहीं होती परन्तु तनिक भर ठहरता है क्योंकि जब उस बचन के कारण ताड़ना और कष्ट होताहै तुरन्त वुह ठोकर खाता है। २२ वुह भी जिसने बीज को कांटों में पाया वुह है जो बचन को सुनताहै और इस संसार की धंधा और धन का छल बचन को घोंट डालता है और वुह निष्फल होताहै। २३ परन्तु जिसने बीज को अच्छी भूमि में पाया सो यह है जो बचन को सुनताहै और समझता है और फलताहै कितने तो सौ गुने कितने साठ कितने तीस।

२४ उसने उन्हें और एक दृष्टान्त कहा कि स्वर्ग का राज्य एक मनुष्य के तुल्य है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ परन्तु जब लोग सोगये उसका बैरी आया और गोहूं में बन बीज बोके चला गया। २६ पर जब अंकुर निकला और बालें लगीं तब बन बीज भी दिखाई दिये। २७ तब उस गृहस्थ के सेवकों ने आके उसे कहा कि हे स्वामी क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? फेर उसमें बन बीज कहांसे

आये ?। २८ उसने उन्हें कहा कि किसी वैरी ने यह किया है सेवकों ने उसे कहा कि यदि इच्छा होय तो हम जाके उन्हें उखाड़लेवें ?। २९ परन्तु उसने कहा कि नहीं नहो कि बन बीज उखाड़ते ज़ए उनको संग गोहं भी उखाड़ लेओ। ३० कटनी लों दोनोंको एकट्ठे बढ़ने देओ और कटनी में मैं लवैयोंको कहोंगा कि पहिले बन बीज को एकट्ठे करो और जलाने के लिये उनके गट्ठे बांधो परन्तु गोहं को मेरे खत्ते में बटोरो।

३१ उसने उन्हें एक और दृष्टान्त कहा कि स्वर्ग का राज्य एक राई के तुल्य है जिसे एक मनुष्य ने लेके अपने खेत में बोया। ३२ वुह तो सब बीजों से छोटा है परन्तु जब बढ़ा तो तरकारियों से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ होताहै कि आकाश के पंछी उसके डारों पर आके बसेरा करतीं हैं।

३३ उसने उन्हें एक और दृष्टान्त कहा कि स्वर्ग का राज्य खमीर के तुल्य है जिसे किसी स्त्री ने लेके तीन सेर पिसान में छिपाया यहां लों कि सब खमीर हो गया। ३४ यह सब बातें यिशु ने मंडली को दृष्टांतों में कहीं और बिन दृष्टांत से वुह उन्से न बोलता था। ३५ जिस्तें जो बचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहागया था सो पूरा होवे कि मैं अपना मुंह दृष्टांतों से खोलोंगा मैं उन वस्तुन को, जो जगत् के आरंभ से गुप्त रक्खीगई थीं प्रगट करोंगा।

३६ तब यिशु मंडली को बिदा करके घरमें गया और उसके शिष्यों ने उसपास आके कहा कि खेतके बन बीज के दृष्टांत का अर्थ हम से कीजिये। ३७ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्य का पुत्र है। ३८ वुह खेत जगत् है अच्छा बीज राज्य के बालक है परन्तु बन बीज दुष्ट के सन्तान है। ३९ जिस बैरी ने उन्हें बोया सो शैतान है कटनी जगत का अंत है और लवैये दूत है। ४० सो जैसे बन बीज बटोरे जाके आगमें जलाये जातेहैं ऐसाही इस जगत के अंत में होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने दूतोंको भेजेगा और वे उसके राज्य में से सारे ठोकर खिलानेवालों और बुराई करनेवालों को बटोरेंगे। ४२ और उन्हें आगके कुंड में डाल देंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा। ४३ तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के तुल्य प्रकाश होंगे जो कोई सुन्नेके कान रखते हैं सो सुनें।

४४ फेर स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन से तुल्य है जब मनुष्य उसे पाता है उसे छिपाता है और उसके आनन्द के मारे जाता है और अपना सब कुछ बेचके उस खेत को मोल लेता है।

४५ फेर स्वर्ग का राज्य एक बैपारी के तुल्य है जो चोखे चोखे मोतियों को ढूंढ़ता है। ४६ जिसने जब बड़े मोल के एक मोती को पाया था जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया।

४७ फेर स्वर्ग का राज्य एक जाल के तुल्य है जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की बटोरी। ४८ जब वुह भरगया वे तीर पर खैंच लाये और बैठके अच्छी अच्छी को पात्रों में बटोरा परन्तु बुरी बुरी को फेंक दिया। ४९ जगत के अन्त में ऐसाही होगा दूत निकलेंगे और दुष्टोंको धर्मियों में से अलग करेंगे। ५० और उन्हें आग के कुण्ड में डाल देंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा।

५१ यिशु ने उन्हें कहा क्या तुम ने ये बातें समझीं? उन्होंने उसे कहा कि हां हे प्रभु। ५२ तब उसने उन्हें कहा इस लिये हर एक अध्यापक जिसने स्वर्ग के राज्य के लिये उपदेश पाया है एक गृहस्थ पुरुष के समान है जो अपने भंडार से नई और पुरानी निकालता है।

५३ और यों हुआ कि जब यिशु ने इन दृष्टांतों को समाप्त किया वुह वहां से चला गया। ५४ और जब वुह अपने देश में आया उसने उनकी मंडली में ऐसा उपदेश किया कि वे अचंभित होके बोले कि यह ज्ञान और आश्चर्य कर्म इसे कहां से हैं। ५५ क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? क्या उसकी माता मरियम नहीं कहाती? और उसके भाई याकूब और यूशा और शीमन और यिहूदा?। ५६ और उसकी बहिनें क्या सबकी सब हमारे संग नहीं? फेर इसने यह सब कहां से पाया?। ५७ और उन्होंने उस्से ठोकर खाया तब

यिशु ने उन्हें कहा कि भविष्यद्वक्ता बिना आदर नहीं है परन्तु केवल अपनेही देश में और अपनेही घर में। ५८ और उसने उनके अविश्वास के कारण बज्जत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ उस समय में राज्य के चौथाई के अध्यक्ष हिरोद ने यिशु की कीर्त्ति सुनी। २ और अपने सेवकों से कहा कि यह योहन स्नान कारक है वुह मृत्यु से जीउठा है इस कारण आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट होते हैं। ३ क्योंकि हिरोद ने अपने भाई फिलिप की पत्नी हिरोदिया के कारण योहन को पकड़ के बंधन में डाल दिया। ४ क्योंकि योहन ने उसे कहा कि तुझे उसे रखना योग्य नहीं है। ५ और जब से बधन करने चाहा वुह मंडली से डरा इस कारण कि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे। ६ परन्तु जब हिरोद के जन्मदिन का आनन्द होनेलगा हिरोदिया की पुत्री उनके मध्य में नाची और हिरोद को हर्षित किया। ७ तिसपर उसने किरिया खाके प्रण किया कि जो कुछ वुह मांगेगी उसे देउंगा। ८ और जैसा उसकी माता ने आगे से उसे कहि रक्खा था वैसा वुह बोली कि योहन स्नानकारक का सिर एक थाल में मुझे दीजिये। ९ तब राजा उदास ज्रआ तथापि किरिया के और लेवनहारियों के कारण उसे देने की आज्ञा किई। १० और उसने

भेजके बंधन में योहन का सिर कटवाया। ११ और उसका सिर एक थाल में पहुंचाया जाके उस कन्या को दिया और वुह अपनी माता पास लेगई। १२ और उसके शिष्यों ने आके धड़ को उठा के गाड़ दिया और जाके यिशु से कहा।

१३ जब यिशु ने सुना तो वहां से नाव पर होके एक अरण्य स्थान में अलग गया और लोग सुना के नगरों से निकल के पांव पांव उसके पीछे चले गये। १४ और यिशु ने बाहर जा के एक बड़ी मंडली को देखा और उनपर दयाल हुआ और उनके रोगियों को चंगा किया। १५ और जब सांझ हुई उसके शिष्यों ने उस पास आके कहा कि यह अरण्य स्थान है समय भी बीत गया मंडली को बिदा करिये जिसतें वे गांओं में जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें। १६ परन्तु यिशु ने उन्हें कहा कि उनके जानेका प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खानेको देओ। १७ तब उन्होंने उसे कहा कि हमारे पास यहां केवल पांच रोटियां और दो मछलियां हैं। १८ उसने कहा कि उन्हें मेरे पास लाओ। १९ तब उसने मंडली को घास पर बैठने की आज्ञा किई और पांच रोटियों और दो मछलियों को लेके उसने स्वर्ग की ओर दृष्टि किई और आशीष देके रोटियों को तोड़ा और शिष्यों को दिया और शिष्यों ने मंडली को। २० और सब खाके तृप्त हुए और बचे हुए चूर चार से उन्हों ने बारह

टोकरियां भरीं उठाईं। २१ सो स्त्री और बालकों को छोड़ खानेवाले पांच सहस्त्र पुरुष थे।

२२ जिसतें वुह मंडलियों को विदा करे यिशु अपने आगे अपने शिष्यों को पार जाने की आज्ञा किई। २३ और जब वुह मंडलियों को बिदा करचुका वुह प्रार्थना के लिये एक पहाड़ पर अलग चढ़गया और जब सांझ ऊई वुह वहां अकेला था। २४ परन्तु नाव समुद्र के मध्य लहरों से डगमगाती थी क्योंकि बयार उलटी थी। २५ और रात के चौथे पहर में यिशु समुद्र पर चलते चलते उन पास आया। २६ और जब शिष्यों ने उसे समुद्र पर चलते देखा तो घबरा के कहने लगे कि प्रेत है और मारे डरके चिल्लाये। २७ तब यिशु ने तुरन्त उन्हें कहा कि सुस्थिर होओ मैं हों मत डरो। २८ तब पथर ने उत्तर देके उसे कहा कि हे प्रभु यदि आप हैं तो मुझे पानी पर आप पास आने की आज्ञा कीजिये। २९ तब उसने कहा कि आ और पथर नाव पर से उतरके यिशु पास जाने के लिये पानी पर चलनेलगा। ३० परन्तु जब उसने देखा कि बयार प्रचंड है वुह डरगया और डूबते डूबते चिल्ला के कहा कि हे प्रभु मुझे बचाइये। ३१ तब यिशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाया और उसे पकड़के कहा कि हे अल्प बिश्वासी तूने क्यों सन्देह किया?। ३२ और जब वे नाव पर आये बयार थम गई। ३३ तब वे जो नाव

पर थे आके उसे दंडवत करके कहनेलगे कि आप ईश्वर के पुत्र हैं।

३४ और जब वे पार गये तब नेसरत के देश में पहुंचे। ३५ और जब वहां के मनुष्यों ने उसे जाना उन्हों ने उस देश की चारों ओर भेजा और सारे रोगियों को उस पास लाये। ३६ और उसकी बिनती किई कि केवल उसके वस्त्र का खंट छूवें और सारे छूनेवाले निरधार चंगे होगये।

१५ पंदरहवां पर्व्व।

१ तब यिरोशलीम के अध्यापकों और फिरूसियों ने यिशु पास आके कहा। २ कि आप के शिष्य प्राचीनों के व्यवहार को क्यों उलंघन करते हैं क्योंकि भोजन खाते हुए वे हाथ नहीं धोते। ३ पर उसने उन्हें उत्तर देके कहा कि तुम भी क्यों अपने व्यवहार से ईश्वर की आज्ञा को उलंघन करतेहो ?। ४ क्योंकि ईश्वर ने यह कहिके आज्ञा किई कि अपनी माता पिता का सन्मान कर और जो माता अथवा पिता को धिक्कारे सो प्राण से मारा जाय। ५ परन्तु तुम कहते हो कि जो कोई माता पिता को कहे कि जो कुछ तुझे मुझसे प्राप्त होना था सो भेंट किया गया। ६ सो अपनी माता अथवा पिता का सन्मान न करे इस रीति से तुमने अपने व्यवहार से ईश्वर की आज्ञा को व्यर्थ किया। ७ अरे कपटियो यिशाया ने तुम्हारे विषय में ठीक भविष्य

कहा। ८ कि ये लोग अपने मुंह से मेरे पास आतेहैं और होंटों से मेरा सन्मान करतेहैं परन्तु उनका मन मुझसे दूर है। ९ पर वे बृथा मेरी सेवा करतेहैं कि मनुष्यों की आज्ञा का उपदेश करतेहैं। १० तब मंडली को बुलाके उन्हें कहा कि सुनो और समझो। ११ जो मुंह में जाती है सो मनुष्य को अशुद्ध नहीं करती परन्तु जो मुंह से निकलती है सो मनुष्य को अशुद्ध करती है।

१२ तब उसके शिष्यों ने आके उसे कहा कि आप जानते हैं कि फिरसी यह वचन सुनके उदास हुए। १३ परन्तु उसने उत्तर दिया और कहा कि हर एक पौधा जिसे मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया उखाड़ा जायगा। १४ उन्हें जाने देओ वे अंधे अंधों के अगुआ हैं और यदि अंधा अंधे का अगुआ होवे तो दोनों गड़हे में गिरपड़ेंगे। १५ तब पथर ने उत्तर दिया और उसे कहा कि इस दृष्टान्त का अर्थ हमें कहिये। १६ तब यिशु ने कहा कि क्या तुम भी अबलों अज्ञान हो?। १७ क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ मुंह में जाताहै सो उदर में पड़ताहै और गड़हे में फेंका जाता है?। १८ परन्तु जो वस्तु मुंह से निकलती हैं मन से बाहर आती हैं और वे मनुष्य को अशुद्ध करती हैं। १९ क्योंकि मन से कुबिचार और हत्या और परस्त्री गमन और व्यभिचार और चोरी और

झूठी साची और ईश्वर की अपनिन्दा। २० येही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं परन्तु विन धोऐ हाथ से भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।

२१ तब यिशु वहां से चलके सूर और सैदा के सिवानें में गया। २२ और देखो कि एक किनानी स्त्री उन सिवानें में से निकलकर चिल्लाके उसे बोली कि हे प्रभु दाऊद के पुत्र मुझपर दया कीजिये मेरी बेटी एक पिशाच से अति दुखित है। २३ परन्तु उसने उसे उत्तर में एक बात न कही और उसके शिष्यों ने आके बिनती करके उसे कहा कि उसे बिदा कीजिये क्योंकि वुह हमारे पीछे चिल्लाती है। २४ तब उसने उत्तर देके कहा कि इसराईल के घराने की खोईहुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी पास भेजा नहीं गया। २५ तब वुह आई और उसे दंडवत करके बोली कि हे प्रभु मेरी सहाय कीजिये। २६ परन्तु उसने उत्तर देके कहा कि उचित नहीं कि बालकों की रोटी लेके कुत्तों को दीजिये। २७ तब उसने कहा सत्य है प्रभु तथापि कुत्ते चूरचार खातेहैं जो उनके स्वामियोंके मंच से गिरते हैं। २८ तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि हे स्त्री तेरा बड़ा बिश्वास तेरी मनसा होवे और उसकी बेटी उसी घड़ी चंगी होगई।

२९ और यिशु वहां से जाके गालील के समुद्र के तीर पर आया और एक पहाड़ पर चढ़के वहां

बैठा। ३० और बड़ी बड़ी मंडली जिनके संग लंगड़े अंधे गूंगे टुंडे और बहुतसे और थे उस पास आई और उन्हें यिशु के चरण पास डाल दिया और उसने उन्हें चंगा किया। ३१ यहां लों कि जब मंडली ने देखा कि गूंगे बोले टुंडे अच्छे हुए लंगड़े चले और अंधे देखने लगे तो आश्चर्यित होके इसराईल के ईश्वर का धन्य माना।

३२ तब यिशु ने अपने शिष्यों को बुलाके कहा कि मंडली पर मुझे दया लगती है इस कारण कि वे तीन दिन से मेरे संग हैं और खाने को कुछ नहीं रखते और मैं उन्हें उपवासी बिदा कि वे मार्ग में निर्बल होजायें। ३३ तब उसके शिष्यों ने उसे कहा कि इस बन में हम इतनी रोटी कहां से लावें कि ऐसी बड़ी मंडली को तृप्त करें। ३४ तब यिशु ने उनसे पूछा कि तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? वे बोले कि सात और कई छोटी छोटी मछलियां। ३५ तब उसने मंडली को भूमि पर बैठने की आज्ञा किई। ३६ और उसने उन सात रोटियों और मछलियों को लेके स्तुति करके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया। ३७ और शिष्यों ने मंडली को। ३८ और वे सब खाके तृप्त हुए और बचे हुए चूरचार से उन्होंने सात टोकरियां भरी उठाईं। ३९ सो स्त्री और बालकों को छोड़ खानेवाले चार सहस्र पुरुष थे। ४० तब मंडली को बिदा करके वुह नाव पर चढ़ा और मजदल के सिवानों में आया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ तब फिरुसी और साद्दूकी आये और परीक्षा उस्से स्वर्ग एक लक्षण दिख। २ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि सांझ को तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है। ३ और बिहान को कि आज गड़बड़ होगा क्योंकि आकाश लाल और भयंकर है अरे कपटियो आकाश के स्वरूप का निर्णय जानते हो परन्तु समयों के चिन्हों को नहीं जानते?। ४ एक दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी लक्षण ढूंढ़ती है पर यूनस भविष्यद्वक्ता के लक्षण को छोड़ उसे कोई लक्षण दिखाया नजायगा और वुह उन्हें छोड़ के चला गया।

५ और जब उसके शिष्य उस पार पहुंचे वे रोटी लेने को भूल गये थे। ६ तब यिशु ने उन्हें कहा कि सोचेत रहो और फिरुसियों और साद्दूकियों के खमीर से चौकस रहो। ७ और वे आपुस में बिचार करके कहनेलगे कि यह रोटी न लानेके कारण हैं। ८ यिशु ने यह जानके उन्हें कहा कि हे अल्प बिश्वासियो क्यों आपुस में बिचार करते हो कि यह रोटी न लानेके कारण है?। ९ क्या तुम अबलों नहीं समझते और चेत नहीं करते उन पांच सहस्र की पांच रोटियां और तुमने कितनी टोकरियां उठाईं? १० और चार सहस्र की सात रोटियां और तुमने कितनी टोकरियां उठाईं?। ११ यह क्योंकर है कि तुम नहीं समझते

कि मैं ने तुम्हें रोटी के बिषय में नहीं कहा परन्तु जिसतें तुम फिरूसियों और सादूकियों के खमीर से चौकस रहो?। १२ तब उन्होंने समझा कि उसने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फिरूसियों और सादूकियों के उपदेश से चौकस होने को कहा।

१३ जब यिशु कैसरिय: फिलिपि के सिवानों में आया उसने अपने शिष्यों से यह कहिके पूछा कि मैं जो मनुष्य का पुत्र हों लोग मुझे क्या कहते हैं। १४ उन्होंने कहा कि कितने तो योहन स्नानकारक, कितने तो इलिया और कितने यिरमीय अथवा भविष्यद्वक्तों में से एक। १५ उसने उन्हें कहा परन्तु तुम क्या कहते हो मैं कौनहों?। १६ तब शिमोन पथर ने उत्तर देके कहा कि आप मसीह जीवत ईश्वर के पुत्र हैं। १७ तब यिशु ने उत्तर दिया और उसे कहा कि हे यूनस शिमोन के पुत्र तू धन्य है क्योंकि मांस और लोहूने तुझपर प्रगट नहीं किया परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने। १८ और मैं भी तुझे कहताहों कि तू पथर है और इस चटान पर मैं अपना मन्दिर बनाऊंगा और नरक के फाटक उस पर प्रबल नहोंगे। १९ और मैं स्वर्गके राज्य की कुंजियों को तुझे देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बांधा जायगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग में खोला जायगा। २० तब उसने अपने शिष्यों को चिता दिया कि किसी मनुष्य से न कहो कि मैं यिशु वुह मसीह हों।

२१ उस समय से यिशु ने अपने शिष्यों को बताना आरंभ किया कि क्योंकर मुझे आवश्यक है कि यिरोशलीम में जाओं और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से बहुतसी पीड़ा पाओं और मारा जाओं और तीसरे दिन फेर उठाया जाओं। २२ तब पथर उसे लेके कहने लगा कि हे प्रभु अपने पर दया कीजिये आप पर यह न होगा। २३ परन्तु उसने फिरके पथर को कहा कि अरे शैतान मेरे आगे से दूर हो तू मेरी लिये ठोकर है क्योंकि तू ईश्वर की बातों को नहीं सोहातीं परन्तु मनुष्यों की। २४ तब यिशु ने अपने शिष्यों को कहा कि यदि कोई मेरे पीछे आया चाहे तो अपनी इच्छा को त्यागे और अपने क्रूस को उठाके मेरे पीछे चला आवे। २५ क्योंकि जो कोई अपने प्राण को बचाने चाहेगा सो उसे गंवावेगा और जो कोई मेरे लिये अपने प्राण को गंवावेगा सो उसे पावेगा। २६ क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ है यदि वुह सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण को गंवावे? अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा?। २७ क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने दूतोंके संग अपने पिता के ऐश्वर्य में आवेगा और तब वुह हर एक मनुष्य को उसकी चाल के समान प्रतिफल देगा। २८ मैं तुम से सत्य कहताहों कि कई एक यहां खड़े हैं जो मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे जबलों मनुष्य के पुत्र को अपने राज्य में आते नदेख लेवें।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

१ और छः दिन के पीछे यिशु पथर और याकूब और उसके भाई योहन को साथ लेके एक ऊंचे पहाड़ पर अलग चढ़गया। २ और उनके आगे उसका रूप औरही होगया और उसका मुंह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हुआ। ३ और देखो कि मूसा और इलिया उस्से बार्त्ता करते दिखाई दिये। ४ तब पतर ने उत्तर देके यिशु से कहा कि हे प्रभु हमें यहां रहना भला है यदि आप की इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आप के और एक मूसा के और एक इलिया के लिये। ५ वुह यह कहि रहा था कि एक उंजिआले मेघ ने उन पर छाया किई और देखो कि उस मेघ से यह कहते हुए एक शब्द निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं अति प्रसन्न हों तुम उसकी सुनो। ६ और जब शिष्यों ने सुना तो वे औंधे मुंह गिरे और बहुत डर गये। ७ तब यिशु ने आके उन्हें छूआ और कहा कि उठो मत डरो। ८ और जब उन्हों ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो यिशु को छोड़ उन्हों ने किसी को न देखा। ९ और जब वे उस पहाड़ से उतरे यिशु ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि जबलों मनुष्य का पुत्र मृत्यु में से फेर न उठे यह दर्शन किसी से न कहना। १० तब उसके शिष्यों ने उसे यह कहके पूछा तो अध्यापक किस लिये कहते हैं कि पहिले

इलिया का आना अवश्य है?। ११ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि इलिया पहिले आवेगा ठीक और समस्त बस्तुन को सुधारेगा। १२ परन्तु मैं तुम्हें कहताहों कि इलिया आचुका है और उन्हों ने उसे नहीं जाना परन्तु जो चाहा सो उन्हों ने उस्से किया इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनसे दुःख पावेगा। १३ तब शिष्यों ने समझा कि उसने योहन स्नान कारक के बिषय में उनसे कहा।

१४ और जब वे मंडली के पास आये एक मनुष्य उसके पास आकर घुटना टेकके बोला। १५ कि हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कीजिये क्योंकि वुह बावला और बड़ा दुःखी है क्योंकि वुह बारंबार आग में और पानी में गिरपड़ता है। १६ और मैं उसे आप के शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे चंगा न करसके। १७ तब यिशु ने उत्तर देके कहा कि हे अबिश्वासी और हठीली पीढ़ी मैं कबलों तुम्हारे संग रहों? मैं कबलों तुम्हारी सहों? उसे इधर मुझ पास लाओ। १८ और यिशु ने उस पिशाच को दपट दिया तब वुह उस्से निकल गया और वुह बालक उसी घड़ी चंगा होगया। १९ तब शिष्यों ने यिशु पास अलग आके कहा कि हम उसे दूर क्यों न करसके?। २० यिशु ने उन्हें कहा कि तुम्हारे अबिश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम से सत्य कहताहों कि यदि तुम एक राईभर बिश्वास रक्खो तो इस पहाड़

को कहोगे कि यहां से टलके वहां जा और वुह जायगा और तुम्हारे कारण कुछ भी अनहोना नहोगा। २१ तिस पर भी इस रीति का नहीं निकलता परन्तु केवल प्रार्थना और ब्रत से।

२२ और जब वे गालील में थे यिशु ने उन्हें कहा कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जायगा। २३ और वे उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दिन फेर उठेगा तब वे अत्यन्त उदास ऊए।

२४ और जब वे कपरनाऊम में आये पटवारियों ने आके पथर से कहा क्या तुम्हारा गुरु कर नहीं देता?। २५ उसने कहा कि हां और जब वुह घर म आया यिशु ने आगे होके उसे कहा कि हे शिमोन। तू क्या समुझता है? पृथिवी के राजा किनसे शुल्क अथवा कर लेते हैं अपनेही पुत्रों से अथवा परदेशियों से?। २६ पथर ने कहा कि परदेशियों से यिशु ने उसे कहा तो बालक निर्बन्ध हैं। २७ तिस पर भी ऐसा नहो कि हम उसके कारण ठोकर होवें तू समुद्र को जा और बंसी डाल और जो मछली पहिले आवे उसे ले और उसका मुंह खोलके तू रोकड़ पावेगा उसे लेकर मेरे और अपने लिये उन्हें दे।

१८ अठारहवां पर्व्व।

१ उसी समय में शिष्यों ने यिशु पास आके कहा कि स्वर्ग के राज्य में कौन सबसे बड़ा है?। २ तब

यिशु ने एक बालक को अपने पास बुलाके उसे उनके मध्य में बैठाया। ३ और कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यदि तुम फिराए नजाओ और बालक के समान नबनो तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे। ४ इस कारण जो कोई आप को इस बालक के समान दीन करेगा सोई स्वर्ग के राज्य में सब से बड़ा है। ५ और जो कोई ऐसे एक बालक को मेरे नाम के लिये ग्रहण करे मुझे ग्रहण करता है। ६ परन्तु जो कोई इन छोटों में से एक को जो मुझ पर बिश्वास रखता है ठोकर खिलावे उसके कारण अति भला होता कि एक चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वुह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता। ७ ठोकरों के कारण जगत पर हाय है क्योंकि ठोकर का आना अवश्य है परन्तु उस मनुष्य पर जिसके कारण ठोकर लगता है हाय है। ८ इस कारण यदि तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर दिलावे उन्हें काट डाल और अपने से फेंकदे तेरे लिये अति भला है कि लंगड़ा अथवा टुंडा जीवन में प्रवेश करना तेरे दो हाथ अथवा दो पांव होवें और तू अनन्त आग में डालाजाय। ९ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे उसे निकालडाल और अपने पास से फेंकदे कि जीवन में काना प्रवेश करना तेरे लिये उस्से भला है कि दो आंखें रखते हुए तू नरक की आग में डालाजाय।

१० चैाकस रहो कि इन छोटों में से एक की निन्दा न करो क्योंकि मैं तुम्हें कहताहों कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। ११ क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए ऊए को बचाने को आया है। १२ तुम क्या समुझतेहो यदि किसी मनुष्य के सैा भेड़ होवें और उसमें से एक भटक जाय क्या वुह निन्नानवे को छोड़ के पहाड़ को नहीं जाता और उस भटकी ऊई को नहीं ढूंढ़ता?। १३ और यदि वुह उसे पाजाय मैं निश्चय तुम्हें कहताहों कि वुह निन्नानवे से जो भटक न गई थीं उस एक से अधिक आनन्दित होवेगा। १४ ऐसाही तुम्हारे स्वर्गीय पिताकी इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक का नाश होवे।

१५ और यदि तेरा भाई तेरे विरोध में पाप करे तो जा और आपुस के स्थान में उसे उसका दोष कह यदि वुह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पाया है। १६ परन्तु यदि वुह न सुने तो एक अथवा दो को अपने संग ले जिसतें दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाय। १७ परन्तु यदि वुह उनकी न माने तो मंडली से कह परंतु यदि वुह मंडली को न माने तो वुह तेरे लिये जैसे अन्यदेशी और पटवारी होवे। १८ मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे सो स्वर्ग में बांधा जायगा और जो कुछ पृथिवी पर खोलोगे सो स्वर्ग में खोला जायगा।

१९ फेर मैं तुम्हें कहता हों कि यदि तुम्में से दो जन पृथिवी पर मिलके किसी बात के लिये प्रार्थना करें वुह मेरे स्वर्गीय पितासे उनके लिये किया जायगा। २० क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे हैं तहां मैं उनके मध्य में हों। २१ तब पथर ने उस पास आके कहा कि हे प्रभु कैबेर मेरा भाई मेरा अपराध करे और मैं उसको क्षमा करों? क्या सात बेर लों?। २२ यिशु ने उसे कहा कि मैं तुझे सात बेर लों नहीं कहता परन्तु सत्तरगुने सात बेर लों।

२३ इस कारण स्वर्ग का राज्य किसी राजासे उपमा किया गया है जिसने अपने सेवकों से लेखा लेनेको ठाना था। २४ और जब वुह लेखा लेने लगा तो एक जन उस पास पहुंचाया गया जो उसके दस सहस्र तोड़े धारता था। २५ और जैसा कि देनेको उस पास कुछ न था उसके स्वामी ने आज्ञा किई कि वुह और उसकी पत्नी और लड़केबाले और सब जो उसका था बेंचा जाय और भरदिया जाय। २६ इसलिये वुह सेवक गिरके उसका गोड़ ले पड़ा और कहा कि हे प्रभु मुझ पर धीरज धरिये और मैं आप को सब भर देउंगा। २७ तब उस सेवक के स्वामी को दया लगी और उसे छोड़ दिया और उसका सारा उधार क्षमा किया। २८ परन्तु ज्यों वुह सेवक बाहर गया उसने अपने संगी सेवकों में से एक को पाया जो उसकी सौ सूकी धारता था और

उसने उसकी नटई पकड़ के उसे कहा कि जो तू धारता है मुझे दे। २९ तब उसका संगी सेवक उसके गोड़ पर गिरा और उसकी बिनती करके बोला कि मुझ पर धीरज धर और मैं तुझे सब भर देउंगा। ३० उसने न माना परन्तु जाके उसे बंधन में डाल दिया जबलों वुह उधार न भरदेय। ३१ और उसके संगी सेवक यह देख के अति दुखी हुए और आके सारी बातों को अपने स्वामी से कहा। ३२ तब उसके स्वामी ने उसे बुला के कहा कि हे दुष्ट सेवक तेरी बिनती करने से मैं ने तुझे सब उधार क्षमा किया। ३३ जैसी दया मैं ने तुझ पर किई तैसी अपने संगी सेवक पर तुझे करनी उचित न थी?। ३४ तब उसके स्वामी ने रिसियाके उसे पीड़ा दायकों को यहां लों सौंपा कि सब जो वुह उसका धारता था भरदेय। ३५ सो यदि हर एक तुम्में से अपने मनसे अपने भाइयों का अपराध क्षमा न करेगा तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम से वैसाही करेगा।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब यिशु ने ये कथा समाप्त किईं वुह गालील से चला गया और यर्दन पार यिहूदियः के सिवानों में आया। २ और बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे होलियां और वहां उसने उन्हें चंगा किया।

३ फिरुसी भी उसकी परीक्षा करते उस पास आके

कहने लगे योग्य है कि मनुष्य हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागे?। ४ उसने उत्तर दिया और उन्हें कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि जिसने आरंभ में उत्पन्न किया उन्हें नर और नारी बनाया। ५ और कहा कि इस कारण मनुष्य अपनी माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनो एक मांस होंगे?। ६ इस लिये वे अबसे दो नहीं परन्तु एक हैं इसलिये जो कि ईश्वर ने जोड़ा है मनुष्य उसे अलग न करे। ७ उन्होंने उसे कहा तो मूसा ने किस लिये आज्ञा किई कि त्यागपत्र देके उसे छोड़ देना?। ८ उसने उन्हें कहा कि मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नियों को त्यागने दिया परन्तु आरंभ से ऐसा नथा। ९ और मैं तुम्हें कहताहों कि जो कोई बिना व्यभिचार के कारण को छोड़ के अपनी पत्नी को त्यागे और दूसरी से बियाह करे सो व्यभिचार करता है और जो कोई उस त्यागी गई से बियाह करे सो व्यभिचार करता है। १० उसके शिष्यों ने उसे कहा कि यदि पत्नी के संग मनुष्य को यह व्यवहार है तो बियाह करना ठीक नहीं। ११ परंतु उसने उन्हें कहा कि इस बचन को सब ग्रहण नहीं करसक्ते परन्तु केवल जिन्हें दिया गया है। १२ क्योंकि कितने हिजड़े हैं जो माता की कोख से ऐसे उत्पन्न हुए और कितने हिजड़े हैं जो मनुष्यों से हिजड़े किये गये और कितने हिजड़े

हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये आप को हिजड़ा बनाया है जो कोई ग्रहण करसके सो ग्रहण करे।

१३ तब उसके पास बालक लाये जिसतें वुह उनपर हाथ रखके प्रार्थना करे तब शिष्य उन पर झुंझलाये। १४ परंतु यिशु ने कहा कि बालकोंको मेरे पास आने देउ और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसोंही का है। १५ और वुह उन पर हाथ रखके वहां से चला गया।

१६ और किसीने आके उसे कहा कि हे उत्तम गुरु मैं कौनसा उत्तम कार्य करों जिसतें अनन्त जीवन पाओं?। १७ उसने उसे कहा कि तू मुझे क्यों उत्तम कहता है? ईश्वर को छोड़ कोई उत्तम नहीं परंतु यदि तुझे जीवन में प्रवेश करनाही है तो आज्ञाओं को पालन कर। १८ उसने उसे कहा कि कौनसी? यिशु ने कहा कि हत्या मत कर व्यभिचार मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मतदे। १९ अपनी माता पिता का सन्मान कर और अपने परोसी से अपने समान प्रीति कर। २० उस तरुण मनुष्य ने उसे कहा कि लड़काई से मैं ने इन सब बातों को माना है अब मुझे क्या चाहिए?। २१ यिशु ने उसे कहा कि यदि तू सिद्ध हुआ चाहे तो जा और अपना सब कुछ बेंचके कंगालों को दे और मेरे पीछे चलाआ और तू स्वर्ग में धन पावेगा। २२ परंतु जब उस तरुन मनुष्य ने यह बचन

सुना तो वुह उदास चला गया क्योंकि उसकी बड़ी संपत्ति थी। २३ तब यिशु ने अपने शिष्यों से कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि धनमान कठिनता से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा। २४ और फेर मैं तुमसे कहताहों कि सूईके छेदसे ऊंट का पैठना उस्से सहज है कि धनमान ईश्वर के राज्य में प्रवेश करे। २५ यह सुनके उसके शिष्य अत्यन्त आश्चर्यित होके बोले फेर कौन बच सक्ता है?। २६ परंतु यिशु ने देखके उन्हें कहा कि मनुष्यों से यह अन होनाहै परंतु ईश्वर से सब कुछ हो सक्ता है।

२७ तब पथर ने उत्तर देके उसे कहा कि देखिये हमने सब कुछ छोड़ा है और आप के साथी ऊए इस कारण हमें क्या मिलेगा?। २८ यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि तुम जो मेरे पीछे आयेहो नये जन्ममें जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा तुम भी बारह सिंहासन पर बैठ के इसराईल की बारह गोष्ठियों का न्याय करोगे। २९ और जिस किसी ने घर अथवा भाई अथवा बहिन अथवा माता अथवा पिता अथवा पत्नी अथवा लड़के बाले अथवा भूमि मेरे नाम के लिये छोड़ा है सो सौगुना पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ३० परंतु बऊत से पहिले पीछले होंगे और पीछले पहिले।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ क्योंकि स्वर्ग का राज्य एक गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला कि अपने दाख की बारी में बनिहारोंको लगावे। २ और जब उसने बनिहारों से दिन भर की सूकी चुकाई उसने उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। ३ और पहर दिन के अटकल में वुह बाहर गया और औरों को हाट में व्यर्थ खड़े देखा। ४ और उन्हें कहा कि तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ कि ठीक है मैं तुम्हें देउंगा और वे चले गये। ५ फेर उसने दो पहर और तीसरे पहर के अटकल में बाहर जाके वैसाही किया। ६ और घंटा भर दिन रहते ज़ए फेर बाहर गया अब औरों को व्यर्थ खड़े पाया और उन्हें कहा कि तुम यहां दिन भर क्यों व्यर्थ खड़े हो?। ७ उन्हों ने उसे कहा इस कारण कि हमें किसी ने काम में न लगाया उसने उन्हें कहा कि तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ कि ठीक है सो तुम्हें दिया जायगा। ८ और जब सांझ ज़ई दाख की बारी के स्वामी ने अपने भंडारी को कहा कि बनिहारों को बुला और पिछले से लेके पहिले लों उन्हें बनी दे। ९ और जितनों ने घंटा भर काम किया था उन्हों ने आके एक एक सूकी पाई। १० परन्तु जब पहिले के आये तो उन्हों ने समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उनमें से भी हरएक ने एक एक सूकी पाई।

११ और पाके वे घर के उत्तम स्वामी के बिरोध में कुड़कुड़ा के बोले। १२ कि इन पिछलों ने एकी घंटा काम किया और आपने उन्हें हमारे तुल्य किया जिन्हों ने दिन का भार और घाम सहा। १३ तब उसने उनमें से एक को उत्तर देके कहा कि हे मित्र मैं तुझे अनीति नहीं करता क्या तू ने मुझे एक सूकी पर नहीं ठहराया ?। १४ अपनी ले और चला जा क्योंकि इस पिछले को मैं तेरेही समान देउंगा। १५ क्या उचित नहीं कि मैं अपने ही में से जो चाहों सो करों ? क्या तेरी आंख इस लिये बुरी है कि मैं भलाहों ?। १६ ऐसाही पीछले अगिले होंगे और अगिले पीछले क्योंकि बहुतेरे बुलाये गये परन्तु थोड़े चुने हुए।

१७ और यिरोशलीम को जाते हुए यिशु बारह शिष्यों को मार्ग में अलग लेगया और उन्हें कहा। १८ कि देखो हम यिरोशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों को सौंपा जायगा और वे उसपर मार डालने की आज्ञा करेंगे। १९ और ठट्ठों में उड़ाने को और कोड़े मारने और क्रूस पर खींचने को अन्यदेशियों को सौंपा जायगा और वुह तीसरे दिन फेर जी उठेगा।

२० तब जबदी के बेटों की माता अपने बेटों के संग उस पास आई और प्रणाम करके उस्से एक बात चाही। २१ तब उसने उसे कहा कि तू क्या चाहती है ? उसने

उसे कहा कि यह कीजिये कि मेरे ये दो बेठे एक आप की दहिनी दूसरा आप की बांईं ओर आपके राज्य में बैठे। २२ परन्तु यिशु ने उत्तर देके कहा कि तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो क्या उस कटोरेसे जिस्से मैं पीनेपर हों पीसक्ते हो? और उस स्नान से जिस्से मैं स्नान पाता हों स्नान पासक्ते हो? वे उसे बोले कि हम सक्ते हैं। २३ उसने उन्हें कहा कि तुम निश्चय मेरे कटोरे से पीओगे और मेरे स्नान से स्नान पाओगे परन्तु मेरी दहिनी और बांईं ओर बैठना मेरे देने में नहीं हैं परन्तु जिनके कारण मेरे पिता ने ठहराया है। २४ और जब उन दसों ने सुना तो वे उन दो भाईयों पर जल उठे। २५ परन्तु यिशु ने उन्हें बुला के कहा कि तुम जानते हो कि अन्य देशियों के अध्यक्ष उन पर प्रभुता करते हैं और जो महान हैं सो उन पर आज्ञा करते हैं। २६ परन्तु तुम्में ऐसा न होगा पर जो कोई तुम्में बड़ा ऊआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे। २७ और जो कोई तुम्में श्रेष्ठ ऊआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे। २८ जैसा मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने नहीं आया परन्तु सेवा करने और बऊतों की सन्ती अपना प्राण मोल में देने को।

२९ और जब वे यिरीहो से जानेलगे एक बड़ी मंडली उसके पीछे हो लिई। ३० और देखो कि दो अंधे जो मार्ग की लग बैठे थे यह सुनके कि यिशु जाता

है चिल्ला के बोले कि हे प्रभु दाऊद के बेटे हम पर दया करिये। ३१ और मंडली ने उन्हें चुप कराने को डपटा परन्तु यह कहिके वे अधिक चिल्लाके बोले कि हे प्रभु दाऊद के बेटे हम पर दया कीजिये। ३२ तब यिशु खड़ा ड़ुआ और उन्हें बुलाके कहा कि तुम क्या चाहते हो मैं तुम्हारे लिये करों। ३३ उन्होंने उसे कहा कि हे प्रभु कि हमारी आंखें खुल जायें। ३४ तब यिशु ने दयाल होके उनकी आंखों को छूआ और तुरन्त उनकी आंखें खुलगईं और वे उसके पीछे होलिये।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

१ और जब वे यिरोशलीम के पास पड़ुंचे और बैतफगा को जलपाई के पहाड़ लों आये तब यिशु ने यह कहि के दो शिष्यों को भेजा। २ कि अपने सन्मुख के गांवमें जाओ और एक बंधीड़ुई गदही को और उसके संग एक बछेरे को तुरन्त पाओगे खोल के मेरे पास लाओ। ३ और यदि कोई तुम्हें कुछ कहे तो कहियो कि प्रभु को उनका आवश्यक है और वुह तुरन्त उन्हें भेजेगा। ४ यह सब कुछ ड़ुआ कि जो बचन भविष्यद्वक्ता ने कहा था संपूर्ण होवे। ५ कि सीहुन की पुत्री से कहो कि देख तेरा राजा गदही पर हां लादूके बछेरे पर चढ़के कोमलता से तेरे पास आता है। ६ तब शिष्यों ने जाके यिशु की आज्ञा के समान किया। ७ और उस गदही को बछेरे समेत लेआये और उनपर

अपना वस्त्र रखके उनपर चढ़ाया। ८ और एक अति बड़ी मंडली ने अपने वस्त्रों को मार्ग में बिछाया औरों ने पेड़ों की डालियां काटीं और मार्ग में बिथराईं। ९ और मंडली जो उसके आगे पीछे जाती थीं पुकार के कहने लगीं कि दाऊद के बेटे को होशाना धन्य वुह जो प्रभु के नाम से आता है होशाना अत्यन्त ऊंचे पर। १० और जब वुह यिरोशलीम में पहुंचा सारा नगर चंचल होके कहनेलगे कि यह कौन है। ११ तब मंडली ने कहा कि यह गालील के नेसरत का यिशु भविष्यद्वक्ता है।

१२ और यिशु ईश्वर के मन्दिर में गया और उन सभों को, जो मन्दिर में बेंचते कीनते थे बाहर निकाल दिया और खुरदियों की चौकियों को और कपोत के बेंचवैयों के बैठकों को उलट दिया। १३ और उन्हें कहा कि यह लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा परन्तु तुमने उसे चोरों की मांद बनाई। १४ और मन्दिर में अंधे और लंगड़े उस पास आये और उसने उन्हें चंगा किया। १५ और जब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उन आश्चर्य कार्यों को, जो उसने किये और लड़कों को मन्दिर में पुकारते और दाऊद के बेटे को होशाना कहते सुना वे अति रिसिया गये। १६ और उसे कहा कि तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं? यिशु ने उन्हें कहा कि हां, क्या तुम ने कधी नहीं पढ़ा है

कि बालकों और दुध पिओं के मुंह से तू ने स्तुति पूरी किई ?। १७ तब उसने उन्हें छोड़ा और नगर से बाहर बैतिनयः में गया और वहां टिका।

१८ और बिहान को जब वुह नगर में जाने लगा उसे भूख लगी। १९ और मार्ग में एक गूलर पेड़ को देख के वुह उस पास आया परन्तु पत्तों को छोड़ उस पर कुछ न पाया और उसे कहा कि तुझ पर अबसे कधी फल नलगे तत्काल गूलर का पेड़ सूख गया। २० और जब शिष्यों ने देखा वे आश्चर्यित होके बोले कि गूलर का पेड़ कैसा हाली मुरझा गया। २१ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यदि तुम्हें बिश्वास रक्खो और सन्देह न करो तो तुम केवल यही न करोगे जो गूलर पेड़ से किया गया है परन्तु यदि तुम इस पहाड़ को भी कहोगे कि उठ और समुद्र में गिरपर तो वैसाही होगा। २२ और सब कुछ जो तुम बिश्वास से प्रार्थना में मांगोगे सो पाओगे।

२३ और जब वुह मन्दिर में आके उपदेश करता था तब प्रधान याजक और लोगों के प्राचीन उस पास आके बोले कि तू किस पराक्रम से यह कार्य करता है ? और किसने तुझे यह पराक्रम दिया है ?। २४ यिशु ने उन्हें उत्तर देके कहा कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हों यदि मुझे बतलाओगे तो मैं भी तुम्हें बतलाओंगा कि मैं किस पराक्रम से यह कार्य करताहों। २५ योहन

का स्नान कहां से था ? स्वर्ग से अथवा मनुष्यों से तब वे आपुस में बिचार करके कहने लगे कि यदि हम कहें कि स्वर्ग से तो वुह हमें कहेगा फेर तुम किस लिये उस पर बिश्वास न लाये ?। २६ परन्तु यदि कहें कि मनुष्यों से तो लोगों से डरते हैं क्योंकि सब योहन को भविष्य-द्वक्ता जानते हैं। २७ और उन्हों ने यिशु को उत्तर देके कहा कि हम नहीं कहिसक्ते तब उसने उन्हें कहा कि मैं भी तुम्हें नहीं बताओंगा कि मैं किस पराक्रम से यह कार्य करता हों। २८ परन्तु तुम्हें क्या बूझ पड़ताहै एक मनुष्य के दो बेटे थे उसने पहिले से आके कहा कि बेटे जा आज मेरे दाख की बारी में काम कर। २९ उसने उत्तर देके कहा कि मेरी इच्छा नहीं परन्तु पछता के पीछे से गया। ३० और उसने दूसरे से आके वैसाही कहा और उसने उत्तर देके कहा कि हे प्रभु मैं जाताहों पर नगया। ३१ उन दोनों में किसने पिता की बात मानी ? उन्हों ने उसे कहा कि पहिलेने यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि पटवारी और बेश्या तुम से आगे ईश्वरके राज्य में जाते हैं। ३२ क्योंकि योहन धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उसकी प्रतीति न किई परन्तु पटवारियों और बेश्याओंने उसकी प्रतीति किई पर तुम देख के पीछे भी न पछताये कि उसकी प्रतीति करते।

३३ दूसरा दृष्टान्त सुनो कि किसी गृहस्थ ने दाख

की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाड़ा बांधा और उस में कोल्हू गाड़ा और एक गड़ बनाया और उसे किसानों को सौंप के परदेश को चला गया। ३४ और फलके समय में उसने अपने सेवकों को किसानों पास भेजा कि वे उसके फल लेवें। ३५ पर किसानों ने उसके सेवकों को पकड़के एक को मारा दूसरे को घात किया और तीसरे को पथराया। ३६ फेर उसने सेवकों को, पहिले से अधिक और, भेजा और उन्हों ने उनसे भी वैसाही किया। ३७ पर अंत में उसने यह कहिके अपने बेटे को उन पास भेजा कि वे मेरे बेटे का आदर करेंगे। ३८ किंतु किसान बेटे को देखके आपुस में बोले कि यह अधिकारी है आओ इसे मारडालें और इसका अधिकार छीन लेवें। ३९ तब उन्हों ने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकाल के मारडाला। ४० सो जब दाख की बारी का स्वामी आवेगा तो उन किसानों को क्या करेगा ?। ४१ उन्हों ने उसे कहा कि वुह उन दुष्टों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी और किसानों को सौंपेगा जो फल रितुन में पहुंचावेंगे। ४२ यिशु ने उन्हें कहा कि तुम ने लिखे हुए में नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा सोही कोने का सिरा हुआ यह परमेश्वर का कार्य है और हमारी दृष्टि में आश्चर्यित। ४३ इस लिये मैं तुम्हें कहताहों कि ईश्वर का राज्य

तुम से लिया जायगा और एक जाति को दिया जायगा जो उसके फल लावेंगे। ४४ सो टुकड़ा टुकड़ा होगा जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा परन्तु जिस पर वुह गिरेगा उसे पीस डालेगा। ४५ और जब प्रधान याजकों और फिरसियों ने उसके दृष्टांत को सुना तो ताड़ गये कि उसने उनके बिषय में कहा था। ४६ परन्तु जब उन्हों ने चाहा कि उस पर हाथ डालें तो मंडली से डरे क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ और यिशु ने उत्तर दिया और दृष्टान्तों में उन्हें फेर कहिके बोला। २ कि स्वर्ग का राज्य किसी राजा के तुल्य है जिसने अपने बेटे के बियाह का जेउंनार किया। ३ और अपने सेवकों को भेजा कि नेउंतहरियों को बियाह में बुलावें परन्तु उन्होंने आने न चाहा। ४ फेर उसने और सेवकों को यह कहिके भेजा कि नेउंतहरियों को कहो कि देखो मैं ने अपना भोजन सिद्ध किया है मेरे बैल और पले पशु मारे गये और सारी वस्तु धरी हैं बियाह के भोज में आओ। ५ परन्तु वे सुरत न करके चलेगये एक अपने खेत को और दूसरा अपने बैपार को। ६ और रहे हुओं ने उसके सेवकों को पकड़ के दुर्दशा किई और उन्हें घात किया। ७ परन्तु राजा सुन के क्रुद्ध हुआ और अपने सेनों को भेज के और उन हत्यारों को नाश किया और उनके

नगर को फूंक दिया। ८ तब उसने अपने सेवकों से कहा कि बियाह का भोज सिद्ध है परन्तु नेउंतहरी अयोग्य हैं। ९ इस लिये सड़कों में जाओ और जितने तुम्हें मिलें बियाह में बुलाओ। १० तब सेवक निकल के सड़कों में गये और क्या बुरे क्या भले जितनों को पाया एकट्ठे किया और भोजयों से नेउंतहरी से भर गया। ११ परन्तु राजा नेउंतहरियों को भीतर देखने को आया और वहां एक जन को बिना बियाह के बस्त्र से पाया। १२ और उसने उसे कहा कि हे मित्र तू किस रीति से बियाह के बस्त्र बिना यहां आया परंतु उसका मुंह बंद होगया। १३ तब राजा ने अपने सेवको से कहा कि उसके हाथ पांव बांध के उसे लेजाओ और बाहर आंधियारेमें डालदेउ जहां रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि बहुतेरे बुलाये गये परंतु भाए ऊए थोड़े हैं।

१४ तब फिरसियोंने जाके उसे बातों में फंसाने की जुगुत की। १५ सो उन्होंने अपने शिष्यों को हिरोदियों के संग उस पास यह कहला भेजा। १६ कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और सच्चाई से ईश्वर का मार्ग सिखाते हैं और किसी का खटका नहीं रखते क्योंकि आप किसी को मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करते। १७ इसलिये हमें कहिये आप क्या समझते हैं? कैसर को कर देना योग्य है अथवा नहीं?। १८ तब यिशु ने

उनकी दुष्टता बूझ के कहा कि अरे कपटियो तुम क्यों मेरी परीक्षा करते हो। १९ मुझे कर का रोकड़ दिखाओ तब वे उस पास एक सूकी लाये। २० और उसने उन्हें कहा कि यह मूरत और लिखित किसका?। २१ उन्हों ने उसे कहा कि कैसर का तब उसने उन्हें कहा इस लिये जो कैसर की हैं कैसर को देओ और जो ईश्वर की हैं ईश्वर को। २२ वे यह सुनके आश्चर्यित ऊए और उसे छोड़के चलेगये।

२३ उसी दिन सादूकी जो मृतकों के फेर उठने को मुकरते हैं उस पास आये और उसे यह कहके पूछा। २४ कि हे गुरु मूसा ने कहा कि जब कोई पुरुष निर्बंश मरे तब उसका भाई उसकी पत्नी से बियाह करे और अपने भाई के निमित्त बंश चलावे। २५ अब हमों में सात भाई थे और पहिला बियाह कर के मर गया और निर्बंश था अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया। २६ इसी रीति से दूसरा भी और तीसरा सातवें लों। २७ और सबसे पीछे वुह स्त्री भी मर गई। २८ इस कारण फेर उठने में उन सातों में से वुह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उन सभोंने उसे रक्खा था?। २९ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि लिखे ऊए और ईश्वर के पराक्रम से अज्ञान हो के चूक करते हो। ३० क्योंकि फेर उठने में वे बियाह नहीं करते न बियाह में दिये जाते हैं परंतु स्वर्ग में ईश्वर के दूतों के तुल्य हैं। ३१

परंतु मृत्यु से फेर उठने के विषय में क्या तुमने नहीं पढ़ा जो ईश्वर ने तुम्हें कहा ?। ३२ कि मैं इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हों ? ईश्वर मृतकों का ईश्वर नहीं परंतु जीवतों का। ३३ और जब मंडली ने सुना तो उसके उपदेश से आश्चर्यित हुईं।

३४ परन्तु जब फिरसियों ने सुना कि उसने साढूकियों का मुंह बन्द किया तो वे बटुर गये। ३५ और उनमें से एक व्यवस्था के ज्ञाता ने उसकी परीक्षा करके पूछा। ३६ कि हे गुरु व्यवस्था में बड़ी आज्ञा कौनसी है?। ३७ यिशु ने उसे कहा कि अपने ईश्वर परमेश्वर को अपने सारे अन्त:करण से और अपने सारे प्राण से और अपने सारे मन से प्यार कर। ३८ पहिली और बड़ी आज्ञा यही है। ३९ और दूसरी उसी के समान है कि अपने परोसी को अपने तुल्य प्यार कर। ४० सारी व्यवस्था और भविष्य लिखित इन्हीं दोनों आज्ञाओं में संबन्ध हैं।

४१ जबलों फिरसी एकट्ठे थे यिशु ने उन्हें यह कहिके पूछा। ४२ कि मसीह को क्या समझते हो वुह किसका बेटा है ? वे बोले कि दाऊद का। ४३ उसने उन्हें कहा तो दाऊद आत्मा से क्यों यह कहिके उसे प्रभु कहता है। ४४ कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को कहा कि तू मेरी दहिनी ओर बैठ जबलों मैं तेरे शत्रुन को तेरे पांव की

पीढ़ी करें ?। ४५ सो जब दाऊद उसे प्रभु कहे तो वुह किस रीति से उसका पुत्र है ?। ४६ पर कोई मनुष्य उत्तर में उसे एक बात न कहि सका और उसी दिन से किसी का हियाव न ज़ुआ कि उसे फेर पूछे।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब यिशु मंडली और अपने शिष्यों को कहिके बोला। २ कि अध्यापक और फिरूसी मूसा के आसन पर बैठते हैं। ३ इसलिये जो कुछ वे तुम्हें मान्ने को कहें उसे मानो और पालन करो परन्तु उनके समान मत करो क्योंकि वे कहते हैं और नहीं करते। ४ इसलिये कि वे भारी बोझे बांधतेहैं जिनका उठाना कठिन है और मनुष्यों के कंधे पर रखते हैं परन्तु आप उन्हें एक अंगुली से हिलाने नहीं चाहते। ५ पर वे अपने सारे कार्यों को मनुष्यन को दिखाने के लिये करते हैं वे अपने जंत्रों को चौड़ा करतेहैं और अपने वस्त्रों के अंचल को बढ़ाते हैं। ६ और जेवनार में प्रधान स्थान और मंडली में श्रेष्ठ आसन। ७ और हाट में नमस्कार को और यह कि मनुष्य उन्हें गुरु गुरु कहें इच्छा रखतेहैं। ८ परन्तु तुम गुरु मत कहाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु मसीह है और तुम सब भाई हो। ९ और पृथिवी पर किसी को पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा पिता एक स्वर्ग में है। १० और तुम गुरु मत कहाओ क्योंकि तुम्हारा गुरु एक मसीह है। ११ परन्तु

जो तुम्में श्रेष्ठ है सो तुम्हारा सेवक होगा। १२ और जो कोई अपने को बढ़ावेगा घटाया जायगा और जो कोई आप को दीन करेगा बढ़ाया जायगा।

१३ परन्तु अरे कपटी अध्यापको और फिरूसियो तुम पर हाय है इसलिये कि स्वर्ग का राज्य मनुष्यों पर बंद करते हो क्योंकि तुम आप भीतर नहीं जाते और जो भीतर जाने चाहते हैं उन्हें रोकते हो। १४ अरे कपटी अध्यापको और फिरूसियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम रांड़ों के घरों को निंगलतेहो और छलसे बढ़ा बढ़ा के प्रार्थना करते हो इसलिये तुम्हें अति बड़ा दंड होगा। १५ अरे कपटी अध्यापको और फिरूसियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम एक को अपने मति में लाने को समुद्र और पृथिवी की चारों ओर फिरतेहो और जब वुह आचुका तुम उसे अपने से दूना नरक का पुत्र बनातेहो। १६ अरे अंधे अगुओ तुम पर हाय है जो कहतेहो कि जो कोई मन्दिर की किरिया खाय सो कुछ नहीं परन्तु जो कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाय सो उधारनिक है। १७ अरे मूर्ख और अंधे कौन अति बड़ा है सोना अथवा मन्दिर जो सोने को पवित्र करताहै?। १८ और जो कोई बेदी की किरिया खाय सो कुछ नहीं परन्तु जो कोई उस पर के दान की किरिया खाय सो उधारनिक है। १९ अरे मूर्ख और अंधे कौन बड़ा है दान अथवा बेदी जो दान को पवित्र

करती है ?। २० इस लिये जो कोई बेदी की किरिया खाय सो उसकी और उस पर की सब बस्तुन की किरिया खाताहै। २१ और जो कोई मन्दिर की किरिया खाय सो उसकी और जो उसमें रहताहै किरिया खाता है। २२ और जो स्वर्ग की किरिया खाय सो ईश्वर के सिंहासन की और उसकी जो उसपर बैठताहै किरिया खाताहै।

२३ अरे कपटी अध्यापको और फिरसियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम पुदीना और सोआ और जीरा का दसवां भाग देतेहो और व्यवस्था का अति बड़ा न्याय और दया और बिश्वास को छोड़ दिया है उचित था कि तुम इन्हें करते और उन्हें न छोड़ते। २४ अरे अंधे अगुओ जो मच्छड़ को छान लेतेहो और ऊंटों को निगलतेहो। २५ अरे कपटी अध्यापको और फिर-सियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम कटोरे और थाली के बाहर बाहर मांजते हो परन्तु भीतर भीतर बरबसी और कुबराव से भरेहुए हैं। २६ अरे अंधे फिरसियो पहिले कटोरे और थाली के भीतर भीतर मांजो जिसतें उनके बाहर बाहर भी निर्म्मल होवे।

२७ अरे कपटी अध्यापको और फिरसियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम श्वेत समाधिन के समान हो जो बाहर बाहर निश्चय सुन्दर दिखाई देते हैं परन्तु भीतर में मृतकों के हाड़ से और समस्त अपवित्रता से

भरेहुए हैं। २८ ऐसाही तुम भी बाहर बाहर मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देतेहो परन्तु भीतर से कपटाई और पाप से भरे हो। २९ अरे कपटी अध्यापको और फिरूसियो तुम पर हाय है क्योंकि तुम भविष्यद्वक्तों के समाधिन को बनाते हो और धर्म्मियों के समाधिन को सिंगार करते हो। ३० और कहते हो कि यदि हम अपने पितरों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्तों के लोहू में उनके साथी न होते। ३१ इस कारण तुम अपने अपने साक्षी हो कि तुम भविष्यद्वक्तों के बधिकों के लड़के हो। ३२ अच्छा तुम अपने पितरों के नपुओं को पूरा करो। ३३ अरे सांपो अरे नाग बंशियो तुम नरक के दंड से क्योंकर भागोगे ?। ३४ इस कारण देखो मैं भविष्यद्वक्तों और बुद्धिमानों और अध्यापकों को तुम्हारे पास भेजता हों और उनमें से तुम कितनों को घात करोगे और क्रूस पर मारोगे और कितनों को मंडलियों में पीटोगे और नगर नगर ताड़ना करोगे। ३५ जिसतें धर्म्मियों का लोहू जो पृथिवी पर बहाया गया है धर्म्मी हाबील के लोहू से लेके बाराखिया के बेटे सिखरिया के लोहू लों जिसे तुमने मन्दिर और बेदी के मध्य में घात किया तुम सभों पर आवे। ३६ मैं तुमसे सत्य कहता हों कि ये सब इस पीढ़ी पर पड़ेंगी। ३७ हे यिरोशलीम यिरोशलीम जो भविष्यद्वक्तों को घात करती हैं और जो तेरे पास भेजेगये हैं उन्हें पथराती है मैं ने कितने

बेर चाहा कि तेरे बालकों को ऐसे एकट्ठे करों जैसी कुक्कुटी अपने चिंगनें को पंखोंके तले बटोरती हैं परन्तु तुमने न चाहा। ३८ देखो तुम्हारे लिये तुम्हारा घर उजाड़ छोड़ा जाता है। ३९ क्योंकि मैं तुम्हें कहताहों कि तुम मुझे अब से फेर न देखोगे जबलों यह न कहोगे कि धन्य वुह जो परमेश्वर के नाम से आता है।

२४ चौवीसवां पर्ब्ब।

१ यिशु मन्दिर से निकल कर बाहर गया और उसके शिष्य मन्दिर की वनावट दिखाने को उस पास आये। २ और यिशु ने उन्हें कहा कि तुम यह सब नहीं देखतेहो? मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यहां बिनगिराये एक पत्थर दूसरे पर न छूटेगा।

३ और जब वुह जलपाई के पहाड़ पर बैठा उसके शिष्य अलग उस पास आके बोले कि हमें कहिये कि यह सब कब होंगी? और आप के आवने का और जगत के अन्तका क्या चिन्ह है?। ४ तब यिशु ने उत्तर दिया और उन्हें कहा चौकस रहो कि कोई मनुष्य तुम्हें न भरमावे। ५ क्योंकि मेरे नाम से बहुतेरे यह कहते हुए आवेंगे कि मैं मसीह हों और बहुतों को भरमावेंगे। ६ और तुम संग्राम और संग्रामों की चर्चा सुनोगे चौकस होओ और मत घबराइयो क्योंकि इन सभों का होना अवश्य है परंतु अन्त अभी नहीं है। ७ क्योंकि लोग लोग पर और राज्य राज्य पर उभडेंगे और

अकाल और मरी पड़ेंगी और अनेक स्थान में भुइंडोल होंगे। ८ यह सब बिपत का आरंभ है। ९ तब वे तुम्हें कष्टपाने में डालेंगे और घात करेंगे और मेरे नाम के लिये सारे जातिगण तुम से बैर करेंगे। १० और तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरे को पकड़वायेगा और एक दूसरे से बैर करेगा। ११ और बहुत से मिथ्या भविष्यद्वक्ता प्रगट होंगे और बहुतेरों को भरमावेंगे। १२ और पाप के अति होने के कारण बहुतेरों का प्रेम ठंडा होजायगा। १३ परंतु जो अंत्य लों सहेगा सोई मुक्ति पावेगा। १४ और सारे जातिगणों के साक्षी के लिये राज्य का यह मंगल समाचार सारे जगत में प्रचारा जायगा और तब अन्त होगा।

१५ इसी लिये जब तुम दानियल भविष्यद्वक्ता की कही हुई नाश की घिनित बस्तुन का पवित्र स्थान में स्थिर देखो जो पढ़े सो सोचे। १६ तब जो यिहूदियः में होवें सो पहाड़ों को भागें। १७ जो कोठे पर होवे सो अपने घर से कुछ लेने को न उतरे। १८ और जो खेत में होवे सो अपना वस्त्र लेने को न फिरे। १९ और हाय उन पर जो उन्हीं दिनों में गर्भिणी और दूध पिलातियां होंगी। २० परन्तु प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना जाड़े में अथवा बिश्राम दिन में न होय। २१ क्योंकि तब ऐसा महा कष्ट होगा जैसा जगत के आरंभ से अबलों न हुआ और न कधी होगा। २२ और यदि

वे दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता परंतु चुने ऊओं के कारण वे दिन घटाये जायेंगे। २३ तब यदि कोई तुम्हें कहे कि देखो मसीह यहां अथवा वहां है प्रतीति मत करियो। २४ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठेंगे और ऐसे बड़े बड़े चिह्न और आश्चर्य दिखावेंगे कि यदि होनहारहोता तो वे चुने ऊओं को भी भरमाते। २५ देखो मैं आगे से तुम्हें कहिचुकाहों। २६ इस कारण यदि वे तुम्हें कहें कि देखो वुह बन में है तो बाहर मत जाइयो अथवा कि देखो गुप्त कोठरियों में है प्रतीति मत करियो। २७ क्योंकि जिस रीति से बिजुली पूर्ब में चमकती है और पच्छिम लों लौकती है वैसेही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। २८ क्योंकि जहां कहीं लोथ है तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

२९ उन दिनों के कष्ट के पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा होजायगा और चंद्रमा अपना उंजियाला न देगा और तारे स्वर्ग से गिरेंगे और स्वर्गों की दृढ़ता हिलजायेंगी। ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न स्वर्ग में दिखाई देगा और उस समय में पृथिवी के सारे लोग विलाप करेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम के साथ और बड़े बिभव से आकाश के मेघों पर आते देखेंगे। ३१ और वुह अपने दूतों को तुरही के महा शब्द के

संग भेजेगा और वे उसके चुने ऊओं को चारों पवन से स्वर्ग के एक खूंट से दूसरे लों एकट्ठा करेंगे।

३२ अब गूलरपेड़ से एक दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल होती है और पत्ते निकलते हैं तुम जानतेहो कि तपन समीप है। ३३ इसी रीति से जब तुम यह सब वस्तें देखो तो जानियो कि वुह समीप अर्थात द्वारों पर। ३४ मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी बीत न जायगी जबलों ये सब बातें पूरी न होवें। ३५ स्वर्ग और पृथिवी बिलाय जायंगी परन्तु मेरे वचन न बिलाय जायेंगे। ३६ परंतु उस दिन और उस घड़ी के मेरे पिता को छोड़ स्वर्ग के दूत भी कोई नहीं जानते। ३७ पर जैसा नूह के दिनों में ऊआ मनुष्य के पुत्र का आनाभी ऐसाही होगा। ३८ क्योंकि जिस रीति से जलमय के दिनों के आगे वे खाते पीते थे बियाही करते थे और बियाह में दियेजाते थे उस दिन लों कि नूह जहाज में पैठा। ३९ और न जाना जबलों बाढ़ आई और उन सभों को लेलिया तैसे मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। ४० तब खेत में दो होंगे एक पकड़ा जायगा और दूसरा छूट जायगा। ४१ दो चक्की पीसतियां होंगी एक पकड़ी जायगी और दूसरी छूट जायगी।

४२ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा। ४३ परंतु यह

जाने कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस पहर में आवेगा तो वुह जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४४ इस लिये तुम भी चौकस रहो क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसी घड़ी में आवेगा कि तुम्हें चेत न होगा। ४५ फेर वुह बिश्वासी और बुद्धिमान सेवक कौन है जिसे उसका प्रभु अपने घराने पर प्रधान करेगा कि समय में उन्हें भोजन करावे?। ४६ धन्य वुह सेवक जिसे उसका प्रभु आके ऐसा करतेहुए पावे। ४७ मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि वुह उसे अपने सारे धन पर प्रधान करेगा। ४८ परन्तु यदि वुह दुष्ट सेवक अपने मन में कहे कि मेरा प्रभु आने में अबेर करता है। ४९ और अपने संगी सेवकों को मारने और मद्यपों के संग खाने पीने लगे। ५० तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन में आवेगा कि वुह बाट न जोहताहो और जिस घड़ी वुह निश्चिन्तहो। ५१ और उसे काट डालेगा और उसका भाग कपटियों के संग देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

१ उस समय में स्वर्ग का राज्य दस कन्या के समान होगा जो अपने अपने दीपक को लेकर दूल्हा को भेंट को निकलीं। २ और उनमें पांच चतुरी और पांच मूर्ख थीं। ३ जो मूर्ख थीं उन्होंने अपने अपने दीपक को उठालिया और तेल अपने संग न लिया। ४ परन्तु

चतुरियों ने अपने पात्रों में दीपकों के संग तेल लिया। ५ और जबलों दूल्हा ने अबेर किया वे सब ऊंघगईं और सो गईं। ६ और आधी रात को धूम मची कि देखो दूल्हा आता है उसकी भेंट को निकलो। ७ तब उन सब कंआरियों ने उठकर अपने दीपकों को सवांरा ८ और मूर्खों ने चतुरियों से कहा कि अपने तेल में से हमें देओ क्योंकि हमारे दीपक बुझते हैं। ९ परन्तु चतुरियों ने उत्तर देके कहा न होवे कि हमारे और तुम्हारे लिये बस नहो इस लिये भला है कि तुम बेचवैयों पास जाओ और अपने लिये मोल लेओ। १० और जब वे मोल लेने को गईं दूल्हा आया और जो लैस थीं सो उसके संग बियाह भोज में गईं और द्वार बंद हुआ। ११ पीछे वे कन्या भी यह कहतीहुई आईं कि हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये। १२ परन्तु उसने उत्तर देके कहा मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि मैं तुम्हें नहीं जानता। १३ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि मनुष्य का पुत्र कौन से दिन और कौन सी घड़ी में आवेगा।

१४ क्योंकि यह उस पुरुष के समान है जिसने परदेश को जाते हुए अपने सेवकों को बुलाया और अपनी संपत्ति उन्हें सौंप दिई। १५ और एक को उसने पांच तोड़े दिये दूसरे को दो और तीसरे को एक हर एक मनुष्य को उसके बित के समान दिया और तुरन्त चला

गया। १६ तब जिसने पांच तोड़े पाये थे सो गया और उसने लेन देन किया अरु और पांच तोड़े अधिक कमाये। १७ और इसी रीति से जिसने दो पाये थे उसने भी दो और कमाये। १८ परन्तु जिसने एक पाया था उसने जाके भूमि को खोद के अपने प्रभु के रोकड़ को छिपाया। १९ परंतु बहुत दिन के पीछे उन सेवकों का स्वामी आया और उसने लेखा लेने लगा। २० तब जिसने पांच तोड़े पाये थे वुह सो आया और पांच तोड़े और भी लाया और कहा कि हे प्रभु आपने मुझे पांच तोड़े सैांपे थे देखिये मैं ने उनसे पांच तोड़े अधिक कमाये। २१ उसके स्वामी ने उसे कहा कि धन्य हे अच्छे और बिश्वासी सेवक तू थोड़ी सी बस्तु में बिश्वासी निकला मैं तुझे बहुत सी बस्तु पर प्रधान करोंगा तू अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर। २२ जिसने दो तोड़े पाए थे वुह भी आया और बोला कि हे प्रभु आपने मुझे दो तोड़े सैांपे थे देखिये मैं ने उनसे दो तोड़े अधिक कमाये। २३ उसके स्वामी ने उसे कहा कि धन्य हे अच्छे और बिश्वासी सेवक तू थोड़ी सी वस्तु में बिश्वासी निकला मैं तुझे बहुत सी बस्तु पर प्रधान करोंगा तू अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर। २४ तब जिसने एक तोड़ा पाया था सो आया और कहा कि हे प्रभु मैं आप को जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं और लवते है जहां आपने नहीं बोया और एकट्ठे

करते हैं जहां आपने नहीं बिथराया। २५ इस लिये मैं डरा और जाके आपके तोड़े को भूमि में गाड़ रक्खा सो अपना देख लीजिये। २६ उसके प्रभु ने उसे उत्तर देके कहा कि हे दुष्ट और आलसी सेवक तूने जाना कि जहां मैं ने नहीं बोया तहां लवताहों और जहां मैं ने नहीं बिथराया तहां एकट्ठा करताहों। २७ इस लिये तुझे उचित था कि मेरे रोकड़ कोठी में रखता और आते ऊए मैं अपना बिआज समेत पाता। २८ इस लिये उस्से वुह तोड़ा लेलेउ और जिस पास दस तोड़े हैं उसे देउ। २९ क्योंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और उसकी अधिक बढ़ती होगी परंतु जिस पास कुछ नहीं है उस्से वुह भी जो उसके पास है लिया जायगा। ३० और उस निकम्मे सेवक को बाहर अंधियारे में डालदेउ जहां रोना और दांत पीसना होगा।

३१ जब मनुष्यका पुत्र सारे पवित्र दूतों के संग अपने विभव में आवेगा तब वुह अपने बिभव के सिंहासन पर बैठेगा। ३२ और उसके आगे सारे जातिगण एकट्ठे किये जायंगे और वुह एक को दूसरे से अलग करेगा जैसे गड़ेरिया भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। ३३ और वुह भेड़ों को अपनी दहिनी परंतु बकरियों को अपनी बांई ओर रक्खेगा।

३४ तब जो राजा की दहिनी ओर हैं वुह उन्हें

कहेगा कि आओ मेरे पिता के धन्य लोग उस राज्य के अधिकारी होओ जो जगत के आरंभ से तुम्हारे कारण सिद्ध कियागया है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खिलाया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम ने मुझे उतारा। ३६ नंगा था और तुम ने मुझे पहिनाया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सेवा किई मैं बंधन में था और तुम मुझ पास आये। ३७ तब धर्मी उसे उत्तर देके कहेंगे कि हे प्रभु कब हमने आप को भूखा देखा और भोजन दिया अथवा प्यासा और पिलाया ?। ३८ अथवा हम ने कब आप को परदेशी देखा और आदर किया ? अथवा नंगा और पहिनाया ?। ३९ अथवा कब हम ने आप को रोगी अथवा बंधन में देखा और आप के पास आये ?। ४० तब राजा उत्तर देके उन्हें कहेगा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि जैसा तुम ने मेरे इन छोटे भाइयों में से अति छोटे से किया तुम ने मुझ से किया।

४१ तब जो उसकी बांई ओर हैं वुह उन्हें कहेगा कि अरे स्रापितो मेरे आगे से, उस अनन्त आग में, जो पिशाच और उसके दूतों के कारण सिद्ध किई गई है दूर होओ। ४२ क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे न खिलाया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे न पिलाया। ४३ मैं परदेशी था और तुम ने मुझे न उतारा नंगा था और तुम ने मुझे न पहिनाया रोगी और बंधन में था

और तुम ने मेरी सुधि न लिई। ४४ तब वे भी उसे उत्तर देके कहगे कि हे प्रभु कब हमने आप को भूखा अथवा प्यासा अथवा परदेशी अथवा नंगा अथवा रोगी अथवा बंधन में देखा और आप की सेवा न किई। ४५ तब वुह उत्तर देके उन्हें कहेगा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि जैसा तुम ने इन अति छोटों में से एक से न किया तुम ने मुझे न किया। ४६ और ये सब अनन्त पीड़ा में जायेंगे परंतु धर्मी अनन्त जीवन में।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब यिशु ये सब बातें कहि चुका तो उसने अपने शिष्यों से कहा। २ कि तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे बीतजाने का पर्ब्ब होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर मारे जाने के लिये पकड़वाया जायगा।

३ तब प्रधान याजक और अध्यापक और लोगों के प्राचीन कायफा नाम प्रधान याजक के सदन में एकट्ठे हुए। ४ और परामर्श किया कि यिशु को कपट से पकड़के मारडालें। ५ परन्तु उन्हों ने कहा कि पर्ब्ब में नहीं नहो कि लोगों में हौरा मचे।

६ और जब यिशु बैतमिया में कोढ़ी शिमन के घर था। ७ एक श्वेत पत्थर की डिबिया में बहुत मूल्य सुगंध तेल लिए हुए एक स्त्री उस पास आई और उसके बैठने के समय उसके सिर पर ढाल दिया। ८ परन्तु

उसके शिष्यों ने देख के जलजलाहट से कहा कि यह व्यर्थ उठान किस कारण है?। ९ क्योंकि यह सुगंध तेल बहुत मोल पर बेचा जाता और कंगालों को दिया जाता। १० जब यिशु ने जाना उसने उन्हें कहा कि तुम इस स्त्री को क्यों छेड़तेहो उसने मुझ पर उत्तम कार्य किया है। ११ क्योंकि कंगाल तुम्हारे संग सदा हैं परन्तु मैं सदा नहीं हों। १२ क्योंकि उसने जो यह सुगंध तेल मेरे देह पर डाला सो मेरे गाड़ने के लिये किया। १३ मैं तुम से सत्य कहता हों कि सारे जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार प्रचारा जायगा यह भी जो इस स्त्री ने किया उसके स्मरण के कारण कहा जायगा।

१४ तब उन बारह में से एक जो यिहूदा इस्करियती कहाता था प्रधान याजकों के पास जाके बोला। १५ कि यदि मैं उसे तुम्हें सैांप देउं तो तुम मुझे क्या देओगे? तब उन्हों ने उस्से तीस टुकड़े चांदी पर ठीक किया। १६ और उस समय से वुह उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ता था।

१७ और अखमीरी रोटी के पहिले दिन शिष्यों ने यिशु पास उसे कहा कि आप कहां चाहते है कि हम आप के भोजन के लिये बीतजाना सिद्ध करें। १८ उसने कहा कि नगर में अमुक मनुष्य पास जाओ और उसे कहो कि गुरु ने कहा है कि मेरा समय आ पहुंचा

मैं अपने शिष्यों के संग बीतजाना तेरे घरमें रक्खोंगा। १९ और जैसा यिशु ने ठहराया था शिष्यों ने बीत-जाना सिद्ध किया।

२० और जब सांझ हुई वुह उन बारह के संग बैठ गया। २१ और जब वे भोजन कर रहे थे उसने कहा कि मैं तुम से सत्य कहताहों कि तुम्में से एक मुझे पकड़वावेगा। २२ तब वे अति उदासीन हुए और उनमें से हरएक उसे कहने लगा कि हे प्रभु क्या मैं हों। २३ तब उसने उत्तर दिया और कहा कि जो मेरे संग थाली में हाथ बोरता है सोई मुझे पकड़वावेगा। २४ जैसा कि उसके विषय में लिखा है मनुष्य का पुत्र जाता है परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस्से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जायगा उस मनुष्य के लिये भला होता जो वुह उत्पन्न न होता। २५ तब जिसने उसे पकड़वाया अर्थात यिहूदा ने उत्तर देके कहा कि हे गुरु क्या मैं हों ? उसने उसे कहा कि तू ने आपही कहा।

२६ और जब वे भोजन कर रहेथे यिशु ने रोटी लिई और धन्यमान के तोड़ी और शिष्यों को दिई और कहा कि लेओ खाओ यह मेरा देह है। २७ और उसने कटोरा भी लिया और धन्यमान के उन्हें देके कहा कि तुमसब इस्से पीओ। २८ क्योंकि नये नियम का यह मेरा लोहू है जो बहुतों के पाप मोचन के लिये बहाय जाता है। २९ परंतु मैं तुम्हें कहताहों कि

मैं दाख का रस अबसे आगे न पीओंगा उस दिनलों जब कि मैं अपने पिताके राज्य में तुम्हारे संग उसे नया पीओं।

३० और एक भजन गाके वे बाहर निकल के जलपाई के पहाड़ को गये। ३१ तब यिशु ने उन्हें कहा कि इसी रात तुमसब मुझसे भटक जाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारोंगा और झुंड की भेड़ छिन्न भिन्न हो जायेंगी। ३२ परंतु फेर उठायेजाने के पीछे मैं तुमसे आगे गालील को जाऊंगा। ३३ पथर ने उत्तर देके उसे कहा कि यद्यपि आप से सब भटकें मैं कधी न भटकोंगा। ३४ तब यिशु ने उसे कहा कि मैं तुझे सत्य कहता हों कि इसी रात कुक्कट के बोलने से आगे तू तीन वार मुझसे मुकरेगा। ३५ पथर ने उसे कहा कि यद्यपि मेरा मरना आप के संग होवे तथापि मैं आप को न मुकरोंगा सब शिष्यों ने भी ऐसाही कहा।

३६ तब एक स्थान में जो जसमन कहावता है यिशु उसके संग आया और शिष्यों से कहा कि यहां बैठो जबलों मैं वुह जाके प्रार्थना करों। ३७ और उसने पथर और सबदी के दो बेटों को संग लिया और उदासीन होके अति शोकित होने लगा। ३८ तब उसने उन्हें कहा कि मेरा प्राण मृत्यु लों अति उदास है तुम यहां ठहरो और मेरे संग जागते रहो। ३९ और

वुह थोड़ा आगे बढ़ के औंधे मुंह गिरपड़ा और यह कहिके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता यदि होसके तो यह कटोरा मुझ्से टलजाय तिस पर भी मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी होवे। ४० तब वुह शिष्य पास आया और उन्हें सोते पाया और पथर से कहा कि तुम घंटे भर मेरे संग जागने सके?। ४१ जागते रहो और प्रार्थना करो जिसतें तुम परीक्षा में न पड़ो आत्मा तो लैस है ठीक परन्तु शरीर दुर्बल है। ४२ वुह दूसरे बार फेर गया और प्रार्थना करके बोला कि हे मेरे पिता यदि मेरे पीने बिना यह कटोरा मुझ्से टल न जाय तो तेरी इच्छा होय। ४३ तब उसने आके उन्हें फेर सेते पाया क्योंकि उनकी आंखें भारी थीं। ४४ और वुह उन्हें छोड़ के फेर चला गया और वही वचन कहि के तीसरे बार प्रार्थना किई। ४५ फेर वुह अपने शिष्य पास आया और उन्हें कहा कि अब सोते रहो और बिस्राम करो देखो घड़ी आ पहुंची है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया जाता है। ४६ उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो आ पहुंचा।

४७ और जब वुह कहि रहा था देखो कि यिहूदा बारह में से एक अपने संग एक बड़ी मण्डली खड्ग और लाठियां लियेहुए प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों की ओर से लेके आया। ४८ अब उसके पकड़वाने वालेने उन्हें यह कहिके पता दिया था कि

जिस किसी को मैं चूमों वुह वही है उसे पकड़ लेओ। ४९ और तुरन्त वुह यिशु पास आके बोला कि हे गुरु प्रणाम और उसे चूमा। ५० और यिशु ने उसे कहा कि हे मित्र तू किस लिये आया तब उन्हों ने यिशु पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया। ५१ और यिशु के संगियों में से एक ने हाथ बढ़ा के अपना खड्ग खींचा और प्रधान याजक के एक सेवक को लगाया और उसका कान उड़ा दिया। ५२ तब यिशु ने उसे कहा कि अपने खड्ग को काठी में फेर रख क्योंकि सब जो खड्ग खींचते हैं खड्गही से मारे जायेंगे। ५३ तू नहीं समझता कि मैं अभी अपने पिता की प्रार्थना करसक्ता हों और वुह तुरन्त दूतों की बारह सेना मुझे देगा?। ५४ परन्तु तब लिखे ऊए क्योंकर पूरे होंगे कि यों होना अवश्य है?। ५५ उसी घड़ी यिशु ने मंडलियों से कहा कि तुम मुझे चोर की नाईं पकड़ने को खड्ग और लाठियां लेके बाहर निकले हो? मैं तो प्रति दिन तुम्हारे संग मन्दिर में बैठ के उपदेश करता था और तुम ने मुझ पर हाथ न डाला। ५६ परन्तु यह सब ऊआ जिसतें भविष्यद्वक्तों के लिखे ऊए पूरे होवें तब सारे शिष्य उसे छोड़ के भागे।

५७ और यिशु के पकड़ने वाले उसे प्रधान याजक कायफा के पास लेगये जहां अध्यापक और प्राचीन एकट्ठे थे। ५८ परंतु पथर दूर से उसके पीछे पीछे

प्रधान याजक के सदन लों चला गया और भीतर जाके सेवकों के संग बैठ गया कि अंत को देखे। ५९ तब प्रधान याजक और प्राचीन और सारी सभा यिशु को घात करने के लिये उस पर झूटी साची ढूंढ़ते थे परंतु कोई न पाये। ६० हां यद्यपि बहुतेरे झूठे साची आये तथापि वे नपाये अंत में दो झूठे साची आये। ६१ और बोले कि इसने कहा कि मैं ईश्वर के मन्दिर को ढाके तीन दिन में खड़ा कर सक्ताहों। ६२ तब प्रधान याजक उठा और उसे बोला कि तू कुछ उत्तर नहीं देता? ये तुझ पर क्या क्या साचीदेतेहैं?। ६३ परन्तु यिशु चुपका रहा और प्रधान याजक ने उत्तर दिया और उसे कहा मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देताहै कि यदि तू वुह मसीह ईश्वर का पुत्र है तो हमसे कह। ६४ यिशु ने उसे कहा कि तूने आपही कहा है तिस परभी मैं तुम्हें कहताहों कि इसके पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को पराक्रम की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे। ६५ तब प्रधान याजक ने अपने वस्त्र को फाड़ के कहा कि यह ईश्वर की निन्दा करचुका है अब हमें आगे साची का क्या प्रयोजन है? देखो अभी तुमने उसके मुंह से ईश्वर की निन्दा सुनी है। ६६ तुम क्या सोचतेहो? उन्होंने उत्तर दिया और कहा कि यह मृत्यु के योग्य है। ६७ तब उन्होंने उसके मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे और

औरोंने थपेड़े मारे। ६८ और कहा कि हे मसीह हमें भविष्य कह जिसने तुझे मारा है?।

६९ तब पथर बाहर सदन में बैठा था और एक दासी उस पास आई और बोली कि तू भी यिशु गालीली के संग था। ७० परन्तु सब के आगे वुह मुकर गया और कहा कि मैं नहीं जानता तू क्या कहती है। ७१ और जब वुह बाहर ओसारे में आया एक दूसरी उसे देखके, जो वहां खड़े थे, उन्हें बोली कि यह भी यिशु नासरी के संग था। ७२ और फिर वुह किरिया खाके मुकर गया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। ७३ और तनिक पीछे वे जो वहां खड़े थे पथर पास आये और बोले कि निश्चय तूभी उन में से है क्योंकि तेरी भाषा तुझे प्रगट करती है। ७४ तब वुह धिक्कार के और किरिया खाके कहने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता और तुरन्त कुक्कुट बोला। ७५ तब पथर ने यिशु के बचन को चेत जो उसे कहा था कि कुक्कुट के बोलने से आगे त तीन बार मुझे मुकर जायगा तब वुह बाहर जाके बिलख बिलख रोया।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ जब बिहान हुआ सब प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों ने यिशु को घात करने के बिरोध में परामर्श किया। २ और वे उसे बांध के लेचले और पन्तिय पिलात अध्यक्ष को सौंप दिया।

३ तब उसके पकड़वाने वाले यिहूदा ने जब देखा कि उस पर दण्ड की आज्ञा हुई वुह आप पछताके तीस टुकड़े चांदी प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाके कहने लगा। ४ कि मैं ने इस में पाप किया कि निष्पापी के लोहू बहाने के लिये उसे पकड़वाया तब वे बोले कि हमें क्या? तूही जान। ५ और चांदी के उन टुकड़ों को मन्दिर में फेंक के चल निकला और जाके अपने को फांसी दिई। ६ और प्रधान याजकों ने चांदी के उन टुकड़ों को लेकर कहा कि उन्हें भंडार में रखना उचित नहीं क्योंकि यह लोहू का मोल है। ७ तब उन्हों ने परामर्श करके उन से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। ८ इस लिये वुह खेत आजलों लोहू का खेत कहावता है। ९ तब वुह जो इरमी भविष्यद्वक्ता से कहा गया था पूरा हुआ कि उन्हों ने तीस टुकड़े चांदी उसका मोल जो ठहराया गया था जिसका मोल इसराईल के वंश में से कितनों ने ठहराया। १० और उन्हें कुम्हार के खेत के लिये दिया जैसा प्रभु ने मुझे आज्ञा किई।

११ और अध्यक्ष के आगे यिशु खड़ा हुआ और अध्यक्ष ने उसे यह कहिके पूछा कि तू यिहूदियों का राजा है? यिशु ने उसे कहा आपही तो कहते हैं। १२ और जब प्रधान याजक और प्राचीन उस पर अपवाद लगा रहे थे उसने तनिक उत्तर न दिया।

१३ तब पिलात ने उसे कहा कि तू नहीं सुनता कि वे क्या क्या तुझ पर साक्षी देते हैं?। १४ परन्तु उसने उत्तर में तनिक न कहा यहां लों कि अध्यक्ष ने बड़ा आश्चर्य माना।

१५ और उस पर्ब्ब में अध्यक्ष की रीति थी कि लोगों की इच्छा के समान वुह एक बंधुए को छोड़ देता था। १६ और उस समय उनका एक प्रसिद्ध बंधुआ था जो बरब्बा कहावता था। १७ इस लिये जब वे एकट्ठे थे पिलात ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हारे लिये किसको छोड़ देउं? बरब्बा को अथवा यिशु को जो मसीह कहावता है। १८ क्योंकि वुह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से सौंपा था।

१९ जब वुह न्याय के आसन पर बैठा था उसकी पत्नी ने उसे यह कहला भेजा कि आप उस सज्जन से कुछ काम मत रखिये क्योंकि उसके कारण मैं ने स्वप्न में आज बहुत दुःख पाया है। २० परन्तु प्रधान याजकों और प्राचीनों ने मंडली को उभाड़ा कि बरब्बा को मांगें और यिशु को घात करें। २१ अध्यक्ष ने उत्तर देके उन्हें कहा कि दोनों में से मैं तुम्हारे लिये किसे छोड़ दों? वे बोले कि बरब्बा को। २२ पिलात ने उन्हें कहा कि फेर यिशु को जो मसीह कहावता है मैं क्या करों. सब के सब बोले कि वुह क्रूस पर मारा जाय। २३ तब अध्यक्ष ने कहा क्यों उसने क्या अपराध किया है?

परन्तु वे श्रीर भी चिल्ला के बोले कि वुह क्रूस पर मारा जाय। २४ जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु अधिक झल्लर होता है तो उसने पानी से मंडली के आगे हाथों को धोत्रा श्रीर कहा कि मैं इस सज्जन के लोह्न से निर्दोष हों तुम्हीं जानो। २५ तब सारे लोगों ने उत्तर देके कहा कि उसका लोह्न हम पर श्रीर हमारे वंश पर होवे। २६ तब उसने उसके लिये बरब्बा को छोड़ दिया श्रीर यिशु को कोड़े मारके क्रूस पर मारे जाने के लिये सैंप दिया।

२७ तब अध्यक्ष के योड्वाश्रों ने यिशु को बैठक में लेजाके सारी जथा को उसके पास एकट्ठे किया। २८ श्रीर उन्हों ने उसे उघार के लाल वस्त्र पहिनाया। २९ श्रीर उन्हों ने कांटों का मुकुट गूथ के उसके सिर पर रक्खा श्रीर उसके दहिने हाथ में एक नरकट धरा श्रीर उसके आगे घुठना टेका श्रीर यह कहिके ठट्ठे में उड़ाया कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम। ३० तब उन्हों ने उस पर थूका श्रीर नरकट लेके उसके सिर पर मारा। ३१ श्रीर उसे ठट्ठा में उड़ा के उन्हों ने उस पर से वस्त्र उतारा श्रीर उसका अपना वस्त्र उसे पहिनाया श्रीर क्रूस पर मारने को लेचले।

३२ श्रीर बाहर आके उन्हों ने कुरीनी के एक मनुष्य को पाया जिसका नाम शिमोन था उन्होंने उस्से बरबस उसका क्रूस उठावाया। ३३ श्रीर जब वे एक स्थान में

पहुंचे जो गलगता कहावता है अर्थात खोंपड़ी का स्थान। ३४ तो उन्हों ने सिरका पित्त मिला के उसे पीनेको दिया और जब उसने चीखा तो पीने को न चाहा। ३५ और उन्होंने उसे क्रूस पर टांगा और उन्होंने चिट्ठी डाल के उसके बस्त्रों को बांट लिया जिसतें भविष्यद्वक्ता का कहा हुआ बचन पूरा होवे कि उन्होंने आपुस में मेरे बस्त्रों को बांट लिया और मेरे बागे पर चिट्ठियां डालीं। ३६ और वहां बैठ के उन्होंने उसकी रखवाली किई। ३७ और उसका दोषपत्र लिखके उसके सिर के ऊपर रक्खा कि यही यिशु यिहूदियों का राजा है। ३८ तब वहां उसके संग दो चोर भी क्रूस पर टांगगये एक उसके दहिने हाथ और दूसरा बाएं।

३९ और पथिक भी सिर धुन धुन ठट्ठा कर के कहते थे। ४० कि तू जो मन्दिर को ढाता और तीन दिन में उठाता है आप को बचा यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूस परसे उतर आ। ४१ इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संग यह कहि के उसे ठट्ठे में उड़ाया। ४२ कि इसने औरोंको बचाया आप को बचा नहीं सक्ता यदि वुह इसराईल का राजा है तो क्रूस परसे उतर आवे और हम उस पर बिश्वास लावेंगे। ४३ उसने ईश्वर पर भरोसा किया यदि वुह उस्से प्रसन्न है तो अब वुह उसे छुड़ावें क्योंकि

उसने कहा था कि मैं ईश्वर का पुत्र हों। ४४ वे चोर भी जो उसके संग क्रूस पर टांगे गये थे वही बात उसके मुंहों पर कहते थे।

४५ तब दो पहर से तीसरे पहर लों सारे देश में अंधकार छागया। ४६ श्रोर तीसरे पहर के अंटकल में यिशु ने बड़े शब्द से चिल्ला के कहा कि एली एली लामा सबकतानी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों त्यागा है ?। ४७ उनमें से जो वहां खड़े थे कितनों ने सुन के कहा कि यह एलिया को बुलाता है। ४८ श्रोर तुरन्त उनमें से एक ने दैाड़ के बादल लेके सिरके में बोरा श्रोर नल पर रखके उसे पीने को दिया। ४९ श्रैारों ने कहा कि रहने देउ हम देखेंगे यदि एलिया उसे छोड़ाने को आवेगा।

५० तब यिशु ने दूसरे बार बड़े शब्द से चिल्ला के प्राण सैांप दिया। ५१ श्रोर देखो मन्दिर का श्रोझल ऊपर से नीचे लों फटगया श्रोर भुंइंडोल ङुश्रा श्रोर पहाड़ तड़क गये। ५२ श्रोर समाधि खुल गईं श्रोर बड़त संतन के देह महानिद्रा से उठे। ५३ श्रोर उसके जीउठने के पीछे समाधिन से बाहर आये श्रोर पवित्र नगर में गये श्रोर बड़तों को दिखाई दिये।

५४ श्रोर जब सतपति श्रोर उन्होंने, जो उसके संग यिशु की रखवाली करते थे भुंइंडोल को श्रोर जो कुछ

कि बीता था देखा, वे यह कहिके बज्ञत डर गये कि यह सचमुच ईश्वर का पुत्र था।

५५ और बज्ञतसी स्त्री वहां थीं जो जलील से यिशु के पीछे उसकी सेवा करती आईं दूर से देखरही थीं। ५६ जिनमें मरियम मगदली और याकूब और योसी की माता मरियम और जबदी के बेटे की माता।

५७ जब सांझ ज्ञई अरमतिया का एक धनमान आया जिसका नाम यूसफ था वुह भी आप यिशु का शिष्य था। ५८ और पिलात पास जाके यिशु की लोथ मांगी तब पिलात ने उसे देने की आज्ञा किई। ५९ और जब यूसफ ने लोथ को लिया उसने धोये ज्ञए सूती कपड़ में लपेटा। ६० और उसे अपनीही नई समाधि में रक्खा जो उसने पत्थर में खोदी थी और एक बड़ा पत्थर समाधि के मुंह पर ढुलका के चला गया। ६१ और वहां मरियम मगदली और दूसरी मरियम समाधि के साम्ने बैठी थीं।

६२ अब दूसरे दिन, जो बराबरी के पीछे था प्रधान याजक और फिरसी एकट्ठे होके पिलात पास आये। ६३ और कहा कि हे महाशय हमें चेत है कि वुह छली अपने जीतेजी कहता था कि मैं तीन दिन पीछे फिर उठोंगा। ६४ इसलिये आज्ञा कीजिये कि तीन दिनलों समाधि की रखवाली किई जाय नहो कि उसके शिष्य रात को आके उसे चुरा लेजांय और लोगों से

कहें कि वुह मृतकों में से जी उठा सो पिछली चूक पहिली से अधिक होगी। ६५ पिलात ने उन्हें कहा कि रखवाल तो तुम्हारे पास हैं जाओ और अपने जानते भर चैाकसी करो। ६६ सो वे गये और पत्थर पर छाप करके समाधि की चैाकसी किई और रखवाल बैठाये।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ बिश्राम के अन्त अठवारे के पहिले दिन जब पह फटते लगा मरियम मगदली और दूसरी मरियम समाधि देखने को आईं। २ वहीं बड़ा भुंइडोल हुआ क्योंकि ईश्वर का दूत स्वर्ग से उतरा और उस पत्थर को समाधि के मुंह पर से ढुलका के उस पर बैठगया। ३ उसका रूप बिजली के समान और उसका वस्त्र पाला की नाईं श्वेत था। ४ और उसके डरके मारे रखवाल कांप गये और मृतक से होगये। ५ और उस दूतने उत्तर देके स्त्रियों से कहा कि मत डरो क्योंकि मैं जानता हों कि तुम क्रूस घातित यिशु को, ढूंढ़तियां हो। ६ वुह यहां नहीं है परन्तु अपने कहने के समान जीउठा है आओ जहां प्रभु पड़ा था उस स्थान को देखो। ७ और हाली जाके उसके शिष्यों से कहो कि वुह मृत्युसे जीउठा है और देखो कि वुह तुम से आगे गालील को जाता है तुम उसे वहां देखोगे मैं ने तुम्हें

जता दिया है। ८ और वे समाधि से तुरन्त डर और बड़े आनन्द से उसके शिष्यों को कहने दौड़ीं।

९ और जब वे उसके शिष्यों से कहने को चली जाती थीं यिशु उन्हें मिला और बोला कि कल्याण तब उन्होंने आके उसका चरण पकड़के दण्डवत किई। १० तब यिशु ने उन्हें कहा कि मत डरो, पर जाके मेरे भाइयों से कहो कि गालील को चलें और मुझे वहां देखेंगे। ११ और जब वे चली जातीथीं कितने उन रखवालों में से नगर में आये और सब समाचार प्रधान याजकों को सुनाया। १२ और जब उन्हों ने प्राचीनों के संग एकट्ठे होके परामर्श किया तो उन योद्धाओं को यह कहिके बहुत रोकड़ दिये। १३ कि कहियो कि रात को जब हम सो गये थे उसके शिष्य आके उसे चुरा लेगये। १४ और यदि यह अध्यक्ष के कान लों पहुंचे तो हम उसे समझा के तुम्हें बचा लेंगें। १५ सो उन्होंने रोकड़ लेके उनके सिखाने के समान कहा और यह बात आजलों यिहूदियों में विदित है।

१६ तब वे ग्यारह शिष्य गालील में उस पहाड़ को गये जहां यिशु ने उनसे ठहराया था। १७ और जब उन्होंने उसे देखा तो उसे दण्डवत किई परन्तु कितने दुवधा में थे। १८ और यिशु उन पास आया और यह कहिके बोला कि स्वर्ग और पृथिवी पर सारा पराक्रम मुझे दिया गया है।

१९ इस लिये जाओ और सारे जातिगणों को पिता पुत्र और धर्मात्मा के नाम से स्नान देके शिष्य करो। २० और सब जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है उन सभों को पालन करने को सिखाओ और देखो कि प्रति दिन जगत के अन्त लों मैं तुम्हारे संग हों। आमीन॥

मंगल समाचार मरक रचित ॥

——0000——

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ ईश्वर के पुत्र यिशु मसीह के मंगल समाचार का आरंभ। २ जैसा कि भविष्यद्वक्तों ने लिखा है कि देखो मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजताहों जो तेरे आगे तेरे मार्ग को सुधारेगा। ३ एक का शब्द बन में पुकारता है कि ईश्वर के मार्ग को सुधारो और उसके पथों को सीधा करो। ४ योहन बन में स्नान देता था और पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के स्नान का प्रचार करता था। ५ और यिहूदियः के सारे देश और यिरोशलीमवासी उस पास निकल आये और सब अपने अपने पापों को मान मान के यर्दन नदी में उस्से स्नान किये जाते थे। ६ और योहन का वस्त्र ऊंट के रोम का था और उसकी कटि पर चमड़े का पटूका बांधा था और उसका भोजन टिड्डी और बनमधु था। ७ और प्रचार के कहता था कि मेरे पीछे एक आता है जो मुस्से अधिक सामर्थी है मैं झुक के उसकी जूती का बंद खोलने के योग्य नहीं। ८ ठीक मैं ने तुम्हें जल से स्नान दिया है परन्तु वुह तुम्हें धर्मात्मा से स्नान देगा।

९ उन्हीं दिनों में ऐसा ऊआ कि यिशु ने गालील के नासरः से आके यर्दन में योहन से स्नान पाया। १० और तुरन्त जल से बाहर आतेऊए उसने स्वर्ग को खुला और आत्मा को कपोत के समान अपने ऊपर उतरते देखा। ११ और आकाश बाणी ऊई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं अति प्रसन्न हों।

१२ और तुरन्त आत्मा ने उसे बन में निकाल दिया। १३ और वुह बन में चालीस दिन लों शैतान से परीक्षा किया गया और वुह बन पशुन में था और दूत उसकी सेवा करते थे।

१४ अब योहन के बंधन में डालेजाने से पीछे यिशु गालील में आके ईश्वर के राज्य के मंगल समाचार सुनाने लगा। १५ और वुह कहने लगा कि समय पूरा ऊआ और ईश्वर का राज्य आ पऊंचा है पश्चात्ताप करो और मंगल समाचार पर बिश्वास लाओ। १६ और जब वुह गालील के समुद्र के तीर फिरता था उसने शिमोन और उसके भाई अंद्रया को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुए थे। १७ और यिशु ने उन्हें कहा कि मेरे पीछे होलेओ और मैं तुम्हें मनुष्यों का धीवर बनाओंगा। १८ और वे तुरन्त अपने जाल को छोड़ के उसके पीछे होलिये। १९ और वहां से थोड़ा आगे बढ़के उसने जब्दी के बेटे याकूब को और उसके भाई योहन को देखा वे भी नाव पर अपने जाल

को सुधारते थे। २० और उसने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदी को सेवकों के संग नाव पर छोड़ के उसके पीछे होलिये।

२१ तब वे कफरनाऊम में गये और तुरन्त विश्राम के दिन मंडली में जाके उपदेश किया। २२ और वे उसके उपदेश से अचंभित ऊए क्योंकि उसने उन्हें एक सामर्थी के समान उपदेश किया और अध्यापकों के समान नहीं। २३ और उनकी मंडली में एक मनुष्य था जिस पर अपवित्र आत्मा था उसने चिल्लाके कहा। २४ कि रहने दीजिये हम से आप से क्या काम है यिशु नासरी? क्या आप हमें नाश करने को आये हैं? मैं आप को जानताहों कि आप कौन हैं ईश्वर का वही धार्म्मिक। २५ तब यिशु ने उसे दपट के कहा कि चुप रह और उस्से बाहर आ। २६ तब अपवित्र आत्मा ने उसे मरोड़ा और बड़े शब्द से चिल्ला के उस्से बाहर निकल गया। २७ और सब के सब यहां लों विस्मित ऊए कि वे आपुस में यह कहि के पूछ पाछ करने लगे कि यह क्या है? यह कैसा नया उपदेश है? क्योंकि वुह अपवित्र आत्माओं को भी पराक्रम से आज्ञा करता है और वे उसे मानते हैं। २८ और तुरन्त उसकी कीर्त्ति गालील के सारे देश में फैल गई।

२९ और तत्काल वे मंडली से बाहर निकल के याकूब और योहन के संग शिमोन और अंद्रया के घर

में गये। ३० परन्तु शिमान की सास ज्वर से रोगी पड़ी थी वहीं उन्हों ने उसके विषय में उसे कहा। ३१ तब उसने आके उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाया और ज्वर ने तुरन्त उसे छोड़ दिया और उसने उनकी सेवा किई। ३२ और सांझ को जब सूर्य्य अस्त हुआ वे सारे रोगियों और पिशाचग्रस्तों को उस पास लाये। ३३ और सारा नगर द्वार पर एकट्ठे हुए। ३४ और उसने बहुतों को, जो नाना प्रकार के दुख से रोगी थे, चंगा किया और बहुतसे पिशाचों को दूर किया और पिशाचों को बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे।

३५ और तड़के बहुत रात रहते वुह उठके बाहर गया और एक अरण्य स्थान में जाके उसने प्रार्थना किई। ३६ तब शिमान और उसके संगी उसके पीछे पीछे चले गये। ३७ और उसे पाके वे उसे बोले कि सब आपको ढूंढ़ते हैं। ३८ और उसने उन्हें कहा कि आओ हम आस पास के नगरों में भी प्रचारने के लिये चलें क्योंकि मैं इसी कारण बाहर निकला हों। ३९ और वुह सारे गालील में उनकी मंडलियों से उपदेश करता और पिशाचों को दूर करता था।

४० तब एक कोढ़ी ने पास आके उसकी बिनती किई और उसके आगे घुठने टेकके बोला कि यदि आप चाहें तो मुझे पवित्र कर सक्ते हैं। ४१ यिशु ने दयाल होके हाथ बढ़ाया और उसे छूके कहा कि मैं चाहताहों

तू पवित्र होजा। ४२ और बचन कहतेही तुरन्त कोढ़ उस्से जातारहा और वुह पवित्र होगया। ४३ और उसने सेउ आज्ञा करके तुरन्त बिदा किया। ४४ और उसे कहा कि देख किसी मनुष्य से कुछ मत कह परन्तु चला जा और अपने तईं याजक को दिखा और अपने पवित्र होने के लिये, जो कुछ मूसा ने उनकी साची के लिये आज्ञा किई है, दान कर। ४५ परन्तु वुह बाहर जाके उस बात को फैलावने और प्रगट करने लगा यहां लों कि यिशु फेर नगर में प्रगट न जा सका परन्तु बाहर बाहर अरण्य स्थानों में रहा और चारों ओर से लोग उस पास आये।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ और कई दिन बीते वुह कपरनाऊम में फेर गया और घर में होने की उसकी चर्चा ऊई। २ और तुरन्त बऊतेरे बटुर गये यहां लों कि द्वार के आस पास भी समाई न थी और उसने उन्हें बचन सुनाया। ३ तब चार जन से उठवाये ऊए वे एक अर्द्धांगी को उस पास लाये। ४ और जब भीड़ के मारे वे उस पास न आ सके तो उन्हों ने उस छत को जिसमें वुह था उधेरा और उसे तोड़के, जिस खाट पर वुह अर्द्धांगी पड़ा था, उसे लटका दिया। ५ तब यिशु ने उनका बिश्वास देख के उस अर्द्धांगी को कहा कि पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये। ६ परन्तु वहां कितने अध्यापक बैठे अपने अपने मन में

बिचारते थे। ७ कि यह क्यों ईश्वरापनिन्दक वचन कहता है ? ईश्वर को छोड़ कौन पाप को चमा करसक्ता है ?। ८ और तुरन्त यिशु ने अपने आत्मा में जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार करते हैं तब उसने उन्हें कहा कि अपने अपने मन में क्यों ऐसा विचार करतेहो ?। ९ उस अर्द्धांगी को क्या कहना सहज है कि पाप चमा किये गये अथवा कहना कि उठ और अपनी खाट उठाले और चल ?। १० परन्तु जिसतें तुम जानो कि मनुष्य का पुत्र पृथिवी पर पाप चमा करने को सामर्थ्य रखता है उसने उस अर्द्धांगी को कहा। ११ कि मैं तुझे कहता हों कि उठ और अपनी खाट उठाले और अपने घर को चला जा। १२ और वुह तुरन्त उठा और खाट उठा के उन सभों के आगे चल निकला यहां लों कि सब बिस्मित ऊए और ईश्वर की स्तुति करके बोले कि हमने इस रीति के कभी न देखा था।

१३ और वुह निकल के फेर समुद्र के तीर गया और सारी मंडली उस पास आई और उसने उन्हें सिखाया। १४ और जाते जाते उसने हलफा के बेटे लेवी को कर लेने के स्थान में बैठे देखा और उसे कहा कि मेरे पीछे आ तब वुह उठा और उसके पीछे होलिया। १५ और ऐसा ऊआ कि जब यिशु उसके घर में बैठा भोजन कर रहा था बऊत से करग्राहक

ऋौर पापी भी यिशु के ऋौर उसके शिष्यों के संग एकट्ठे बैठे क्योंकि वहां बहुत थे ऋौर वे उसके पीछे चले ऋाये थे। १६ ऋौर जब ऋध्यापकों ऋौर फिरुसियों ने उसे पटवारियों ऋौर पापियों के संग भोजन करते देखा वे उसके शिष्यों से बोले कि यह कैसा है कि वुह पटवारियों ऋौर पापियों के संग खाता पीता है। १७ तब यिशु ने सुन के उन्हें कहा कि भलेचंगे को वैद्य का ऋावश्यक नहीं परन्तु रोगियों को, मैं धर्म्मियों को बुलाने नहीं ऋाया परन्तु पापियों को जिसतें पश्चात्ताप करें। १८ ऋौर योहन के ऋौर फिरुसियों के शिष्य ब्रत किया करते थे सो उन्हों ने ऋाके उसे पूछा कि योहन के ऋौर फिरुसियों के शिष्य क्यों ब्रत करते हैं परन्तु ऋाप के शिष्य ब्रत नहीं करते?। १९ यिशु ने उन्हें कहा कि जब लों दूल्हा बरातियों के संग है क्या वे ब्रत करसक्ते हैं? जब लों दूल्हा उनके संग है वे ब्रत नहीं करसक्ते। २० परन्तु वे दिन ऋावेंगे जब कि दूल्हा उनसे ऋलग किया जायगा उन्हीं दिनों में वे ब्रत करेंगे। २१ कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं जोड़ता नहीं तो वुह नया टुकड़ा जो जोड़ा गया पुराने से खींचता है ऋौर वुह फटा बढ़ जाता है। २२ ऋौर कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पे में नहीं रखता नहीं तो नये दाख रस से कुप्पे फटजाते हैं ऋौर दाख

रस बहिजाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पे में रखना अवश्य है।

२३ और ऐसा हुआ कि विश्राम में अन्न के खेत में होके वुह चला जाता था और उसके शिष्य जाते जाते अन्न की बालें तोड़ने लगे। २४ तब फिरूसियों ने उसे कहा कि देखिये जो विश्राम के दिन करना अनुचित है वे करते हैं। २५ तब उसने उन्हें कहा कि दाऊद ने और उसके संगियों ने सकेती में भूखे होके क्या किया क्या तुम ने नहीं पढ़ा?। २६ उसने क्योंकर अबियातार प्रधान याजक के समय में ईश्वर के मन्दिर में जाके भेंट की रोटी खाई जो याजकों को छोड़ किसी को खाना उचित न था और अपने संगियों को भी दिई?। २७ और उसने उन्हें कहा कि विश्राम मनुष्य के लिये ठहराया गया परन्तु मनुष्य विश्राम के लिये नहीं। २८ इस लिये मनुष्य का पुत्र विश्राम का भी प्रभु है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ तब वुह मंडली में फेर गया और वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सुन्न होगया। २ और वे उसे अगोर रहे थे कि देखें कि वुह उसे विश्राम के दिन चंगा करेगा अथवा नहीं जिसतें उस पर दोष लगावें। ३ और उसने उस झुराये हाथवाले से कहा, कि बीच में खड़ा हो। ४ और उसने उन्हें कहा कि विश्राम दिन भला

करना उचित है कि बुरा? प्राण को बचाना अथवा घात करना? परन्तु वे चुप के रहे। ५ और जब उसने चारों ओर उन पर रिसिया के देखा तो उनके मन की कठोरता से खेदित होके उस मनुष्य को कहा कि अपना हाथ बढ़ा उसने बढ़ाया और उसका हाथ दूसरे के समान चंगा होगया। ६ तब फिरूसियों ने तुरन्त जाके हिरोदीसियों के संग उसके बिरोध में परामर्श किया कि उसे किस रीति से नाश करें।

७ परन्तु यिशु अपने शिष्य समेत अलग होके समुद्र के तीर गया और एक बड़ी मंडली गालील और यिहूदियः। ८ और यिरोशलीम और अदूमियः और यर्दन के पार और सूर और सैदा के आस पास से उसके बड़े बड़े कार्यों को, जो उसने किये थे सुन के उसके पास आई। ९ जिसतें मंडली उसे न दबावे उसने अपने शिष्यों से कहा कि मेरे लिये एक छोटी नाव सिद्ध रक्खो। १० क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था यहां लों कि जितने रोगी थे उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे। ११ और जब अपवित्र आत्मा उसे देखते थे उसके आगे गिर के पुकार के कहते थे कि तू ईश्वर का पुत्र है। १२ तब उसने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा किई कि मुझे प्रगट न करो।

१३ और आप एक पहाड़ पर चढ़ गया और जिन्हें उसने चाहा उन्हें बुलाया और वे उस पास आये। १४ तब

उसने बारह के अपने संग रहने के लिये ठहराया जिसतें वुह उन्हें प्रचारने को भेजे। १५ और रोगों को दूर करने का और पिशाचों को बाहर निकालने का सामर्थ्य रक्खे। १६ और उसने शिमान का नाम पथर रक्खा। १७ और जबदी के बेटे याकूब का और याकूब के भाई योहन का नाम उसने बूनरजिस रक्खा अर्थात गर्ज्जन के बेटे। १८ और अंद्रया और फिलिप और बार्तूलमा और मत्ती और तूमा और हलफा का बेटा याक़ूब और तद्दी और शिमान किनानी। १९ और यिहूदा ईस्करियती जिसने उसे पकड़ावाया भी और वे एक घर में आये।

२० और मंडली फेर एकट्ठी हुई ऐसा कि वे रोटी भी न खा सके। २१ और जब उसके साथियों ने सुना वे उसे पकड़ लेने को बाहर गये क्योंकि उन्हों ने कहा कि वुह बेसुध है। २२ तब अध्यापक, जो यिरोशलीम से आये थे, बोले कि बालजबूल उसमें है और वुह पिशाचों के राजा के सहाय से पिशाचों को दूर करता है। २३ और उसने उन्हें बुला के दृष्टान्तों में कहा कि शैतान शैतान को क्योंकर निकाल सक्ता है। २४ और यदि कोई राज्य अपने बिरोध में दो भाग होजाय तो वुह राज्य ठहर नहीं सक्ता। २५ और यदि कोई घर अपने विरोध में दो भाग होजाय वुह घर स्थिर नहीं रहि सक्ता। २६ और यदि शैतान अपनाही विरोध

कर उठे और अलग होय वुह ठहर नहीं सक्ता परन्तु उसका अन्त होता है। २७ कोई मनुष्य किसी बलवंतके घरमें पैठके उसकी संपत्ति को लूट नहीं सक्ता जब लों वुह पहिले उस बलवन्त को बांधे तब उसके घर को लूटेगा। २८ मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि मनुष्यके पुत्रों के सारे पाप और ईश्वर की निन्दा जो वे निन्दा करते हैं क्षमा किये जायेंगे। २९ परन्तु जो धर्मात्मा के विरोध में निन्दा बकता है सो कभी क्षमा न किया जायगा परन्तु सदा के दंड के योग्य होगा। ३० इस कारण कि उन्हों ने कहा कि उसमें अपवित्र आत्मा है।

३१ तब उसके भाई और उसकी माता आई और बाहर खड़े होके उसे बुलवा भेजा। ३२ तब उसके आस पास की बैठी ऊई मंडली ने उसे कहा कि देख आप की माता और आप के भाई बाहर आप को ढूढ़ते हैं। ३३ तब उसने उन्हें उत्तर देके कहा कि कौन है मेरी माता अथवा मेरे भाई ?। ३४ और उसने अपने आस पास के बैठे ऊओं को देखके कहा कि ये मेरी माता और मेरे भाई। ३५ क्योंकि जो कोई ईश्वर की इच्छा पर चलेगा सोई मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ और वुह समुद्र के तीर पर फेर उपदेश करने लगा और एक बड़ी मंडली उस पास एकट्ठी ऊई यहां

लों कि वुह समुद्र में एक नाव पर जा बैठा और सारी मंडली समुद्र के तीर भूमि पर थी। २ और उसने उन्हें अनेक बात दृष्टान्तों में सिखाया और अपने उपदेश में उन्हें कहा। ३ कि सुनो, देखो एक बोवैया बोने को निकला। ४ और यों ज़आ कि बोते ज़ए कुछ मार्ग की ओर गिरे और आकाश के पंछी आये और उसे चुग गये। ५ और कुछ पत्थरली भूमि पर गिरे जहां उन्हें बज़त मिट्टी न मिली और तुरन्त जगे इस कारण कि गहिरी मिट्टी न पाई थी। ६ परन्तु जब सूर्य उदय ज़आ वे भुलस गये और जड़ न रखने के कारण झुरा गये। ७ और कुछ कांटों में गिरे और कांटों ने बढ़के उन्हें दबाडाला और उन में कुछ न फला। ८ और कुछ चोखी भूंई पर गिरे और जगके बढ़े और फल लाये कुछ तीस गुने कुछ साठ और कुछ सौ गुने। ९ और उसने उन्हें कहा कि जिस किसी के कान सुन्ने को होवे सो सुने।

१० और जब वुह अकेला था तो जो उसके आस पास थे उन्हों ने उन बारह के संग उस दृष्टान्त को उसे पूछा। ११ तब उसने उन्हें कहा कि ईश्वर के राज्य के भेद का ज्ञान तुम्हें दिया गया है बाहर वालों के लिये सारी बस्तें दृष्टान्तों में होती हैं। १२ जिसतें देखते ज़ए देखें और न सूझें और सुनते ज़ए सुनें और न समझें नहो कि वे कभी फिराये जायें और उनके पाप

क्षमा किये जायें। १३ और उसने उन्हें कहा कि तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? फेर सारे दृष्टान्त कैसे समझोगे?। १४ बोवैया बचन बोता है। १५ और ये हैं वे जो मार्ग की ओर हैं जहां बचन बोया जाता है परन्तु जब उन्होंने सुना शैतान तुरन्त आता है और बचन को, जो उनके मन में बोया गया था लेजाता है। १६ और वैसेही वे है जो पत्थरैली भूमि में बोये गये हैं जो बचन को सुनके तुरन्त आनन्दता से ग्रहण करते हैं। १७ और आप में जड़ न रख के तनिक ठहरते हैं और उसके पीछे, जब बचन के निमित्त दुःख और ताड़ना होती है तो हाली उदास हो जाते हैं। १८ और जो कांटों में बोये गये सो वे हैं जो बचन को सुनते हैं। १९ और इस जगत की चिन्ता और धन की छलता अरु और बस्तुन के लोभ भीतर पैठ के बचन को दबा डालते हैं और वुह निष्फल होता हैं।

२० और वे जो चोखी भुइं में बोये गये हैं ये हैं जो बचन को सुनके ग्रहण करते हैं और फल लाते हैं कितने तीस गुने कितने साठ और कितने सौ गुने। २१ और उसने उन्हें कहा कि दीपक इस लिये लाते हैं कि नांद के अथवा खाट के नीचे रक्खें और दीअठ पर नहीं?। २२ क्योंकि कुछ छिपी नहीं है जो प्रगट न होगी और कोई बस्तु गुप्त न रक्खी गई परन्तु जिसतें खुल जाय। २३ यदि किसी के कान सुन्ने को होवे तो

सुने। २४ फेर उसने उन्हें कहा चौकस हो कि क्या सुनते हो कि जिस नपुए से नापते हो तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुम्हें जो सुने हो अधिक दिया जायगा। २५ क्योंकि जिसपास है उसे दिया जायगा और जिसपास नहीं है उस्से वुह भी जो वुह रखता है फेर लिया जायगा।

२६ और उसने कहा कि ईश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि कोई मनुष्य भुईं में बीहन बोवे। २७ और रात दिन सोवे जागे और बीहन ऊगके बढ़े वुह नहीं जानता कि किस रीति से। २८ क्योंकि पृथिवी आप से फल लाती है पहिले अंकुर फेर बाल उसके पीछे बाल में भर पूर अन्न लगते हैं। २९ परन्तु जब वुह पका तुरन्त वुह हंसुआ लगाता है इस कारण कि लवती पऊंची है।

३० और उसने कहा कि हम ईश्वर के राज्य को किस्से उपमा देवें? और उसके लिये कौनसा उपमा लावें?। ३१ वुह राई के समान है जो जब भूमि में बोया गया सारे बीहन से जो भमि में हैं छोटा है। ३२ परन्तु जब बोया गया है वुह ऊगता है और सारे तरकारियों से बड़ा होता है और बड़ी बड़ी डालियां फूटती हैं यहां लों कि आकाश के पंछी उसकी छाया तले बास करते हैं। ३३ और वुह उन्हें ऐसे ही बऊत से दृष्टान्तों में उनकी बूझ के समान कहता था। ३४

परन्तु बिना दृष्टान्त वुह उनसे न कहता था और जब वे एकान्त में होते थे वुह अपने शिष्यों से सब का अर्थ करता था।

३५ और उसी दिन जब सांझ ऊई उसने उन्हें कहा कि आओ उस पार चलें। ३६ और वे मंडली को बिदा करके उसे जैसा था वैसा नाव पर चढ़ा लिया और वहां और भी छोटी नावें उसके संग थीं। ३७ तब बयार की बड़ी आंधी चली और लहरें नाव में ऐसी लगीं कि वुह भरगई। ३८ और वुह पतवार की ओर एक उसीसे पर सोआ था तब उन्हों ने उसे जगा के कहा कि हे गुरु आप चिन्ता नहीं करते कि हम नष्ट होते हैं?। ३९ तब उसने उठके बयार को दपटा और समुद्र को कहा कि स्थिर हो तब बयार थमगई और बड़ा चैन ऊआ। ४० फेर उसने उन्हें कहा क्यों ऐसे भयमान हो? क्योंकर है कि तुम विश्वास नहीं रखते?। ४१ तब वे अत्यन्त डरके आपुस में कहने लगे कि यह किस रीति का मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उसे मानते हैं?।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ और वे समुद्र के उस पार गदरानियों के देश में पऊंचे। २ और जब वुह नाव से उतरा तुरन्त एक मनुष्य जिसपर अपवित्र आत्मा था समाधिन से निकल के उसे मिला। ३ वुह समाधिन में रहता था और कोई

मनुष्य उसे सीकरों से भी बश में न कर सक्ता था। ४ क्योंकि वुह कई बेर पैकड़ियों और सीकरों से जकड़ा गया था और उसने सीकरों को झटके से अलग किया था और पैकड़ियों को तोड़ के टुकड़े टुकड़े कर दिया था और कोई उसे बश में न कर सक्ता था। ५ और वुह रात दिन नित पहाड़ों में और समाधिन में रहता था और चिल्ला चिल्ला अपने को पत्थरों से काटता था। ६ परन्तु जब उसने यिशु को दूर से देखा तो दौड़ के उसे प्रणाम किया। ७ और बड़े शब्द से चिल्ला के कहा कि हे अतिमहान ईश्वर के पुत्र यिशु मुझे आप से क्या काम? मैं आप को परमेश्वर की किरिया देता हों कि आप मुझे न सताईये। ८ क्योंकि उसने उसे कहा था कि अरे अपवित्र आत्मा सइ मनुष्य से बाहर निकल। ९ तब उसने उसे पूछा कि तेरा नाम क्या? उसने उत्तर देके कहा कि मेरा नाम सेना क्योंकि हम बड़त हैं। १० और उसने उसकी अति बिनती किई कि हम इसं देश से निकाल न दीजिये। ११ और वहीं पहाड़ों के पास सूअरों का एक बड़ा झुंड चरता था। १२ तब सारे पिशाचों ने उसकी बिनती करके कहा कि हमें उन सूअरों में भेजिये कि हम उन में पैठें। १३ यिशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और अपवित्र आत्मा बाहर जाके सूअरों में पैठ गये और वुह झुंड कड़ारे पर से बेग दौड़ के समुद्र में गिर पड़ा और समुद्र में आस तक

गये (वे दो सहस्र के लगभग थे)। १४ और सूअरों के चरवाहे भागे और नगर में और उस देश में संदेश दिया तब जो कि किया गया था उसे देखने को वे निकल आये। १५ और उन्हों ने यिशु के पास आके उस पिशाच ग्रस्त को, जिस पर सेना थी बैठे और वस्त्र पहिने सज्ञान देखा तब वे डर गये। १६ और जो कि पिशाच ग्रस्त पर बीतगया था और सूअरों की दशा को जिन्हों ने देखा था उन्हों ने उन्हें कहा। १७ तब वे उसकी बिनती करने लगे कि हमारे सिवाने से निकल जाइये। १८ और जब वुह नाव पर आया तब जो पिशाच ग्रस्त था उसने उसके संग रहने के लिये उसकी बिनती किई। १९ तिस पर भी यिशु ने उसे आने न दिया परन्तु कहा कि अपने मित्रों के पास घर जा और उन्हें कहा कि प्रभु ने तुझ पर दया करके कैसे कैसे बड़े अनुग्रह किये। २० तब वुह चला गया और दस नगर में उन बड़े कार्यों को, जो यिशु ने उसके लिये किये थे प्रगट करने लगा और सभों ने आश्चर्य माना।

२१ और यिशु नाव पर चढ़के इस पार फिर आया बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए और वुह समुद्र के तीर पर था। २२ और मंडली का एक प्रधान याइर नाम आया और उसे देख कर उसके चरण पर गिरा। २३ और उसकी बहुत बिनती करके कहा कि मेरी छोटी बेटी मरने पर पड़ी है आके अपने हाथों को उस पर

रखिये जिसतें वुह चंगी होजाय और वुह जीएगी। २४ तब यिशु उसके संग गया और बक्रत से लोगों ने उसके पीछे होके उस पर भीड़ किई।

२५ और एक स्त्री जिसका बारह बरस से लोहू बहता था। २६ और बक्रत से बैद्यों से बड़ा बड़ा दुःख उठाया और अपना सब कुछ उठान करके चंगी न क्रई परन्तु अधिक रोगिनी क्रई। २७ यिशु का समाचार सुन के उस भीड़ में पीछे आई और उसके वस्त्र को छू लिया। २८ क्योंकि उसने कहा कि यदि मैं केवल उसके वस्त्रों को छूओं तो चंगी होजाउंगी। २९ और तुरन्त उसके लोहू का सोता सूख गया और उसने अपने शरीर से जान लिया कि उस रोग से मैं चंगी क्रई। ३० तब वे यिशु ने तुरन्त आप में जाना कि मुझसे शक्ति निकली भीड़ की ओर फिर के कहा कि किसने मेरे वस्त्रों को छूआ। ३१ तब उसके शिष्यों ने उसे कहा कि आप देखते हैं कि मंडली आप पर भीड़ करती है और फेर कहते हैं कि मुझे किसने छूआ?। ३२ और जिसने यह किया था उसे देखने को वुह चारों ओर दृष्टि करने लगा। ३३ परन्तु जो कि उस पर बीत गया था उसे जानके वुह स्त्री डरती कांपती आई और उसके आगे गिर के सच सच बोली। ३४ और उसने उसे कहा कि हे पुत्री तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया कुशल से जा और अपने रोग से बची रह।

३५ वुह कहताही था इतने में मंडली के उस प्रधान के घर से लोगों ने आके कहा कि तेरी बेटी मर गई तू गुरु को अब क्यों क्लेश देता है। ३६ यिशु ने उस कहे हुए बचन को सुनके मंडली के उस प्रधान से कहा कि मत डर केवल बिश्वास रख। ३७ तब उसने पथर और याकूब और उसके भाई योहन को छोड़ किसी को अपने साथ आने न दिया। ३८ और उसने मंडली के प्रधान के घर में आके लोगों को धूम करते और रोते और अति विलाप करते देखा। ३९ और भीतर जाके उसने उन्हें कहा कि तुम क्यों धूम करते और रोते हो? कन्या मर नहीं गई परन्तु नींद में है। ४० तब वे उस पर हंसे परन्तु वुह सब को बाहर करके उस कन्या के माता पिता को और अपने संगियों को लेके, जहां वुह कन्या पड़ी थी, भीतर गया। ४१ तब उसने उस कन्या का हाथ पकड़ के उसे कहा कि तालीताकूमी अर्थात कन्या मैं तुझे कहता हों कि उठ। ४२ और वुह कन्या तुरन्त उठी और चलने लगी क्योंकि वुह बारह बरस की थी और वे बड़े आश्चर्य से आश्चर्यित हुए। ४३ तब उसने उन्हें दृढ़ता से कहा कि उसे कोई न जाने और आज्ञा किई कि उसे कुछ खाने को देउ।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ तब वुह वहां से चला और अपनेही देश में आया और उसके शिष्य उसके पीछे हो लिये। २ और जब

बिश्राम का दिन आया वुह मंडली में उपदेश करने लगा और बहुतेरे सुनके बिस्मित हो कहने लगे कि इसने ये सब कहां से पाये? और उसे यह क्या बुद्धि दिई गई है कि ऐसे ऐसे आश्चर्य कर्म उसके हाथों से किये जाते है?। ३ क्या यह मरियम का पुत्र बढ़ई नहीं? याकूब और यूसा और यिहूदा और शिमोन का भाई नहीं? और क्या उसकी बहिनें यहां हमारे पास नहीं? और वे उस्से उदास हुए। ४ परन्तु यिशु ने उन्हें कहा कि भविष्यद्वक्ता आदर रहित नहीं परन्तु केवल अपनेही देश और अपनेही कुटुम्ब में और अपनेही घर में। ५ और वुह वहां कोई आश्चर्य कर्म न कर सका केवल उसने हाथ रखके थोड़े रोगियों को चंगा किया। ६ और वुह उनके अबिश्वास के कारण बिस्मित हुआ और चारों ओर के गांओं में उपदेश करता फिरा।

७ तब उसने उन बारहों को बुलाया और उन्हें दो दो करके भेजना आरंभ किया और उन्हें अपवित्र आत्माओं पर सामर्थ्य दिया। ८ और उन्हें आज्ञा किई कि यात्रा के लिये एक लाठी को छोड़ कुछ न लेओ न झोली न रोटी न पटुके में रोकड़। ९ परन्तु अपने पांव में जूता पहिन लेओ और दो अंगे न पहिनो। १० और उसने उन्हें कहा कि जहां कहीं किसी घर में जाओ जबलों उस स्थान से न निकलो वहीं रहो। ११ और

जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारा न सुने जब तुम वहां से निकलो तो उन पर साक्षी के लिये अपने चरण की धूल झाड़ो मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि न्याय के दिन में सदम और अमरा के लिये उस नगर से अधिक सहज होगा। १२ और वे बाहर निकल के प्रचारने लगे कि लोग पश्चात्ताप करें। १३ और अनेक पिशाचों को दूर किया और बज्जत रोगियों पर तेल लगा के चंगा किया।

१४ और हीरोद राजा ने सुना (क्योंकि उसका नाम फैल गया था) तब उसने कहा कि योहन स्नानकारक मृत्यु से जी उठा है इस लिये उस्से आश्चर्य कर्म दिखाई देते हैं। १५ औरों ने कहा कि यह इलिया है और कितनों ने कहा कि एक भविष्यद्वक्ता है अथवा एक भविष्यद्वक्ता के समान। १६ परन्तु जब हीरोद ने सुना उसने कहा कि यह योहन है जिसका मैं ने सिर कटवाया वही मृत्यु से जी उठा है। १७ क्योंकि हीरोद ने अपने भाई फिलिप की पत्नी हीरोदिया के लिये जिसे उसने ब्याहा था आपही लोगों को भेज के योहन को पकड़वा के बंधन में डाला था। १८ क्योंकि योहन ने हीरोद से कहा था कि आप को उचित नहीं कि अपने भाई की पत्नी को रक्खें। १९ इसलिये हीरोदिया उस्से बैर रखती थी और उसे घात किया चाहती थी परन्तु न सक्ती थी। २० क्योंकि हीरोद योहन को

सज्जन और पवित्र मनुष्य जानके उस्से डरता था और उसे मानता था और उसका उपदेश सुनके बज्जतसी बातें पर चलता था और आनन्द से उसे सुनता था। २१ और जब औसर का दिन आ पज्जंचा तो हीरोद ने अपने जन्मदिन में अपने बड़ों और सेनापतियों और गालील के प्रधानों के लिये जेवनार बनाया? २२ तब हीरोदिया की पुत्री भीतर आई और नाची और हीरोद को, और उसके नेउंतहरियों को प्रसन्न किया तब राजा ने उस कन्या को कहा कि जो तेरी इच्छा होय मुस्से मांग और मैं तुझे देउंगा। २३ और उसने उसके लिये किरिया खाई कि मेरे आधा राज्य लों जो कुछ तू मांगेगी मैं तुझे देउंगा। २४ तब उसने जाके अपनी माता से पूछा कि मैं क्या मांगों? उसने कहा कि योहन स्नानकारक का सिर। २५ तब वुह तुरन्त राजा पास फुरती से आई और यह कहिके मांगा कि मैं चाहती हों कि एक थाल में योहन स्नानकारक का सिर अभी मुझे मंगवा दीजिये। २६ तब राजा अति उदास ज्जआ परन्तु अपनी किरिया के और जेवनहरियों के लिये उसने न चाहा कि उसे फेरे। २७ तब राजा ने तुरन्त अपने एक पहरू को भेज कर आज्ञा किई कि उसका सिर लावे सो उसने जाके बन्दीगृह में उसका सिर काट डाला। २८ और उसे एक थाल में लाके उस कन्या को और कन्या ने उसे

अपनी माता को दिया। २९ जब उसके शिष्यों ने सुना वे आके उसकी लोथ को लेके समाधि में रक्खा।

३० और प्रेरित यिशु पास आये और सब बातों को, जो उन्हों ने किईं और जो उन्हों ने सिखाईं उसे कहीं। ३१ तब उसने उन्हें कहा कि तुम सूने स्थान में अलग चलो और तनिक विश्राम करो क्योंकि वहां बहुत आते जाते थे और उन्हें भोजन करने का भी अवकाश न मिलता था। ३२ तब वे अलग नाव पर बैठ के एक सूने स्थान में चले गये।

३३ और लोगों ने उन्हें जाते देखा और बहुतेरों ने उसे चीन्हा और सारे नगरों से पांव पांव उधर दौड़े और उनसे आगे जा पहुंचे और एकट्ठे उस पास आये। ३४ तब यिशु उतरा और बहुत से लोगों को देखके उन पर दयाल हुआ क्योंकि वे बिनगड़रिया के भेड़ों की नाईं थे और वुह उन्हें बहुतसा उपदेश करने लगा।

३५ और जब दिन बहुत ढल गया उसके शिष्यों ने उस पास आके कहा कि यह सूना स्थान है और समय बहुत बीत गया। ३६ उन्हें बिदा कीजिये जिसतें वे चारों ओर के देशों और गाओं में जांय और अपने लिये भोजन मोल लेवें क्योंकि उनके भोजन के लिये कुछ नहीं है। ३७ उसने उन्हें उत्तर में कहा कि तुम उन्हें खाने को देउ तब वे उसे बोले कि हम जायें और

दो सौ सूकी की रोटी मोल लेके उन्हें खाने को दें?। ३८ उसने उन्हें कहा कि तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? जाके देखो और उन्हों ने बूझके कहा कि पांच रोटियां और दो मछलियां। ३९ और उसने उ[illegible] आज्ञा किई कि हरी घास पर पांती पांती [illegible]भों को बैठाओ। ४० तब वे सौ सौ और पचास पचास की पांती बांध के बैठ गये। ४१ और जब उसने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया तो स्वर्ग की ओर ताक के बर दिया और रोटियों को तोड़ के अपने शिष्यों को दिया कि उनके आगे रक्खें और दो मछलियों को भी भाग करके उन सभों को बांट दिया। ४२ तब सब खाके तृप्त ऊए। ४३ और उन्हों ने चूर चार से बारह टोकरियां भरीं और मछलियों से भी उठाई। ४४ और जिन्हों ने रोटियां खाईं सो अंटकल में पांच सहस्र पुरुष थे।

४५ और तुरन्त उसने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा किई कि नाव पर चढ़के आगे उस पार बैतसैदा को जाओ जब लों मैं लोगों को बिदा करों। ४६ और जब उसने उन्हें बिदा किया वुह एक पहाड़ पर प्रार्थना के लिये गया। ४७ और जब सांझ ऊई नाव बीच समुद्र में थी और आप भूमि पर अकेला था। ४८ और उसने उन्हें खेवते खेवते परिश्रम में देखा क्योंकि पवन उनके सन्मुख था और रात के चौथे पहर में समुद्र पर चलते

चलते वुह उन पास आया और उनसे आगे बढ़ जाता था। ४९ परन्तु जब उन्हों ने उसे समुद्र पर चलते देखा तो भूत समुझ के चिल्ला उठे। ५० क्योंकि उसे देख के सब व्याकुल ज़ए और वुह तुरन्त बोला और उनसे कहा कि सुस्थिर होओ मत डरो मैं हों। ५१ और वुह उन पास नाव पर गया और पवन थम गया और वे आप में बेपरिमाण अति बिस्मित ज़ए और आश्चर्य किया। ५२ क्योंकि उन्हों ने उन रोटियों के आश्चर्य को न सोचा था इस लिये कि उनका मन कठोर होगया था।

५३ और जब वे पार पज़ंचे तो गनेसरत के देश में आये और तीर पर गये। ५४ और जब वे नाव से उतर आये तुरन्त लोगों ने उसे पहिचाना। ५५ और उस देश की चारों ओर दौड़े और रोगियों को खाटों पर उठा उठा वहां लाते थे जहां उन्हों ने सुना था कि वुह है। ५६ और जहां कहीं गांओं में अथवा नगरों में अथवा देश में वुह जाता था उन्हों ने रोगियों को मार्गों में रक्खा और उसकी बिनती किई कि हम केवल आप के बस्त्र का खूंट लों छूवें और जितनों ने छूआ चंगे होगये।

७ सातवां पर्व्व।

१ तब यिरूशालम के कई फिरूसी और अध्यापक, उस पास एकट्ठे ज़ए। २ और जब उन्हों ने उसके

कितने शिष्यों को अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथों से रोटी खाते देखा तो दोष लगाया। ३ क्योंकि फिरूसी और सारे यिहूदी प्राचीनों के व्यवहारों को मान मान के बारंबार बिना हाथ धोये नहीं खाते हैं। ४ और हाट से आके बिना स्नान किये नहीं खाते हैं और बहुतेरी अनेक रीति हैं जो उन्हों ने ग्रहण करके मान लिया है जैसा कि कटोरा कटोरी और पीतल के बर्तन और मंच का धोना। ५ तब फिरूसियों और अध्यापकों ने उसे पूछा कि आप के शिष्य प्राचीन के व्यवहार पर क्यों नहीं चलते परन्तु बिन धोये हाथों से रोटी खाते हैं?। ६ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि अशाया ने भविष्य से तुम कपटियों के विषय में भला कहा जैसा लिखा है कि ये लोग होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुझसे दूर है। ७ तथापि वे बृथा मेरी सेवा करते हैं कि मनुष्यों की आज्ञा को अवश्य ठहरा के सिखाते हैं। ८ क्योंकि ईश्वर की आज्ञा को टाल के तुम मनुष्यों के व्यवहार को मानते हो जैसा कि कटोरा कटोरी का धोना और ऐसी ऐसी अनेक बात हैं जो करते हो। ९ और उसने उन्हें कहा कि तुम ईश्वर की आज्ञा को भली रीति से टाल देते हो जिसतें अपनेही ब्यवहार में रहो। १० क्योंकि मूसा ने कहा है कि अपनी माता पिता का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिता को धिक्कारे वुह अवश्य मारा जाय।

११ परन्तु तुम कहते हो कि यदि मनुष्य अपनी माता अथवा पिता को कहे कि जो आप को मुझ से लाभ होना था सो कुर्बान है अर्थात अर्पण किया गया। १२ और आगे को तुम उसे माता अथवा पिता के लिये कुछ करने नहीं देते। १३ सो अपना व्यवहार ठहरा के ईश्वर के वचन को व्यर्थ करते हो और ऐसी ऐसी अनेक बात मानते हो।

१४ और उसने सब लोगों को बुला के उन्हें कहा कि हर एक मेरी सुनो और समझो। १५ मनुष्य के बाहर बाहर कोई वस्तु नहीं जो उस में पैठ के उसे अशुद्ध कर सके परन्तु जो उस से निकलती हैं सो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं। १६ यदि किसी के कान सुन्ने के लिये होय तो सुने।

१७ और जब वुह लोगों के पास से घर में गया उसके शिष्यों ने उस दृष्टान्त के विषय में उसे पूछा। १८ तब उसने उन्हें कहा कि तुम भी ऐसे अबोध हो? तुम्हें नहीं सूझता कि जो बाहर से मनुष्य में पैठती है सो उसे अशुद्ध नहीं कर सकी। १९ इस कारण कि वुह उसके मन में नहीं पैठती परन्तु ओद्र में और सारे भोजन को शुद्ध करके संडास में निकलती है। २० और उसने कहा कि जो मनुष्य से निकलती है सो मनुष्य को अशुद्ध करती है। २१ क्योंकि मनुष्यों के मन में से बुरी चिन्ता, परस्त्री गमन, व्यभिचार, हत्या,।

२२ चोरी लालच, दुष्टता, छल, छिनालपन, कुदृष्टि, ईश्वर की निन्दा अहंकार, मूर्खता। २३ ये सब बुरे बुरे कर्म भीतर से निकल के मनुष्य को अशुद्ध करते हैं।

२४ तब यिशु वहां से उठके सूर और सैदा के सिवानें में गया और उसने एक घर में जाके चाहा कि कोई न जाने परन्तु वुह गुप्त न रहि सका था। २५ क्योंकि एक स्त्री जिसकी कन्या पर अशुद्ध आत्मा था उसका समाचार सुनके आई और उसके चरण पर गिरी। २६ वुह स्त्री यूनानी और सरफूनीकी की देशिनी थी उसने उसकी बिनती किई कि आप पिशाच को मेरी पुत्री पर से दूर करिये। २७ परन्तु यिशु ने उसे कहा कि पहिले बालकों को तृप्त होने दे क्योंकि उचित नहीं कि बालकों की रोटी लेके कुत्तों के आगे फेंकिये। २८ तब उसने उत्तर देके उसे कहा कि ठीक है प्रभु तथापि कुत्ते भी मंच के नीचे बालकों की रोटी का चूर चार खाते हैं। २९ तब उसने उसे कहा कि इस कहने के लिये चली जा वुह पिशाच तेरी पुत्री से उतर गया। ३० और जब वुह अपने घर पहुंची उसने देखा कि पिशाच उतर गया और उसकी पुत्री खाट पर लेटी है।

३१ और फिर वुह सूर और सैदा के सिवानों से निकल के दस नगर के सिवाने के मध्य से गालील के

समुद्र की ओर आया। ३२ तब वे एक बहिरे मनुष्य को जो तोतला के बोलता था उस पास लाये और उसकी बिनती किई कि अपना हाथ उस पर धरिये। ३३ और वुह उसे उस मंडली से अलग ले गया और अपनी अंगुलियां उसके कानों में डालीं और थूक के उसके जीभ को छूआ। ३४ और स्वर्ग की ओर देखते ऊए हाय किया और उसे कहा कि अफ्फता अर्थात खुलजा। ३५ और तुरन्त उसके कान खुल गये और उसकी जीभ का बंधन ढीला ऊआ और वुह खोल के बोलने लगा। ३६ और उसने उन्हें आज्ञा किई कि किसी को न कहो परन्तु जितना उसने उन्हें बरजा था तितना वे उसे अधिक प्रचारते थे। ३७ और बेपरिमाण बिस्मित होके कहने लगे कि उसने सब कुछ अच्छा किया है वुह बहिरों को श्रोता और गूंगों को वक्ता करता है।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ उसी समय में, जब मंडली बऊत ऊई और उन पास कुछ भोजन न था यिशु ने अपने शिष्यों को बुलाके उन्हें कहा। २ कि मंडली पर मुझे दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग हैं और कुछ खाने को नहीं रखते। ३ और यदि मैं अपने अपने घर उन्हें उपबासी भेजों वे मार्ग में निर्बल होजायंगे क्योंकि कितने उन में दूर से आये थे। ४ तब उसके शिष्यों ने उसे उत्तर दिया कि मनुष्य इस अरण्य में कहां से

उन्हें रोटी से तृप्त कर सके?। ५ तब उसने उन्हें पूछा कि तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? वे बोले कि सात। ६ तब उसने लोगों को आज्ञा किई कि भूमि पर बैठजाओ और उसने उन सात रोटियां को ले कर धन्यबाद करके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया कि उनके आगे धरें और उन्हों ने लोगों के आगे रक्खा। ७ और उन पास कई एक छोटी मछलियां थीं उसने धन्यबाद करके आज्ञा किई कि उन्हें भी आगे धरो। ८ सो वे भोजन करके तृप्त हुए और उन्होंने चूर चार से, जो बच रहे थे सात टोकरियां उठाईं। ९ और जिन्होंने भोजन किया था सो चार सहस्र के अंटकल में थे तब उसने उन्हें बिदा किया।

१० और तुरन्त वुह अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़बैठा और दालमनूता के सिवाने में आया। ११ तब फिरूसी निकले और परीक्षा से उससे प्रश्न में स्वर्ग से एक लक्षण चाहा। १२ तब उसने अपने मन में अति हाय करके कहा कि यह पीढ़ी किस कारण लक्षण ढूंढ़ती है मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि इस पीढ़ी को कोई लक्षण दिया न जायगा। १३ और वुह उन्हें छोड़ के नाव में होके उस पार चला गया।

१४ और वे रोटी लेने को भूल गये थे और उनके संग नाव पर एक रोटी से अधिक न थी। १५ तब उसने उन्हें आज्ञा करके कहा कि फिरूसियों और

हिरोद के खमीर से चौकस रहो। १६ तब वे आपुस में यों बिचारने लगे कि यह इस कारण है कि हमारे पास रोटी नहीं। १७ और जब यिशु ने जाना उसने उन्हें कहा कि तुम क्यों बिचारते हो कि यह इस कारण है कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अबलों नहीं जानते और नहीं बूझते? क्या तुम्हारा मन अबलों कठोर है?। १८ आंख रखते ऊए नहीं देखते? और कान रखते ऊए नहीं सुनते? और तुम स्मरण नहीं करते?। १९ जब मैं ने पांच रोटियों को पांच सहस्र के कारण तोड़ा तुम ने चूर चार से कितनी टोकरियां भरी उठाईं? उन्हों ने उसे कहा कि बारह। २० और जब चार सहस्र के कारण सात तुम ने चूर चार से कितनी टोकरियां भरी उठाईं? उन्हों ने कहा कि सात। २१ और उसने उन्हें कहा कि यह क्योंकर है कि तुम नहीं बूझते?।

२२ और वुह बैतसैदा में आया तब लोग उसके पास एक अंधे मनुष्य को लाये और उसकी बिनती किई कि उसे छूवें। २३ और वुह उस अंधे मनुष्य का हाथ पकड़ के नगर के बाहर ले गया और उसने उसकी आंखों पर थूकके और अपना हाथ उस पर रखके उसे पूछा कि तू कुछ देखता है?। २४ उसने ऊपर देख के कहा कि मैं मनुष्यों को पेड़ की नाईं चलते देखता हों। २५ तब उसने उसकी आंखों पर फेर हाथ रक्खा और

उसे ऊपर दिखाया तब वुह चंगा होगया और हर एक मनुष्य को फरछाई से देखने लगा। २६ और उसने उसे यह कहिके अपने घर भेजा कि नगर में मत जा और किसी से नगर में मत कह।

२७ तब यिशु और उसके शिष्य कैसरियः फिलिपि के नगरों में गये और उसने मार्ग में अपने शिष्यों से पूछा कि मनुष्य मुझे क्या कहते हैं?। २८ उन्हों ने उत्तर दिया कि योहन स्नानकारक, परन्तु कितने कि इलिया, और कितने कि भविष्यद्वक्ताओं में से एक। २९ उसने उन्हें कहा परन्तु तुम क्या कहते हो मैं कौन हों? पथर ने उत्तर देके उसे कहा कि आप मसीह हैं। ३० तब उसने उन्हें आज्ञा किई कि मेरे विषय में किसी से मत कहो। ३१ फेर उसने उन्हें उपदेश करना आरम्भ किया कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से त्याग किया जाय और मारा जाय और तीन दिन पीछे फेर उठें। ३२ और उसने यह बचन खोल के कहा तब पथर उसे लेके झुंझलाया। ३३ परन्तु वुह घूम कर अपने शिष्यों की ओर देख के पथर को घुरक के बोला कि हे शैतान मेरे पीछे जा क्योंकि ईश्वर की बातें तुझे नहीं सोताहीं परन्तु मनुष्यों की।

३४ तब उसने मंडली को अपने शिष्य सहित बुलाके कहा कि जो कोई मेरे पीछे आया चाहे सो अपनी

इच्छा को त्यागे और अपने क्रूस को उठा ले और मेरे पीछे आवे। ३५ क्योंकि जो कोई अपने प्राण को बचावेगा सो उसे गंवावेगा परंतु जो कोई मेरे और मंगल समाचार के कारण अपने प्राण को गंवावेगा सोई उसे बचावेगा। ३६ क्योंकि क्या लाभ होगा यदि मनुष्य सारे जगत को कमावे और अपना प्राण गंवावे?। ३७ अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा?। ३८ इस कारण जो कोई इस व्यभिचारी और पापमय पीढ़ी में मुझसे और मेरे बचन से लजाएगा मनुष्य का पुत्र भी, जब वुह अपने पिता के ऐश्वर्य में पवित्र दूतों के संग आवेगा तो उस्से लजाएगा। ३९ तब उसने उन्हें कहा कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि इनमें से कितने यहां खड़े हैं जो मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे जब लों ईश्वर के राज्य को पराक्रम से आते न देखें।

९ नवां पर्ब्ब।

१ और छः दिन बीते यिशु पथर और याक़ूब और योहन को लेके उन्हें एक ऊंचे पहाड़ पर अलग लेगया। २ और उनके आगे उसका रूप और ही होगया। ३ और उसका वस्त्र चमकने लगा और पाला के समान श्वेत होगया जैसा कि कोई धोबी पृथिवी पर श्वेत नहीं करसक्ता। ४ और उन्हें मूसा के संग इलियास दिखाई दिया और वे यिशु से बातें करते थे। ५ तब पथरने उत्तर देके यिशु से कहा कि हे गुरु हमारे लिये यहां

रहना अच्छा है और तीन तंबू बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक इलियास के लिये। ६ इस लिये कि वुह नजानता था कि क्या कहता है क्योंकि वे बज्जत डरगये। ७ तब एक मेघ ने उन पर छाया किई और उस मेघ से एक शब्द यह कहते ज्जए निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उसको सुनो। ८ और तुरन्त जब उन्हों ने चारों ओर दृष्टि किई तो केवल यिशु को छोड़ किसी मनुष्य को न देखा।

९ और जब वे पहाड़ से उतरते थे उसने उन्हें आज्ञा किई कि ये बातें, जो तुम ने देखीं, जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से न उठे, किसी से मत कहियो। १० और वे उस वचन को अपनेही में रख के आपुस में चर्चा करने लगे कि मृत्यु से उठने का क्या अर्थ है। ११ फेर उन्हों ने यह कहि के उसे पूछा कि अध्यापक क्यों कहते हैं कि पहिले इलिया का आना अवश्य है ?। १२ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि इलिया का पहिले आना और सब कुछ को सुधारना ठीक हैं और मनुष्य के पुत्र की अवश्य में क्योंकर लिखा है कि वुह अवश्य बज्जत दुख पावे और निन्दित किया जाये। १३ परन्तु मैं तुम्हें कहता हों कि इलिया तो आचुका है और जो कुछ उन्हों ने चाहा सो उस्से किया जैसा उसके विषय में लिखा है।

१४ और जब वुह शिष्यों के पास आया उनके आस

पास उसने एक बड़ी मंडली और अध्यापकों को उनसे प्रश्न करते देखा तब तुरन्त सब लोग उसे देखके अति बिस्मित होके दौड़े आये और प्रणाम किया। १६ सो उसने अध्यापकों से पूछा कि तुम उनसे क्या पूछते हो ?। १७ तब मंडली में से एक ने उत्तर देके कहा कि हे गुरु मैं अपने पुत्र को आप के पास लाया हों जिस पर एक गूंगा आत्मा है। १८ और वुह जहां कहीं उसे लेजाता है उसे ऐंठाता है और वुह फेन बहाता और दांत किचकिचाता है और गलाजाता है और मैं ने आप के शिष्यों से कहा कि उसे दूर करो परन्तु वे नसके। १९ उसने उत्तर देके उसे कहा कि हे अबि-श्वासी पीढ़ी मैं कब लों तुम्हारे संग रहों ? और मैं कबलों तुम्हारी सहों ? उसे मेरे पास लाओ। २० तब वे उसे उस पास लाये और उसे देखतेही उस आत्मा ने उसे ऐंठाया और वुह भूमि पर गिरा और फेन बहा के लोटगया। २१ और उसने उसके पिता से पूछा कि उसे यह कितने दिन से ऊआ है ? उसने कहा कि लड़-काई से। २२ और नाश करने के लिये उसने उसे आग में और जल में बारंबार फेंका परन्तु यदि आप कुछ करसकें तो हम पर दयाल होके सहाय कीजिये। २३ तब यिशु ने उसे कहा कि यदि तू बिश्वास लासके तो सब कुछ बिश्वासियों के लिये होसक्ता है। २४ तब उस बालक का पिता तुरन्त चिल्लाया और आंसू बहाके

बोला कि हे प्रभु मैं बिश्वास लाता हों मुझ अबिश्वासी का उपकार कीजिये। २५ जब यिशु ने देखा कि लोग दौड़े आते हैं उसने अपवित्र आत्मा को घुरक के कहा कि अरे गूंगे बहिरे आत्मा मैं तुझे आज्ञा करता हों कि उस्से बाहर निकल और उसमें फेर मत पैठ। २६ तब वुह चिल्लाया और उसे अत्यन्त ऐंठाके उस्से निकल आया और वुह मृतक सा होगया यहां लों कि बज्जतों ने कहा कि वुह मरगया। २७ परन्तु यिशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया और वुह उठा। २८ और जब वुह घर में आया तो उसके शिष्य ने एकान्त में उसे पूछा कि हम उसे दूर क्यों नकरसके?। २९ उसने उन्हें कहा कि इस रीति की प्रार्थना और ब्रत को छोड़ किसी भांति से नहीं निकल सक्ता।

३० फेर वे वहां से चले और गालील से होके निकल गये और उसने चाहा कि कोई मनुष्य न जाने। ३१ इस लिये उसने अपने शिष्यों को उपदेश किया और उन्हें कहा कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हातों में सैांपाजाता है और वे उसे मारडालेंगे और मारेजाने के पीछे वुह तीसरे दिन उठेगा। ३२ परन्तु उन्हों ने यह कहना नसमझा और उसे पूछने को डरे।

३३ फिर वुह कफरनाऊम में आया और घर में होतेऊए उसने उन्हें पूछा कि मार्ग में तुम आपुस में क्या चर्चा करते थे?। ३४ परन्तु वे चुप रहे क्योंकि

मार्ग में वे आपुस में चर्चा करते थे कि सब से बड़ा कौन?। ३५ और उसने बैठ के उन बारहों को बुलाया और उन्हें कहा कि यदि कोई मनुष्य अगिला हुआ चाहे तो सब से पीछे और सबका दास होगा। ३६ और उसने एक बालक को लेकर उनके मध्य में बैठाया और जब उसने उसे गोद में लिया उसने उन्हें कहा। ३७ जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालक को ग्रहण करे मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे मुझे नहीं परन्तु उसे जिसने मुझे भेजा ग्रहण करता है।

३८ तब योहन उसे उत्तर देके कहने लगा कि हे गुरु हम ने एक को आपके नामसे पिशाचों को दूर करते देखा और वुह हमारे संग नहीं आता और हमारे संग न आने के कारण हमने उसे बरजा। ३९ तब यिशु ने कहा कि उसे मत बरजो क्योंकि कोई मनुष्य नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य करके सहज से मेरे बिषय में बुरा कहि सके। ४० क्योंकि वुह जो हम से बिरुद्ध नहीं हमारा संगी है। ४१ इस लिये मसीह के होने के कारण मेरे नाम पर जो कोई तुम्हें एक कटोरा जल पीने को देवे मैं तुम से सत्य कहता हों कि वुह अपना प्रतिफल न खोवेगा। ४२ और जो कोई इन छोटों में से एक को, जो मुझ पर बिश्वास रखता है बाधा होवे उसके लिये अति भला होता कि उसके गले में एक चक्की का पाट लटकाया जाता और वुह समुद्र में

डुबाया जाता। ४३ और यदि तेरा हाथ तेरा बाधा होवे तो उसे काटडाल क्योंकि टुंडा जीवन में पहुंचना तेरे लिये उस्से भला है कि दो हाथ रखते हुए नरक की उस आग में, जो कधी नहीं बुझती डालाजाय। ४४ जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४५ और यदि तेरा पांव तेरा बाधा होवे तो उसे काट-डाल क्योंकि लंगड़ा जीवन में पहुंचना तेरे लिये उस्से भला है कि दो पांव रखते हुए नरक के उस आग में, जो कधी नहीं बुझेगी डाला जाय। ४६ जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४७ और यदि तेरी आंख तेरी बाधा होवे तो उसे निकाल डाल क्योंकि ईश्वर के राज्य में काना पहुंचना तेरे लिये उस्से भला है कि दो आंख रखते हुए नरक की आग में डाला जाय। ४८ जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४९ क्योंकि आग से हर एक लोना किया जायगा और हर एक यज्ञ लोन से लोना किया जायगा। ५० लोन अच्छा है परन्तु यदि लोन का स्वाद जातार है तो उस को किस्से स्वादित करोगे आप में लोन रक्खो और आपुस में मेल रक्खो।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ फिर वहां से उठके वुह यर्दन पार यिहूदिय के सिवानों म आया और लोग उस पास फेर एकट्ठे हुए और वह अपने व्यवहार पर फेर उन्हें उपदेश करने

लगा। २ तब फिरूसियों ने परीक्षा से उस पास आके उस्से पूछा कि उचित है कि मनुष्य अपनी पत्नी को त्याग करे?। ३ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा किई?। ४ वे बोले कि मूसा ने त्याग पत्र लिखके छोड़ने को दिई। ५ तब यिशु ने उत्तर में उन्हें कहा कि उसने तुम्हारे मन की कठोरता के लिये तुम्हें यह आज्ञा लिखी। ६ परन्तु सृष्टि के आरंभ से ईश्वर ने उन्हें नर और नारी उत्पन्न किया। ७ इस कारण मनुष्य अपनी माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा। ८ और वे दोनो एक तन होंगे सो वे अब दो नहीं परन्तु एक तन हैं। ९ इस लिये जिन्हें ईश्वर ने जोड़ा है मनुष्य अलग न करे। १० और घर में उसके शिष्यों ने फेर वहीं बात उस्से पूछी। ११ तब उसने उन्हें कहा कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे और दूसरी को वियाहे सो उसके बिरुद्ध व्यभिचार करता है। १२ और यदि स्त्री अपने पति को त्यागे और दूसरे से बियाही जाय तो वुह व्यभिचार करती है।

१३ फिर वे उसके पास बालकों को लाये कि वुह उन्हें छूवे पर लाने वालों को शिष्यों ने, दपट दिया। १४ परन्तु यिशु देख के उदास हुआ और उन्हें बोला कि बालकों को मेरे पास आने देओ और उन्हें मत बरजो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का है। १५ मैं

तुम्हें सत्य कहता हों कि जो छोटे बालक के समान ईश्वर के राज्य को ग्रहण न करे सो उस में न पहुंचेगा। १६ और उसने उन्हें गोद में लिया और उन पर हाथ रख के उन्हें आशीर्बाद दिया।

१७ और जब वुह मार्ग में जाता था एक मनुष्य दौड़ा आया और उसके आगे घुटना टेक के उससे पूछा कि हे उत्तम गुरु मैं क्या करों जिसतें अनन्त जीवन का अधिकारी होओं?। १८ यिशु ने उसे कहा कि तू मुझे क्यों उत्तम कहता है? ईश्वर को छोड़ कोई उत्तम नहीं है। १९ तू आज्ञा को जानता है, व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, झूठी साची मत दे, छल मत दे, अपनी माता पिता का सन्मान कर। २० तब उसने उत्तर देके उसे कहा कि हे गुरु यह सब मैं ने अपने छोटपन से माना है। २१ यिशु ने देख के उसे प्यार किया और कहा कि तुझे एक वस्तु चाहिये अपना सब कुछ बेचके कंगालों को दे और स्वर्ग में धन पावेगा और क्रूस उठा के मेरे पीछे चला आ। २२ वुह उस बात से उदास होके चला गया क्योंकि उसकी बड़ी संपत्ति थी। २३ तब यिशु ने चारों ओर देख के अपने शिष्यों से कहा कि धनमान को ईश्वर के राज्य में पहुंचना कैसाही कठिन है। २४ तब शिष्य उसके बचन से अचंभित हुए परन्तु यिशु ने फेर उत्तर में उन्हें कहा कि हे बालको जो धन पर आसा रखते हैं उनके लिये

ईश्वर के राज्य में पज्जंचना कैसा कठिन है। २५ सूई के छेद में से जंट का जाना उस्से सहज है कि एक धनमान ईश्वर के राज्य में पज्जंचे। २६ और वे बेपरिमाण आश्चर्य करके आपुस में कहने लगे फेर कौन त्राण पासक्ता है?। २७ यिशु ने उन पर दृष्टि करके कहा कि मनुष्य से यह अनहोना है परन्तु ईश्वर से नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ होसक्ता है।

२८ तब पथर उसे कहने लगा कि देखिये हम ने सब कुछ त्यागके आप के पीछे चले आये। २९ तब यिशु ने उत्तर देके कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसने घर अथवा भाई अथवा बहिन अथवा माता अथवा पिता अथवा पत्नी अथवा संतान अथवा भूमि को मेरे और मंगलसमाचार के लिये त्यागाहो। ३० परन्तु अब इस समय में वुह सौ गुना घर और भाई और बहिन और माता और बालक और भूमि सताये जाने के साथ पावेगा और अवैये जगत में अनन्त जीवन। ३१ परन्तु बज्जतेरे अगिले पिछले और पिछले अगिले होंगे।

३२ और यिरूशालम को मार्ग में जाते ज्जए यिशु उनके आगे आगे बढ़ा और वे अचंभित ज्जए और डरते ज्जए पीछे पीछे जाते थे और वुह फेर उन बारह को लेके अपने पर जो बीतना था सो उन्हें कहने लगा। ३३ कि देखो हम यिरूशालम को जाते हैं और मनुष्य

का पुत्त्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ सौंपा जायगा और वे उसे घात करने की आज्ञा करेंगे और उसे अन्यदेशियों को सौंपेंगे। ३४ और वे उसे ठट्ठेमें उड़ाके कोड़े मारेंगे और उसपर थूकेंगे और उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दिन फेर उठेगा।

३५ तब जबदी के बेटे याकूब और योहन उस पास आके कहने लगे कि हे गुरु हम चाहते हैं कि आप हमारी बांछा पूरी कीजिये। ३६ उसने उन्हें कहा कि तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करों। ३७ वे उसे बोले कि हमारे लिये यह कीजिये कि हम एक आप के दहिने हाथ और दूसरा आप के बाएं हाथ आप के ऐश्वर्य में बैठें। ३८ यिशु ने उन्हें कहा कि तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो जिस कटोरे से मैं पीने पर हों तुम उस्से पीसक्ते हो? और जिस स्नान सें मैं स्नान पाता हों स्नान पासक्ते हो?। ३९ वे उसे बोले कि हम सक्ते हैं तब यिशु ने उन्हें कहा कि तुम ठीक उस कटोरे से जिस्से मैं पीता हों पीओगे और जिस स्नान से मैं स्नान पाता हों तुम स्नान पाओगे। ४० परन्तु मेरे दहिने और बाएं हाथ बैठना जिनके कारण सिद्ध किया गया उन्हें छोड़के मेरे देने में नहीं है।

४१ और जब दसों ने सुना तो याकूब और योहन से क्रुद्ध हुए। ४२ तब यिशु ने उन्हें बुलाके कहा कि तुम जानते हो कि अन्यदेशियों के प्रधान है सो उन

पर प्रभुता करते हैं और उनके बड़े लोग उन पर राज्य करतें हैं। ४३ पर तुम्में ऐसा न होगा परन्तु जो कोई तुम्में बड़ा ऊआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होगा। ४४ और जो कोई तुम्में मुखिआ ऊआ चाहे सो सब का सेवक होगा। ४५ क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने नहीं आया परन्तु सेवा करने और बऊतों को छुड़ाने के लिये अपना प्राण देने आया।

४६ और वे यिरीहा में आये और जब वुह और उसके शिष्य और एक बड़ी मंडली यिरीहा से निकली तो तीमी का बेटा बरतीमी अंधा मार्ग की ओर बैठके भीख मांगता था। ४७ और जब उसने सुना कि वुह नासरी यिशु है वुह चिल्ला के कहने लगा कि हे दाऊद के बेटे यिशु मुझ पर दया कीजिये। ४८ और बऊतों ने उसे दपट के कहा कि चुप रह परन्तु वुह अधिक चिल्लाया कि हे दाऊद के बेटे मुझ पर दया कीजिये। ४९ यिशु ने खड़ा होके उसे बुलाने की आज्ञा किई तब उन्हों ने यह कहिके उस अंधे मनुष्य को बुलाया कि सुस्थिर हो उठ वुह तुझे बुलाता है। ५० और वुह अपने वस्त्र को फेंकते ऊए उठा और यिशु के पास आया। ५१ तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि तू क्या चाहता है मैं तेरे लिये क्या करों? उस अंधे ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाओं। ५२ यिशु ने उसे कहा कि चला जा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा

किया है श्रीर तुरन्त उसने अपनी दृष्टि पाई श्रीर मार्ग में यिशु के पीछे पीछे चला गया।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ श्रीर जब वे यिरुशालम के लग जलपाई पहाड़ के पास बैतफगा श्रीर बैतनिया में आये तो उसने अपने शिष्यों में से दो को भेजा। २ श्रीर उन्हें कहा कि अपने सन्मुख के गांव में जाश्रो श्रीर उस में पहुंचतेही एक बंधा हुआ बछेरा पाश्रोगे जिस पर कोई मनुष्य नहीं चढ़ा उसे खोल के लेश्राश्रो। ३ श्रीर यदि कोई तुम्हें कहे कि ऐसा क्यों करते हो? तो कहियो कि प्रभु को उसका आवश्यक हैं श्रीर वुह तुरन्त उसे भेजेगा। ४ तब वे गये श्रीर द्वार के पास बाहर एक स्थान में, जहां दो मार्ग मिलता था, उस बछेरे को पाया श्रीर उसे खोला। ५ श्रीर उनमें से कितनों ने, जो वहां खड़े थे, उन्हें कहा कि बछेरे को क्यों खोलते हो?। ६ उन्हों ने यिशु की आज्ञा के समान उत्तर दिया तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया। ७ तब वे उस बछेरे को यिशु पास लाये श्रीर अपने वस्त्रों को उस पर बिछाया श्रीर वुह उस पर चढ़ बैठा। ८ श्रीर बहुतों ने अपने वस्त्रों को मार्ग में बिछाया श्रव श्रीरों ने पेड़ों की डालियां काटीं श्रीर मार्ग में बिथराईं। ९ श्रीर जो आगे पीछे जाते थे सो पुकारने लगे कि होशाना, उस पर आशीर्वाद जो परमेश्वर के नाम से आता है। १० हमारे पिता दाऊद

के राज्य पर, जो परमेश्वर के नाम से आता है, आशीर्बाद अत्यन्त ऊंचे में होआना। ११ और यिशु यिरुशालम और मन्दिर में गया और जब उसने चारों ओर सब कुछ देखा तो बारहों के संग बैतनिया को गया क्योंकि सांझ का समय था।

१२ और दूसरे दिन जब वे बैतनिया से निकले तो उसे भूख लगी। १३ और वुह एक गूलर पेड़ को पत्ते से भरा ऊआ दूर से देख के आया कि क्या जाने उस पर कुछ फल पावे परन्तु उसने उस पास आके पत्तों को छोड़ कुछ न पाया क्योंकि गूलर का समय न था। १४ तब यिशु ने उसे कहा कि अब से कभी तेरा फल कोई न खावे और उसके शिष्यों ने सुना।

१५ और वे यिरुशालम को आये और यिशु मन्दिर में गया और जो मन्दिर में बेचते किनते थे उन्हें बाहर किया और खुरदियों के पटरों को, और कपोत के बेंचने वालों के आसनों को उलट दिया। १६ और किसी मनुष्य को मन्दिर में से बर्तन ले जाने न देता था। १७ और यह कहिके उन्हें उपदेश किया क्या नहीं लिखा है? कि मेरा मन्दिर सारे जातिगणों में प्रार्थना का घर कहावेगा? परन्तु तुम ने उसे चोरों की मांद बनाई। १८ तब अध्यापकों और प्रधान याजकों ने सुन के उसे घात करने की चिंता किई क्योंकि वे उसे डरते थे इस कारण कि सारे लोग उसके उपदेश से

अचंभित ऊए। १९ और जब सांझ ऊई वुह नगर से बाहर गया।

२० और बिहान को, जब वे जाते थे, उन्हों ने उस गूलर पेड़ को जड़ से सूखा देखा। २१ और पथर ने चेत कर के उसे कहा कि हे गुरु देखिये यह गूलर पेड़, जिसे आप ने श्राप दिया, सूख गया है। २२ यिशु ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर पर विश्वास रक्खो। २३ क्योंकि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि जो कोई इस पहाड़ को कहे कि उठके समुद्र में गिर पर और अपने मन में सन्देह न करे परन्तु प्रतीति रक्खे कि जो मैं कहता हों सो हो जायगा तो कुछ वुह मांगेगा सो पावेगा। २४ इस लिये मैं तुम्हें कहता हों कि प्रार्थना में जो कुछ तुम मांगोगे विश्वास करो कि हम पाते हैं और तुम पाओगे। २५ और जब तुम प्रार्थना करने को खड़े होओ तो यदि किसी पर कुछ अपराध रखते हो तो क्षमा करो जिसतें तुम्हारा पिता भी, जो स्वर्ग में है तुम्हारे अपराध को क्षमा करे। २६ परन्तु यदि तुम क्षमा न करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी, तुम्हारे अपराधों को क्षमा न करेगा।

२७ और वे फेर यिरुशालम में आये और जब वुह मन्दिर में फिरता था प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन उस पास आये। २८ और उसे कहा कि तू किस पराक्रम से यह कार्य करता है? और तुझे

यह कार्य करने का किस ने पराक्रम दिया?। २९ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि मैं भी तुम्हें एक बात पूछता हों मुझे उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें बताओंगा कि किस पराक्रम से यह कार्य करता हों। ३० योहन का स्नान स्वर्ग से था कि मनुष्यन से? मुझे उत्तर देओ। ३१ तब वे यह कहिके आपुस में बिचारने लगे कि जो हम कहें कि स्वर्ग से तो वुह कहेगा कि फेर तुमने उसकी प्रतीति क्यों न किई?। ३२ परन्तु यदि हम कहें कि मनुष्यों से तो लोगों से डरते हैं क्योंकि सब योहन को निश्चय भविष्यद्वक्ता जानते थे। ३३ तब उन्हों ने उत्तर देके यिशु से कहा कि हम नहीं कहि सक्ते और यिशु ने उत्तर में उन्हें कहा कि मैं भी तुम्हें न कहोंगा कि मैं किस पराक्रम से यह कार्य करता हों।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ और वुह उन्हें दृष्टान्तों में कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और आस पास बाड़ा बांधा और कोल्हू खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को ठीका देके दूर देश को चला गया। २ और समय में उसने दाख की बारी के फल के लिये एक सेवक को मालियों पास भेजा। ३ पर उन्हों ने पकड़ के उसे मारा और छूछा फेर दिया। ४ फेर उसने उनके पास दूसरे सेवक को भेजा और उन्हों ने उसे पत्थरों से मारा और सिर फोड़ा और अपमान करके

फेर दिया। ५ फेर उसने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे मार डाला अरु और बहुतेरों को मारा और कितनों को बध किया। ६ अब उसका एकही अति प्रिय पुत्र रहीगया उसने अंत्य में यह कहि के उसे भी उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ७ परन्तु उन मालियों ने आपुस में कहा कि यह अधिकारी है आओ इसे मार डालें और अधिकार हमारा हो जायगा। ८ और उन्हों ने उसे पकड़ के मार डाला और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। ९ इस कारण दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वुह आवेगा और उन मालियों को नाश करेगा और दाख की बारी औरों को देगा। १० और यह जो लिखा है तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा ठहराया सो कोने का सिरा हुआ?। ११ यह ईश्वर का कार्य्य हैं और हमारी दृष्टि में आश्चर्य्यित है। १२ और उन्हों ने चाहा कि उसे पकड़ लेवें परन्तु लोगों से डरे क्योंकि वे जान गये कि उसने यह दृष्टान्त उनके बिषय में कहा और वे उसे छोड़ के चले गये।

१३ फेर उन्हों ने उसे बातों में बझानेको कई फिरूसियों और हिरोदियों को उसके पास भेजा। १४ और आके उन्हों ने उसे कहा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी का खटका नहीं रखते क्योंकि आप मनुष्यों की प्रगट दशा को नहीं मानते

परन्तु ईश्वर के मार्ग को सच्चाई से सिखाते हैं कैसर को कर देना योग्य है अथवा नहीं? हम देवें अथवा न देवें?। १५ परन्तु उसने उनके कपट को देखके उन्हें कहा कि मेरी परीक्षा क्यों करते हो? मुझे एक सूकी लाके दिखाओ। १६ और वे लाये तब उसने उन्हें कहा कि यह किसकी मूर्त्ति और छाप है? उन्हों ने उसे कहा कि कैसर की। १७ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि जो वस्तु कैसर की है कैसर को और जो कि ईश्वर की है ईश्वर को देओ और वे उस्से बिस्मित हुए।

१८ तब जाडूकी, जो कहते हैं कि जी उठता नहीं है, उस पास आये और यह कहिके उसे पूछा। १९ कि हे गुरु हमारे लिये मूसा ने लिखा है कि यदि किसी का भाई मरजाय और पत्नी को निर्बंश छोड़ जाय तो उसका भाई उसकी पत्नी को लेवे और अपने भाई के लिये बंश चलावे। २० अब सात भाई थे और पहिले ने पत्नी किई और निर्बंश मर गया। २१ तब दूसरे ने उसे लिया और मर गया वुह भी कोई बंश न छोड़गया और इसी रीति से तीसरे ने भी। २२ और सातों ने उसे लिया और कोई बंश न छोड़ गया सब के पीछे वुह स्त्री भी मर गई। २३ इस लिये जी उठने में जब वे उठेंगे वुह उनमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि सातों ने उसे पत्नी किया था। २४ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि तुम लिखित और ईश्वर के

सामर्थ्य को न जानके क्या चूक नहीं करते। २५ क्योंकि जब वे मृत्यु से उठेंगे वे बियाह न करेंगे और न बियाह में दिये जायेंगे परन्तु स्वर्ग के दूतों के समान हैं। २६ और मृतकों के जी उठने के विषय में तुम ने मूसा की पुस्तक में नहीं पढ़ा कि झाड़ी में ईश्वर उसे कैसा यह कहिके बोला कि मैं इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हों। २७ वुह मृतकों का ईश्वर नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है इस लिये तुम बहुत चूक करते हो।

२८ तब अध्यापकों में से एक आया और उन्हें आपुस में चर्चा करते सुन के देखा कि उसने उन्हें ठीक उत्तर दिया उसने उसे पूछा कि सारी आज्ञाओं में श्रेष्ठ कौनसी है?। २९ यिशु ने उसे उत्तर दिया कि सब से श्रेष्ठ आज्ञा यह कि सुनो हे इसराईल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है। ३० और तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपने सारे अन्तःकरण से और अपने सारे बल से परमेश्वर अपने ईश्वर को प्यार कर यही पहिली आज्ञा है। ३१ और दूसरी इसी के समान है कि तू अपने परोसी को अपने समान प्यार कर इन से और कोई बड़ी आज्ञा नहीं। ३२ तब उस अध्यापक ने उसे कहा कि अच्छा हे गुरु आपने सत्य कहा है क्योंकि एकही ईश्वर है और उसे छोड़ दूसरा कोई नहीं। ३३ और उसे सारे अन्तःकरण से

और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी सामर्थ्य से प्यार करना और परोसियों को अपने समान प्यार करना यह सारे यज्ञ और होम से अति बड़ा है। ३४ और जब यिशु ने देखा कि उसने बुद्धि से उत्तर दिया तो उसने उसे कहा कि तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं और उसके फेर उस्से प्रश्न करने को किसी का वियाव न ज्ञआ।

३५ और यिशु मन्दिर में उपदेश करते ज्ञए उन्हें पूछा कि अध्यापक क्यों कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?। ३६ क्योंकि दाऊद ने आपही धर्मात्मा में होके कहा कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा कि जबलों मैं तेरे बैरियों को तेरे पांव की पीढ़ी करों तू मेरे दहिने हाथ बैठो। ३७ सो दाऊद तो आपही उसे प्रभु कहता है फेर वुह उसका पुत्र क्योंकर है? और सामान्य लोग आनन्द से उसे सुनते थे।

३८ और उसने अपने उपदेश में उन्हें कहा कि अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे बस्त्र पहिन के चलने की और हाट में नमस्कारों की। ३९ और मंडलियों में प्रधान आसनों की और जेवनारों में श्रेष्ठ स्थानों की प्रीति रखते हैं। ४० जो विधवा के घरों का निगलते हैं और छल से प्रार्थना को बढ़ाते हैं उनको बज्जत बड़ा दंड होगा।

४१ और यिशु भंडार के सन्मुख बैठके देख रहा कि

लोग भंडार में रोकड़ क्योंकर डालते हैं और बज़तेरे जो धनमान थे बज़त डालते थे। ४२ तब एक कंगाल विधवा ने दो छदाम, जो मिलके एक अधला होता है डाले। ४३ और उसने अपने शिष्यों को बुलाके उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि जिन्हों ने भंडार में डाला है इस कंगाल विधवा ने उन सभों से अधिक डाला। ४४ क्योंकि सभों ने अपनी अधिकाई से डाला परन्तु इसने अपनी कंगालपना से जो कुछ रखती थी अपना सारा उप जीवन डाला।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ और जब वुह मन्दिर से बाहर जाता था उसके शिष्यों में से एक ने उसे कहा कि हे गुरु देखिये कैसे कैसे पत्थर और कैसी जोड़ाइयां। २ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि तू ये बड़ी जोड़ाइयां देखता है यहां एक पत्थर दूसरे पर न छूटेगा जो गिराया न जाय।

३ और जब वुह जलपाई के पहाड़ पर मन्दिर के सन्मुख बैठा था पथर और याकूब और योहन और अंद्रिया ने एकान्त में उसे पूछा। ४ कि हमें कहिये कि ये बातें कब होंगी? और इन सभों के पूरे होने का क्या चिक्न है?। ५ यिशु उत्तर देके उन्हें कहने लगा कि चौकस रहो कि कोई तुम्हें छल न देवे। ६ क्योंकि बज़तेरे यह कहिके मेरे नाम से आवेंगे कि मैं हों और बज़तों को छलेंगे और जब तुम संग्राम की बात।

७ और संग्राम का हल्ला सुनो तो ब्याकुल मत होइयो क्योंकि उनका होना अवश्य है परन्तु अभी अंत नहीं है। ८ क्योंकि लोग लोग पर और राज्य राज्य पर चढेंगे और अनेक स्थान में भूचाल होंगे और अकाल और क्लेश होंगे ये दुःखों के आरंभ हैं।

९ परन्तु आप आप को चौकस रखो क्योंकि वे तुम्हें सभाओं में सौंपेंगे और तुम मंडलियों में मारे जाओगे और उनके बिरोध साक्षी होने के लिये मेरे नाम के कारण तुम अध्यक्षों और राजाओं के आगे पहुंचाये जाओगे। १० और अवश्य है कि पहिले लग समाचार समस्त जातिगणों में प्रचारा जाय। ११ परन्तु जब वे लेजायें और तुम्हें सौंपें आगे से चिन्ता मत करो कि हम क्या कहेंगे और आगे से सोच मत करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उस घड़ी दिया जाय वही कहियो क्योंकि तुम नहीं जो कहते हो परन्तु धर्मात्मा। १२ और भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये पकड़वायेगा और बालक माता पिता के बिरोध उठेंगे और उन्हें घात करवावेंगे। १३ और मेरे नाम के लिये सब तुम से बैर करेंगे परन्तु जो अंत लों रहेगा सो मुक्ति पावेगा।

१४ परन्तु जब तुम दानियाल भविष्यद्वक्ता की कही हुई नाश की घिनित को अनुचित स्थान में खड़ा देखो तो जो पढ़े सो समझे तब जो यिहूदिय में हैं सो पहाड़ों

को भागें। १५ और जो कोठे पर हो सो घर में न उतरे कि पैठ के अपने घर से कोई वस्तु निकाले। १६ और जो खेत में हो सो अपने वस्त्र लेने को पीछे न फिरे। १७ परन्तु हाय उन पर जो उन दिनों में गर्भिणी और उन पर जो दूध पिलातियां होंगी। १८ और प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना जाड़े में न हो। १९ क्योंकि उन दिनों में ऐसा कष्ट होगा जैसा कि सृष्टि के आरंभ से, जो ईश्वर ने उत्पन्न किया, अब लों न ऊआ और न होगा। २० और यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी उद्धार न पाता परन्तु चुने ऊओं के हेतु जिन्हें उसने छांट रक्खा है उसने हे न दिनों को घटाया है। २१ और तब यदि कोई तुम्हें कहे कि देखो मसीह यहां अथवा देखो वहां है प्रतीत मत करियो। २२ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता निकलेंगे और लक्षण और आश्चर्य दिखावेंगे कि यदि होनहार होता तो चुने ऊओं को भी भरमावते। २३ परन्तु सोचेत रहो देखो मैं ने तुम्हें आगे से सब बात चिता दिई है। २४ पर उन दिनों में उस कष्ट के पीछे सूर्य अंधियारा होगा और चंद्रमा अपनी ज्योति न देगा। २५ और स्वर्ग से तारे गिरेंगे और स्वर्ग की दृढ़ता हिल जायेंगी। २६ और तब वे मनुष्य के पुत्र को मेघों पर बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य से आते देखेंगे। २७ और तब वुह अपने दूतों को भेजेगा

श्रीर अपने चुने ऊश्रों को चारों पवन से पृथिवी के सिवाने से स्वर्ग के सिवाने लों एकट्ठे करेगा।

२८ अब गूलर पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली अब लों कोमल है श्रीर पत्ते निकालती हैं तुम जानते हो कि तपन निकट है। २९ सो इसी रीति से जब देखो कि यह बातें आ पडुंचीं जानो कि वुह निकट है अर्थात द्वारों पर। ३० मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी बीत न जायगी जब लों यह सारी बातें न होलें। ३१ स्वर्ग श्रीर पृथिवी टल जायेंगी परन्तु मेरे वचन न टलेंगे।

३२ परन्तु उस दिन श्रीर उस घड़ी के विषय को कोई मनुष्य नहीं जानता हां न स्वर्गीय दूत न पुत्र केवल पिता। ३३ तुम सैंाचेत रहो श्रीर प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते कि समय कब है। ३४ जैसे एक मनुष्य ने दूर की यात्रा करते ऊए अपने घर को छोड़ा श्रीर अपने सेवकों को पराक्रम दिया श्रीर हर एक मनुष्य को उसका कार्य श्रीर द्वार पाल को चैाकस होने की आज्ञा दिई। ३५ इस लिये चैाकस रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आवेगा सांझ को अथवा आधी रात को अथवा कुक्कुट बोलते ऊए अथवा बिहान को। ३६ न होवे कि वुज अचानक आके तुम्हें सोते पावे। ३७ श्रीर जो मैं तुम्हें कहता हों सो सब से कहता हों कि चैाकस रहो।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ दो दिन के पीछे अखमीरी रोटी का पर्ब्ब होने को था और प्रधान याजक और अध्यापक युक्ति कर रहे थे कि उसे किस रीति छल से पकड़ लेवें और मार डालें। २ परन्तु उन्हों ने कहा कि पर्ब्ब में नहीं न हो कि लोगों में हुलुर होवे। ३ और वुह बैथनिय में कोढ़ी शिमोन के घर में होते हुए जब भोजन पर बैठा था एक स्त्री बहुमूल्य सुगंध तेल श्वेत पत्थर की डिबिया में लाई और उसने उस डिबिया को तोड़ा और उसके सिर पर ढाल दिया। ४ और वहां कितने थे जो अपने मन में क्रोधित होके बोले कि इस सुगंध तेल का व्यर्थ उठान किस लिये हुआ?। ५ क्योंकि वुह तीन सौ सूकी से अधिक को बेचा जाता और कंगालों को दिया जाता और वे उसपर कुड़कुड़ाने लगे। ६ पर यिशु ने कहा कि उसे रहने देउ उसे क्यों छेड़ते हो उसने मुझ पर उत्तम कार्य किया है। ७ क्योंकि कंगालों को सर्वदा अपने संग पाओगे और जब कभी चाहोगे उन पर भला कर सकोगे परन्तु मुझे सर्वदा न पाओगे। ८ जो कुछ वुह कर सकी सो किई उसने मेरे गाड़ने के लिये आगे से आके मेरे देह पर सुगंध तेल लगाया। ९ मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि सारे जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार प्रचारा जायगा यह भी जो इसने किया है इसके स्मरण के लिये कहा जायगा।

१० तब उन बारह में से एक यिहूदा यिस्करियती उसे उन्हें पकड़वा देने के लिये प्रधान याजकों के पास गया। ११ और वे सुन के आनन्दित हुए और उसे रोकड़ देने को ठहराये तब वुह सोचने लगा कि उसे किस प्रकार से दांव में पकड़वा देय।

१२ और अखमीरी रोटी के पहिले दिन, जब वे बीतजाना बलिकरते थे उसके शिष्यों ने उसे कहा कि आप कहां चाहते हैं कि हम जाके सिद्ध करें जिसतें आप बीतजाना खायं। १३ उसने अपने शिष्यों में से दो को भेजा और उन्हें कहा कि नगर में जाओ और वहां तुम्हें एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए मिलेगा उसके पीछे पीछे जाइयो। १४ और जहां कहीं वुह भीतर जाय उस घर के स्वामी से कहियो कि गुरु ने कहा है कि वुह पाहुन शाला कहां है जहां मैं अपने शिष्यन के संग बीतजाना खाऊं?। १५ और वुह एक बड़ी उपरौटी कोठरी संवरी सुधारी तुम्हें दिखावेगा वहां हमारे लिये सिद्ध करो। १६ तब उसके शिष्य चले गये और नगर में जाके जैसा उसने कहा था तैसाही पाया और उन्हों ने बीतजाना सिद्ध किया।

१७ और सांझ को वुह उन बारह के संग आया। १८ और जब वे बैठके खाने लगे तो यिशू ने कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि एक तुम्में से, जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वावेगा। १९ तब वे कुढ़नेलगे और एक

एक करके उसे कहने लगा कि मैं हों? और दूसरा बोला क्या मैं हों?। २० उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि बारह में से एक जो मेरे संग थाली में हाथ बोरता है। २१ जैसा मनुष्य के पुत्र के बिषय में लिखा है तैसा जाता है ठीक परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस्से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाय उस मनुष्य के लिये भला होता कि वुह कभी उत्पन्न न होता। २२ और जब वे खाते थे यिशु ने रोटी को लिया और धन्यबाद करके तोड़ा और यह कहिके उन्हें दिया कि लेओ खाओ यह मेरा देह है। २३ फेर उसने कटोरा लिया और धन्य मान के उन्हें दिया और उन सभों ने उस्से पीया। २४ तब उसने उन्हें कहा कि यह नये नियम का मेरा लोहू है जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। २५ मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि मैं दाख का रस फेर न पीओंगा जबलों मैं ईश्वर के राज्य में उसे नया पीओं।

२६ और जब वे एक भजन गाचुके वे जलपाई के पहाड़ पर गये। २७ तब यिशु ने उन्हें कहा कि आज रात तुम सब मेरे कारण ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारोंगा और भेड़े छिन्न भिन्न होजायेंगी। २८ परन्तु जीउठने के पीछे मैं तुम से आगे गालील को जाऊंगा। २९ पथर ने उसे कहा कि यद्यपि सब ठोकर खायें तथापि मैं नहीं। ३० यिशु ने उसे कहा कि मैं तुझे सत्य कहता हों कि आज के दिन

अर्थात इसी रात को कुक्कुट के शब्द करने से आगे तू तीन बार मुझे मुकर जायगा। ३१ परन्तु उसने और अति धुन से कहा कि यदि आपके संग मेरा मरना होवे मैं किसी भांति आपसे न मुकरोंगा उन सभों ने भी इसी रीति से कहा।

३२ तब वे एक स्थान में, जिसका नाम गेतसिमनी था, आये और उसने अपने शिष्यन से कहा कि जबलों मैं प्रार्थना करों तुम यहां बैठो। ३३ तब वुह अपने संग पथर और याकूब और योहन को लेकर बहुत घबराने और अति कुढ़नेलगा। ३४ और उन्हें कहा कि मेरा प्राण मरने लों अति दुःखित है तुम यहां ठहरो और जागते रहो। ३५ तब वुह थोड़ा आगे बढ़के भूमि पर गिरा और प्रार्थना किई कि यदि होनहार होय तो यह घड़ी मुझ्से टल जाय। ३६ और कहा कि हे पिता हे पिता सब कुछ तेरे वश में है यह कटोरा मुझ्से टाल दे तिस पर भी मेरी इच्छा नहीं परन्तु जो तू चाहता है। ३७ तब वुह आया और उन्हें सोते पाया और पथर से कहा कि हे शमऊन तू सोता है? क्या तू एक घड़ी न जाग सका?। ३८ जागते रहो और प्रार्थना करो नहो कि परीक्षा में पड़ो, आत्मा तो सिद्ध है ठीक परन्तु शरीर निर्बल। ३९ और वुह फिर गया और प्रार्थना में वही बचन बोला। ४० और जब वुह फिर आया उसने उन्हें फिर सोते पाया (क्योंकि उनकी

आंखें भारी थीं) और वे न जानते थे कि उसे क्या उत्तर देवें। ४१ फिर वुह तीसरे बार आके उनसे बोला कि अब सोते रहो और बिश्राम करो बस है घड़ी आपहुंची देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है। ४२ उठो हम जायें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट है।

४३ और तुरन्त जब वुह कहि रहा था उन बारह में से एक यिहूदा और उसके संग प्रधान याजकों और अध्यापकों और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी मंडली तलवार और लाठियां लेके आई। ४४ और जिसने उसे पकड़वाया था उसने उन्हें यह कहिके पता दिया कि जिसकिसी को मैं चूमों वुह वही है उसे पकड़ लेउ। ४५ और चैाकसी से लेजाओ और जोंहीं वुह आ पहुंचा वुह तुरन्त उसके पास जाके बोला कि हे गुरु, हे गुरु, और उसका चूमा लिया। ४६ तब उन्हों ने उस पर हाथ धर के पकड़ लिया। ४७ और उन में से एक ने, जो वहां खड़े थे, खड्ग खिंच के प्रधान याजकों के एक सेवक को मारा और उसका कान उड़ा दिया। ४८ तब यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि जैसा चोर के लिये तलवार और लाठियां लेके मुझे पकड़ने को निकले हो ?। ४९ मैं तो प्रति दिन तुम्हारे संग मंदिर में उपदेश करता था और तुम ने मुझे न पकड़ा परन्तु अवश्य है कि लिखाहुआ पूरा होवे। ५० तब सब के

सब उसे छोड़ के भाग गये। ५१ परन्तु वहां एक तरुण मनुष्य उसके पीछे चला जाता था जो सूती बस्त्र से नंगाई को ढांपे था और तरुणों ने उसे पकड़ लिया। ५२ और वुह सूती बस्त्र को छोड़ के उन से नंगा भागगया।

५३ तब वे यिशु को प्रधान याजक कने ले गये और उसके संग सारे प्रधान याजक और प्राचीन और अध्यापक एकट्ठे थे। ५४ और पथर प्रधान याजक के घर लों दूर से उसके पीछे पीछे गया और वुह सेवकों के संग बैठ के आग तापने लगा। ५५ तब प्रधान याजक और सारी सभा यिशु पर साक्षी ढूंढ़ते थे कि उसे मार डालें परंतु न पाये। ५६ क्योंकि बहुतेरों ने उस पर झूठी साक्षी दिई तथापि उनकी साक्षी एक सां न मिली। ५७ और कई एक उठे और यह कहिके उस पर झूठी साक्षी देने लगे। ५८ कि हम ने उसे कहते सुना है कि मैं इस मन्दिर को, जो हाथों से बनाया गया है, ढाऊंगा और तीन दिन में एक दूसरा बिना हाथ से बनाओंगा। ५९ परंतु तिस पर भी उनकी साक्षी न मिली। ६० तब प्रधान याजक मध्य में खड़ा हुआ और यह कहिके यिशु को पूछा कि तू कुछ उत्तर नहीं देता? ये तुझ पर क्या क्या साक्षी देते हैं?। ६१ परंतु वुह चुपका रहा और उत्तर न दिया प्रधान याजक ने उसे फेर पूछा और कहा कि तू मसीह

उस आनन्दित का पुत्र है?। ६२ तब यिशु ने कहा कि मैं हों और तुम मनुष्य के पुत्र को पराक्रम की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे। ६३ तब प्रधान याजक ने अपने बस्त्रों को फाड़ा और कहा कि अब हमें और साक्षियों का क्या प्रयोजन है?। ६४ तुम ने यह उस्से ईश्वर की निंदा सुनी क्या सोचते हो? उन सभों ने उस पर मारडालने के योग्य अपराध ठहराया। ६५ तब कितने उस पर थूकने और उसका मुंह ढांपने और उसे घूंसा मारने लगे और उसे कहने लगे कि भविष्य कह और सेवकों ने उसे थपेड़े मारे।

६६ और जब पथर नीचे सदन में था प्रधान याजक की दासियों में से एक आई। ६७ और जब उसने पथर को तापते देखा तो उस पर दृष्टि करके बोली कि तूभी यिशु नासरी के संग था। ६८ परंतु यह कहिके वुह मुकर गया कि मैं नहीं जानता और नहीं बूझता कि तू क्या कहती है तब वुह बाहर ओसारे में गया और कुक्कुट ने शब्द किया। ६९ और एक दासी फेर उसे देख के उनसे, जो खड़े थे, कहने लगी कि यह उन में से है। ७० और वुह फेर मुकर गया और तनिक पीछे फेर उन्हों ने, जो वहां खड़े थे, पथर को कहा कि सच मुच तू उनमें से है क्योंकि तू गालीली है और तेरी बोली मिलती है। ७१ परंतु वुह आप देने और किरिया खाने लगा कि मैं इस मनुष्य को, जिस की

तुम कहते हो, नहीं जानता। ७२ और दूसरे बार कुक्कुट ने शब्द किया तब पथर ने उस बचन को, जो यिशु ने उसे कहा था, स्मरण किया कि कुक्कुट के दो बार शब्द करने से आगे तू तीन बार मुझे मुकर जायगा तब वुह उसको सोच करके रोने लगा।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब।

१ और ज्योंहीं बिहान ऊआ प्रधान याजक प्राचीनों और सारे अध्यापकों और सभा के प्रधानों के संग परामर्श करके यिशु को बांध के ले गये और पिलात को सौंप दिया। २ और पिलात ने उसे पूछा कि तू यिहूदियों का राजा है? उसने उत्तर देके उसे कहा कि तूही कहता है। ३ तब प्रधान याजक उस पर बक्त से दोष देने लगे परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया। ४ तब पिलात ने यह कहिके फेर उसे पूछा कि तू कुछ उत्तर नहीं देता? देख वे कितनी कुछ साक्षी तुझ पर देते हैं। ५ परन्तु तौभी यिशु ने कुछ उत्तर न दिया यहां लों कि पिलात ने आश्चर्य माना।

६ अब पर्ब्ब में एक बंधुआ को, जिसे वे चाहते थे वुह छोड़ देता था। ७ और बरब्बा नाम का एक जन था जो उनके संग, बंधन में था जिन्हों ने उसके साथ ऊलर किया था और उस ऊलर में हत्या किई थी। ८ तब जैसा वुह उनके लिये सदा करता था मंडली चिल्ला के वही उस्से मांगने लगी। ९ परन्तु पिलात ने उत्तर में

उन्हें कहा कि तुम चाहते हो कि मैं यिहूदियों के राजा को तुम्हारे लिये छोड़ देउं। १० क्योंकि वुह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से सौंप दिया था। ११ परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उसकाया कि वुह उनके लिये बरब्बाही को छोड़ देवे। १२ तब पिलात ने फेर उत्तर देके उन्हें कहा कि जिसे तुम यिहूदियों का राजा कहते हो मैं उसे क्या करों?। १३ वे फेर चिल्ला के बोले कि उसे क्रूस पर मार। १४ तब पिलात ने उन्हें कहा कि किस लिये उसने क्या बुराई किई है? वे और अत्यंत चिल्लाये कि उसे क्रूस पर मार। १५ और लोगों को शान्त करने के लिये पिलात ने उनके लिये बरब्बा को छोड़ दिया और यिशु को छड़ी मार के सौंप दिया कि क्रूस पर मारा जाय।

१६ तब योड्वा उसे भीतर प्रेतोरियम नाम बैठक में ले गये और उन्हों ने सारी जथा को एकट्ठे बुलाया। १७ और उसे बैंगनी बस्त्र पहिनाया और कांटों का मुकुट सजके उस पर रक्खा। १८ और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम। १९ और उन्हों ने उसके सिर पर नरकट से मारा और उस पर थूका और घुठने टेक के उसे प्रणाम किया। २० और उन्हों ने उसे चिढ़ाके उस बैंगनी को उस पर

से उतारा और उसी का बस्त्र उसे पहिनाया और क्रूस पर मारने के लिये उसे बाहर ले चले।

२१ और उन्हों ने शिमोन कुरीनी से बरबस उसका क्रूस उठवाया वुह सिकन्दर और रूफस का पिता था और बाहर से आके उधर से जाता था। २२ और वे उसे गलजता स्थान में आये जिस का अर्थ खोपड़ी का स्थान है। २३ और उन्हों ने दाखरस मुर मिला के उसे पीने को दिया परन्तु उसने न लिया। २४ और उन्हों ने उसे क्रूस पर खींचके उसके बस्त्रों का भाग किया और उन पर चिट्ठी डाली कि हर एक मनुष्य कौनसा लेवे। २५ और तीसरी घड़ी थी जब उन्हों ने उसे क्रूस पर खींचा था। २६ और उसके लिये यह दोष पत्र ऊपर लिखा कि यिहूदियों का राजा। २७ और उन्हों ने उसके संग दो चोरों को, एक को दहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूस पर खींचा। २८ तब वुह लिखा हुआ जो कहता है कि वुह पापियों में गिना गया पूरा हुआ। २९ और पथिकों ने उस पर ठट्ठा किया और सिर धुन धुन कहने लगे कि "तू जो मन्दिर को ढाता है और तीन दिन में बनाता है। ३० आप को बचा और क्रूस से उतर आ"। ३१ इसी भांति से प्रधान याजकों ने भी आपुस में अध्यापकों के संग ठट्ठा करते कहा कि "उसने औरों को बचाया आप को नहीं बचा सक्ता। ३२ अब मसीह इसराईल

का राजा क्रूस से उतर आवे कि हम देखें और बिश्वास लावें" और उन्हों ने, जो उसके संग क्रूस पर खींचे गये थे, उसे दुर्बचन कहा।

३३ और छठवीं घड़ी से नवईं घड़ी लों सारे देश में अंधियारा छागया। ३४ और नवईं घड़ी में यिशु ने बड़े शब्द से कहा कि "एली एली लमा सबकतनी"? जिसका यह अर्थ है कि हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों त्यागा है?। ३५ तब कई उन में से, जो पास खड़े थे यह सुन के बोले कि देखो वुह इलिया को बुलाता है। ३६ और एक ने दौड़ के बादल के टुकड़े को सिरके से भरा और नरकट पर धर के पीने को दिया और कहा कि रहने दे हम देखें यदि इलिया उसे उतारने को आवेगा।

३७ तब यिशु ने बड़ा शब्द करके प्राण त्यागा। ३८ और मन्दिर का ओझल ऊपर से नीचे लों फटगया। ३९ और जब उस शतपति ने जो उसके सन्मुख खड़ा था, यह देखा कि उसने ऐसा शब्द करके प्राण त्यागा तो उसने कहा कि यह मनुष्य सचमुच ईश्वर का पुत्र था। ४० वहां स्त्रियां भी दूर से देख रहीं थीं जिन में मरियम मगदली और छोटे याकूब और युसस की माता मरियम और सालूमी थीं। ४१ (जब वुह गालील में था वे भी उसके पीछे पीछे जाती थीं और उसकी सेवा करती थीं) और बहुत सी और स्त्रियां थीं जो उसके संग यिरोशलीम को आईं थीं।

४२ और जब सांझ हुई (इस कारण कि बनावरी थी अर्थात बिश्राम से पहिले दिन)। ४३ एक प्रतिष्ठित मंत्री, जो ईश्वर के राज्य का भी बाट जोहता था अर्थात अरमतिया का यूसफ आया और उसने हियाव से पिलात पास जाके यिशु की लोथ मांगी। ४४ तब पिलात बिस्मित हुआ कि वुह ऐसा शीघ्र मरगया और उस शतपति को बुला के पूछा क्या उसे मरे अबेर हुई?। ४५ तब उसने शतपति से बूझ के लोथ यूसफ को दिई। ४६ और उसने झीना बस्त्र मोल लिया और उसे उतारके कपड़े में लपेटा और एक समाधि में, जो चटान में खोदा गया था रक्खा और समाधि के मुंह पर एक पत्थर ढुलका दिया। ४७ और मरियम मगदली और यूसा की माता मरियम ने देख रक्खा कि वुह कहां धरा गया था।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ और जब बिश्राम दिन बीत गया तो मरियम मगदली और याकूब की माता मरियम और सालूमी ने सुगंध द्रब्य मोल लिया जिसतें आके उस पर लगावें। २ और बड़े तड़के भोर को अठवारे के पहिले दिन सूर्य उदय होते वे समाधि पर आईं। ३ और आपुस में कहने लगीं कि हमारे कारण समाधि के मुंह से पत्थर कौन ढुलकावेगा?। ४ और जब उन्हों ने दृष्टि किई तो क्या देखती है कि पत्थर ढुलकाया हुआ था

क्योंकि वुह बज़त बड़ा था। ५ और समाधि में पैठके उन्हों ने एक तरुण मनुष्य को, उजला लंबा बस्त्र पहिने दहिनी ओर बैठे ज़ए देखा और डर गई। ६ तब उसने उन्हें कहा कि मत डरो तुम यिशु नासरी को, जो क्रूस पर मारा गया था, ढूंढ़तियां हो वुह जी उठा है यहां नहीं है उस स्थान में देखो जहां उन्हों ने उसे रक्खा था। ७ परन्तु जाके उसके शिष्यों से और पथर से कहो कि वुह तुम्हारे आगे गालील को जाता है जैसा उसने तुम्हें कहा था तुम उसे वहां देखोगी। ८ और वे तुरन्त निकल के समाधि से दौड़ीं क्योंकि वे कंपित और बिस्मित थीं और किसी से कुछ न कहा क्योंकि वे डरगई थीं।

९ अब तड़के अठवारे के पहिले जब वुह उठा तो मरियम मगद्लो को पहिले दिखाई दिया जिस्से उसमें सात पिशाचों को दूर किया था। १० और उसने उसके संगियों से जो शोक बिलाप कर रहे थे जाके कहा। ११ और जब उन्हों ने सुना कि वुह जीता है और उसे दिखाई दिया तो प्रतीति न किई।

१२ उसके पीछे वुह दूसरे रूप में उन में से दो को, बाहर जाते ज़ए दिखाई दिया। १३ और उन्हों ने जाके रहेज़ओं को कहा उन्हों ने उनकी भी प्रतीति न किई।

१४ उसके पीछे वुह उन ग्यारहों को, जब वे भोजन

पर बैठे थे दिखाई दिया और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर ओलाना दिया इस कारण कि जिन्हों ने उसे जी उठने के पीछे देखा था उन्हों ने उनकी प्रतीति न किई।

१५ तब उसने उन्हें कहा कि सारे जगत में जाओ और हर एक मनुष्य के पास मंगल समाचार प्रचारो। १६ जो विश्वास लाता है और स्नान किया गया है सो उद्धार पावेगा परन्तु जो विश्वास नहीं लाता उस पर दंड की आज्ञा किई जायगी। १७ और वे जो विश्वास लाते हैं उन में यह लक्षण होंगे कि वे मेरे नाम से पिशाचों को दूर करेंगे और नई नई भाषा बोलेंगे। १८ वे सांपों को उठा लेंगे और यदि वे कोई मारू विष पीवेंगे तो उन्हें दुख न देगी वे रोगियों पर हाथ रक्खेंगे और वे चंगे होजायंगे।

१९ सो जब प्रभु उन्हें कहि चुका वुह स्वर्ग पर उठाया गया और ईश्वर की दहिनी ओर बैठा। २० तब वे बाहर निकल के हर एक स्थान में उपदेश करने लगे और प्रभु सहाय करता था और वचन को लक्षणों से दृढ़ करता था आमीन।

मंगल समाचार लूक रचित ॥

——0000——

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ हे महामहिमन थियफिल जैसा कि बज्जतेरों ने उन बातों को विधि से वर्णन करने को हाथ लगाया जो दृढ़ प्रमाणों से हम्में स्थिर किया गया। २ जैसा कि उन्हों ने, जो आरंभ से बचन के प्रत्यक्ष साक्षी और सेवक थे हमें सोंपा। ३ आरंभ से उनका ठीक ज्ञान रखके मुझे भी अच्छा लगा कि रीति से आपके पास लिखों। ४ जिसतें आप उन बातों के निश्चय को जिनमें आपने उपदेश पायाहै जानें।

५ यिझदिय: के राजा हीरोद् के समय में आबिया की पारी का जकरिया नाम एक याजक था और उसकी पत्नी हारून की पुत्रियों में से थी उसका नाम एलीसबा था। ६ और वे दोनों ईश्वर के आगे धर्म्मी और प्रभु की सारी आज्ञा और व्यवस्था पर दोषरहित चलते थे। ७ और एलीसबा के बांझ होने के कारण उनके बालक न था और वे दोनों पुरनिया थे। ८ और ऐसा झआ कि जब वुह अपनी पारी में याजकता के कार्य्य ईश्वर के आगे करता था। ९ और याजक की

रीति के व्यवहार के समान उसकी पारी आई कि प्रभु के मंदिर में जाके धूप जलावे। १० और लोगों की सारी मंडली धूप जलाने के समय बाहर प्रार्थना करती थी। ११ तब प्रभु का दूत धूप बेदी के दहिनी ओर खड़ाहुआ उसे दिखाई दिया। १२ और जकरिया देख के व्याकुल हुआ और बहुत डर गया। १३ परन्तु दूत ने उसे कहा कि हे जकरिया मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरी पत्नी एलीसबा तेरे लिये पुत्र जनेगी और तू उसका नाम योहन रखना। १४ और तुझे आनन्द और मंगल होगा और उसके जन्म से बहुतेरे आनन्दित होंगे। १५ क्योंकि वुह प्रभु की दृष्टि में महान होगा और दाख रस और मदिरा न पीएगा और अपनी माता की कोख में से धर्मात्मासे पूर्ण होगा। १६ और इसराईल के संतानों में से वुह बहुतों को उनके ईश्वर प्रभु की ओर फेरेगा। १७ और पिता के मन को पुत्रों की ओर और आज्ञा भंजक को धर्मी की बुद्धि की ओर फेरने को, जिसतें एक लोग को प्रभु के लिये सिद्ध करे वुह उसके आगे आगे इलिया के आत्मा और सामर्थ्य से चलेगा। १८ और जकरिया ने दूत से कहा कि मैं इसे क्योंकर जानों? क्योंकि मैं पुरनियां हों और मेरी पत्नी भी दिनी है?। १९ तब दूत ने उत्तर देके उसे कहा कि मैं गाबरईल हों जो ईश्वर के पास खड़ा रहताहों और तुझे कहने को और

यह मंगलसमाचार सुनाने को भेजा गया। २० सो देख तू गूंगा होजायगा और जिस दिनलों ये सब बातें पूरी नहों बोल न सकेगा क्योंकि तू ने मेरे बचन पर, जो अपने समय में पूरे होंगे प्रतीति न किई। २१ और लोग जकरिया के लिये ठहर रहे थे और आश्चर्य करते थे कि उसने मंदिर में इतनी अबेर किई। २२ और वुह बाहर निकल के उनसे बोल नसका तब उन्हों ने जाना कि उसने मंदिर में कुछ दर्शन पाया क्योंकि वुह उन्हें सैन करताथा और गूंगा रहिगया। २३ और ऐसा हुआ कि जब उसके सेवकाई के दिन पूरे हुए वुह अपनेही घर चलागया। २४ और उन्हीं दिनों पीछे उसकी पत्नी एलीसबा गर्भिणी हुई और यह कहिके आप को पांच मास लों छिपाया। २५ कि लोगों के आगे मेरा अपमान मिटाने को जिन दिनों में प्रभु ने मुझ पर दृष्टि किई उसने मुझ से यों व्यवहार किया।

२६ और छठवें मास में नासरः नाम गालील के एक नगर में ईश्वर की ओर से गाबरईल दूत एक कन्या पास भेजा गया। २७ जो दाऊद के वंश के यसफ नाम एक पुरुष से बचन दत्ता हुई और उस कन्या का नाम मरियम। २८ और उस दूत ने भीतर आके उसे कहा कि हे महाअनुगृहीत, प्रणाम, परमेश्वर तेरे संग, स्त्रियों में तू धन्य। २९ वुह देख के उसके कहने से व्याकुल

ऊई और सोचने लगी कि यह कैसा प्रणाम है। ३० तब दूत ने उसे कहा कि हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वर का अनुग्रह तुझ पर ऊआ है। ३१ और देख तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी और उसका नाम यिशु रक्खेगी। ३२ वुह महान होगा और अत्यंत महत का पुत्र कहावेगा और प्रभु ईश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा। ३३ और वुह सर्व्वदा याकूब के घराने पर राज्य करेगा और उसके राज्य का अंत न होगा। ३४ तब मरियम ने दूत से कहा कि यह क्योंकर होगा मैं तो पुरुष से अज्ञान हों?। ३५ दूत ने उत्तर देके उसे कहा कि धर्म्मात्मा तुझ पर उतरेगा और अत्यंत महत के सामर्थ्य की छाया तुझ पर पड़ेगी इसलिये वुह पवित्र बंश भी जो तुझसे उत्पन्न होगा सो ईश्वर का पुत्र कहावेगा। ३६ और देख तेरे कुटुम्ब एलीसबा को भी बुढ़ापे में पुत्र का गर्भ है और जो बांझ कहावती थी यह उसका छठवां मास है। ३७ क्योंकि ईश्वर से कोई बात अन होनी नहीं है। ३८ तब मरियम बोली कि देख प्रभु की दासी तेरे बचन के समान मेरे लिये होवे तब दूत उस पास से जातारहा।

३९ और उन्हीं दिनों में मरियम शीघ्र उठके पर्वत देश यिहूदा के एक नगर में गई। ४० और जकरिया के घर जाके एलीसबा को प्रणाम किया। ४१ और ऐसा ऊआ कि जब एलीसबा ने मरियम का प्रणाम

सुना तो बालक उसके कोख में उछला और इलीसबा धर्म्मात्मा से भरगई। ४२ और वुह बड़े शब्द से बोली कि आप स्त्रियों में धन्य और आप के कोख का फल धन्य। ४३ और मेरे लिये यह कैसा ज्ञआ कि मेरे प्रभु की माता मुझ पास आई?। ४४ क्योंकि देख ज्यों आपके प्रणाम का शब्द मेरे कान लों पज्ञंचा त्यों बालक मेरी कोख में आनन्द के मारे उछला। ४५ और धन्य वुह जो बिश्वास लाई क्योंकि जो बातें प्रभु की ओर से उसे कही गई हैं सो पूरी होंगी।

४६ तब मरियम ने कहा कि मेरा प्राण प्रभु की महिमा करता है। ४७ और मेरा आत्मा मेरे मुक्तिदाता ईश्वर से आनन्दित ज्ञआ है। ४८ क्योंकि उसने अपनी दासी की छोटाई पर दृष्टि किई और देख इस समय से सारी पीढ़ी मुझे धन्य कहेंगी। ४९ क्योंकि जो सामर्थी है उसने मुझ पर बड़ी कृपा किई और उसका नाम पवित्र है। ५० और जो उसे डरते हैं उसकी दया उन पर पीढ़ी से पीढ़ी लों है। ५१ उसने अपनी भुजा से बड़ा बड़ा कार्य्य किया है और अहंकारियों को उनके मन की भावनों में छिन्न भिन्न किया है। ५२ उसने बलवंतों को आसनों से उतार दिया है और छोटों को बढ़ाया है। ५३ उसने भूखों को अच्छी अच्छी वस्तु से संतुष्ट किया है और धनी को छूछे हाथ फेर दिया है। ५४ उसने

अपनी दया के स्मरण से अपने दास इसराईल की सहाय किई है। ५५ जैसा उसने हमारे पितर इबराहीम और उसके बंश को सर्व्वदा के लिये कहा था। ५६ और मरियम मास तीन एक उसके यहां रही फेर अपने घर फिर गई।

५७ अब एलीसबा के जन्ने के दिन पूरे हुए और वुह बेटा जनी। ५८ और उसके परोसियों और कुटुम्ब ने सुना कि प्रभु ने उस पर बड़ी कृपा किई उन्हों ने उसे बधाई दिई और ऐसा हुआ कि आठवें दिन उस बालक का खतनः करने को आये। ५९ और वे उसका नाम जकरिया, रखने लगे जो उसके पिता का था। ६० परन्तु उसकी माता ने उत्तर देके कहा कि नहीं पर उसका नाम योहन रक्खाजाय। ६१ तब उन्हों ने उसे कहा कि तेरे घराने में ऐसा कोई नहीं जो इस नाम से कहावता है। ६२ तब उन्हों ने उसके पिता को सैन किया कि वुह उसका नाम क्या रक्खा चाहता है। ६३ उसने पटिया मंगाके लिखा कि उसका नाम योहन है तब उन सभों ने आश्चर्य माना। ६४ और तुरन्त उसका मुंह और जीभ भी खुलगई और उसने वक्ता होके ईश्वर की स्तुति किई। ६५ तब उनके आस पास के सारे वासियों पर डर पड़ा और इन सब बातों की चर्चा यिहूदियः के सारे पर्वत देश में हुई। ६६ और सुन

सुन के सब सोचने लगे कि यह किस रीति का बालक होगा श्रीर प्रभु की सहाय उस पर थी।

६७ श्रीर उसका पिता जकरिया धर्मात्मा से भरगया श्रीर भविष्य कहने लगा। ६८ कि धन्य परमेश्वर इसराईल का ईश्वर क्योंकि उसने अपने लोगों से भेंट करके उन्हें छुड़ाया है। ६९ जैसा कि उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्तों के द्वारा से जो जगत के आरंभ से होते आये कहा। ७० तैसा हमारे हेतु अपने दास दाऊद के घराने से मोक्ष की सींग। ७१ अर्थात हमारे बैरियों श्रीर घिन करनेवालों से मुक्ति दिई। ७२ जिसतें हमारे पितरों पर दया पूरी करे श्रीर अपनी पवित्र बाचा को स्मरण करे। ७३ उस किरिया को जो उसने हमारे पिता इबराहीम से किई। ७४ कि बुह हमें यह देगा कि हम अपने बैरियों के हाथ से बचके। ७५ उसके आगे पवित्रता श्रीर धर्म से अपने जीवन भर निर्भय से सेवा करें। ७६ श्रीर हे बालक तू अत्यंत महान का भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू उसके मार्गों को सुधारने के लिये प्रभु के आगे आगे चलेगा। ७७ जिसतें पाप से छूटने के लिये मुक्ति का ज्ञान उसके लोगों को देवे। ७८ यह हमारे ईश्वर की कोमल दया से है जिस ने उदय का प्रकाश ऊपर से हम पर चम-काया है। ७९ कि जो अंधियारे श्रीर मृत्यु की छाया में बैठे हैं उन्हें उंजियाला करे श्रीर हमारे पांव को

कुशल के मार्ग में चलावे। ८० और वुह लड़का बढ़ता गया और मन में पोढ़ हुआ और इसराईल को दिखाई देने लों बन में रहा किया।

२ दूसरा पर्व्व।

१ उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर अगसतूस की आज्ञा निकली कि सारे देश के लोगों के नाम लिखे जायें। २ और यह पहिले नाम लिखाई तब हुई जब करीनियूस सुरिया का अध्यक्ष था। ३ तब सब अपने अपने नगर को नाम लिखाने गये। ४ और यूसफ भी अपनी मंगनित स्त्री मरियम के संग, जो अति गर्भिणी थी नासरः के नगर गालील को छोड़ के। ५ यिहूदियः के बैतलहम नाम दाऊद के नगर को नाम लिखाने को गया क्योंकि वुह दाऊद के बंश और घराने से था।

६ और उनके वहां होतेहुए ऐसा हुआ कि उसके जने के दिन पूरे हुए। ७ और वुह अपना पहिलौंठा पुत्र जनी और उसे वस्त्र में लपेट के चरनी में रक्खा क्योंकि टिकाश्रय में उनकी समाई न थी। ८ और उसी देश में गड़ेरिये चैागान में रहते थे जो रात को अपने झुंड की रखवाली करते थे। ९ और देखो कि प्रभु का दूत उन पास उतरा और प्रभु का तेज उनकी चारों ओर चमका और वे बहुत डरगये। १० तब दूत ने उन्हें कहा कि मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हारे पास मंगलसमाचार लाता हों जो सब के लिये बड़ा आनन्द

होगा। ११ क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक मुक्तिदाता उत्पन्न हुआ जो मसीह प्रभु है। १२ और तुम्हारे लिये यही पता है कि तुम उस बालक को बस्त्र में लपटा हुआ चरनी में पड़ा पाओगे। १३ और तुरन्त उस दूत के संग स्वर्ग के सेना की एक जथा प्रगट हुई और यह कहिके ईश्वर की स्तुति करने लगी। १४ कि अत्यंत ऊंचे पर ईश्वर का धन्यबाद और पृथिवी पर कुशल और मनुष्यों में मिलाप होवे। १५ और ऐसा हुआ कि ज्यों दूत उनसे स्वर्ग पर जातेरहे गड़ेरियों ने आपुस में कहा कि आओ बैतलहम को चलें और जो बात बीती है उसे देखें जिसे प्रभु ने हम पर प्रगट किई है। १६ तब उन्हों ने शीघ्र आके मरियम और यूसफ को और उस बालक को चरनी में पड़ा पाया। १७ और देख के उन बातों को, जो बालक के बिषय में उनसे कही गई थीं फैलानेलगे। १८ और गड़ेरियों की कहीहुई बातों से सारे सुनवैये बिस्मित हुए। १९ परन्तु मरियम इन सब बातों को अपने मन में जोगा के सोचनेलगी। २० और उन सब बातों के कारण जो उन्हों ने सुनीं और वैसाही देखी थीं गड़ेरिये ईश्वर का धन्य मानते और स्तुति करतेहुए लौटे।

२१ और आठवें दिन जब बालक का खतनः हुआ तो उसका नाम यिशु रक्खागया जो दूत ने उसके गर्भ

में पड़ने से पहिले रक्खा था। २२ और मूसा की व्यवस्था के समान जब उसके पवित्र होने के दिन पूरे हुए वे उसे प्रभु की भेंट के लिये यिरोशलीम में लाये। २३ (जैसा कि ईश्वर की व्यवस्थां में लिखा है कि हर एक पहिलौंठा नर ईश्वर के लिये पवित्र कहावेगा)। २४ और कि ईश्वर की व्यवस्था के समान घूघू के जोड़े अथवा कपोत के दो बच्चे को बलि करें। २५ और यिरुशालम में शमऊन नाम एक मनुष्य था जो सज्जन और धर्मी जन था और इसराईल के कुशल की बाट जोहता था और धर्मात्मा उस पर था। २६ और धर्मात्मा से उस पर प्रगट हुआ था कि जबलों प्रभु के मसीह को न देखले वुह मृत्यु को न देखेगा। २७ और वुह आत्मा से मन्दिर में आया और जब व्यवस्था के व्यवहार के समान करने को माता पिता उस बालक यिशु को भीतर लाये। २८ तब उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया और ईश्वर की स्तुति करके कहा। २९ कि हे प्रभु अब तू अपने बचन के समान अपने दास को कुशल से बिदा करता है। ३० क्योंकि मेरी आंखों ने तेरी मुक्ति को देखा है। ३१ जिसे तू ने सारे लोगों के आगे सिद्ध किया है। ३२ अन्यदेशियों के उंजियाला करने को एक ज्योति और तेरे इसराईल लोग का बिभव। ३३ तब यूसफ और उसकी माता उसके बिषय की कही हुई बातों से,

आश्चर्यित ऊई। ३४ और शमजन ने उन्हें आशिष दिया और उसकी माता मरियम से कहा कि देख यही इसराईल में बऊतेरों के गिरने और फेर उठने के कारण ठहरायागया है और अपवाद का एक चिन्ह है। ३५ जिस्से तेराही प्राण भी भाले से वेधा जायगा जिसतें बऊतेरों के मन की चिंता प्रगट होजाय। ३६ और अशर की गोष्ठी के फनुईल की पुत्री हन्ना एक भविष्य-द्वक्ता थी जो बऊत वृद्ध थी और अपने कुंआरपन से सात बरस लों एक पति के संग थी। ३७ और वुह चैारासी बरस की बिधवा थी जो मन्दिर से न्यारी न होती थी परन्तु ब्रत और प्रार्थना कर कर रात दिन सेवा करती थी। ३८ और उसने उसी समय आके प्रभु की स्तुति किई और उन सभों से जो यिरूशालम में उद्धार की बाट जोहते थे उसके बिषय में बोली। ३९ और जब वे प्रभु की व्यवस्था के समान सारे कार्य्य कर चुके तो गालील को अपनेही नगर नासरः को लौटे। ४० और वुह बालक बढ़ता गया और मन में पोढ़ ऊआ और बुद्धि से भर गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था।

४१ अब उसके माता पिता बरस बरस पारजाना पर्ब्ब में यिरूशालम को जाते थे। ४२ और जब वुह बारह बरस का ऊआ वे पर्ब्ब की रीति पर यिरूशालम को गये। ४३ और जब वे उन दिनों को पूरा करके

लौटे तब वुह बालक यिशु यिरूशालम में रहि गया और यूसफ और उसकी माता ने नजाना। ४४ परन्तु उसे जथा में समझ के दिन भर के मार्ग गये और कुटुम्बों और चिन्हारों में ढूंढ़ा। ४५ और उन्हों ने उसे न पाके ढूंढ़ने को यिरोश्लीम में फिर लौटे। ४६ और ऐसा ज़आ कि तीन दिन पीछे उन्हों ने उसे मंदिर में पंडितों के मध्य में बैठे उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते पाया। ४७ और जितनों ने उसे सुना वे उसकी समझ और उत्तरों से बिस्मित ज़ए। ४८ और उसे देखके आश्चर्यित ज़ए और उसकी माता ने उसे कहा कि हे पुत्र किस लिये तू ने हम से ऐसा किया है? देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते ज़ए तुझे ढूंढ़ते थे। ४९ तब उसने उन्हें कहा कि यह क्योंकर है कि तुम मुझे ढूंढ़ते थे? क्या नजानते थे कि मुझे अवश्य है कि अपने पिता ठिकाने में रहों?। ५० पर उस बचन को जो उसने उन्हें कहा उन्हों ने न समझा। ५१ और वुह उनके संग गया और नासरः में आके उनके बश में रहा परन्तु उसकी माता ने इन सब बातों को अपने मन में जुगा रक्खा। ५२ और यिशु बुद्धि और डील में और ईश्वर की और मनुष्य की कृपा में बढ़ता गया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ अब तीबरिया कैसर के राज्य के पंद्रहवें बरस, जब पंतिय पिलात यिहूदियः का अध्यक्ष था और हिरोद् गालील के चौथाई का और उसका भाई फिलिप ईतूरिय और त्रकूनिय देश की चौथाई का और लूसनिय अबीलनिय के चौथाई का अध्यक्ष। २ हन्ना और कयफा के प्रधान याजक होतेहुए ईश्वर का बचन जकरिया के बेटे योहन पास बन में पहुंचा। ३ और वुह यर्दन के आस पास के सारे देश में आके पाप मोचन के कारण स्नान के पश्चात्ताप का उपदेश करने लगा। ४ जैसा कि यिशायाः भविष्यद्वक्ता के बचन की पुस्तक में लिखा है कि बन में एक का शब्द प्रचारता है कि परमेश्वर के पथ को सुधारो और उसके मार्गों को सीधा करो। ५ हर एक नीची भूमि भरी जायगी और हर एक पर्ब्बत और पहाड़ी नीचा किया जायगा और टेढ़े सीधे कियेजायेंगे और खड़बिड़ पथ समथर बनेंगे। ६ और हर एक प्राणी ईश्वर की मुक्ति को देखेगा। ७ तब जो मंडली उस्से स्नान पाने को निकली उसने उन्हें कहा कि हे सर्पबंशियो आवैया कोप से भागने को तुम्हें किस ने चिताया?। ८ सो पश्चात्ताप के योग्य का फल लाओ और अपने अपने मन में मत समझो कि हमारा पिता इबराहीम है क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि इन पत्थरों से इबराहीम के लिये बालक

उत्पन्न करने को ईश्वर में सामर्थ्य है। ९ और अब पेड़ के जड़ पर कुल्हाड़ी भी धरी है इस लिये हर एक पेड़ जो अच्छा फल नहीं फलता काटा जाता और आग में झोंकाजाता है। १० तब लोगों ने यह कहिके उसे पूछा कि अब हम क्या करें?। ११ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि जिसके पास दो वस्त्र हैं जो कुछ नहीं रखता है सो उसे बांट लेवे और जिस पास भोजन है सो भी ऐसा करे। १२ करग्राहक भी स्नान पावने को आये और उसे बोले कि हे गुरु हम क्या करें?। १३ उसने उन्हें कहा कि जो तुम्हारे लिये ठहरायागया है उससे अधिक मत लेओ। १४ योद्धाओं ने भी यह कहके उसे पूछा कि हम क्या करें? उसने उन्हें कहा कि किसी से वरबसी मत करो झूठा दोष मत लगाओ और अपनी बंधेज से संतोष करो।

१५ और जब लोग आशा में थे और हर एक जन मन में योहन के विषय में सोचने लगा कि वुह मसीह है कि नहीं। १६ योहन ने उत्तर देके सभों से कहा कि ठीक मैं तो तुम्हें जल से स्नान देताहों परन्तु मुझसे एक अधिक सामर्थी आता है जिसके जूता का बंद मैं खोलने के योग्य नहीं वुह तुम्हें धर्मात्मा से और आग से स्नान देगा। १७ उसके हाथ में सूप है और वुह अपने खलिहान को अच्छी रीति से झाड़ेगा और गोहूं को अपने खत्ते में एकट्ठे करेगा परन्तु भूसे को अबुझवैये

आग से जलावेगा। १८ और उसने अपने उपदेश में लोगों को और अनेक बात सिखाया करता था। १९ परन्तु चौथाई के अध्यक्ष हिरोद ने अपने भाई फिलिप की पत्नी हीरदिया के कारण और अपनी सारी बुराई के लिये जो हिरोद ने किई थी उस्से दोष पाया था। २० उन सभों पर यह अधिक किया कि उसने योहन को बंधन में डाला। २१ और जब सारे लोग स्नान पाचुके ऐसा हुआ कि यिशु ने भी स्नान पाया और प्रार्थना करतेहुए स्वर्ग खुल गया। २२ और धर्मात्मा देही के रूप कपोत के समान उस पर उतरा और यह कहती हुई आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है तुझ्से मैं प्रसन्न हों।

२३ तब यिशु आपही बरस तीसएक का होनेलगा जैसा कि समझाजाता था कि वुह यूसफ का पुत्र था जो हेली का था। २४ जो मथात का था जो लवी का था जो मल्की का था जो यन्ना का था जो यूसफ का था। २५ जो मथतिया का था जो अमूस का था जो नाहूम का था जो इसली का था जो नागी का था। २६ जो मात का था जो मथतिया का था जो शमी का था जो यूसफ का था जो यिहूदा का था। २७ जो यूहाना का था जो रीसा का था जो जोरबाबुल का था जो सला-तियल का था जो नरी का था। २८ जो माल्की का था जो अदी का था जो कूसाम का था जो हेलमूदाम

का था जो ईर का था। २९ जो यूसा का था जो इलियाजर का था जो यूरम का था जो मथात का था जो लवी का था। ३० जो शिमोन का था जो यिहूदा का था जो यूसफ का था जो यूनान का था जो इलीयाकीम का था। ३१ जो मलीया का था जो मानान का था जो मथात का था जो नाथन का था जो दाऊद का था। ३२ जो यस्सी का था जो ओबेद का था जो बोआज का था जो सलमून का था जो नहसून का था। ३३ जो अमीनादाब का था जो अरम का था जो असरून का था जो फारिज का था जो यिहूदा का था। ३४ जो याकूब का था जो इसहाक का था जो इब्राहीम का था जो तरह का था जो नाहूर का था। ३५ जो सीरुग का था जो रागू का था जो फालिग का था जो ईबर का था जो सलह का था। ३६ जो कैनान का था जो अर्फकसद का था जो शिम का था जो नूह का था जो लामक का था। ३७ जो मितूशल का था जो हनूक का था जो यारद का था जो महलालील का था जो कीनान का था। ३८ जो अनूस का था जो शेत का था जो आदम का था जो ईश्वर का था।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ और यिशु धर्मात्मा से भरपूर होके यर्दन से फिरा और आत्मा उसे बन में लेगया। २ और चालीस दिन

लों शैतान ने उसे परखा किया और उन्हीं दिनों में उसने कुछ न खाया और उनके बीतने के पीछे उसे भूख लगी। ३ तब शैतान ने उसे कहा कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर को रोटी बनजाने को आज्ञा कर। ४ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा, लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु ईश्वर के हर एक बचन से जीता रहेगा। ५ तब शैतान ने उसे एक ऊंचे पहाड़ पर ले जाके जगत का सारा राज्य पलभर में दिखाया। ६ और शैतान ने उसे कहा कि यह सारा पराक्रम और उनका विभव मैं तुझे देउंगा क्योंकि यह मुझे सौंपा गया है और जिस किसी को मैं चाहों उसे देउं। ७ इस लिये यदि तू मुझे प्रणाम करे तो सब तेरा हो जायगा। ८ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि अरे शैतान मेरे पीछे जा क्योंकि लिखा है कि तू अपने ईश्वर परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर। ९ तब वुह उसे यिरोशलीम में लाया और मन्दिर के एक कलश पर रक्खा और उसे बोला कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो आपको यहां से नीचे गिरा। १० क्योंकि लिखा है कि वुह तेरी रक्षा के निमित्त अपने दूतों को आज्ञा करेगा। ११ और हाथों में वे तुझे उठालेंगे जिसतें तेरा पांव पत्थर पर लगने न पावे। १२ तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि यह कहागया है कि तू अपने ईश्वर परमेश्वर की

परीक्षा मत कर। १३ और जब शैतान सारी परीक्षा करचुका तो कुछ समय लों उस्से चलागया।

१४ और यिशु आत्मा के सामर्थ्य से गालील को लौटा और उसकी कीर्त्ति सारे देश में चारों ओर फैलगई। १५ और उसने उनकी मंडलियों में उपदेश किया और सभों से स्तुति पाई। १६ और वुह नासरः में आया जहां उसने प्रतिपाल पाया था और अपने व्यवहार पर बिश्राम के दिन मंडली में जाके बांचने को खड़ाहुआ। १७ और यिशाया भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दिईगई और पुस्तक को खोलके उसने उस स्थल को पाया जहां लिखा था। १८ कि परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है इसकारण उसने कंगालों में मंगल समाचार प्रचारने को मुझे अभिषेक किया है, चूर्ण मन चंगा करने को और बंधुओं को छुटकारे का और अंधों को फेर दृष्टि पाने का संदेश देने को और घायलों को निस्तार देने को। १९ और परमेश्वर के ग्रहण कियेहुए बरस प्रचारने को उसने मुझे भेजा है। २० तब उसने पुस्तक को बंद किया और सेवक को सौंप के बैठगया और सारी मंडली की आंखें उसे तक रहीथीं। २१ तब उसने उन्हें कहना आरंभ किया कि आजही यहीं लिखाहुआ तुम्हारे सुन्ने में पूरा हुआ। २२ और सभों ने उस पर साक्षी दिई और अनुग्रह के बचन से जो उसके मुंह से निकले थे अचंभित होरहे थे

और बोले कि क्या यह यूसफ का बेटा नहीं?। २३ उसने उन्हें कहा कि तुम लोग निःसन्देह मुझे यह दृष्टांत कहोगे कि हे वैद्य अपने को चंगा कर जो कुछ हम ने सुना है कि तू ने कपरनाऊम में किया यहां अपने देश में भी कर। २४ परन्तु उसने कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में ग्रहण नहीं किया जाता। २५ परन्तु मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि इलियास के दिनों में जब स्वर्ग तीन बरस छः मास लों बंद था यहां लों कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा था बऊतेरी बिधवा इसराईल में थीं। २६ तथापि सैदा के सरपता की एक बिधवा स्त्री को छोड़ ईलिया उनमें से किसी के पास भेजा नहीं गया। २७ और एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय में इस-राईल में बऊत से कोढ़ी थे परन्तु उन में से नामान सुरयानी को छोड़ कोई पवित्र न ऊआ। २८ तब सब के सब जितने मंडली में थे इन बातों को सुनतेही क्रोध से भरगये। २९ और उठके उसे नगर के बाहर धकिआया और उस पहाड़ की चोटी पर जिस पर उनका नगर बना था लेचले जिसतें उसे औंधे मुंह गिरादेवें। ३० परन्तु वुह उनके मध्य में से निकल के जातारहा।

३१ और गालील के एक नगर कपरनाऊम में आया और विश्राम दिन में उन्हें उपदेश दिया किया।

३२ और उन्हों ने उसके उपदेश से आश्चर्य माना क्योंकि उसका बचन पराक्रम के साथ था। ३३ और मंडली में एक मनुष्य था जिस में अपवित्र पिशाच का आत्मा था उसने बड़े शब्द से चिल्लाके। ३४ कहा कि हे यिशु नासरी हमें आपसे क्या काम? क्या आप हमें नाश करने आये हैं? मैं आप को जानता हों कि आप कौन हैं ईश्वर का धर्म्ममय। ३५ तब यिशु ने उसे दपट के कहा कि चुपरह और उस्से निकलआ और भूत उसे मध्य में गिराके बिना दुःख दिये उस्से निकल आया। ३६ तब सब बिस्मित होके आपुस में कहने लगे कि यह कैसी बात है क्योंकि वुह पराक्रम और सामर्थ्य से अपवित्र आत्माओं को आज्ञा करता है और वे बाहर निकल आते हैं। ३७ और उसकी कीर्त्ति उस देश के सारे स्थान में चारों ओर फैलगई।

३८ तब वुह मंडली में से उठा और शिमोन के घर में आया और शिमोन की सास बड़े ज्वर से पड़ी थी और उन्हों ने उसके लिये उसकी बिनती किई। ३९ तब उस पास खड़ा होके उसने ज्वर को दपटा और ज्वर ने उसे छोड़ा और उसने तुरन्त उठके उनकी सेवा किई। ४० और सूर्य अस्त होते जिन पास नाना प्रकार के रोग से रोगी थे वे सब उन्हें उसके पास लाये और उसने उनमें से हरएक पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया। ४१ और बज्जतेरों से भूत भी चिल्लाके बाहर निकले

और बोले कि आप ईश्वर के पुत्र मसीह हैं और उसने दपट के उन्हें बात करने न दिई क्योंकि वे जानते थे कि वुह मसीह है। ४२ और जब दिन हुआ वुह निकल के एक शून्य स्थान में गया और लोग उसे ढूंढ़ने लगे और आके उसे रोका कि वुह उनके पास से न जाय। ४३ तब उसने उन्हें कहा कि मुझे अवश्य है कि और नगरों में भी ईश्वर के राज्य को प्रचारों क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हों। ४४ और वुह गालील की मंडलियों में प्रचारता रहा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब वुह जनेसरत की झील पर खड़ा था लोग ईश्वर का वचन सुने को उस पर गिरे पड़ते थे। २ और झील पर दो नाव लगी देखीं परन्तु मछुए उन पर से उतर के जालों को धोरहे थे। ३ तब उसने उन में से एक नाव पर, जो शिमोन की थी चढ़ के उसे चाहा कि तीर से थोड़ा दूर लेजाय और उसने बैठ के लोगों को नाव पर से उपदेश किया। ४ और जब वुह समाप्त कर चुका तो शिमोन को बोला कि गहिरे में लेजा और बझाने के लिये अपने जाल डाल? ५ तब शिमोन ने उत्तर देके उसे कहा कि हे गुरु हम ने रात भर परिश्रम किया और कुछ न पकड़ा तिस पर भी आप के कहने से मैं जाल डालता हों। ६ और जब उन्हों ने ऐसा किया तो बहुतसी मछलियों को घेरा

और उनका जाल फटने लगा। ७ तब उन्हों ने सहाय के लिये अपने साझियों को, जो दूसरी नाव पर थे सैन किया तब वे आये और दोनों नावें ऐसी भरीं कि वे डुबने लगीं। ८ इसे देखके शिमोन पथर ने यिशु के घुठनों पर गिर के कहा कि हे प्रभु मुझसे परे रहिये इस लिये कि मैं पापी जन हों। ९ क्योंकि वुह और उसके सारे संगी और जबदी के बेटे याकूब और योहन भी जो शिमोन के साझी थे उन मछलियों के बझावसे, जो उन्हों ने पकड़ीं अचंभित हुए। १० तब यिशु ने शिमोन को कहा कि मत डर क्योंकि अब से तू मनुष्यों को बझावेगा। ११ और जब वे अपनी नावें तीर पर लाये तो सब कुछ त्याग के उसके पीछे हो लिये।

१२ और जब वुह किसी नगर में था तो ऐसा हुआ कि कोढ़ से भराहुआ एक मनुष्य यिशु को देख के औंधा गिरा और उसकी विनती करके बोला कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे पवित्र करसक्ते हैं। १३ उसने हाथ बढ़ाया और उसे यह कहिके छूआ कि मैं चाहता हों, पवित्र होजा और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। १४ और उसने उसे किसी से कहने को बर्जा परन्तु जाके अपने तईं याजक को दिखला और उनके आगे साक्षी होने के लिये मूसा की आज्ञा के समान अपने पवित्र होने के लिये भेंट चढ़ा। १५ परन्तु उतनी अधिक उसकी कीर्त्ति फैलगई और सुन्ने को और

अपनी दुर्बलता से उस्से चंगे होने को बड़ी बड़ी मंडली एकट्ठी ज़ुई। १६ और उसने बन में अलग होके प्रार्थना किई।

१७ और एक दिन ऐसा ज़ुआ कि जब वुह उपदेश कर रहा था तो फिरूसी और व्यवस्था के ज्ञाता, जो गालील के हर एक नगर से और यिज़ूदिय और यिरोशलीम से आये थे वहां बैठे थे और चंगा करने को ईश्वर का सामर्थ्य प्रगट ज़ुआ। १८ और देखो कि लोग एक अर्द्धांगी मनुष्य को खाट पर लाये और चाहा कि उसे भीतर लावें और उसके आगे धरें। १९ परन्तु जब मंडली के कारण उन्हों ने उसे भीतर ले जाने को गैं न पाया तो कोठे पर चढ़ गये और खपरैल उधेर के उसे खाट समेत मध्य में यिशु के आगे लटका दिया। २० उनका बिश्वास देखके उसने उसे कहा कि हे मनुष्य तेरे पाप चमा किये गये। २१ तब अध्यापक और फिरूसी विचारने लगे कि यह कौन है जो ईश्वर की निंदा बकता है? ईश्वर को छोड़ कौन पापों को चमा करसक्ता है?। २२ यिशु ने उनकी चिंतों को जान के उत्तर देके उन्हें कहा कि अपने मन में क्या बिचारते हो?। २३ क्या कहना सहज है कि, तेरे पाप चमा किये गये अथवा कि उठ और चल?। २४ परन्तु जिसतें जानो कि पृथिवी पर मनुष्य के पुत्र को पाप चमा करने का पराक्रम है उसने उस अर्द्धांगी को कहा

कि मैं तुझे कहता हों कि उठ और अपनी खाट उठा के अपने घर चलाजा। २५ और तुरन्त वुह उनके आगे उठा और जिस पर वुह पड़ा था उसे लेके ईश्वर की स्तुति करते ऊए अपने घर चला गया। २६ सब बिस्मय से ईश्वर की स्तुति करने लगे और भय से भर के बोले कि हमने आज अनोखी बातें देखी हैं।

२७ और इन बातों के पीछे वुह बाहर गया और एक पटवारी को, जिसका नाम लवी था कर स्थान में बैठे देखा और उसने उसे कहा कि मेरे पीछे होले। २८ तब वुह सब कुछ छोड़ के उठ खड़ा ऊआ और उसके पीछे होलिया। २९ और लवी ने उसके लिये अपने घर में बड़ा जेवनार किया और वहां पटवारीं और औरों की एक बड़ी जथा थी जो उनके संग बैठ गये थे। ३० परन्तु उनके अध्यापक और फिरसी उसके शिष्यों पर कुड़कुड़ाके कहने लगे कि तुम क्यों पटवारियों और पापियों के संग खाते पीते हो?। ३१ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि निरोगी को बैद्य का प्रयोजन नहीं परन्तु रोगी को। ३२ मैं धर्मियों को बुलाने नहीं आया परन्तु पापियों को पश्चात्ताप कराने। ३३ तब उन्हों ने उसे कहा कि योहन के और फिरसियों के शिष्य क्यों बारंबार ब्रत और प्रार्थना करते हैं परन्तु आपके खाते पीते हैं?। ३४ उसने उन्हें कहा कि जब लों दूल्हा बरातियों के संग है तुम उन्हें ब्रत करवासक्ते

हो ?। ३५ परन्तु वे दिन आवेंगे जब कि दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उन्हीं दिनों में व्रत करेंगे। ३६ और उसने उन्हें एक दृष्टान्त भी कहा कि कोई नये थान का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता नहीं तो नया उसे खेंचता है और नये थान का टुकड़ा पुराने में नहीं मिलता। ३७ और कोई पुराने कुप्पे में नया दाखरस नहीं भरता नहीं तो नया दाखरस कुप्पों को फाड़ेगा और बहि जायगा और कुप्पे नष्ट होजायेंगे। ३८ परन्तु अवश्य है कि नया दाखरस नये कुप्पे में रक्खा जाय तो दोनों जतन से रहेंगे। ३९ कोई पुराने को भी पीके तुरन्त नया नहीं चाहता क्योंकि वुह कहता है कि पुराना उससे अच्छा है।

६ छठवां पर्व्व ।

१ बड़े बिश्राम दिन के अगिले बिश्राम में यों हुआ कि वुह खेतों में से जाने लगा और उसके शिष्य बालें तोड़ तोड़ हाथों में मल मल खाने लगे। २ तब फिरूसियों में से कितने उन्हें बोले कि तुम वुह कर्म क्यों करते हो जो बिश्राम के दिनों में करना उचित नहीं ?। ३ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि तुम ने इतना नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वुह भूखा था और उसके संगियों ने क्या किया ?। ४ वुह क्योंकर ईश्वर के मन्दिर में गया और भेंट की रोटी लिई और अपने संगियों को भी दिई जो याजकों को छोड़ उन्हें खाने को उचित न

था। ५ और उसने उन्हें कहा कि मनुष्य का पुत्र विश्राम दिन का भी प्रभु है।

६ और अगिले बिश्राम दिन को भी ऐसा हुआ कि उसने मंडली में जाके उपदेश किया और वहां एक मनुष्य था जिसका दहिना हाथ झुरा गया था। ७ तब अध्यापक और फिरूसी उसे देख रहे थे यदि वुह विश्राम दिन में चंगा करेगा जिसतें वे उस पर दोष लगाने का कारण पावें। ८ परन्तु उसने उनकी चिंतों को जानके उस झुरापे हाथ वाले से कहा कि, उठ और मध्य में खड़ा हो, वुह उठ खड़ा हुआ। ९ फेर यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक बात पूछता हों कि विश्राम दिनों में भला करना उचित है अथवा बुरा? प्राण बचाना अथवा नाश करना?। १० और उन सभों पर चारों ओर दृष्टि करके उसने उस मनुष्य को कहा कि अपना हाथ बढ़ा उसने वैसा किया और उसका हाथ दूसरे की नाईं फिर होगया। ११ तब वे बौड़ाहपन से भर गये और आपुस में कहने लगे कि यिशु को क्या करें।

१२ और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि वुह एक पहाड़ पर प्रार्थना करने गया और रात भर ईश्वर की प्रार्थना में काटी। १३ और जब दिन हुआ उसने अपने शिष्यों को बुलाया और उन में से बारह को चुन के प्रेरित नाम भी रक्खा। १४ शिमोन (जिसका नाम उसने पथर भी रक्खा) और उसका भाई अंद्रिया,

याकूब, और योहन, फिलिप, और बरतलमी। १५ मत्ती, और तमा और हल्फा का याकूब और शिमोन जो ज्वलित कहावता है। १६ और याकूब का भाई यिहूदा और यिहूदा यिस्करियती जो पकड़वाने वाला भी हुआ।

१७ फेर वुह उनके संग उतर के चौगान पर खड़ा हुआ और उसके शिष्यों की एक जथा और सारे यिहूदिय से और यिरोशलीम और सूर और सैदा के समुद्र के तीर से लोगों की एक बड़ी मंडली उसकी सुन्ने और अपने रोगों से चंगी होने को आई थीं। १८ और वे भी जो अपवित्र आत्माओं से दुःखी थे चंगे किये गये। १९ और सारी मंडली उसे छूने को चाहती थी क्योंकि शक्ति उस्से निकलती थी और सब को चंगा करती थी। २० तब उसने अपने शिष्यों की ओर देख के कहा कि दरिद्रो धन्य हो क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारा है। २१ धन्य जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त होगे धन्य हो जो अब बिलाप करते हो क्योंकि तुम हंसोगे। २२ धन्य हो जब मनुष्य तुम से बैर करें और तुम्हें अलग करें और निंदा करें और मनुष्य के पुत्र के कारण तुम पर कलंक लगावें। २३ उस दिन आनंद होओ और आनंद से उछलो इस लिये कि देखो तुम्हारा प्रतिफल स्वर्ग में बड़ा है क्योंकि उनके पितरों ने भविष्यद्वक्तों से ऐसाही किया था। २४ परन्तु हाय

तुम पर, जो धनी हो, इस लिये कि तुम अपनी शांति पाचुके। २५ हाय तुम पर, जो सन्तुष्ट हो, क्योंकि तुम भूखे होओगे हाय तुम पर जो अब हंसते हो क्योंकि तुम रोओगे और बिलाप करोगे। २६ हाय तुम पर जब कि सब लोग तुम्हारे बिषय में भला कहें क्योंकि उनके पितर झूठे भविष्यद्वक्तों से ऐसाही करते थे। २७ परन्तु हे सुन वैयो मैं तुम्हें कहता हों कि अपने बैरी से प्रेम करो, जो तुम्हें देख नहीं सक्ते हैं उनका भला करो। २८ जो तुम्हें स्राप देवें उन्हें आशीष देउ और जो तुम्हें सतावें उनके लिये प्रार्थना करो। २९ और जो तेरे गाल पर थपेड़ा मारे दूसरा भी फेर दे और जो तेरा ओढ़ना लेवें अंगा लेने से भी मत रोक। ३० जो कोई तुझ्से कुछ मांगे उसे दे और जो तेरी बस्तु लेवे उस्से फेर मत मांग ३१ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम भी उन से वैसाही करो। ३२ क्योंकि यदि तुम अपने प्रेमियों पर प्रेम करो तो तुम्हारा क्या गुण है? क्योंकि पापी भी अपने प्रेमियों पर प्रेम करते हैं। ३३ और यदि तुम अपने हितकारियों से भलाई करो तो तुम्हारा क्या गुण है? क्योंकि पापी भी ऐसाही करते हैं। ३४ और यदि फेर पाने की आशा रखके किसी को उधार देउ तो तुम्हारा क्या गुण है? क्योंकि पापी भी फेर पाने के लिये पापियों को उधार देते हैं। ३५ परन्तु तुम अपने बैरियों से प्रेम करो और भला करो

और फेर पाने की आशा छोड़ के उधार देउ और तुम्हारा प्रतिफल बड़ा होगा और तुम अत्यन्त महान के पुत्र होओगे क्योंकि वुह उन पर जो गुण नहीं मानते और अधमों पर कृपाल है। ३६ इस लिये जैसा तुम्हारा पिता दयाल है तैसा तुम भी दयाल होओ। ३७ दोष मत लगाओ और तुम पर दोष लगाया न जायगा दोषी मत ठहराओ और तुम दोषी ठहराये न जाओगे क्षमा करो और तुम पर क्षमा किया जायगा। ३८ देओ और तुम्हें दिया जायगा अच्छा नपुआ दाब दाब के और एकट्ठा हिलाया जाके उबरते हुए तुम्हारी गोद में लोग देंगे क्योंकि जिस नपुए से तुम नापते हो उसी नपुए से तुम्हारे लिये नापा जायगा।

३९ फेर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कहा कि क्या अंधा अंधे का अगुआ हो सक्ता है? दोनों गड़हे में न गिरेंगे?। ४० शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं परन्तु हर एक जो सिद्ध है अपने गुरु के समान होगा। ४१ और तू उस किर्किरी को जो तेरे भाई की आंख में है क्यों देखता है परन्तु उस लट्ठे को जो तेरी आंख में है नहीं देखता?। ४२ अथवा क्योंकर तू अपने भाई को कहि सक्ता कि हे भाई वुह किर्किरी जो तेरी आंख में है ला मैं निकाल देउं जब तू उस लट्ठे को जो तेरी आंख में है नहीं देखता? हे कपटी पहिले उस लट्ठे को अपनी आंख से निकाल और तब तू उस किर्किरी को, जो तेरे

भाई की आंख में है फरछाई से देखके निकाल सकेगा। ४३ क्योंकि अच्छे पेड़ में बुरा फल नहीं फलता न बुरा पेड़ अच्छा फल फलता है। ४४ क्योंकि हर एक पेड़ अपनेही फल से पहिचाना जाता है इस लिये लोग कटीलों से गूलर नहीं बटोरते और न भटकटैये से दाख तोड़ते। ४५ उत्तम मनुष्य अपने मन के उत्तम भंडार से अच्छी वस्तु निकालता है और अधम मनुष्य अपने मन के बुरे भंडार से बुरी वस्तु निकालता है क्योंकि उसका मुंह मन की भरपूरी से बोलता है। ४६ और मेरी आज्ञा पालन न करके तुम मुझे क्यों प्रभु प्रभु कहते हो। ४७ जो कोई मुझ पास आता है और मेरी बातें सुनता है और उन्हें मानता है मैं तुम्हें बताओंगा कि वुह किसकी नाईं है। ४८ वुह उस मनुष्य के तुल्य है जिसने घर बनाते ऊए गहिरा खोदा और चटान पर नेउं डाली और जब बाढ़ आई उस घर पर बड़ी धारा लगी और उसे हिला न सकी क्योंकि वुह चटान पर उठाया गया था। ४९ परन्तु जो सुन के नहीं मानता उस मनुष्य के तुल्य है जिसने भूमि पर बिना नेउं का घर उठाया जिस पर धारा करेर से लगी और वुह तुरन्त गिर पड़ा और उस घर का बड़ा विनाश ऊआ।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ जब वुह लोगों को अपनी कथा सुना चुका तो कपरनाऊम में गया। २ और एक शतिपति का अति

प्रिय दास रोग से मरने पर था। ३ और उसने यिशु का संदेश सुन के उसकी बिनती करने को यिहूदियों के प्राचीनों को उस पास भेजा कि आके उसके दास को चंगा करे। ४ और वे यिशु पास आके बिनती करके कहने लगे कि वुह योग्य है कि आप उस पर यह करें। ५ क्योंकि वुह हमारी जाति से प्रेम रखता है और उसने हमारे लिये एक मंदिर बनाया है। ६ तब यिशु उनके संग गया और जब वुह उसके घर से बहुत दूर न था उस शतपति ने मित्रों से कहला भेजा कि हे प्रभु आप को क्लेश न दीजिये क्योंकि मैं योग्य नहीं कि आप मेरी छत तले आवें। ७ इस कारण मैं भी अपने को योग्य न समझा कि आप पास आओं परन्तु बचन कहिये और मेरा दास चंगा हो जायगा। ८ क्योंकि मैं भी और का अधीन मनुष्य हों सेना मेरी अधीन है और मैं इस मनुष्य को कहता हों कि जा और वुह जाता है और दूसरे को कि आ और वुह आता है और अपने दास को कि यह कर और वुह करता है। ९ जब यिशु ने यह सब सुना तो उस्से अचंभित हुआ और अपने पीछे के लोगों से कहा कि मैं तुम्हें कहता हों कि इस-राईल में भी मैं ने ऐसा बड़ा बिश्वास न पाया। १० और भेजेहुओं ने घर में फिर आके उस रोगी दास को चंगा पाया।

११ और अगिले दिन ऐसा हुआ कि वुह नाईन

नाम एक नगर में गया और बज्जतेरे उसके शिष्यों में से और वज्जत लोग उसके संग गये। १२ जब वुह नगर के फाटक के पास आया तो क्या देखता है कि एक मृतक को बाहर लिये जाते हैं जो अपनी माता का एकलौता पुत्र था और वुह रांड़ थी, और नगर के बज्जत लोग उसके संग थे। १३ और प्रभु ने उसे देख दया करके उसे कहा कि मत रो। १४ और उसने आके रथी को छूआ तब उठवैये ठहर गये और उसने कहा कि हे तरुण मैं तुझे कहता हों कि उठ। १५ और वुह मृतक उठ बैठा और बोलने लगा और उसने उसे उसकी माता को सौंप दिया। १६ और सभों पर भय पड़ा और वे ईश्वर की स्तुति करके कहने लगे कि एक बड़ा भविष्यद्वक्ता हम्में प्रगट ज्ञआ है और कि ईश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है। १७ और उसकी यह चर्चा सर्व्वत्र यिहूदियः में और चारों ओर के सारे देश में फैल गई।

१८ और योहन के शिष्यों ने उसे इन सब बातों का संदेश पज्जंचाया। १९ तब योहन ने अपने शिष्यों में से दो को बुलाके यिशु को पुछवाया कि जो आने पर थे सो आप हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें?। २० उन मनुष्यों ने उस पास आके कहा कि योहन स्नानकारक ने हमारे द्वारा से आप को पूछा है कि जो आने पर थे सो आप हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें?। २१ और

उसने उसी घड़ी बज़्तों को दुर्बलता और मरी और दुष्ट आत्माओं से चंगा किया और बज़्त से अंधों को आंखें दिईं। २२ तब यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि जाओ और जो जो तुम ने देखा और सुना है योहन से कहो कि अंधे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवित्र होते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को मंगल समाचार सुनाया जाता है। २३ और धन्य वुह है जो मुझ्से उदास न होवे। २४ और जब योहन के दूत चले गये वुह योहन के विषय में लोगों से कहने लगा कि तुम बन में क्या देखने को गये? क्या एक नरकट पवन से हिलताज़आ?। २५ परन्तु क्या देखने को बाहर निकले? क्या कोमल बस्त्र पहिने ज़ए एक मनुष्य को? देखो वे जो भड़कीला बस्त्र पहिनते हैं और सुकुआर से रहते हैं सो राजभवनों में हैं। २६ पर तुम क्या देखने को गये? एक भविष्यद्वक्ता को हां मैं तुम्हें कहता हों कि एक भविष्यद्वक्ता से श्रेष्ठ। २७ यही है जिसके विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हों जो तेरे मार्ग को तेरे आगे सुधारेगा। २८ क्योंकि मैं तुम से कहता हों कि उन में से जो स्त्रियों से जन्मे हैं कोई भविष्यद्वक्ता योहन स्नानकारक से बड़ा नहीं है परन्तु जो ईश्वर के राज्य में सब से छोटा है सो उस्से बड़ा है। २९ तब उसके सारे सुनवैये और पटवारियों ने योहन के स्नान से स्नान

पायेहुए होके ईश्वर को निर्दोष ठहराया। ३० परन्तु फिरूसी और व्यवस्थाज्ञानियों ने उस्से स्नान न पाके ईश्वर के मत को अपने विरुद्ध त्यागा। ३१ और प्रभु ने यह भी कहा कि मैं इस पीढ़ी के लोगों को किस्से देऊं? और वे किसकी नाईं हैं?। ३२ वे बालकों की नाईं हैं जो हाट में बैठ एक दूसरे को पुकार के कहते हैं कि हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई है और तुम न नाचे, हम ने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम न रोये। ३३ क्योंकि योहन स्नानकारक नतो रोटी खाता न दाखरस पीता आया और तुम कहते हो कि उस में एक पिशाच है। ३४ मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया है और तुम कहते हो कि देखो एक भोजनी और मद्यप पटवारियों और पापियों का मित्र। ३५ परन्तु बुद्धि अपने सारे पुत्रों से निर्दोष ठहरी है।

३६ फेर फिरूसियों में से एक ने चाहा कि वुह उसके संग भोजन करे और वुह उस फिरूसी के घर गया और भोजन पर बैठा। ३७ और देखो कि जब उस नगर की एक पापिन स्त्री ने जाना कि यिशु फिरूसी के घर में भोजन पर बैठा है तो वुह श्वेत पत्थर की डिबिआ में सुगंध तेल लाई। ३८ और उसके चरण पास पीछे खड़ी होके रोने लगी और आंसुओं से उसके चरण धोने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछा और उसके चरण को चूमा और सुगंध तेल लगाया। ३९ और

जब उसके नेउता दायक फिरूसी ने देखा तो मन ही मन कहने लगा कि यदि यह पुरुष भविष्यद्वक्ता होता तो जाना जाता कि यह स्त्री जो उसे छूती है कौन और कैसी है क्योंकि वुह पापिन है। ४० तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि हे शिमोन मैं तुझे कुछ कहा चाहता हों वुह बोला कि हे गुरु कहिये। ४१ किसी धनिक के दो उधार्निक थे एक पांच सौ सूकी का और दूसरा पचास का। ४२ और जब उन पास कुछ देने को न था उसने दोनो को छोड़ दिया अब मुझे कह कि उन में से कौन उसे अधिक प्यार करेगा? ४३ शिमोन ने उत्तर देके कहा कि मैं समझता हों कि वुह जिसे उसने बहुत छोड़ दिया उसने उसे कहा कि तू ने ठीक विचार किया। ४४ तब उसने उस स्त्री की ओर फिर के शिमोन से कहा कि तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर आया तू ने मेरे चरण के लिये जल न दिया परन्तु उसने मेरे चरण को आंसुओं से धोया और अपने सिर के बालों से पोंछा। ४५ तू ने मेरा चूमा न लिया परन्तु जब से मैं यहां आया यह मेरे चरण चूम रही है। ४६ तू ने मेरे सिर पर तेल न लगाया परन्तु इस स्त्री ने मेरे चरण पर सुगंध तेल लगाया। ४७ इस लिये मैं तुझे कहता हों कि उसके पाप जो बहुत हैं क्षमा किये गये क्योंकि उसका बड़ा प्रेम है परन्तु जिसके थोड़े क्षमा किये गये उसका थोड़ा प्रेम है। ४८ तब उसने उसे

कहा कि तेरे पाप क्षमा किये गये। ४९ इतने में जो उसके संग भोजन पर बैठे थे सो अपने अपने मन में कहने लगे कि यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? ५० और उसने उस स्त्री को कहा कि तेरे बिश्वास ने तेरा उद्धार किया कुशल से चली जा।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ और पीछे यों हुआ कि वुह नगर नगर और गांव गांव में ईश्वर के राज्य का मंगल समाचार प्रचारते गया और वे बारह उसके संग थे। २ और कितनी स्त्रियां, जो दुष्ट आत्मा और दुर्बलता से चंगी हुई थीं, अर्थात मरियम, जो मगद्‌ली कहावती थी, जिस पर से सात भूत उतारे गये थे। ३ और हिरोद के भंडारी कूज़ा की पत्नी यूआना और सोसन अरु और बहुतेरी जो अपनी संपत्ति से उसकी सेवा करती थीं।

४ और जब बहुत लोग नगर नगर से एकट्ठे होके उस पास आये उसने एक दृष्टान्त में कहा। ५ कि एक बोवैया अपना बीज बोने को निकला और बोते हुए कुछ डांड़े की ओर गिरे और लताड़े गये और आकाश के पंछियों ने उन्हें चुग लिया। ६ और कुछ पत्थर पर गिरे और वे उगके तरावट बिना सूख गये। ७ और कुछ कांटों में गिरे और कांटों ने संग बढ़के उन्हें दबा लिया। ८ अरु कुछ अच्छी भूमि पर गिरे और उगे और सौ गुने फले और इन बातों को कहिके उसने

पुकारा कि जिसके कान सुन्ने के लिये हैं सो सुने। ९ श्रैार उसके शिष्यों ने यह कहिके उसे पूछा कि इस दृष्टान्त का क्या अर्थ है ?। १० उसने कहा कि ईश्वर के राज्य के भेद का ज्ञान तुम्हें दिया गया है परन्तु श्रैारों के दृष्टांतें में, देखते ऊए जिसतें वे न देखें श्रैार सुनते ऊए न समझें। ११ वुह दृष्टान्त यह है कि बीज ईश्वर का वचन है। १२ डांड़े की श्रोर वे हैं जो सुनते हैं तब शैतान श्राता है श्रैार वचन को उनके मन से लेजाता है नहो कि वे बिश्वास लाके मुक्ति पावें। १३ पत्थर पर के वे हैं जो बचन को सुन के श्रानन्द से लेते हैं श्रैार जड़ नहीं रखते सो क्षणभर विश्वास रखते हैं परन्तु परीक्षा के समय में फिर जाते हैं। १४ श्रैार जो कांटों में गिरे वे हैं कि सुन के चल निकलते हैं श्रैार चिन्ता श्रैार धन श्रैार जीवन का सुख उन्हें दबा लेते हैं श्रैार भर पूर फल नहीं लाते। १५ परन्तु श्रच्छी भूमि के वे हैं जो बचन को सुन के श्रच्छे श्रैार खरे मन में जुगा रखते हैं श्रैार संतोष से फल लाते हैं। १६ कोई मनुष्य दीपक बार के वर्त्तन से नहीं ढांपता श्रथवा खाट तले नहीं रखता परन्तु दीश्रट पर जिसतें जो भीतर श्राते हैं सो उंजियाला देखें। १७ क्योंकि कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न किई जायगी श्रैार न छिपी जो जानी न जायगी श्रैार प्रगट न होगी। १८ इस लिये सोंचेत रहो कि किस रीति से सुनते हो क्योंकि जिस किसी

का है उसे दिया जायगा और जिसका नहीं है उससे वुह भी जो वुह भावना से रखता है फेर लिया जायगा।

१९ तब उसकी माता और भाई आये और भीड़ के मारे उस पास न आसके। २० और उसे कहा गया कि आप की माता और भाई बाहर खड़े आप को देखने चाहते हैं। २१ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि मेरी माता और मेरे भाई ये हैं जो ईश्वर का बचन सुन के उसे पालन करते हैं।

२२ और एक दिन ऐसा हुआ कि वुह अपने शिष्यों के संग एक नाव पर चढ़ा और उन्हें बोला कि हम झील के पार चलें तब उन्हों ने खोली। २३ परन्तु जब नाव चली जाती थी वुह सो गया और झील में एक आंधी की बयार उठी और नाव भर गई और वे जोखिम में हुए। २४ तब वे उस पास आये और उसे जगाके बोले कि हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं उसने उठके आंधी और जल के हलरा को डांटा और वे थम गये और चैन हो गया। २५ तब उसने उन्हें कहा कि तुम्हारा बिश्वास कहां है? और वे डर के और आश्चर्यित होके आपुस में बोले कि यह कैसा मनुष्य है क्योंकि वुह पवन और जल को भी आज्ञा करता है और वे उसे मानते हैं।

२६ फेर वे जदरियों के देश में पहुंचे जो गालील के साम्ने है। २७ और जब वुह तीर पर उतरा उस

नगर का एक मनुष्य उसे मिला जो बक्कत दिन से पिशाच ग्रस्त था और वस्त्र नहीं पहिनता था और न घर में रहता था परन्तु समाधिन में। २८ वुह यिशु को देखके चिल्लाया और उसके आगे गिर पड़ा और बड़े शब्द से बोला कि हे अति महान ईश्वर के पुत्र यिशु मुझे आप से क्या काम? मैं आप की बिनती करता हों मुझे मत सताइये। २९ (क्योंकि उसने उस मनुष्य से उसे निकल जाने की आज्ञा किई थी इस लिये कि वुह उसे बारंबार पकड़ता था और वुह सीकरों और बेड़ियों से बंधा ऊआ था और उन बंधनों को तोड़ता था और भूत उसे बन में देखता था)। ३० तब यिशु ने उसे यह कहिके पूछा कि तेरा क्या नाम? वुह बोला कि सेना इस कारण कि बक्कत से भूत उस में पैठे थे। ३१ फेर उन्हों ने उसकी बिनती किई कि हमें गहिरापे में जाने की आज्ञा मत कीजिये। ३२ और वहां बक्कत से सूत्ररों का एक झुंड पहाड़ पर चरता था तब उन्हों ने उसकी बिनती किई कि हमें उन में जाने दीजिये और उसने उन्हें जाने दिया। ३३ तब पिशाच उस मनुष्य से निकल के सूत्ररों में पैठ गये और वुह झुंड कड़ारे पर से झट झील में जागिरा और उनका श्वास रुक गया। ३४ तब चरवाहे इन बातों को देखके भागे और नगर में और देश में जाके बोले। ३५ तब जो कि बीता था वे उसे देखने को बाहर निकले और यिशु के पास आये और उस मनुष्य

को, जिस पर से पिशाच निकल गये थे बस्त्र पहिने ज़ए, यिशु के चरण पास बैठा ज़आ, सुज्ञान पाया और डर गये। ३६ और देखने वाले उन से बोले कि वुह पिशाच ग्रस्त किस बात से चंगा ज़आ। ३७ तब गदरियों के देश के आस पास की सारी मंडलियों ने उसकी बिनती किई कि हमारे पास से जाइये क्योंकि उन में बड़ी डर पैठ गई और वुह नाव पर चढ़के फिर आया। ३८ अब उस मनुष्य ने, जिस पर से पिशाच निकल गये थे,उसकी बिनती किई कि मैं भी आप के संग रहों परन्तु यिशु ने उसे यह कहिके बिदा किया। ३९ कि अपनेही घर फिर जा और दिखो कि ईश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किये तब वुह गया और सारे नगर में प्रचार ने लगा कि यिशु ने मेरे लिये ऐसे बड़े बड़े काम किये।

४० और ऐसा ज़आ कि जब यिशु फिर आया तो लोगों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि सब उसकी बाट जोहते थे। ४१ और देखो कि याइर नाम एक मनुष्य आया, जो मंडली का प्रधान था और यिशु के चरण पर गिरके बिनती किई कि आप मेरे घर चलिये। ४२ क्योंकि उसकी एकलौती पुत्री बारह बरस एक की मरने पर पड़ी थी परन्तु उसके जातेज़ए लोगों ने उस पर भीड़ किई। ४३ और एक स्त्री ने जिसका बारह बरस से रक्त गिरता था जिसने अपना सारा, धन बैद्यों पर उठाया परन्तु किसी से चंगी न हो सकी। ४४ पीछे

से आके उसके बस्त्र के अंचल को छूआ और तुरन्त उसके रक्त का वहना थमगया। ४५ तब यिशु ने कहा कि किसने मुझे छूआ? जब सभों ने नाह किया तो पथर और उसके संगियों ने कहा कि हे गुरु लोग आप पर ठेलमठेल करके भीड़ करते हैं और आप कहते हैं कि मुझे किसने छूआ? ४६ यिशु ने कहा कि मुझे किसी ने छूआ है क्योंकि मैं देखताहों कि शक्ति मुझसे निकली है। ४७ और जब उस स्त्री ने देखा कि छिप न सकी तो कांपतीऊई आई और उसके आगे गिरके सब लोगों के आगे उसे सब कुछ कहा कि मैं ने इस कारण आप को छूआ और कैसा तुरन्त चंगी होगई। ४८ तब उसने उसे कहा कि हे पुत्री सुखित हो तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया कुशल से चली जा।

४९ जब वुह यह कहि रहा था मंडली के प्रधान कने से एक ने आके उसे कहा कि तेरी बेटी मर गई गुरु को क्लेश मत दे। ५० परन्तु यिशु ने उत्तर में उसे कहा कि मत डर केवल बिश्वास रख और वुह चंगी हो जायगी। ५१ और जब वुह घर में आया तो केवल पथर और याकूब और योहन और उस कन्या के माता पिता को छोड़ किसी को भीतर जाने न दिया। ५२ और सब उसके लिये विलाप करके रोपीट रहे थे परन्तु उसने कहा कि मत रोओ वुह मर नहीं गई परन्तु सोती है। ५३ तब वे यह जानके कि वुह मर गई है

उस पर हंसे। ५४ और उसने उन सभों को बाहर करके उसका हाथ पकड़ा और यह कहिके बोला कि कन्या उठ। ५५ तब उसका प्राण फिर आया और वुह तुरन्त उठी और उसने उसे भोजन देने की आज्ञा किई। ५६ तब उसके माता पिता अचंभित हुए और उसने उन्हें कहा कि यह जो किया गया है किसी से मत कहियो।

९ नौवां पर्व्व।

१ फेर उसने अपने बारह शिष्यन को एकट्ठे बुला के सारे पिशाच पर पराक्रम और रोगों को चंगा करने की सामर्थ्य उन्हें दिया। २ और उन्हें ईश्वर के राज्य प्रचारने को और रोगियों को चंगा करने को भेजा। ३ और उन्हें कहा कि यात्रा के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोला न रोटी न रोकड़ न मनुष्य पीछे दो वस्त्र। ४ और जिस किसी घर में तुम लोग जाओ वहीं रहो और वहीं से सिधारो। ५ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे जब तुम उस नगर से बाहर निकलो तो उन पर साक्षी के लिये अपने पांव की धूल लों झाड़ो। ६ तब वे चल निकले और नगर नगर में से मंगल समाचार प्रचारते और सर्व्वत्र चंगा करते गये।

७ अब चौथाई के अध्यक्ष हिरोद ने सब कुछ, जो यिशु ने किया था सुन के घबराया इस लिये कि कितने कहते थे कि योहन मृतकों में से जी उठा। ८ और

कितने कि इलियाह प्रगट हुआ और कितने कि एक प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से फेर उठा है। ९ तब हिरोद बोला कि योहन का तो मैं ने सिर काटा है परन्तु यह कौन है जिसके विषय में मैं ऐसी ऐसी बातें सुनता हों? और उसे देखने चाहा।

१० तब प्रेरितों ने फेर आके सब कुछ जो उन्हों ने किया था उसे कहा और वुह उन्हें लेके चुपके से एकांत बैतसैदा नगर के एक शून्य स्थान में गया। ११ और जब लोगों ने जाना तो उसके पीछे होलिये और उसने उन्हें ग्रहण करके उन से ईश्वर के राज्य की बातें किईं और जिन्हें चंगा होने का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया। १२ और जब दिन ढलने लगा उन बारहों ने आके उसे कहा कि मंडली को बिदा करिये जिसतें वे नगरों में और चारों ओर की बस्तियों में जारहें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां शून्य स्थान में हैं। १३ परन्तु उसने उन्हें कहा कि तुम उन्हें खाने को देओ वे बोले कि पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक हम कुछ नहीं रखते जब लों न जाके इन लोगों के लिये भोजन मोल लेवें। १४ क्योंकि वे अंटकल में पांच सहस्र पुरुष थे तब उसने अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें पचास पचास की जथा कर के बैठाओ। १५ उन्हों ने वैसाही किया और सभों को बैठाया। १६ तब उसने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को उठाया और स्वर्ग की ओर

दृष्टि करके उन पर आशीष दिया और तोड़ा और मंडली के आगे धरने को शिष्यों को दिई। १७ और सब खाके तृप्त ऊए और उन चूरचार में से जो उन से बच रहे थे बारह टोकरियां भरी उठाईं।

१८ और जब वुह अकेला प्रार्थना करता था ऐसा ऊआ कि उसके शिष्य उसके संग थे तब उसने यह कह के उन्हें पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं?। १९ वे उत्तर में बोले कि योहन स्नानकारक और कितने कि इलिया अरु और कि पुराने भविष्यद्वक्तों में से एक फेर उठा है। २० उसने उन्हें कहा परन्तु तुम लोग मुझे क्या कहते हो? पथर ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर का मसीह। २१ तब उसने उन्हें दृढ़ता से चेताया और यह कहिके आज्ञा किई कि यह बात किसी से मत कहियो। २२ अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र बऊत कष्ट उठाने और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से त्यागा जाय और मारा जाय और तीसरे दिन फेर उठाया जाय। २३ फेर उसने सभों से कहा कि यदि कोई मेरे पीछे आया चाहे तो अपनी इच्छा को त्यागे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाके मेरे पीछे आवे। २४ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाया चाहेगा उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपने प्राण को खोवेगा सोई उसे बचावेगा। २५ क्योंकि यदि मनुष्य सारे जगत को कमावे और अपने को खोवे अथवा त्यक्त होवे तो

उसे क्या लाभ है?। २६ क्योंकि जो कोई मुझ्से और मेरे वचन से लजावेगा मनुष्य का पुत्र भी जब वुह अपने और अपने पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य में आवेगा तो उस्से लजावेगा। २७ परन्तु मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि यहां कितने खड़े हैं जो म्टत्यु का स्वाद न चीखेंगे जब लों ईश्वर के राज्य को न देखलें।

२८ और उन बातों से आठ दिन पीछे ऐसा हुआ कि वुह पथर और योहन और याकूब को लेके पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। २९ और प्रार्थना करते हुए उसके रूप का डौल औरही हो गया और उसका वस्त्र श्वेत होके चमकने लगा। ३० और देखो कि दो मनुष्य अर्थात मूसा और इलिया उस्से वार्त्ता करते थे। ३१ वे तेज में दिखाई दिये और उसके म्टत्यु की जिसे यिरूशालम में उसे पूरा करना था वार्त्ता करते थे। ३२ परन्तु पथर और उसके संगी नींद के वश में हुए सो जब वे जाग उठे तो उन्हों ने उसके ऐश्वर्य को और उन दोनों मनुष्यों को, जो उसके संग खड़े थे देखा। ३३ और जब वे उस्से अलग होने लगे तो पथर ने यिशु से कहा कि हे गुरु हमारे लिये यहीं रहना अच्छा है आओ तीन तंबू बनावें एक आप के और एक मूसा के और एक इलिया के लिये पर नहीं जानता था कि क्या कहता है। ३४ उसके यह कहतेही एक मेघ ने आके उन पर छाया किई और जब वे मेघ में प्रवेश करने लगे

तो डर गये। ३५ और यह कहते ज़ए मेघ से शब्द निकला कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो"। ३६ और जब शब्द हो चुका तो यिशु अकेला पाया गया और वे चुपके होके उन बातों में से, जो उन्हों ने देखी थीं, उन्हीं दिनों में किसी से कुछ न कहा।

३७ और ऐसा ज़ञा कि दूसरे दिन, जब वे पहाड़ पर से उतरे बज़त लोग उस्से आमिले। ३८ और एक मनुष्य ने उस मंडली में से पुकार के कहा कि हे गुरु मैं आप की बिनती करताहों मेरे पुत्र पर दया कीजिये क्योंकि वुह मेरा एकलौता है। ३९ और देख उसे आत्मा लेता है और वुह तुरन्त चिल्लाता है और वुह उसे ऐसा ऐंठता है कि वुह फेन बहाता है और उसे ऐंठके कठिन से निकल जाता है। ४० और मैं ने उसे दूर करने को आप के शिष्यों से बिनती किई परन्तु वे नसके। ४१ तब यिशु ने उत्तर देके कहा कि हे अबिश्वासी और हठीली पीढ़ी कबलों मैं तुम्हारे संग रहों और तुम्हारी सहों? अपने बेटे को इधर ला। ४२ और जब वुह आनेलगा तो उस पिशाच ने उसे गिरादिया और ऐंठा तब यिशु ने उस अपवित्र आत्मा को डांटा और बालक को चंगा किया और उसे उसके पिता को फेर सैांप दिया। ४३ और वे सब ईश्वर के बड़े पराक्रम से अचंभित ज़ए परन्तु जब वे उन कार्य्यों से जो यिशु ने किये थे आश्चर्य में थे उसने अपने शिष्यों से कहा।

४४ कि ये बातें तुम्हारे कान में गड़ जायें कि मनुष्य का पुत्र लोगों के हाथ में सौंपा जायगा। ४५ परन्तु उन्हों ने इस बात को न समझा वुह उनसे गुप्त रही जिसतें उन्हें सूझ न पड़े और वे उस बात को उसे पूछने को डरे।

४६ फेर उन में चर्चा उठी कि हम्में सब से बड़ा कौन होगा। ४७ यिशु ने उनके मनकी चिंता जान के एक बालक को लेकर अपने पास बैठाया। ४८ और उन्हें कहा कि जो कोई इस बालक को मेरे नाम से ग्रहण करे तो मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करता है सो उसे जिसने मुझे भेजा है ग्रहण करता है क्योंकि जो तुम सभों में अत्यन्त छोटा है सो बड़ा होगा। ४९ तब योहन ने उत्तर देके कहा कि हे गुरु हम ने आप के नाम से एक को पिशाच दूर करते देखा और उसे बरज दिया क्योंकि वुह हमारे संग नहीं आता। ५० तब यिशु ने उसे कहा कि मत बरज क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध नहीं सो हमारी ओर है।

५१ और जब ऊपर उठाये जाने का उसका समय आया तो यिरूशालम को जाने के लिये आप को दृढ़ किया। ५२ और अपने आगे आगे दूतों को भेजा और वे उसके लिये सिद्ध करने को सामरियों के एक गांव में गये। ५३ पर उन्हों ने उसे ग्रहण न किया इस कारण कि उसका रुख यिरूशालम को जाने पर था। ५४ और जब उसके शिष्य याकूब और योहन ने देखा

तो बोले कि हे प्रभु आप की इच्छा होय तो इलिया के समान हम आज्ञा करके स्वर्ग से आग मंगा के उन्हें भस्म करें? ५५ परंतु वुह फिर के उन्हें दपट के बोला कि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा किस भांति का आत्मा है। ५६ क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों का प्राण नाश करने नहीं आया परंतु बचाने को फेर वे दूसरे ग्राम को गये।

५७ और ऐसा हुआ कि जब वे मार्ग में चलेजाते थे किसी ने उसे कहा कि हे प्रभु जहां कहीं आप जायं मैं आप के पीछे चलोंगा। ५८ यिशु ने उसे कहा कि लोमडियों के लिये मांदें और आकाश के पंछियों के लिये खोते हैं परंतु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने का स्थान नहीं है। ५९ और उसने दूसरे से कहा कि मेरे पीछे चल परन्तु उसने कहा कि हे प्रभु मुझे पहिले अपने पिता को गाड़ने दीजिये। ६० यिशु ने उसे कहा कि मृतक अपने मृतक को गाड़े परन्तु तू जाके ईश्वर के राज्य को प्रचार। ६१ और दूसरे ने भी कहा, हे प्रभु मैं आप के पीछे चलोंगा परन्तु पहिले मुझे जाने दीजिये कि अपने परिवार लोगों से बिदा हो आओं। ६२ यिशु ने उसे कहा कि जो मनुष्य अपने हाथ को हल पर रखके पीछे देखे सो ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं।

१० दसवां पर्व्व।

१ इन बातों के पीछे प्रभु ने और सत्तर को भी ठहराया और उन्हें दो दो करके जिस जिस नगर और स्थान में जिधर आप जाया चाहता था अपने आगे भेजा। २ और उसने उन्हें कहा कि लवनी तो बहुत है ठीक परन्तु, लवैये थोड़े हैं सो लवनी के स्वामी की बिनती करो कि वुह अपनी लवनी के लिये लवैयों को भेजे। ३ सो जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्ना की नाई ऊंडारों में भेजता हों। ४ सो कोई झोला अथवा झोला अथवा जूता मत लेओ और मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो। ५ और जिस किसी घर में जाओ पहिले उस घर पर कल्याण कहो। ६ और यदि कल्याण का पुत्र उसमें होवे तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हीं पर फिर आवेगा। ७ और उसी घर में रहो और जो कुछ वे तुम्हें देवें सो खाओ पीओ क्योंकि बनिहार अपनी बनी के योग्य है घर घर मत फिरो। ८ और जिस किसी नगर में जाओ और वे तुम्हें ग्रहण करें जो जो तुम्हारे आगे धरी जायं सो सो भोजन करो। ९ और वहां के रोगियों को चंगा करो और उन्हें कहो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंचा है। १० परन्तु जिस जिस नगर में जाओ और वे तुम्हें ग्रहण न करें तो वहां के मार्गों में जाके कहो। ११ कि तुम्हारे नगर की धूल लों, जो हम पर लगी है हम तुम पर झाड़ते

हैं तथापि इसे निश्चय जान रक्खो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंचा है। १२ परंतु मैं तुम्हें कहता हों कि उसी दिन में उस नगर की दशा से सदूम के लिये अधिक सहज होगी। १३ हे कोरजीन तुझ पर हाय है, हे बैतसैदा तुझ पर हाय है, क्योंकि जो आश्चर्य कर्म्म तुम्में दिखाये गये यदि सूर और सैदा में दिखाये जाते तो टाट पहिन और राख पर बैठ के वे कब के पश्चात्ताप कर चुकते। १४ परंतु बिचार के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा के लिये अधिक सहज होगी। १५ और हे कफरनाहूम जो स्वर्ग लों बढ़ाई गई तू नीचे नाश लों गिराई जायगी। १६ जो तुम्हारी सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हारी निन्दा करता है सो मेरी निन्दा करता है और जो मेरी निन्दा करता है सो मेरे भेजने वाले की निन्दा करता है।

१७ तब वे सत्तर फेर आके आनन्द से कहनेलगे कि हे प्रभु आपके नाम से पिशाच भी हमारे बश में हैं। १८ तब उसने उन्हें कहा कि मैं ने शैतान को बिजुली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा। १९ लो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को और शत्रु के सारे पराक्रम को लताड़ने को सामर्थ्य देता हों और कोई बस्तु तुम्हें किसी रीति से दुख न देगी। २० तिसपर भी इस्से आनन्द मत करो कि आत्मा तुम्हारे बश में हैं परंतु पहिले इसलिये आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।

२१ उसी घड़ी यिशु ने आत्मा में आनन्दित होके कहा कि हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानताहों क्योंकि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रक्खा और उन्हें बालकों पर प्रगट किया ऐसा होवे हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा। २२ सब कुछ मेरे पिता से मुझे सौंपा गया और पिता को छोड़ पुत्र को कोई नहीं जानता और पुत्र को छोड़ पिता को कोई नहीं जानता और जिस पर पुत्र प्रगट किया चाहे। २३ तब उसने शिष्यों की ओर फिर के निराले में कहा कि जो कुछ तुम देखते हो जो आखें देखती हैं सो धन्य हैं। २४ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि बहुतेरे भविष्यद्वक्ता और राजा इन बातों को देखने चाहते थे जो तुम लोग देखते हो पर नहीं देखा और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर नहीं सुना।

२५ और देखो किसी व्यवस्था ज्ञाता ने उठके उसकी परीक्षा करने को पूछा कि हे गुरु अनन्तजीवन पाने के निमित्त मैं क्या करों? २६ उसने उसे कहा कि व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है? २७ उसने उत्तर देके कहा कि, अपने ईश्वर परमेश्वर पर अपने सारे अन्तःकरण से और अपने सारे प्राण से और अपने सारे मन से और अपने सारे बल से प्रेम कर और अपने परोसी को अपने समान। २८ उसने उसे

कहा कि तू ने ठीक उत्तर दिया यही कर और तू जीयेगा। २९ परंतु अपने को निर्दोष ठहराने के लिये उसने यिशु से कहा, भला मेरा परोसी कौन है ?। ३० यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि कोई यिरूशालम से यिरीहो को जाता था और चोरों में पड़ा जिन्हों ने नंगा करके उसे घायल किया और अधमुआ छोड़ के चले गये। ३१ तब संयोग से कोई याजक उस मार्ग से आया और वुह उसे देखके दूसरी ओर से चला गया। ३२ और इसी रीति से एक लवी ने उस स्थान में पहुंच के उसे आ देखा और दूसरी ओर से चला गया। ३३ परन्तु जहां वुह था तहां कोई सामरी यात्रा में जा पहुंचा और उसे देखके दया किई। ३४ और जाके तेल और मदिरा लगा के उसके घावों को बांधा और अपने वाहन पर चढ़ाके उसे टिकाश्रय में लाया और उसकी सेवा करने लगा। ३५ तब दूसरे दिन सिधारते हुए उसने दो सुकी निकाल के भटिहारे को दिई और उसे कहा कि इसकी टहल कर और जो कुछ तू अधिक उठावेगा फिर आके तुझे भर देउंगा। ३६ जो चोरों में जापड़ा उन तीनों में से तू किसको उसका परोसी समुझता है ? ३७ उसने कहा उसी को जिसने उस पर दया किई तब यिशु ने उसे कहा, जा तू भी ऐसाही कर।

३८ और उनके जाते जाते वुह किसी गांव में पहुंचा

ग्रैार मर्था नाम एक स्त्री ने, उसे ग्रपने घर में उतारा। ३९ ग्रैार मरियम नाम उसकी एक बहिन थी जो यिशु के चरण पास बैठ के उसकी बातें सुनती थी। ४० तब मर्था बज्जत सेवा से व्याकुल होके उस पास ग्रा बोली, हे प्रभु क्या ग्राप नहीं चिन्ता करते हैं कि मेरी बहिन ने मुझ ग्रकेली पर सेवा छोड़ दिई है? इस लिये मेरा सहाय करने को उसे ग्राज्ञा कीजिये। ४१ तब यिशु ने उत्तर देके उसे कहा मर्था, हे मर्था त बज्जतसी बातों के लिये चिन्तायमान ग्रैार व्याकुल है। ४२ परन्तु एकही बात ग्रवश्य है ग्रैार मरियम ने उस ग्रच्छे भाग को चुना है जो उस्से लिया न जायगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ ग्रैार ऐसा ज्ञग्रा कि जब यिशु किसी स्थान में प्रार्थना करके ग्रवकाश पाया तो उसके शिष्यों में से एक ने उसे कहा, हे प्रभु जैसा योहन ने ग्रपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया तैसा हमें भी सिखाइये। २ उसने उन्हें कहा जब तुम लोग प्रार्थना करो तो कहो, हे हमारे पिता जो स्वर्ग पर है, तेरा नाम पवित्र होवे, तेरा राज्य ग्रावे, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में है वैसी पृथिवी पर होवे। ३ हमारे दिन दिन की रोटी प्रतिदिन हमें दे। ४ ग्रैार हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी ग्रपने हर एक ग्रपराधी को क्षमा करते हैं, ग्रैार हमें परीक्षों में न डाल परन्तु दुष्ट से बचा। ५ ग्रैार उसने

उन्हें कहा कि तुम में से कौन है, जिसका एक मित्र होवे और आधी रात को उसपास आवे और उसे कहे कि हे मित्र तीन रोटी मुझे उधार दीजिये। ६ क्योंकि मेरा एक मित्र पथ से मुझ पास आया है और उसके आगे धरने को मेरे पास कुछ नहीं है। ७ और वुह भीतर से उत्तर देके कहे कि मुझे मत सता अब द्वार बन्द है और मेरे बालक मेरे संग बिछौने पर हैं मैं उठके तुझे दे नहीं सक्ता। ८ मैं तुम्हें कहता हों कि यद्यपि वुह उसके मित्र होने के कारण उसे न जितना उसे देगा तथापि उसके गिड़गिड़ाने के लिये वुह उठेगा और आवश्यक है देगा। ९ और मैं तुम्हें कहता हों कि मांगो और तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो और पाओगे खटखटाओ और तुम्हारे लिये खोला जायगा। १० क्योंकि हर एक जो मांगता है सो लेता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायगा। ११ तुम्में कौन ऐसा पिता है यदि उसका पुत्र रोटी मांगे वुह उसे पत्थर देवे? अथवा यदि मछली मांगे मछली की संती उसे सर्प देवे? १२ अथवा यदि वुह अंडा मांगे वुह उसे बिच्छू देवे? १३ सो यदि बुरे होके जो तुम लोग अच्छी वस्तु अपने बालकों को देने जानते हो तो कितना अधिक तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें, धर्मात्मा देगा जो उस्से मांगते हैं।

१४ फेर वुह एक गूंगे पिशाच को निकालता था और

ऐसा हुआ कि जब वुह पिशाच निकाला गया वुह गूंगा बोलने लगा और लोगों ने आचंभा माना। १५ परन्तु उन में से कितने बोले कि पिशाचों के प्रधान बालजबूल की सहाय से वुह पिशाचों को दूर करता है। १६ कितनों ने परीक्षा करते उस्से स्वर्ग से एक लक्षण चाहा। १७ परंतु उसने उनकी चिंता जान के उन्हें, कहा कि जो जो राज्य अपने बिरोध में बिभाग हो जाय सो उजाड़ होता है और घर घर से बिरुद्ध होके गिर जाता है। १८ यदि शैतान भी अपने बिरोध में बिभाग होवे तो उसका राज्य क्योंकर ठहरेगा? क्योंकि तुम लोग कहते हो कि तू बालजबूल की सहाय से पिशाचों को दूर करता है। १९ और यदि मैं बालजबूल की सहाय से पिशाचों को दूर करता हों तो तुम्हारे बेटे किसकी सहाय से दूर करते हैं? इस लिये वे तुम्हारे न्यायी होंगे। २० परंतु यदि ईश्वर की सहाय से पिशाचों को दूर करता हों तो निश्चय ईश्वर का राज्य तुम लों पहुंचा है। २१ जब बलवान मनुष्य हथियार बांधेहुए अपने घर की रखवाली करताहै तब उसकी संपत्ति कुशल से रहती है। २२ परन्तु जब उस्से एक अधिक बलवान उस पर चढ़आवें और उसे बश में करे तो उसके सारे हथियार को, जिस पर उसका भरोसा था लेलेता है और उसकी लूट को बांट लेता है। २३ जो मेरा साथी नहीं सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे

साथ एकट्ठा नहीं करता सो छिन्न भिन्न करता है। २४ जब अपवित्र आत्मा मनुष्य में से निकल गया है वुह सूखे स्थान में बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है और नहीं पाके कहता है कि मैं अपने घर, जहां से निकालाहों, फिर जाउंगा। २५ और आके उसे झाड़ा बोहारा पाताहै। २६ तब वुह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात आत्मा को लेताहै और वे पैठके वहीं रहते हैं तब उस मनुष्यकी पिछली दशा अगिली से भी अधिक बुरी होती है। २७ और जब वुह यह बचन कहि रहा था ऐसा हुआ कि उस मंडली में से एक स्त्री ने पुकार के कहा कि जिस कोखने आपको धारण किया और जिन स्तनों से आपने पीया सो धन्य। २८ परन्तु उसने कहा कि हां अधिक धन्य वे हैं जो ईश्वर का बचन सुनते हैं और उसे मानलेते हैं।

२९ और जब लोग भीड़ करने लगे उसने कहना आरंभ किया कि यह बुरी पीढ़ी लक्षण ढूंढ़तीहैं परन्तु यूना भविष्यद्वक्ता के लक्षण को छोड़ उन्हें कोई लक्षण दिखाया न जायगा। ३० क्योंकि जैसा यूना निनिवीयों के लिये एक लक्षण था तैसा मनुष्य का पुत्र भी इस पीढ़ी के लिये होगा। ३१ इस पीढ़ी के मनुष्यों के संग न्याय के दिन दक्खिन की रानी उठेगी और उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वुह पृथिवी के सिवाने से सुलेमान का ज्ञान सुन्ने को आई और देखो कि एक

यहां सुलेमान से महान है। ३२ इस पीढ़ी के संग न्याय के दिन निनिवी के लोग उठेंगे और उसे दोष ठहरावेंगे इस लिये कि उन्हों ने यूना के चितावने से पश्चात्ताप किया और देखो कि एक यहां यूना से महान है। ३३ कोई मनुष्य दीपक बार के गुप्त स्थान में अथवा नांद के नीचे नहीं रखता परंतु दीअट पर कि जो भीतर आवें सो उंजियाला देखें। ३४ देह का उंजियाला आंख है इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है तो तेरा सारा देह भी उंजियाले से पूर्ण है परंतु जब मलिन है तो तेरा सारा देह भी अंधकार से भरा है। ३५ इसलिये चौकस रहो कि जो उंजियाला तुझ में है सो अंधियारा न होजाय। ३६ सो यदि तेरा सारा देह उंजियाले से भरा हो और कुछ अंधियारा न हो तो सब उंजियाले से भरा होगा जैसा ज्योतिमान दीपक से तुझे उंजियाल मिलता है।

३७ और जब वुह कहि रहा था किसी फिरसी ने अपने संग भोजन करने को उसका नेउंता किया और वुह भीतर जाके भोजन पर बैठा। ३८ और जब उस फिरसी ने देखा कि उसने भोजन से पहिले न धोया तो अचंभा माना। ३९ तब प्रभु ने उसे कहा, हे फिरसियो तुम लोग कटोरे और थाली को बाहर बाहर शुद्ध करतेहो परंतु तुम्हारे भीतर में क्रूरता और दुष्टता भरीऊई हैं। ४० अरे मूर्खो जिसने बाहर बनाया क्या

उसने भीतर भी नहीं बनाया?। ४१ परंतु निज करके अपनी बिसात के समान दान देउ और देखो कि सब कुछ तुम्हारे लिये पवित्र हैं। ४२ परंतु हे फिरूसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम पुदीना और जीरा और हर एक रीति के सागपात का दसवां भाग देतेहो और न्याय और ईश्वर के प्रेम को उलंघन करतेहो तुम्हें अवश्य था कि इन्हें करते और उन्हें न छोड़ते। ४३ हे फिरूसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम सभा में श्रेष्ठ आसन और हाटों में नमस्कार चाहतेहो। ४४ हे कपटी अध्यापको और फिरूसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम समाधिन की नाईं हो जो दिखाई नहीं देते और जो लोग ऊपर चलते है नहीं जानते। ४५ तब एक व्यवस्था के ज्ञाताने उत्तर देके उसे कहा कि हे गुरु यह कहिके आप हम लोगों की भी निंदा करते हैं। ४६ तब उसने कहा, कि हे व्यवस्थाके ज्ञानियो तुम पर भी हाय क्योंकि तुम कठिन बोझ मनुष्यन पर लादेतेहो और आप उन बोझों को अपनी एक अंगुली से नहीं छूते। ४७ तुम पर हाय क्योंकि तुम लोग भविष्यद्वक्तों के समाधिन को बनातेहो और तुम्हारे पितरों ने उन्हें घात किया। ४८ ठीक तुम साक्षी देके अपने पितरों के कर्म को मान लेतेहो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें घात किया और तुम लोग उनके समाधिन को बनातेहो। ४९ इस लिये ईश्वर के ज्ञान ने भी कहा है कि मैं भविष्यद्वक्तों

ओर प्रेरितों को उन पास भेजोंगा ओर वे उस में से कितनों को घात करेंगे ओर सतावेंगे। ५० जिसतें सारे भविष्यद्वक्तों का लोहू, जो जगत के आरंभ से बहाया गया इस पीढ़ी से लियाजाय। ५१ हाबील के लोहू से लेके जकरिया के लोहू लों, जो बेदी ओर मंदिर के मध्य मारा गया मैं तुम्हें कहताहों कि इस पीढ़ी से लिया जायगा। ५२ हे व्यवस्था के ज्ञानियो तुम पर हाय क्योंकि तुमने विद्या की कुंजी लेलिई है तुम भीतर आप नहीं गये ओर जो भीतर जातेथे उन्हें बर्जा। ५३ ओर जब वुह उन्हें ये बातें कहि रहा था अध्यापक ओर फिरूसी उसे बहुतसी बातों से खिजाने ओर अत्यन्त उस्काने लगे। ५४ ओर उसके घात में लगे ओर देख रहे थे कि उसके मुंह से कोई बचन पकड़पावें जिसतें उस पर दोष लगावें।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ इतने में जब अगिमित लोगों की मंडली एकट्ठी हुई यहां लों कि एक दूसरे को लताड़ता था उसने सब से पहिले अपने शिष्यों से कहना आरंभ किया कि फिरूसियों के खमीर से, जो कपट है परे रहो। २ क्योंकि कोई बस्तु ढंपी नहीं जो प्रगट न होगी न छिपी जो जानी न जायगी। ३ इसलिये जो कुछ तुमने अंधियारे में कहा है सो उंजियाले में सुनाजायगा ओर जो कुछ तुमने कोठरियों में कानो कान कहा है

से कोठों पर प्रचारा जायगा। ४ और हे मित्रो मैं तुम्हें कहता हों कि जो देह को घात करते हैं उनसे मत डरो और उसके पीछे कुछ नहीं करसक्ते। ५ परन्तु जिस्से डरा चाहिये मैं तुम्हें चिताओंगा जो देह को मार के पीछे नरक में डालने की सामर्थ्य रखता है उस्से डरो हां मैं तुम्हें कहता हों कि उस्से डरते रहो। ६ क्या दो दमड़ियों पर पांच चिड़ियां नहीं बिकतीं? और उन में से एक भी ईश्वर से नहीं भुलाई गई?। ७ परन्तु तुम्हारे सिर के सारे बाल लों गिने ज्रुए हैं इसलिये मत डरो, तुम बज्रतसी चिड़ियों से अधिक मोल के हो। ८ मैं ये भी तुम्हें कहताहों कि जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मानलेगा मनुष्य का पुत्र भी उसे, ईश्वर के दूतों के आगे मानलेगा। ९ परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मुकरेगा सो ईश्वर के दूतों के आगे मुकरा जायगा। १० और जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में बचन कहेगा वुह उसके लिये क्षमा किया जायगा परन्तु जो धर्मात्मा के बिरोध में निंदा करे क्षमा नहीं किया जायगा। ११ और जब वे तुम्हें मंडलियों में और न्यायी और पराक्रमी के आगे लेजावें तो चिंता मत करो कि हम किस रीति से अथवा क्या उत्तर देवें अथवा क्या कहें। १२ क्योंकि जो तुम्हें कहना है सो धर्मात्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा।

१३ तब उस जथा में से एक ने उसे कहा कि हे गुरु

मेरे भाई से मेरे संग अधिकार बांट देने को कहि दीजिये। १४ तब उसने उसे कहा कि हे मनुष्य किसने मुझे तुम पर न्यायी अथवा भाग कारक बनाया। १५ तब उसने उन्हें कहा, सोचेत रहो और लोभ से परे रहो क्योंकि किसी का जीवन उसके धन की अधिकाई से नहीं है। १६ फेर उसने उन्हें एक दृष्टांत कहा कि एक धनमान की भूमि में बज्जत कुछ उपजने लगा। १७ तब वुह अपने मन में सोचने लगा कि मैं क्या करों मेरी बढ़ती धरने का ठिकाना नहीं?। १८ तब उसने कहा, मैं यह करोंगा, कि अपने खत्ते को ढाओंगा और बड़े बनाओंगा और अपनी बढ़ती और संपत्ति उसमें धरोंगा। १९ और अपने प्राण से कहोंगा कि हे प्राण तेरे पास बरसों के लिये बज्जत सी संपत्ति एकट्ठी धरी है चैन कर खा पी आनंदित हो। २० परंतु ईश्वर ने उसे कहा, अरे मूर्ख इसी रात तुझसे तेरा प्राण फेर लिया जायगा तब जो वस्तें तूने बटोरी हैं किसकी होंगी?। २१ उसकी यह दशा है जो अपने लिये धन बटोरता है परंतु ईश्वर के आगे धनी नहीं है। २२ फेर उसने अपने शिष्यों से कहा, इसलिये मैं तुम्हें कहता हों कि अपने जीवन के लिये चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे और न देह के लिये कि हम क्या पहिनेंगे। २३ जीवन भोजन से और देह वस्त्र से अधिक है। २४ कैावों को देखो क्योंकि वे न बोते हैं न लवते हैं न उनके

खलिहान न रखते हैं और ईश्वर उन्हें खिलाता है तुम पंछियों से कितने भले हो? २५ और तुम्हों से चिंता कर के कौन अपनी डील को हाथ भर बढ़ा सक्ता। २६ यदि तुम अति छोटे काम नहीं कर सक्ते तो औरों के लिये क्यों चिंता करते हो? २७ सुदर्शन को देखो वे कैसे बढ़ते हैं वे परिश्रम नहीं करते न कात्ते हैं तथापि मैं तुम्हें कहता हों कि सुलेमान अपने सारे बिभव में इन में से एक के समान बिभूषित न था। २८ फेर यदि ईश्वर घास को, जो आज खेत में है और कल भरसाई में झोंकी जायगी यों पहिनाता है तो हे अल्प बिश्वासियो तुम्हें कितना अधिक पहिनावेगा? २९ और चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे, अथवा क्या पीयेंगे, और न अपने मन में चिंता करो। ३० क्योंकि इन बातों की चिंता अन्यदेशी करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन बस्तुन का आवश्यक है। ३१ परन्तु पहिले ईश्वर के राज्य को ढूंढ़ो और ये सब तुम्हारे लिये अधिक किई जायंगी। ३२ हे छोटी झुंड मत डर क्योंकि तुम्हें राज्य देने को तुम्हारे पिता की प्रसन्नता है। ३३ अपना जो है सो बेंच डालो और दान करो और थैली, जो पुरानी नहीं होती और स्वर्ग में धन, जो नहीं घटता जहां चोर नहीं पहुंचता और कीड़े नाश नहीं करते अपने लिये सहेजो। ३४ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

३५ तुम्हारी कटि कसी और दीपक बरते रहें। ३६ और तुम तो उन लोगों के समान हो जो अपने प्रभु की बाट जोहते हों जब वुह बियाह से फिरे और आके खटखटावे वे उसके लिये तुरन्त खोलें। ३७ धन्य वे दास जिन्हें प्रभु आतेही चौकस पावे मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि वुह अपनी कटि कसके उन्हें भोजन पर बैठावेगा और आके उनकी सेवा करेगा। ३८ और यदि वुह दूसरे अथवा तीसरे पहर में आवे और ऐसा पावे तो वे दास धन्य हैं। ३९ और तुम तो जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस घड़ी आवेगा तो वुह चौकस रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४० सो तुमभी चौकस रहो क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसे समय में आवेगा जब तुम बाट जोहते न रहोगे। ४१ तब पथर ने उसे कहा कि हे प्रभु यह दृष्टान्त आप हमसे अथवा सब से कहते हैं? ४२ प्रभु ने कहा कि वुह विश्वस्त और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसे प्रभु ठीक समय में भोजन का भाग देने को अपने घराने पर प्रधान करेगा? ४३ धन्य वुह सेवक जिसे उसका प्रभु आके ऐसही करते पावे। ४४ मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि वुह उसे अपनी सारी संपत्ति पर प्रधान करेगा। ४५ परन्तु यदि वुह सेवक मन में कहे कि मेरा प्रभु आने में बिलम्ब करता है और दास और दासियों को मार पीट करने और खाने पीने और मतवाला होने लगे।

४६ तो उस सेवक का प्रभु ऐसे दिन में आवेगा जब वुह बाट न जोहता हो और ऐसी घड़ी में जब वुह अचेत हो और उसे दो टुकड़ा करेगा और उसका भाग अबिश्वासियों के संग ठहरावेगा। ४७ और वुह सेवक जो अपने प्रभु की इच्छा जानके लैस न ऊआ और उसकी इच्छा के समान न चला बऊतसी मार खायगा। ४८ परन्तु जिसने न जाना और मार खाने का काम किया सो थोड़ीसी मार खायगा क्योंकि जिसे बऊत दिया गया है उस्से बऊत मांगा जायगा और जिसे लोगों ने बऊत सैांपा है उस्से वे अधिक मागेंगे। ४९ मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हों और मैं कैसाही चाहताहों कि अभी लगजाय?। ५० और मुझे एक स्नान से स्नान पाना है और मैं कैसे सकेत में हों जब लों वुह पूरा न होवे। ५१ क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करने आयाहों? मैं तुम्हें कहताहों कि नहीं परंतु निज करके फूट करने को। ५२ क्योंकि अबसे पांच एक घर में फूट जायेंगे तीन दो से और दो तीन से फूट जायेंगे। ५३ पिता पुत्र से और पुत्र पिता से और माता पुत्री से और पुत्री माता से सास अपनी पतोह से और पतोह अपनी सास से।

५४ और उसने यह भी लोगों से कहा कि जब तुम पच्छिम से मेघ उठते देखतेहो तो तुरन्त कहतेहो कि झड़ी आती है और ऐसाही होता है। ५५ और जब

दच्छिन का पवन बहता है तुम कहतेहो कि तपन होगी और योंही होता है। ५६ अरे कपटियो तुम आकाश और पृथिवी के रूप का निर्णय करसक्तेहो पर यह कैसा है कि तुम लोग इस समय का निर्णय नहीं करते। ५७ हां वुह जो ठीक है आपही क्यों नहीं बिचारते। ५८ जब तू अपने बैरी के संग न्यायी के पास चलाजाता है उस्से छूटने के लिये मार्ग में यत्न कर नहो कि वुह तुझे न्यायी कने खिंचावावे और न्यायी तुझे दंडकारी को सैांपे और दंडकारी तुझे बंदीगृह में डालदेवे। ५९ मैं तुझे कहताहों कि तू वहां से न निकलेगा जब लों कि दमड़ी लों न भर देवे।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ उस समय कितने वहां थे जो उन गालीलियों के बिषय में उस्से कहने लगे जिनका लोहू पिलात ने उनके बलिदान के संग मिलाया। २ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा, क्या तुम समझते हो कि ये गालीली सारे गाली लियों से अधिक पापी थे इस कारण कि उन्हों ने ऐसा ऐसा कष्ट पाया?। ३ मैं तुम्हें कहता हों कि नहीं, परंतु यदि तुम लोग पश्चात्ताप न करोगे तो उसी रीति से तुम सब नष्ट होओगे। ४ अथवा वे अठारह जिन पर सैलूहा में गुम्मट गिरा और उन्हें नष्ट किया तुम क्या समझते हो कि वे यिरूशालम के सारे बासियों से अधिक पापी थे?। ५ मैं तुम्हें कहता हों कि नहीं

परंतु यदि तुम लोग पश्चात्ताप न करोगे तो उसी रीति से तुम सब भी नष्ट होओगे। ६ उसने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी की दाख की बारी में गूलर का एक पेड़ लगाया गया था और उसने आके उस पर फल ढूंढ़ा पर न पाया। ७ तब उसने अपने माली से कहा कि देख तीन बरस से मैं आके इस गूलर पेड़ पर फल ढूंढ़ता हों और नहीं पाता इसे काटडाल इसने भूमि को किस लिये रोक रक्खा है?। ८ उसने उत्तर देके उसे कहा कि हे प्रभु इस बरस भी उसे रहने दीजिये जबलों मैं उसका थाला खोदों और खाद भरों। ९ तब यदि उस में फल लगे तो भला, नहीं तो पीछे उसे काट डालियो।

१० और वुह किसी मंडली में बिश्राम दिन में उपदेश करता था। ११ और देखो वहां एक स्त्री थी जिस पर अठारह बरस से दुर्बलता का आत्मा था और कुबड़ी होगई थी और किसी रीति से सीधी न होसक्ती थी। १२ यिशु ने उसे देखके बुलाया और उस पर हाथ धर के उसे कहा कि हे स्त्री तू अपनी दुर्बलता से छूटगई। १३ और तुरन्त वुह सीधी होगई और ईश्वर की स्तुति किई। १४ और यिशु ने बिश्राम दिन में यिशु के चंगा करने के कारण से मंडली के प्रधान ने क्रोधित होके कहा कि छः दिन हैं जिन में मनुष्यों को काम काज करना उचित है इस लिये उन्हीं दिनों में आके चंगे

होओ पर विश्राम दिन में नहीं। १५ तब प्रभु ने उत्तर में उसे कहा कि अरे कपटी विश्राम दिन में क्या तुम्में से हर एक अपने अपने बैल अथवा गदहे को थान से नहीं खोलता और पानी पिलाने नहीं लेजाता?। १६ और क्या उचित न था कि इबराहीम की पुत्री होके यह स्त्री, जिसे यदि शैतान ने इन अठारह बरसों से बांध रक्खा है विश्राम दिन में इस बंधन से खोली जाय?। १७ और जब उसने ये बातें कहीं उसके सब बैरी लज्जित हुए और सारी मंडली उन सब भले कार्यों के लिये जो उसने किये थे आनन्दित हुई। १८ फेर उसने कहा कि ईश्वर के राज्य की उपमा किस्से है और मैं उसे किस्से उपमा देउं?। १९ वुह राई के तुल्य है जिसे एक पुरुष ने लेके अपनी बारी में बोया और वुह उगी और बड़ा पेड़ हुआ और आकाश के पंछियों ने उसकी डालियों पर बास किया। २० फेर उसने कहा कि मैं ईश्वर के राज्य को किस्से उपमा देउं?। २१ वुह खमीर की नाईं है जिसे एक स्त्री ने लेके तीन परिमाण पिसान में छिपाया जब लों सब खमीर होगया।

२२ फेर वुह नगर नगर और गांव गांव फिरताहुआ और उपदेश करताहुआ यिरूशालम की ओर चला जाता था। २३ तब किसी ने उसे कहा कि हे प्रभु क्या मुक्ति थोड़े पाते हैं?। २४ उसने उन्हें कहा कि सकेत द्वार में जाने को परिश्रम करो क्योंकि मैं तुम्हें सत्य

कहता हों कि बहुतेरे उस में से जाने चाहेंगे पर न सकेंगे। २५ जहां घर का स्वामी उठा और द्वार बंद किया तुम बाहर खड़े होके और यह कहिके द्वार खट खटाने लगोगे कि हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये तब वुह उत्तर देके तुम्हें कहेगा, मैं तुम्हें नहीं जानता कि तुम कहां के हो। २६ तब तुम कहने लगोगे कि हमने आपके आगे खाया पीया है और आपने हमारे मार्गों में उपदेश किया है। २७ तब वुह कहेगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो अरे कुकर्म्मियो मुझसे दूर होओ। २८ जब तुम इबराहीम और इसहाक और याकूब और सारे भविष्यद्वक्ता को ईश्वर के राज्य में देखोगे और तुम्हीं बाहर निकाले गये वहां रोना और दांत किचकिचाना होगा। २९ और वे पूर्ब और पच्छिम और उत्तर और दक्खिन से आवेंगे और ईश्वर के राज्य में बैठेंगे। ३० और देखो कि कितने पिछले हैं जो आगे होंगे और कितने अगले पीछे। ३१ उसी दिन फिरूसियों में से कई एक ने आके उसे कहा कि यहां से चलाजा क्योंकि हिरोद तुझे घात किया चाहता है। ३२ उसने उन्हें कहा कि जाके उस लोमड़ी से कहो कि देख मैं पिशाचों को दूर करताहों और आज और कल चंगा करताहों और तीसरे दिन सिद्ध होंगा। ३३ तिसपर भी अवश्य है कि मैं आज और कल और परसों फिरों क्योंकि हो नहीं सक्ता कि भविष्यद्वक्ता

यिरूशालम के बाहर घात किया जाय। ३४ हे यिरूशालम यिरूशालम जो भविष्यद्वक्तों को घात करती है और जो तुझ पास भेजेगये हैं उन्हें पथरवाती है कई बार मैं ने चाहा कि जिस रीति से कुक्कुटी अपने चिंगनें को डैनें के नीचे करती है तेरे पुत्रों को एकट्ठा करों परन्तु तुमने न चाहा। ३५ देखो तुम्हारे लिये तुम्हारा घर उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि तुम मुझे तबलों न देखोगे जबलों न कहोगे कि धन्य वुह जो परमेश्वर के नाम से आता है।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब वुह विश्राम दिन में प्रधान फिरूसियों में से एक के घर भोजन करने गया वे उसे अगोरने लगे। २ और वहां उसके आगे एक मनुष्य था जिसे जलंधर था। ३ तब यिशु व्यवस्था के ज्ञानियों और फिरूसियों से कहिके बोला, क्या विश्राम दिन में चंगा करना योग्य है?। ४ वे चुपके रहे तब उसने उसे लेके चंगा करके जाने दिया। ५ तब उन्हें फेरके कहने लगा कि तुम्में कौन है जिसका एक गदहा अथवा बैल गड़हे में गिरपड़े और वुह तुरन्त विश्राम दिन में उसे न निकाले?। ६ तब वे उसे उन बातों का प्रत्युत्तर न देसके।

७ और जब उसने नेंवतहरियों को देखा कि वे क्योंकर श्रेष्ठ आसनों को चुनते हैं उसने उन्हें एक दृष्टान्त कहा।

८ कि जब तू किसी के बियाह में बुलाया जाय श्रेष्ठ आसन पर मत बैठ ऐसा नहो कि उसने तुझ से अधिक प्रतिष्ठित मनुष्य को नेंवता दिया हो। ९ और जिसने उसको और तेरा नेंवता किया है वुह आके तुझे कहे कि यह आसन इस पुरुष को दे और तू लाज से नीचा आसन लेने लगे। १० परन्तु जब तेरा नेंवता किया जाय तो जाके सब नीचे आसन पर बैठ कि जब नेंवता दायक आवे तो तुझे कहे कि हे मित्र और भी ऊंचे पर जा तब तू अपने संग के बैठवैयों के आगे प्रतिष्ठा पावेगा। ११ क्योंकि जो कोई आप को बढ़ाता है घटाया जायगा और जो आप को नम्र करता है सो बढ़ाया जायगा। १२ तब उसने अपने नेंवता दायक से कहा कि जब तू भोजन अथवा बिआरी बनावे तो अपने मित्रों को और अपने भाई बंद और अपने कुटुम्बों को और धनमान परोसियों को मत बुला नहो कि वे भी फेर तेरा नेंवता करें और तेरा प्रतिफल होजाय। १३ परन्तु जब तू जेवनार करे तो कंगालों को टुंडों को, लंगड़ों को, अंधों को बुला। १४ और तेरा धन्यबाद होगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सक्ते और तू धर्म्मियों के फेर उठने में प्रतिफल पावेगा। १५ नेंवतहरियों में से एक ने यह बचन सुनके उसे कहा कि धन्य वुह जो ईश्वर के राज्य में भोजन करेगा। १६ तब उसने उसे कहा कि किसी मनुष्य ने बड़ी बिआरी बनाई और बहुतों को

नेंवता दिया। १७ और बियारी के समय अपने सेवक को भेजा कि नेंवतहरियों से कहे कि आओ क्योंकि सब कुछ सिद्ध है। १८ तब वे सब बनावट से कहने लगे पहिला बोला कि मैं ने कुछ भूमि मोल लिई है और मुझे जाके उसे देखना आवश्य है सो मुझे क्षमा कीजिये। १९ दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने जाता हों सो मुझे क्षमा कीजिये। २० तीसरे ने कहा, मैं ने बियाह किया है इसलिये आ नहीं सक्ता। २१ तब उस सेवक ने आके अपने प्रभु को ये बातें कहीं तब घर के स्वामी ने रिसियाके अपने सेवक को कहा कि नगर के मार्गों और गलियों में तुरन्त जा और कंगालों और टुंड़ों और लंगड़ों और अंधों को यहां लेआ। २२ फेर सेवक ने कहा, हे प्रभु आप की आज्ञा के समान किया गया और अब भी समाई है। २३ तब स्वामी ने उस सेवक से कहा कि सड़कों में और बाड़े की ओर जा और लाने के लिये उनके पीछे पड़ जिसतें मेरा घर भर जाय। २४ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि उन में से जिनको नेंवता किया गया था कोई मेरी बियारी चखने न पावेगा।

२५ अब बड़ी बड़ी मंडली उसके साथ चली जाती थीं तब उसने उनकी ओर फिर के उन्हें कहा। २६ यदि कोई मुझ पास आवे और अपने माता पिता और स्त्री और बालकों और भाइयों और बहिनों को हां अपने

प्राण का भी बैरी न होवे वुह मेरा शिष्य नहीं होसक्ता। २७ और जो कोई अपना क्रूस उठाये ज्जए मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरा शिष्य नहीं होसक्ता। २८ क्योंकि तुम्में कौन है जो एक गुम्मट बनाने को चाहे पहिले बैठ के उठान का लेखा नहीं करता कि हम उसे पूरा कर सक्ते हैं कि नहीं। २९ नहो कि वुह नेउं डालके उसे पूरा न करसक्ते और सब जो देखते हैं। ३० उसे यह कहिके चिढ़ाने लगें कि इस जन ने बनाना आरंभ किया परन्तु पूरा न करसका। ३१ अथवा कौनसा राजा दूसरे राजा से संग्राम करने चले तो पहिले बैठके बिचार नहीं करता कि जो बीस सहस्र लेके मेरे बिरोध आता है मैं दस सहस्र से उसका सामना करसकों। ३२ नहीं तो जब लों दूसरा बज्जत दूर हो वुह दूतों को भेज के मिलाप चाहे। ३३ सो इसी रीति से जो कोई तुम्में से अपना सब कुछ न छोड़े वुह मेरा शिष्य हो नहीं सक्ता। ३४ लोन अच्छा है परन्तु यदि लोन का स्वाद बिगड़ जाय तो किस्से स्वादित किया जायगा?। ३५ वुह न भूमि के न घूर के काम का है पर लोग उसे फेंक देते हैं जिस किसी के कान सुन्ने के लिये हों सो सुने।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१ तब सारे पटवारी और पापी सुन्ने के लिये उस पास आये। २ पर फिरूसी और अध्यापक कुड़कुड़ा के कहने लगे कि यह जन पापियों को ग्रहण करता है

ओर उनके संग भोजन करता है। ३ तब उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा। ४ कि तुम्में से कौन मनुष्य है जो सौ भेड़ रखताहो यदि वुह उन में से एक को खोवे तो क्या वुह निन्नानवेको बन में छोड़ कर जबलों उस खोईऊई को नहीं पाता उसे नहीं ढूंढ़ाकरता है? ५ और जब उसे पाता है आनन्द से अपने कंधे पर उठालेता है। ६ और घर में आके मित्रों और परोसियों को एकट्ठे बुलाता है और उन्हें कहता है कि मेरे संग आनन्द करो क्योंकि मैं ने अपनी खोईऊई भेड़ पाई है। ७ मैं तुम्हें कहताहों कि इसी रीति से स्वर्ग में एक पापी के कारण, जो पश्चात्ताप करता है निन्नानवे धर्मियों से, जिन्हें पश्चात्ताप का प्रयोजन नहीं अधिक आनन्द होगा।

८ अथवा कौन स्त्री है जो दस सूकी रखती हो यदि वुह एक को खोवे तो दीपक को बार के क्या वुह घर को नहीं झाड़ देती है और जबलों नहीं पाती यत्न से ढूंढ़ती फिरती है?। ९ और उसे पातेही मित्रों और परोसियों को बुलाके कहती है कि मेरे संग आनन्द करो क्योंकि मैंने खोई ऊई सूकी पाई है। १० मैं तुम्हें कहताहों इसी रीति से एक पापी के पश्चात्ताप करने से ईश्वर के दूतों को आनन्द है।

११ फेर उसने कहा कि किसी मनुष्य के दो बेटे थे। १२ उनमें से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता

संपत्ति में से मेरा भाग दीजिये तब उसने उन्हें उपजीवन बांट दिया। १३ थोड़े दिन बीते छुटका बेटा सबकुछ एकट्ठा करके दूरदेश को चल निकला और वहां कुमार्ग में अपनी संपत्ति नष्ट किई। १४ जब वुह सब कुछ उठाचुका उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वुह कंगाल होनेलगा। १५ तब वुह जाके उस देश के एक निवासी का सेवक बना जिसने उसे सूअर चराने को अपने खेतों में भेजा। १६ और उन छिलकों में से जिन्हें सूअर खाते थे अपने पेट भरने की लालसा रखता था और कोई उसे कुछ न देता था। १७ अन्त में चेत में आके उसने कहा कि मेरे पिता के कितने बनिहार हैं जिनको रोटी बचरहती है और मैं भूख से मरता हों। १८ मैं उठोंगा और अपने पिता पास जाऊंगा और उसे कहोंगा कि हे पिता मैं स्वर्ग का और आप का अपराधी हों। १९ और अब मैं आप का बेटा कहलाने को योग्य नहीं मुझे अपने बनिहारों में से एक के समान बनाइये। २० तब वुह उठके अपने पिता पास आया परन्तु जब वुह दूरही था तो उसके पिता ने उसे देखा और दयाल होके दौड़ा और उसके गले पर गिरके उसे चूमनेलगा। २१ बेटे ने उसे कहा कि हे पिता मैं ने स्वर्ग का और आप का अपराध किया है और अब इस योग्य नहीं कि आप का बेटा कहाओं। २२ तब पिता ने अपने सेवकों को कहा कि अच्छे से

अच्छे वस्त्र लाओ और इसे पहिनाओ और उसके हाथ में अंगूठी और पाओं में जूती पहिनाओ। २३ और वुह पलाहुआ बछवा इधर लाओ और मारो कि हम खावें और आनन्द करें। २४ क्योंकि मेरा यह बेटा मरगया था और फेर जीयाहै वुह खोगया था और मिलगयाहै सो वे आनन्द करने लगे। २५ अब उसका जेठा बेटा खेत में था और जेउं वह आया और घर के पास पहुंचा तो बाजा और नाच का शब्द सुना। २६ और सेवकों में से एक को बुलाके पूछा कि ये बातें क्या हैं?। २७ उसने उसे कहा कि तेरा भाई आया है और तेरे पिता ने पलाहुया बछवा मारा है इसलिये कि उसने उसे कुशल से पायाहै। २८ उसने रिसियाके भीतर जाने को न चाहा इस लिये उसके पिता ने बाहर निकलके उसे मनाया। २९ तब उसने उत्तर देके पिता से कहा कि देख मैं इतने बरस से आपकी सेवा करता हों और मैं ने कधी भी आपकी आज्ञा न टाली तथापि आपने मुझे एक मेम्ना भी कभी न दिया कि अपने मित्रों के संग आनन्द करता। ३० परन्तु जब आप का यह बेटा आया जिसने आप का उपजीवन वेश्याओं में नष्ट किया आपने उसके लिये पलाहुया बछवा माराहै। ३१ तब उसने उसे कहा कि बेटे तू सदा मेरे संग है और जो कुछ मेरा है तेरा है। ३२ पर आनन्द और मगन होना उचित था क्योंकि तेरा यह भाई मरगया

था और फिर के जीया और खोगया था फिर मिला है।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ उसने अपने शिष्यों से यह भी कहा कि एक धनमान मनुष्य था जिसका एक भंडारी था उसी पर उसके आगे दोष लगाया गया कि वुह उसकी संपत्ति नष्ट करता है। २ तब उसने उसे बुलाके कहा कि यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हों अपने भंडार का लेखा दे क्योंकि तू आगे को भंडारी न रहेगा। ३ तब भंडारी ने अपने मन में कहा कि मैं क्या करों? क्योंकि मेरा प्रभु भंडारपन मुझसे लेता है मैं खोद नहीं सक्ता भीख मांगने में मुझे लाज आती है मैं ने एक बात ठान रक्खी है। ४ जिसतें जब मैं भंडारपन से छोड़ायाजाउं तो वे अपने घरों में मुझे ग्रहण करें। ५ सो उसने अपने प्रभु के हर एक उधारनिकों को बुलाया और पहिले को कहा कि तू मेरे प्रभु का कितना धारता है?। ६ उसने कहा कि तेलके सौ नपुये उसने उसे कहा कि अपनी बही ले और तुरन्त बैठके पचास लिख। ७ फेर उसने दूसरे से कहा, तू कितना धारता है? उसने कहा कि गोहूं के सौ नपुय उसने उसे कहा कि अपनी बही ले और अस्सी लिख। ८ तब प्रभु ने उस अधर्मी भंडारी को सराहा इसलिये कि उसने चतुराई किई क्योंकि इस संसार के संतान अपने व्यवहार में प्रकाश के पुत्रों

से अधिक बुद्धिमान हैं। ९ और मैं तुम्हें कहता हों कि अधर्म धन से अपने लिये मित्रता करो कि जद तुम्हारी घटती होवे तो वे तुम्हें अनन्त निवास में ग्रहण करें। १० जो थोड़े में बिश्वास के योग्य है सो बज़त में भी विश्वास के योग्य है और जो थोड़े में बिश्वास के योग्य नहीं सो बज़त में भी बिश्वास के योग्य नहीं। ११ इसलिये जो तुम असत धन में सच्चे नहो तो सच्चा तुम्हें कौन सैांपेगा?। १२ और यदि तुम औरों की बस्तु में बिश्वास के अयोग्य होओ तो तुम्हारा तुम्हें कौन देगा?। १३ कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सक्ता क्योंकि वुह अथवा एक से बैर रक्खेगा और दूसरे से प्रीति अथवा वुह एक का पक्ष करेगा और दूसरे की निंदा तुम ईश्वर की और धन की सेवा नहीं कर सक्ते।

१४ लोभी फिरूसियों ने भी ये सब बातें सुन के उसे ठट्ठे में उड़ाया। १५ तब उसने उन्हें कहा, तुम वे हो जो अपने को मनुष्यों के आगे धर्मी दिखावते हो परन्तु ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है क्योंकि जो बस्तु मनुष्यों के आगे बज़त प्रिय है सो ईश्वर की दृष्टि में घिनित है। १६ व्यवस्था और भविष्यद्वाणी योहन लों थीं उसी समय से ईश्वर का राज्य प्रचारा जाता है और हर एक मनुष्य उस में पिलचा जाता है। १७ स्वर्ग और पृथिवी का टलजाना उस्से सहज है कि एक बिंदु व्यवस्था में से घट जाय। १८ जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे और दूसरी

को बियाहे सो व्यभिचार करता है और जो कोई त्यक्त को बियाहे सो उस्से व्यभिचार करता है।

१९ एक धनमान था जो बैजनी और झीना वस्त्र पहिनता और प्रतिदिन बिभव से रहता था। २० और लाजर नाम एक कंगाल था जो घाव से भरा हुआ उसके फाटक पर डाला हुआ था। २१ और धनमान के मंच के गिरे हुए चूरचार से खाने चाहता था और कुत्ते आ आके उसके घावों को चाटते थे। २२ ऐसा हुआ कि वुह कंगाल मर गया और दूतों ने लेजाके उसे इबराहीम की गोद में रक्खा, वुह धनमान भी मर गया और गाड़ागया। २३ और नरक में उसने अपनी आंखें उठाके आपको पीड़ा में पाया और दूर से इबराहीम को और लाजर को उसकी गोद में देखा। २४ तब वुह चिल्ला के बोला कि हे पिता इबराहीम मुझ पर दया कीजिये और लाजर को भेजिये कि अपनी अंगुली की पोर जल में डुबो के मेरी जीभ को ठंढी करे क्योंकि मैं इस लवर में पीढ़ित हों। २५ परन्तु इबराहीम ने कहा कि हे बेटे चेत कर कि तू ने अपने जीवन में अपने सुख की वस्तु पाई और लाजर ने नष्ट परन्तु अब वुह शांति पाता है और तू पीड़ित है। २६ और इन सभों से अधिक हमारे और तुम्हारे मध्य में एक बड़ा गड़हा है यहां लों कि वे जो इधर से तुमलों जाया चाहें सो नहीं जासक्ते न वे जो उधर हैं हमलों आसक्ते हैं। २७ तब

उसने कहा कि हे पिता मैं आप की बिनती करता हों कि उसे मेरे पिता के घर भेजिये। २८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं जिसतें वुह उन्हें चितावे नहो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आवें। २९ इबराहीम ने उसे कहा कि उन पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं वे उनकी सुनें। ३० तब वुह बोला नहीं हे पिता इबराहीम परन्तु जो मृतकों में से कोई उन पास जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे। ३१ तब उसने उसे कहा कि यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्तों की न सुने तो यद्यपि एक मृतकों में से उठे तथापि वे न मानेंगे।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

१ तब यिशु ने शिष्यों से कहा कि भांजी का न आना अनहोना है परन्तु जो भांजी डाले उस पर हाय है। २ उसके लिये अति भला होता यदि एक चक्की का पाट उसके गले में बांधाजाता और वुह समुद्र में डाला जाता कि वुह इन छोटों में से एक को ठोकर खिलावे। ३ अपने से चौकस रहो यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उसे दपट दे और यदि वुह पश्चात्ताप करे तो उसे क्षमा कर। ४ और यदि वुह दिन भर में सात बार तेरा अपराध करे और सात बार दिन भर में तेरी ओर फिरके कहे कि मैं पश्चात्ताप करता हों तो उसे क्षमा कर। ५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा कि हमारे बिश्वास को बढ़ाइये। ६ प्रभु ने कहा, यदि तुम्में एक सरसों के

तुल्य बिश्वास होता तो तुम इस गूलर पेड़ को कहते कि जड़ से उखड़ और समुद्र में लगजा तो वुह तुम्हारी मानता। ७ तुम्में कौन है जिसका एक सेवक हल जोत्ता अथवा ढोर चराताहो जोंहीं वुह खेत से आवे उसे कहे कि जा भोजन पर बैठ। ८ और उसे पहिले न कहे कि मेरे लिये बियारी बना और अपनी कमर बांध और मेरी सेवा कर जब लों मैं खा पीचुकों और पीछे तू खा और पी?। ९ क्या उसकी आज्ञा मान्ने से वुह उस दास को धन्य मानता है? मैं ऐसा नहीं बूझता। १० सो इसी रीति से तुम भी जब सारी आज्ञाओं को पालन करो तो कहो कि हम निष्फल सेवक हैं जो हमें करना उचित था सो हमने किया।

११ और ऐसा हुआ कि वुह यिरुशालम को जाते हुए सामरः और गालील के मध्य में से गया। १२ और किसी गांव में जाते उसे दस कोढ़ी मिले जो दूर खड़े हो। १३ चिल्लाके बोले कि हे यिशु गुरु हम पर दया कीजिये। १४ उसने देखके उन्हें कहा कि जाओ अपने तईं याजकों को दिखाओ और ऐसा हुआ कि जातेहुए पवित्र होगये। १५ और उनमें से जब एकने देखा कि मैं चंगा हुआ तो बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करताहुआ फिर आया। १६ और यिशु का धन्य मानतेहुए उसके चरण पर औंधे मुंह गिरा और वुह सामरी था। १७ तब यिशु ने उत्तर देके कहा, क्या

दसो चंगे न ऊए? फेर वे नव कहां?। १८ इस परदेशी को छोड़ ईश्वर की स्तुति करने को कोई न फिरा। १९ तब उसने उसे कहा कि उठके चलाजा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगाकिया है।

२० और जब फिरूसियों ने उसे पूछा कि ईश्वर का राज्य कब आवेगा? उसने उन्हें उत्तर देके कहा कि ईश्वर का राज्य बाट जोहने से नहीं आता। २१ वे न कहेंगे कि देखो यहां अथवा देखो वहां इसलिये कि देखो ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है। २२ और उसने शिष्यों से कहा कि वे दिन आवेंगे जब तुम चाहोगे कि मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक को देखो पर न देखोगे। २३ और वे तुम्हें कहेंगे कि देखो यहां अथवा देखो वहां उनके पीछे पीछे बाहर मत जाइयो। २४ क्योंकि जैसा बिजली स्वर्ग के एक अन्त से दूसरे लों चमकती है मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में ऐसा होगा। २५ परन्तु अवश्य है कि वुह पहिले बऊत दुख उठावे और इस पीढ़ी से त्यागाजाय। २६ और जैसा नूह के दिनों में ऊआ था तैसा मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। २७ नूह के जहाज पर चढ़ने लों वे खाते थे बियाह करते थे बियाह में दिये जाते थे और बाढ़ आया और उन सभों को नाश किया। २८ और जैसा लोग लूत के दिनों में खाते थे पीते थे मोललेते थे बेचते थे बोते थे घर बनाते

थे। २९ परन्तु जिसी दिन लूत सदूम से निकलगया स्वर्ग से आग और गंधक बरसा और सभों को नाश किया। ३० मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन में भी तैसा होगा। ३१ उसी दिन में जो कोटे पर होवे और सामग्री घर में रखताहो सो उसे लेने को न उतरे और उसी रीति से जो खेत में होवे सो न लौटे। ३२ लूत की पत्नी को स्मरण करो। ३३ जो अपना प्राण बचाने चाहेगा सो उसे गवांवेगा और जो अपना प्राण गवांवेगा सो उसे बचावेगा। ३४ मैं तुम्हें कहताहों कि उस रात में दो एक खाट पर होंगे एक पकड़ाजायगा दूसरा छूटजायगा। ३५ दो मिलके पीसतियां होंगीं एक पकड़ीजायगी और दूसरी छूटजायगी। ३६ दो खेत में होंगे एक पकड़ाजायगा और दूसरा छूटजायगा। ३७ तब उन्हों ने उसे पूछा कि कहां हे प्रभु? उसने उन्हें कहा कि जहां कहीं लोथ तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ जिसतें मनुष्य नित्य प्रार्थना करें और उस में न थके उसने उन्हें एक दृष्टान्त कहा। २ कि किसी नगर में एक न्यायी था जो न ईश्वर से डरता था न मनुष्य को मानता था। ३ और उसी नगर में एक रांड़ थी जो उस पास यह कहतीहुई आई कि मेरे बैरी से मेरा पलटा लीजिये। ४ और उसने कुछ देर लों न चाहा परन्तु पीछे उसने अपने मन में कहा कि यद्यपि मैं ईश्वर

से नहीं डरता और मनुष्य को नहीं मानता। ५ तथापि इसलिये कि यह रांड़ मुझे सताती है मैं उसका पलटा लेउंगा नहो कि वुह बारंबार आके मुझे अजीर्ण करे। ६ फेर प्रभु ने कहा कि सुनो उस अधर्मी न्यायी ने क्या कहा। ७ सो क्या ईश्वर अपने चुनेहुओं का, जो रात दिन उसकी दोहाई देते हैं, यद्यपि वुह उनकी अबेरलों सहे पलटा न लेगा?। ८ मैं तुम्हों से कहताहों कि वुह झटपट उनका पलटा लेगा तिसपरभी जब मनुष्य का पुत्र आवेगा क्या देश में वुह बिश्वास पावेगा?। ९ फेर उसने कितनों के लिये जो आप को धर्मी समझते थे और औरों की निन्दा करते थे यह दृष्टान्त कहा। १० दो मनुष्य अर्थात एक फिरूसी और एक पटवारी मन्दिर में प्रार्थना करने को गये। ११ फिरूसी ने अकेले खड़े होके यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्यमानताहों कि मैं और मनुष्यों के समान निचोरी अन्यायी परस्त्रीगामी अथवा इस पटवारी के समान नहीं हों। १२ अठवारे में दो बार ब्रत करता हों मैं अपनी सारी संपत्ति का दसवां भाग देताहों। १३ परन्तु पटवारी दूर खड़ा होके स्वर्ग की ओर आंख लों न उठाता था परन्तु अपनी छाती पीट पीट कहने लगा कि हे ईश्वर मुझ पातकी पर दया कर। १४ मैं तुम्हें कहता हों कि यह मनुष्य दूसरे से अति धर्मी ठहर के अपने घर गया क्योंकि हर एक जो

अपने के। बढ़ाता है घटाया जायगा और जो आप के। घटाता है से। बढ़ाया जायगा।

१५ फेर वे बालकों के। भी उस पास लाये जिसतें वुह उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने देख के उन्हें दपटा। १६ तब यिशु ने उन्हें बुला के कहा कि बालकों के। मुझ पास आने देओ और उन्हें मत रोको क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसोंही से है। १७ मैं तुम से सत्य कहता हों कि यदि कोई बालक के समान ईश्वर के राज्य के। ग्रहण न करे किसी रीति से उस में न पहुंचेगा।

१८ और किसी प्रधान ने यह कहिके उसे पूछा कि हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने के। मैं क्या करों?। १९ यिशु ने उसे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? ईश्वर के। छोड़ उत्तम कोई नहीं। २० त आज्ञा जानता है कि व्यभिचार मत कर हत्या मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपने माता पिता का आदर कर। २१ उसने कहा कि मैं ने लड़काई से इन बातों के। पालन किया है। २२ यिशु ने यह सुन के उसे कहा अब भी तुझे एक बात चाहिये अपना सब कुछ बेचडाल और कंगालों के। बांट दे और तू स्वर्ग पर धन पावेगा तब मेरे पीछे चला आ। २३ वुह यह सुन के अति उदास हुआ क्योंकि वुह बड़ा धनी था। २४ यिशु ने उसे अति उदास देख के कहा कि धनिकों के लिये ईश्वर के राज्य में पहुंचना कठिन है। २५ क्योंकि

सूई के छेद से ऊंट का जाना उस्से सहज है कि एक धनमान ईश्वर के राज्य में पहुंचे। २६ सुनवैयों ने कहा कि फेर कौन उद्वार पासक्ता है?। २७ तब उसने कहा कि जो जो बात मनुष्यों से अनहोनी हैं सो ईश्वर से सहज है। २८ तब पथर ने कहा, देखिये सब कुछ छोड़के हम आप के पीछे होलिये। २९ यिशु ने उत्तर दिया कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर अथवा माता पिता अथवा भाई अथवा स्त्री अथवा बालकों को ईश्वर के राज्य के हेतु छोड़ा हो। ३० सो इस लोक में कितना अधिक और परलोक में अनन्त जीवन पावेगा।

३१ तब यिशु ने उन बारहों को अलग लेके उन्हें कहा कि अब हम यिरुशालम को जाते हैं और मनुष्य के पुत्र के विषय में सारी बातें जो भविष्यद्वक्तों से लिखी गई हैं पूरी होंगी। ३२ क्योंकि वुह अन्यदेशियों को सौंपाजायगा और ठट्ठे में उड़ायाजायगा और वे उसकी दुर्दशा करेंगे और उस पर थूकेंगे। ३३ और कोड़े मारके उसे घात करेंगे और तीसरे दिन वुह फिर उठेगा। ३४ परन्तु उन्हों ने उन बातों को कुछ न समझा और यह वचन उनसे गुप्त रहा और उन्हों ने उन बातों को जो कही गईं थीं न जाना।

३५ जब वुह यिरीहो के पास आया तो एक अंधा मनुष्य मार्ग के लग बैठा भीख मांगता था। ३६ और

मंडली के जाने का शब्द सुन उसने पूछा कि क्या है?। ३७ वे उसे बोले कि यिशु नासरी चलाजाता है। ३८ तब वुह यह कहिके चिल्लाया कि हे दाऊद के पुत्र यिशु मुझ पर दया कीजिये। ३९ और जो आगे आगे जाते थे उन्हों ने उसे चुप कराने के लिये दपटा परन्तु वुह और भी अधिक चिल्लाया कि हे दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कीजिये। ४० तब यिशु ने ठहर के आज्ञा किई कि उसे मेरे पास लाओ और आतेही उसने उसे पूछा। ४१ कि तू क्या चाहता है, मैं तेरे लिये क्या करों? वुह बोला कि हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाओं। ४२ तब यिशु ने उसे कहा कि अपनी दृष्टि पा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है। ४३ और उसने तुरन्त अपनी दृष्टि पाई और ईश्वर की स्तुति करताहुआ उसके पीछे हो लिया और सारे लोगों ने देखके ईश्वर की स्तुति किई।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ जब वुह यिरीहो में होके निकलगया। २ तो जक्की नाम एक मनुष्य जो पटवारियों में प्रधान और धनी था। ३ उसने यिशु को देखने चाहा कि वुह कौन है परन्तु भीड़के कारण न सका क्योंकि वुह नाटा था। ४ तब वुह आगे दौड़ के उसे देखने को एक गूलर पेड़ पर चढ़गया क्योंकि उसे उधर से जानाथा। ५ जब यिशु उस स्थान में आया उसने ऊपर दृष्टि करके उसे

देखा और उसे कहा, जक्की शीघ्र उतर आ क्योंकि आज तेरे घर में रहना मुझे अवश्य है। ६ तब वुह तुरन्त उतरा और आनंद से उसे ग्रहण किया। ७ जब मंडली ने यह देखा तो कुड़कुड़ा के कहने लगी कि वुह एक पापी के घर में पाहुन होने जाता है। ८ परन्तु जक्की ने खड़ा होके प्रभु से कहा, कि हे प्रभु देखिये मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देताहों और यदि मैं ने किसी से छल करके कुछ लिया है तो चौगुना फेर देताहों। ९ तब यिशु ने उसके विषय में कहा कि आज इस घर में मुक्ति आई इस लिये कि यह भी इबराहीम का पुत्र है। १० क्योंकि मनुष्य का पुत्र आया है कि भटकेहुओं को ढूंढ़े और बचावे।

११ जब लोग सुन रहे थे इस लिये कि वुह यिरुशालम के निकट था और इस कारण कि वे समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त दिखाई देगा उसने यह दृष्टान्त भी कहा। १२ कि कोई कुलीन जन अपने लिये राज्य लेने और फिर आने को परदेश गया। १३ तब उसने अपने दस सेवकों को बुला के उन्हें दस मोहर सौंपे और उन्हें कहा कि मेरे आनेलों लेन देन करो। १४ परन्तु उसकी प्रजा उस्से बैर रखती थी कि वुह हम पर राज्य करे सो उन्हों ने उसके पीछे संदेश कहला भेजा कि हम नहीं चाहते। १५ जब वुह राज्य लेके फिर आया तो जिन सेवकों को उसने रोकड़ दिया

था उन्हें बुलाया जिसतें जाने कि हर एक ने लेन देन में क्या कमाया। १६ तब पहिले ने आके कहा, हे प्रभु आप के मोहर ने दस मोहर कमाये। १७ उसने उसे कहा कि धन्य हे उत्तम सेवक इस कारण कि तू बहुत थोड़े में सच्चा निकला तू दस नगर पर प्रधान हो। १८ और दूसरे ने आके कहा कि हे प्रभु आप के मोहर ने पांच मोहर कमाये। १९ उसने उसे भी कहा कि तू भी पांच नगर पर प्रभुता कर। २० और तीसरे ने आके कहा, हे प्रभु अपना मोहर देखिये जो मैं ने अंगोछे में बांध रक्खा है। २१ क्योंकि मैं आप से डरा इस कारण कि आप कठोर स्वामी हैं जिसे आपने नहीं धरा था सो आप लेते हैं और जो आपने नहीं बोया है सो लवते हैं। २२ तब उसने उसे कहा अरे दुष्ट दास तेरेही मुंह से मैं तेरा न्याय करोंगा तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य था जो मैं ने नहीं धरा सो लेताहों और जो मैं ने नहीं बोया सो लवताहों। २३ फिर तू ने मेरी रोकड़ कोठी में क्यों न सोंपी कि आके अपना बिआज समेत लेता? २४ तब उसने समीपियों से कहा कि उस्से मोहर लेलो और जिस पास दस मोहर हैं उसे देओ। २५ (तब उन्हों ने उसे कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं)। २६ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि जिस पास है उसे दिया जायगा और जिस पास कुछ नहीं उस्से वुह भी जो वुह रखता है लिया जायगा। २७ परन्तु जो

मेरे राज्य को नहीं चाहते थे उन बैरियों को मुझ पास ले आओ और मेरे आगे उन्हें घात करो। २८ और जब वुह यों कहिचुका तो वुह यिरूशालम की ओर जाने लगा।

२९ जब वुह बैतफगा और बैतनी के पास जलपाई के पहाड़ लों, पहुंचा तब उसने अपने दो शिष्यों से यह कहला भेजा। ३० कि साम्ने के गांव में जाओ उसे में पहुंचतेही तुम एक बछेड़ा जिस पर अबलों कोई न चढ़ा बंधा हुआ पाओगे उसे खोल के लेआओ। ३१ यदि कोई तुम्हें पूछे कि उसे क्यों खोलते हो ? तो कहियो कि प्रभु को इसका आवश्यक है। ३२ और भेजेहुओं ने जाके जैसा उसने उन्हें कहा था तैसा पाया। ३३ और ज्यों वे उस बछेड़े को खोलरहे थे उसके स्वामियों ने उन्हें कहा कि तुम इस बछेड़े को क्यों खोलते हो ? ।३४ वे बोले कि प्रभु को इसका आवश्यक है। ३५ और वे उसे यिशु पास लाये और अपने बस्त्रों को उस बछेड़े पर रखके यिशु को उस पर चढ़ाया। ३६ और उसके जाते जाते उन्हों ने अपने बस्त्रों को मार्ग में उसके आगे बिछाया। ३७ और जब वुह जलपाई के पहाड़ के उतारलों पहुंचा तो उसके शिष्यों की सारी मंडली उन सब आश्चर्य कर्म के लिये जो उन्हों ने देखाथा आनन्दित होके बड़े शब्द से यह कहिके ईश्वर की स्तुति करने लगी। ३८ कि राजा को धन्य जो परमेश्वर के नाम से

आता है स्वर्ग पर कुशल और अति ऊंचे स्वर्ग पर महात्म्य। ३९ तब मंडली में से कितने फिरूसियों ने उसे कहा कि हे गुरु अपने शिष्यों को दपटिये। ४० उसने उत्तर दिया कि मैं तुम्हें कहताहों कि यदि ये चुप होवें तो पथर तुरन्त पुकार उठेंगे। ४१ और जब वुह समीप आया उसने उस नगर को देख के उस पर रोके कहा। ४२ हाय कि तू अपने इसी दिनों अपने कुशल की बात को जानती परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिपी हैं। ४३ क्योंकि वे दिन तुझ पर आवेंगे जिसमें तेरे बैरी तेरे आस पास खाई खोदेंगे और तुझे घेर लेंगे और हर एक ओर से तुझे रोकेंगे। ४४ और तुझे तेरे बालकों के संग भूमि से मिला देंगे और तुझ में एक पत्थर दूसरे पर न छोड़ेंगे इस कारण कि तूने अपनी कृपा के समय को न बूझा।

४५ तब वुह मंदिर में जाके उस में के लेन देन करवैयों को यह कहि के बाहर निकालने लगा। ४६ यह लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है परन्तु तुम ने उसे चोरों की मांद बनाई। ४७ और वुह मंदिर में प्रति दिन उपदेश करताथा परन्तु प्रधान याजकों और अध्यापकों और लोगों के प्रधानों ने उसे बधन करने की चिंता किई। ४८ परन्तु उस पर कुछ करने का गों न पाते थे क्योंकि सब लोग उसकी सुने को लवलीन थे।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ ग्रीर उन में से एक दिन जब वुह मंदिर में लोगों को सिखावता ग्रीर मंगल समाचार प्रचारता था प्रधान याजक ग्रीर ग्रध्यापक प्राचीनों के संग चढ़ि ग्राये। २ ग्रीर उसे यह कहिके पूछा कि हमें कह कि तू किस पराक्रम से ये कार्य करता है? ग्रथवा वुह कौन है जिसने तुझे यह पराक्रम दिया है? ३ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हों, मुझे उत्तर देउ? ४ योहन का स्नान स्वर्ग से था ग्रथवा मनुष्यों से? ५ तब वे ग्रपने मन में बिचारने लगे, यदि हम कहें स्वर्ग से तो वुह कहेगा फेर तुमने उसकी प्रतीति क्यों न किई? ६ परन्तु यदि कहे कि मनुष्यों से तो सब लोग हमें पथरावेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन भविष्यद्वक्ता था। ७ तब उन्हों ने उत्तर दिया कि हम नहीं कहि सक्ते कि कहां से। ८ फेर यिशु ने उन्हें कहा, मैं भी तुम्हें न कहोंगा कि मैं किस पराक्रम से यह कार्य करता हों।

९ तब उसने लोगों से यह दृष्टान्त कहा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई ग्रीर उसे मालियों को सौंप दिया ग्रीर बहुत दिन के लिये परदेश को चला गया। १० तब ऋतु पर उसने एक सेवक को मालियों के पास भेजा कि दाख की बारी का फल उनसे लेवे परन्तु उन्हों ने उसे मार के छूछे हाथ फेर दिया। ११ फेर

उसने दूसरा सेवक भेजा जिसे उन्हों ने मारा और दुर्दशा करके छूछे फेर दिया। १२ फेर उसने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे भी घायल करके बाहर किया। १३ तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा कि मैं क्या करों? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजोंगा क्या जाने वे उसे देखके आदर करें। १४ परन्तु जब मालियों ने उसे देखा तो आपुस में विचारने लगे कि यह अधिकारी है आओ इसे मारडालें जिसतें अधिकार हमारा होजाय। १५ और उसे दाख की बारी से बाहर निकाल के घात किया फेर दाख की बारी का स्वामी उन्हें क्या करेगा? १६ वुह आवेगा और उन मालियों को नाश करेगा और दाख की बारी औरों को सौंपेगा उन्हों ने सुन के कहा कि ईश्वर न करे। १७ तब उसने उन्हें देख के कहा तो यह क्या लिखा है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ। १८ जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा उसे घाव लगेगा परन्तु जिस पर वुह गिरेगा उसे पीस डालेगा। १९ तब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उस पर हाथ डालने चाहा परन्तु वे लोगों से डरे क्योंकि उन्हों ने बूझ लिया कि उसने यह दृष्टान्त उनके विषय में कहा था।

२० फिर वे उसे देखरहे थे और भेदीयों को भेजा कि अपने को छल से धर्मी बनावें और उसे बातों में बझावें जिसतें वे उसे अध्यक्ष के पराक्रम और वश में

सैांप देवें। २१ फेर उन्हों ने उसे यह कहि के पूछा कि, "हे गुरु हम जानते हैं कि आप ठीक ठीक कहते हैं और सिखाते हैं और किसी की प्रगट पर दृष्टि नहीं करते परन्तु सच्चाई से ईश्वर का मार्ग सिखाते हैं"। २२ क्या कैसर के कर देना हमें उचित है अथवा नहीं? २३ उसने उनका कपट जान के उनसे कहा कि तुम लोग क्यों मेरी परीक्षा करते हो? २४ एक सूकी मुझे दिखाओ उस पर किसकी मूर्त्ति और किसका छाप है? वे उत्तर देके बोले कि कैसर की। २५ तब उसने उन्हें कहा कि कैसर की वस्तु कैसर को और ईश्वर की वस्तु ईश्वर को देओ। २६ और वे लोगों के आगे उसे बातों में न बझासके और उसके उत्तर से अचंभित होके चुप रहगये।

२७ तब कई सादुकी जो जीउठना मुकरते हैं पास आये और यह कहिके उसे पूछा। २८ कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी मनुष्य का भाई पत्नी को छोड़के निर्बंश मरजाय तो उसका भाई उसकी पत्नी को लेवे और अपने भाई के लिये बंश चलावे। २९ अब सात भाई थे और पहिला पत्नी करके निर्बंश मरगया। ३० और दूसरे ने उसे अपनी पत्नी किई वुह भी निर्बंश मरगया। ३१ और तीसरेने उसे लिया और इसी रीति से सातोंमें और वे निर्बंश मरगये। ३२ सबसे पीछे वुह स्त्री भी मरगई।

३३ सो जीउठने में वुह उनमें से किसकी पत्नी होगी क्योंकि वुह सातों की पत्नी थी। ३४ तब यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि इस जगतके सन्तान बियाह करते हैं और बियाहे जाते हैं। ३५ परन्तु जो उस जगत के और मृत्यु से फेर उठने के योग्य जानेजायंगे सो न बियाह करते हैं न बियाह में दियेजाते हैं। ३६ क्योंकि वे फेर मर नहीं सक्ते इसलिये कि वे दूतों के समान और जीउठने के बालक होकर ईश्वर के बालक हैं। ३७ अब मृतक के जीउठने के विषय में मूसाने भी झाड़ी पर दिखाया जब उसने प्रभु को इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर कहा। ३८ क्योंकि वुह मृतकों का ईश्वर नहीं परन्तु जीवतों का इस लिये कि सब उसके लिये जीवते हैं। ३९ तब कई अध्यापकों ने उत्तर देके उसे कहा कि हे गुरु आपने अच्छा कहा। ४० और उसके पीछे उन्हों ने उसे पूछने को हियाव न किया। ४१ और उसने उन्हें कहा, वे क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? ४२ और दाऊद आपही भजन की पुस्तक में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा तू मेरे दहिने हाथ बैठ। ४३ जबलों मैं तेरे बैरियों को तेरे चरण की पीढ़ी करों। ४४ सो दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फेर वुह उसका पुत्र क्योंकर है?।

४५ तब सारे लोगों के सुन्ने में उसने अपने शिष्यों से

कहा। ४६ अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे लंबे बस्त्र में फिरने चाहते हैं और हाट में नमस्कार और मंडलियों में श्रेष्ठ आसन जेवनार में प्रधान स्थान से प्रीति रखते हैं। ४७ वे रांड़ों के घरों को भक्षण करते हैं और दिखाने के लिये प्रार्थना करते हैं उन पर अति बड़ा दंड होगा।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

१ तब उसने आंख उठाके देखा कि धनी लोग भंडार में अपना दान डालते हैं। २ और उसने एक कंगाल रांड़ को भी उस में दो अद्धियां डालते देखा। ३ तब उसने कहा कि मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि इस कंगाल रांड़ ने उन सभों से अधिक डाला। ४ क्योंकि इन सभों ने ईश्वर की भेंट के लिये अपने धन की अधिकाई से डाला परन्तु अपनी कंगालपन से उसने अपनी सारी जीविका डाली।

५ और जब मंदिर के बिषय में कितने कहते थे कि यह कैसे सुन्दर पत्थर और दान से सिंगार किया गया है उसने कहा। ६ वे दिन आवेंगे कि जो बस्तें तुम देखते हो सो ऐसी गिराई जायंगी कि पत्थर पत्थर पर न छूटेगा। ७ तब उन्हों ने उसे यह कहिके पूछा कि हे गुरु यह सब कब होगा? और इन सभों के होने का क्या चिन्ह होगा?। ८ उसने कहा सैंचेत रहो कि तुम भरमाये न जाओ क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से

आके कहेंगे कि मैं हों, और समय आता है सो उनके पीछे मत जाइयो। ९ परन्तु जब तुम लोग संग्राम और झल्लर की बातें सुनो मत डरियो क्योंकि पहिले इन सभों का होना अवश्य है पर अभी अंत नहीं। १० फेर उसने उन्हें कहा कि लोग पर लोग और राज्य पर राज्य चढेंगे। ११ और अनेक स्थान में बड़े बड़े भूंईडोल आवेंगे और मरी और अकाल पड़ेंगे और भयंकर दर्शन और बड़े बड़े चिक्क स्वर्ग से होंगे। १२ परन्तु इन बातों से आगे वे तुम पर हाथ डालेंगे और सता के मंडलियों में और बंदी गृह में सौंपकर राजा और अध्यक्षों के आगे मेरे नाम के लिये ले जायेंगे। १३ और यह तुम्हारे साक्षी के लिये रहेगा। १४ इस लिये अपने मन में ठहरा रक्खो कि उत्तर देने को हम आगे से चिन्ता न करेंगे। १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा मुंह और बुद्धि देउंगा जो तुम्हारे सारे बैरी न उत्तर दे सकेंगे न साम्ना कर सकेंगे। १६ और माता पिता और भाई बंदों से और मित्रों से पकड़वाये जाओगे और तुम्सें से कितनों को घात करवावेंगें। १७ और मेरे नाम के लिये सब तुम से बैर करंगे। १८ परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल नष्ट न होगा। १९ अपने संतोष से अपने प्राण को लिये रहो। २० और जब तुम लोग यिरुशालम को सेनाओं से घेराहुआ देखो तब जानो कि उसका उजार होना आपहुंचा है। २१ तब जो

यिहूदियः में हों सो पहाड़ों को भागें और जो उसके मध्य में हों सो निकल जायें और जो बाहर हों सो भीतर न आवें। २२ क्योंकि ये पलटा लेने के दिन और सारे लिखेऊओं के पूरा होने का समय है। २३ परन्तु हाय उन पर जो उन्हीं दिनों में गर्भिणी होंगी और उन पर जो दूध पिलातियां होंगी क्योंकि देश पर बड़ी विपत्ति और इन लोगों पर कोप होगा। २४ और वे तलवार से मारे जायेंगे और सारे जातिगणों में बंधुए होंगे और यिरुशालम अन्यदेशियों से लताड़ा जायगा जबलों अन्यदेशियों का समय पूरा न होवे। २५ और सूर्य में और चंद्रमा में और तारों में चिन्ह होंगे और पृथिवी में जातिगणों पर क्लेश के संग घबराहट होगी समुद्र और लहरों का महा शब्द होगा। २६ मारे डरके और उन बातों की जो भूमि पर आती हैं बाट जोहने से मनुष्यों के मन घट जायेंगे क्योंकि स्वर्ग की दृढ़ता हिल जायेंगी। २७ और तब वे मनुष्य के पुत्र को मेंघपर महा तेज और पराक्रम से आते देखेंगे। २८ और जब ये बातें होने लगें तो सिर उठाके ऊपर देखो क्योंकि तुम्हारा उद्धार आपऊंचा है।

२९ और उसने उन्हें एक दृष्टांत कहा कि गूलर के पेड़ और सारे पेड़ों को देखो। ३० जब उनको कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखके आपही जानते हो कि तपन का दिन अब निकट है। ३१ सो इसी रीति

से जब तुम इन बातों को होते देखो तो जानो कि ईश्वर का राज्य पहुंचा है। ३२ मैं तुम से सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी बीत न जायगी जबलों सब पूरा न होलें। ३३ स्वर्ग और पृथिवी मिट जायेंगी परन्तु मेरे बचन न मिटेंगे। ३४ और अपने से चौकस रहो न होवे कि तुम्हारे मन किसी सन्तुष्टता और मद्यपने से और इस जीवन की चिंता से उभर जायें और वुह दिन तुम पर अचानक आजाय। ३५ क्योंकि वुह फंदे की नाईं पृथिवी के सारे बासियों पर आजायगी। ३६ इस लिये चौकस रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम उन सभों से जो होनहार है बचने के और मनुष्य के पुत्र के सन्मुख खड़े होने के योग्य ठहरो। ३७ और दिन को वुह मंदिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाता था और उस पहाड़ पर जो जलपाई का कहावता है रहता था। ३८ और तड़के सब लोग उसकी सुन्ने को मन्दिर में उस पास आते थे।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ अब अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो पारजाना कहावता है आपहुंचा। २ और प्रधान याजक और अध्यापक सोच में थे कि उसे किस रीति से घात करें पर वे लोगों से डरते थे। ३ तब उबारह में गिने हुए यिहूदा इस्करियती में शैतान पैठा। ४ और उसने जाके प्रधान याजकों और सेनापतिन से बातचीत किई

कि वुह उसे किस रीति से उनके हाथ में सैांप देवे। ५ तब वे आनंदित हुए और उसे रोकड़ देने को ठहराया। ६ और उसने बाचा दिई और से निराले में उसे उनके हाथ में सैांपने को अवसर ढूंढ़ता था।

७ तब अखमीरी रोटी का दिन, जिसमें पारजाना मारने का आवश्यक था आपहुंचा। ८ और उसने पथर और योहन को, यह कहिके भेजा कि जाके हमारे खाने के लिये पारजाना सिद्ध करो। ९ उन्हों ने उसे कहा कि हम उसे कहां सिद्ध करें? १० उसने उन्हें कहा कि देखो जब तुम नगर में पहुंचोगे तो जल का घड़ा उठाए हुए वहां तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जिस घर में वुह जाय उसके पीछे पीछे चले जाइयो। ११ और उस घर के स्वामी से कहियो कि गुरु तुझे कहता है कि वुह पाहुन शाला, जहां मैं अपने शिष्यों के संग पारजाना खाऊं कहां है? १२ तब वुह तुम्हें एक बड़ी उपरौटी कोठरी सवांरी हुई दिखावेगा वहां सिद्ध करो। १३ और उन्हों ने जाके उसके कहने के समान पाया और पारजाना सिद्ध किया। १४ और जब घड़ी पहुंची तो वुह बारह प्रेरितों को, अपने संग लेके जाबैठा। १५ और उसने उन्हें कहा कि मैं ने बड़ी लालसा से चाहा कि कष्ट पाने से आगे यह पारजाना तुम्हारे संग खाऊं। १६ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि मैं उसे फेर कधी न खाऊंगा जबलों वुह ईश्वर के राज्य

में पूरा न होवे। १७ तब उसने कटोरा लिया और धन्यमान के कहा कि इसे लेओ और आपुस में बांटो। १८ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों कि जबलों ईश्वर का राज्य न आवे मैं दाख का रस न पीओंगा। १९ फेर उसने रोटी लिई और धन्यमान के तोड़ी और उन्हें देके कहा कि यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया जाता है। २० मेरे स्मरण के लिये ऐसा करो इसी रीति से बिआरी के पीछे कटोरा भी देके कहा कि यह कटोरा मेरे लोहू का नया नियम है जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है। २१ परन्तु देखो मेरे पकड़वाने वाले का हाथ मेरे संग मंच पर है। २२ और ठीक मनुष्य का पुत्र ठहराये गये के समान जाता है परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस्से वुह पकड़वाया जाय। २३ तब वे आपुस में पूछने लगे कि हम्में यह कर्म्म कौन करेगा।

२४ और उनमें यह बिबाद भी हुआ कि हम्में कौन सब से बड़ा जाना जायगा। २५ तब उसने उन्हें कहा कि अन्यदेशियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और वे जो उन पर आज्ञाकारी हैं उपकारी कहावते हैं। २६ पर तुम ऐसे मत होओ परन्तु तुम्में जो सब से बड़ा है सो छोटे के समान और वुह जो प्रधान है सेवक के तुल्य। २७ क्योंकि कौन बड़ा है जो भोजन पर बैठता है अथवा जो सेवा करता है? क्या वुह नहीं जो बैठता है? परन्तु मैं तुम्में सेवक के समान हों। २८ तम वे

हो जो मेरी परीक्षा में बने रहे। २९ और जैसा मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा मैं तुम्हारे लिये ठहराता हों। ३० जिसतें तुम मेरे राज्य में मेरे मंच पर खाओ और पीओ और सिंहासनों पर बैठ के इसराईल की बारह गोष्ठियों का न्याय करो। ३१ और प्रभु ने कहा शिमोन हे शिमोन देख शैतान तुझे गोहूं की नाईं फटकने चाहता है। ३२ परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है जिसतें तेरा बिश्वास न टले और जब तू फिराया जाय तो अपने भाइयों को दृढ़ कर। ३३ तब उसने उसे कहा हे प्रभु मैं आपके संग बंदिगृह और मृत्यु में जाने को लैस हों। ३४ उसने कहा कि हे पथर मैं तुझे कहता हों कि आज कुक्कुट न बोलेगा जबलों मुझे जान्ने से तू तीनवार न मुकरे। ३५ फिर उसने उन्हें कहा कि जब मैं ने तुम्हें बिना बटुआ और झोला और जूता भेजा था क्या तुम्हें किसी वस्तु की घटती ऊई? वे बोले कि नहीं। ३६ तब उसने उन्हें कहा परन्तु अब जिस पास डोंड़ा और झोला हो सो उसे लेवे और जिस पास तलवार न हो अपना वस्त्र बेच के एक मोललेे। ३७ क्योंकि मैं तुम्हें कहता हों अवश्य है कि जो मेरे बिषय में लिखा है सो पूरा होवे कि वुह अपराधियों में गिना गया वे क्योंकि मेरे बिषय की बातों का अंत्य है। ३८ तब वे बोले कि हे प्रभु देखिये यहां दो तलवार हैं उसने उन्हें कहा कि बस है।

३९ फेर वुह बाहर निकल के अपने व्यवहार के समान जलपाई पहाड़ पर गया और उसके शिष्य भी उसके पीछे होलिये। ४० और वहां पहुंच के उसने उन्हें कहा कि प्रार्थना करो जिसतें परीक्षा में न पड़ो। ४१ फेर उसने एक तीर भर के प्रमाण दूर जाके घुटना टेक के प्रार्थना किई। ४२ कि हे पिता, यदि तेरी इच्छा होय तो इस कटोरे को मुझसे टलादे तिस पर भी मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी होवे। ४३ तब स्वर्ग से एक दूत ने दिखाई देके उसे बल दिया। ४४ और पीड़ा में होके उसने अधिक ध्यान से प्रार्थना किई और उसका पसीना ऐसा बहा जैसा लोहू के बड़े बड़े बूंद भूमि पर गिरते हैं। ४५ और वुह प्रार्थना से उठके अपने शिष्य पास आया और शोक के मारे उन्हें सोते पाया। ४६ तब उसने उन्हें कहा कि क्यों सोते हो? उठो और प्रार्थना करो न हो कि परीक्षा में पड़ो।

४७ और जब वुह कहि रहा था एक मंडली दिखाई दिई और उन बारह में से एक जो यिहूदा कहावता था उनके आगे आगे जाता था वही यिशु का चूमा लेने को पास आया। ४८ परन्तु यिशु ने उसे कहा कि हे यिहूदा तू मनुष्य के पुत्र को चूमा से पकड़वाता है? ४९ अब उसके साथियों ने जो कुछ कि होने पर था देखा तो बोले कि हे प्रभु हम तलवार चलावें। ५० और उन में से एक ने प्रधान याजक के सेवक पर चलाया

ग्रौर उसका दहिना कान उड़ा दिया। ५१ तब यिशु ने उत्तर देके कहा कि यहीं लों बस करो ग्रौर उसने उसके कान को छूग्रा ग्रौर उसे चंगा किया। ५२ तब यिशु ने प्रधान याजकों ग्रौर मंदिर के सेनापतिन ग्रौर प्राचीनों को, जो उस पास ग्राए थे, कहा, कि जैसे चोर पकड़ने को तुम लोग तलवार ग्रौर लाठियां लेके निकले हो? ५३ जब मैं प्रतिदिन मंदिर में तुम्हारे संग रहता था तुम ने मुझ पर हाथ न बढ़ाये परन्तु यह तुम्हारी घड़ी ग्रौर ग्रंधकार का पराक्रम है। ५४ तब उन्हों ने उसे पकड़के ग्रागे करलिया ग्रौर प्रधान याजक के घर में लाये।

५५ ग्रौर पथर दूर से पीछे पीछे चलागया। ग्रौर जब उन्हों ने घर के बीच ग्राग सुलगई ग्रौर एकट्ठे बैठे तो पथर भी उनमें बैठ गया। ५६ तब एक दासी ने उसे ग्राग के लग बैठे देखा ग्रौर ध्यान से उस पर दृष्टि करके कहा कि यह मनुष्य भी उसके संग था। ५७ तब वुह यह कहिके मुकर गया कि, हे स्त्री मैं उसे नहीं जानता। ५८ ग्रौर तनिक पीछे दूसरे ने उसे देखा ग्रौर कहा कि, तू भी उनमें से है पथर ने कहा कि हे मनुष्य मैं नहीं हों। ५९ ग्रौर घड़ी एक बीते ग्रौर एक ने निश्चय से कहा कि सचमुच यह भी उसके संग था क्योंकि यह गालीली है। ६० तब पथर ने कहा कि हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है ग्रौर यों

कहतेही तत्काल कुक्कुट बोला। ६१ तब प्रभु ने घुम के पथर को देखा और पथर को प्रभु का वचन चेत आया कि उसने उसे कहा था कि कुक्कुट के बोलने से आगे तू तीन बार मुझे मुकर जायगा। ६२ तब पथर बाहर गया और बिलख बिलख के रोया।

६३ और जिन मनुष्यों ने यिशु को पकड़ा था उन्हों ने उसे ठट्ठे में उड़ाया और मारा। ६४ और उसकी आंखों में पट्टी बांध के उसके मुंह पर थपेड़ा मारा और यह कहिके उसे पूछा कि बता कौन तुझे थपेड़ा मारता है? ६५ अरु और बहुतेरोंने उसके बिरोध में निन्दित वचन कहा।

६६ और दिन निकलतेही लोगों के प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक एकट्ठे आये और उसे अपनी सभा में लेजाके बोले। ६७ कि हम से कह क्या तू मसीह है? उसने उन्हें कहा कि यदि मैं तुम्हें कहों तो प्रतीति न करोगे। ६८ और यदि मैं पूछों भी तो उत्तर न देओगे और न छोड़ोगे। ६९ आगे को मनुष्य का पुत्र ईश्वर के पराक्रम की दहिनी ओर बैठेगा। ७० तब उन सभों ने कहा कि तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है? उसने उन्हें कहा कि तुम ठीक कहते हो। ७१ फेर उन्हों ने कहा अब हमें और साक्षी का क्या प्रयोजन है? क्योंकि हम सभों ने आपही उसी के मुंह से सुना है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब सारी मंडली उठके यिशु को पिलात पास ले गई। २ और यह कहिके उस पर दोष देने लगी कि हमने इसे अपने तईं मसीह राजा कहते और कैसर को कर देने से वर्जते और लोगों को उभाड़ते हुए पाया है। ३ तब पिलात ने यह कहिके उसे पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है? उसने उत्तर देके कहा कि आप ठीक कहते हैं। ४ तब पिलात ने प्रधान याजकों और लोगों से कहा कि मैं इस मनुष्य पर कुछ दोष नहीं पाता। ५ परन्तु उन्हों ने अधिक बखेड़ा करके कहा कि वुह गालील से लेके यहां लों सारे यिहूदियः में उपदेश करके लोगों को उस्काता है। ६ जब पिलात ने गालील का सुना तो पूछा क्या वुह गालीली है? ७ और उसे हिरोद की प्रजामें से जान के उसने उसे हिरोद पास, जो तब यिरूशालम में था, भेजा।

८ और यिशु को देखने से हिरोदीय बहुत आनन्द हुआ क्योंकि वुह बहुत दिन से उसे देखने चाहता था इस लिये कि उसने उसके बिषय में बहुत कुछ सुना था और चाहता था कि उसका कोई आश्चर्य कर्म देखे। ९ इस लिये उसने उसे बहुत कुछ पूछा परन्तु यिशु ने उसे कुछ उत्तर न दिया। १० और प्रधान याजक और अध्यापक, जो वहां थे उभड़ उभड़ के उस पर दोष लगाने लगे। ११ परन्तु हिरोद और उसके योद्धाओं

ने उसकी निंदा किई और ठट्ठा किया और उसे भड़कीला बस्त्र पहिना के पिलात पास फेर भेजा। १२ और उसी दिन पिलात और हिरोदी ने आपुस में मिलाप किया क्योंकि आगे उन में बैर था।

१३ और जब पिलात ने प्रधान याजकों और बड़ों को और लोगों को एकट्ठे बुलाया। १४ उसने उन्हें कहा कि तुम इस मनुष्य को यह कहते हुए मेरे पास लाये हो कि लोगों को भड़काता है और देखो मैं ने तुम्हारे आगे उसे जांचा और उन दोषों के बिषय में, कि जो तुम ने इस मनुष्य पर लगाये कुछ न पाया। १५ और न हिरोद ने, क्योंकि मैं ने तुम्हें उस पास भेजा और देखो उस पर मार डालने के योग्य कुछ न ठहरा। १६ सो उसे ताड़ना करके छोड़ देता हों। १७ और अवश्य था कि वुह पर्ब्ब में उनके लिये एक को छोड़ देवे। १८ तब सब के सब एकट्ठे चिल्लाए कि इसे उठा डालिये और बारब्बा को हमारे लिये छोड़ दीजिये। १९ (वुह किसी दंगे के कारण, जो नगर में किया था और हत्या के लिये बंदीगृह में डाला गया था)। २० इस लिये यिशु के छोड़ने की इच्छा रख के पिलात उन से फेर बोला। २१ परन्तु वे चिल्ला उठे कि उसे क्रूस पर मारिये क्रूस पर मारिये। २२ और उसने तीसरी बार उन्हें कहा क्यों उसने क्या अपराध किया है? मैं ने उस पर घात के योग्य कोई बात न पाई इस लिये मैं उसे

ताड़ना करके छोड़ देता हों। २३ परन्तु उन्हों ने हौरा करके चाहा कि वुह क्रूस पर घात किया जाय तब उन्हों के और प्रधान याजकों के हौरे ठहर गये। २४ फेर पिलात ने आज्ञा किई कि उन्हों की इच्छा रहे। २५ और उसने एक जन को, जो दंगा और हत्या के कारण बंदीगृह में डाला गया था जिसे वे चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया परन्तु यिशु को उनकी इच्छा पर सौंप दिया।

२६ और उसे लेजाते ऊए उन्हों ने शिमोन कुरीनी को पकड़ा, जो बाहर से आता था और उस पर क्रूस धरा जिसतें वुह यिशु के पीछे पीछे उठावे। २७ और एक बड़ी मंडली और स्त्री भी, जो उसके लिये रोतियां पीटतियां थीं उसके पीछे होलियां। २८ परन्तु यिशु ने उनकी ओर फिर के कहा कि हे यिरूशालम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। २९ क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन में वे कहेंगे कि बांझ कोख धन्य जिन्हों ने धारण न किया और वे स्तन जिन्हों ने न पिलाया। ३० तब वे पहाड़ों को कहना आरंभ करेंगे कि हम पर गिरो और पहाड़ियों को, कि हमें ढांपो। ३१ क्योंकि यदि हरे पेड़ पर ऐसा बीत्ता है तो सूखे पर कैसा बीतेगा?

३२ और दो और कुकर्मी को भी उसके संग मार डालने के लिये लेचले। ३३ और जब वे खोपड़ी नाम

के स्थान में आये, तो वहां उन्हों ने उस को और उन कुकर्मियों को, एक को उसके दहिने ओर दूसरे को बाएं ओर क्रूस पर टांगा। ३४ तब यिशु ने कहा कि हे पिता उनको क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं और उन्हों ने चिट्ठी डालके उसके वस्त्र को बांट लिया। ३५ और लोग खड़े देख रहे थे और प्रधान भी उनके संग ठट्ठे से कहते थे कि उसने औरों को बचाया यदि वुह मसीह ईश्वर का चुना हुआ है तो आप को बचावे। ३६ और योद्धा भी ठट्ठा करते आये और उसे सिरका दिया। ३७ और बोले कि यदि तू यिहूदियों का राजा है तो आप को बचा। ३८ और यूनानी और लाटीनी और इबरानी में एक पत्र उसके सिरके ऊपर लगाया कि, यह यिहूदियों का राजा है। ३९ और टंगे हुए उन कुकर्मियों में से एक ने, निंदा करके उसे कहा कि यदि तू मसीह है तो आप को और हमें बचा। ४० परंतु दूसरे ने उसे दपटते हुए उत्तर दिया कि तू ईश्वर से नहीं डरता देख तू भी वही दंडपाता है? ४१ और हम तो न्याय की रीति से, क्योंकि हम अपने कर्म का पलटा पाते हैं पर इस मनुष्य ने कुछ चूक न किया। ४२ और उसने यिशु से कहा कि हे प्रभु जब आप अपने राज्य में पहुंचे तो मुझे स्मरण कीजियो। ४३ यिशु ने उसे कहा मैं तुझे सत्य कहता हों कि आज तू मेरे संग बैकुंठ में होगा।

४४ और दो पहर के समय से देश पर अंधियारा छाके तीसरे पहर लों रहा। ४५ सूर्य अंधियारा ऊआ और मंदिर का ओम्हल मध्य से फट गया। ४६ तब यिशु बड़े शब्द से चिल्ला के बोला, हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सोंपता हों और यह कहिके अपना प्राण त्यागा। ४७ तब बीतेऊए को देख के शतपति ने ईश्वर की स्तुति किई और कहा कि निश्चय यह मनुष्य धर्मी था। ४८ और सब लोग जो यह देखने को एकट्ठे ऊए थे उन बीतीऊई बातों को देख के छातियां पीट पीट उलटे फिरे। ४९ और उसके सब चिन्हार और स्त्री जो गालील से उसके साथ आई थीं दूर खड़ी होके यह बातें देखरही थीं।

५० और यिहूदियः के एक नगर अरमतिया का यूसफ नाम एक मंत्री ने, जो उत्तम मनुष्य और धर्मी पुरुष था। ५१ (और उनके परामर्श और कार्य में युक्त न था) और ईश्वर के राज्य की बाट भी जोहता था। ५२ पिलात पास जाके यिशु की लोथ मांगी। ५३ और उसे उतार के कपड़े में लपेटा और एक समाधि में, जो चटान में खोदीगई थी, जिसमें कधी कोई रक्खा न गया था धरा। ५४ और वुह बनाउरी का दिन था और बिश्राम समीप था। ५५ और स्त्री भी, जो उसके संग गालील से आई थीं पीछे हो लिईं और समाधि को और जिस रीति से उसकी लोथ रक्खी गई देख रक्खा।

५६ और इन्हों ने फिर के सुगन्ध द्रव्य और तेल सिद्ध किया और आज्ञा के समान बिश्राम में चैनकिया।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ अब अठवारे के पहिले बड़े तड़के वे सुगंध द्रव्यों को, जो उन्हों ने सिद्ध किया लेके समाधि पर आईं और उनके संग कई और भी आईं। २ उन्हों ने उस पत्थर को समाधि से ढुलकाया ज़ुआ पाया। ३ और भीतर गईं और प्रभु यिशु के लोथ को न पाया। ४ और ऐसा ज़ुआ कि जब वे उस बात के लिये बज़त व्याकुल थीं तो तत्काल दो मनुष्य चमकते वस्त्र पहिने ज़ुए उनके पास खड़े ज़ुए। ५ और जब स्त्रियों ने डरकेमारे अपनी आंखें नीचे किईं तब इन्हों ने उन्हें कहा कि तुम जीवते को मृतकों में क्यों ढूंढ़तियांहो? ६ वुह यहां नहीं परंतु जीउठा है चेत करो कि गालील में होते ज़ुए उसने तुम्हें क्या कहा। ७ कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में सौंपा जाय और क्रूस पर माराजाय और तीसरे दिन फेर उठे। ८ तब उन्हों ने उसके बचन स्मरण किये। ९ और समाधि से फिरी और उन बातों को उन ग्यारह और औरों को सुनाया। १० मरियम मगदली और यूआना और याकूब की माता मरियम अरु और उनके संग थीं जिन्हों ने ये बातें प्रेरितों से कहीं। ११ परन्तु उनकी बातें उन्हें व्यर्थ कहानी सी समझ पड़ीं और

उन्हों ने उनकी प्रतीति न किई। १२ तथापि पथर उठके समाधि की ओर दौड़ा और नीचे झुकके केवल सूती कपड़े को पड़ाहुआ देखा और उस बात से, जो बीतगई थी मन में आश्चर्य करता चलागया।

१३ और उसी दिन उन में से दो अम्माअस नाम एक गांव को जो यिरूशालम से पौने चार कोस पर था, जाते थे। १४ और आपुस में उन बीतीहुई सारी बातों की चर्चा करते थे। १५ और ऐसा हुआ कि जब वे चर्चा और पूछ पाछ कर रहे थे यिशु आप, पास आकर उनके संग होलिया। १६ परन्तु उनकी आंखों पर यहां लों आड़ होगया था कि उन्हों ने उसे न पहिचाना। १७ और उसने उन्हें कहा कि यह कैसी बातचीत है जो तुम गैल में चलतेहुए एक दूसरे से कहतेहो और उदास हो? १८ तब उनमें से क्लेउपास एकने, उत्तर देके उसे कहा क्या यिरूशालम में तू केवल बिदेशी है कि इन बातों को, जो इन्हीं दिनों में वहां बीतीहैं नहीं जानता? १९ उसने उनसे पूछा कि कौन सी बातें? फेर वे उसे बोले कि यिशु नासरी के बिषय की जो ईश्वर के और सारे लोगों के आगे भविष्यद्वक्ता था और बोल चाल में सामर्थी था। २० और क्योंकर प्रधान याजकों और हमारे प्रधानों ने उसे पकड़वा के उसे घात करने की आज्ञा किई और उसे क्रूस पर घात किया। २१ परन्तु हमें भरोसा था कि

यह वही इसराईल का मुक्तिदाता था ग्रैार उन सभों से अधिक ग्राज तीसरा दिन है जब से ये बातें ज़ईं। २२ ग्रैार हमारी जथा की कितनी स्त्रियों ने भी हमें ग्राचंभित करदिया जो भार को समाधि पर गईं। २३ ग्रैार उसकी लोथ न पाके यह कहती ग्राईं कि हम ने दूतों का दर्शन पाया जो कहतेथे कि वुह जीता है। २४ तिसपर हमारे कई संगी समाधि पर गये ग्रैार स्त्रियों के कहने के समान पाया परन्तु उन्हों ने उसे न देखा। २५ तब उसने उन्हें कहा कि हे ग्रज्ञान ग्रैार भविष्यद्वक्तों की कहीऊई सारी बातों में ग्रल्प बिश्वासियो। २६ क्या मसीह कष्ट उठाने ग्रैार ग्रपने ऐश्वर्य में जाने के उचित न था? २७ तब उसने मूसा से ग्रारंभ करके सारे भविष्यद्वक्तों लों ग्रपने बिषय की सारी बातें उनके ग्रागे वर्णन किईं। २८ जब वे उस गांव के पास जिधर वे जाते थे पज़ंचे वुह ऐसा दिखाई देता था जैसा कि वुह ग्रागे को जायाचाहता है। २९ परन्तु उन्हों ने यह कहिके उसे मनाया कि हमारे संग रह क्योंकि ग्रबेर होती है ग्रैार दिन बज़त ढलगया तब वुह उनके संग रहने को भीतर गया। ३० ग्रैार जब वुह उनके संग भोजन पर बैठा था ऐसा ज़ग्रा कि उसने रोटी उठाके ग्राशीर्बाद किया ग्रैार तोड़ के उन्हें दिई। ३१ तब उनकी ग्रांखें खुलगईं ग्रैार उन्हों ने उसे पहिचाना ग्रैार वुह लोप ज़ग्रा। ३२ तब उन्हों ने ग्रापुस

में कहा कि जब वुह हमारे संग मार्ग में बात कहता था और लिखे ऊओं का अर्थ करता था क्या हमारे मन हम्में प्रज्वलित न थे? ३३ वे तत्काल उठके यिरूशालम को फिरे और उन ग्यारहों को और उनके संगियों को यह कहते ऊए पाया। ३४ कि प्रभु सचमुच जीउठा है और शिमोन को दिखाई दिया। ३५ और उन्हों ने मार्ग की बातें कहीं और कि वुह किस रीति से रोटी तोड़ने में पहिचाना गया।

३६ और जब वे यों कहिरहे थे यिशु आप उनके मध्य में खड़ा ऊआ और उन्हें कहा कि तुम पर कुशल। ३७ वे भय करके डरगये और समझा कि हम आत्मा देखते हैं। ३८ और उसने उन्हें कहा, तुम क्यों व्याकुल हो? और क्यों तुम्हारे मन में चिंता उठती है? ३९ मेरे हाथ पाओं को देखो कि मैं आपही हों मुझे टटोलो और बूझो क्योंकि आत्मा में हाड़ मांस नहीं होता जैसा तुम मुझ में देखते हो। ४० और यह कहिके हाथ पांव उन्हें दिखाये। ४१ और जब वे आनन्द के मारे प्रतीति न करते थे और बिस्मित थे उसने उन्हें कहा कि तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है? ४२ तब उन्हों ने उसे थोड़ी सी भूनी मछली और मधु का छत्ता दिया। ४३ उसने लेके उनके आगे खाया। ४४ और उन्हें कहा कि ये बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे संग होते ऊए तुम्हें कहीं कि सब बातों की, जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था

और भविष्यद्वक्तों में और भजन में हैं पूरी होनी अवश्य है। ४५ फेर उसने उनकी बुद्धि को प्रकाश किया कि वे लिखेहुओं को समझें। ४६ और उन्हें कहा कि योंहीं लिखा है और योंहीं मसीह को दुःख उठाना और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठना अवश्य था। ४७ और कि यिरूशालम से लेके सारे जातिगणों में मेरे नाम से पश्चात्ताप और पापों के मोचन का उपदेश किया जाय। ४८ और तुम सब इन बातों के साक्षी हो। ४९ और देखो मैं अपने पिता की बाचा को तुम पर भेजता हों परन्तु जब लों ऊपर से पराक्रम न पाओ यिरूशालम नगर में बने रहो।

५० और वुह उन्हें बैतनिया लों बाहर लेगया और अपना हाथ उठा के उन्हें आशीष दिया। ५१ और ऐसा हुआ कि उन्हें आशीष देते हुए वुह उन से अलग हुआ और स्वर्ग पर उठाया गया। ५२ तब वे उसे दंडवत करके बड़े आनन्द से यिरूशालम को लौटे और नित्य मंदिर में ईश्वर की स्तुति और धन्य मानते रहा किये। आमीन।

मंगल समाचार योहन रचित ॥
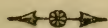
१ पहिला पर्व्व ।

१ आरंभ में बचन था और वुह बचन ईश्वर के संग था और वुह ईश्वर था। २ वही आरंभ में ईश्वर के संग था। ३ सब कुछ उस्से रचागया और रचित में तनिक बस्तु उस बिना नहीं रचीगई। ४ उस में जीवन था और वुह जीवन मनुष्यों का उंजियाला था। ५ और वुह उंजियाला अंधियारे में चमकता है और अंधियारे ने उसे न बूझा।

६ योहन नाम का एक जन ईश्वर की ओर से भेजा गया था। ७ वही साची के लिये आया कि उंजियाले पर साची देवे जिसतें उसके कारण से सब विश्वास लावें। ८ सो उंजियाला आप न था परन्तु उस उंजियाले पर साची देने को आया। ९ सत्य उंजियाला वुह था जो जगत में आके हर एक मनुष्य को उंजियाला करता है। १० वुह जगत में था और जगत उस्से रचागया और जगत ने उसे न पहिचाना। ११ वुह अपने निजों पास आया और उसके निजों ने उसे ग्रहण न किया। १२ परन्तु जितने उसे ग्रहण करके उसके नाम पर

बिश्वास लाये उसने उन्हें ईश्वर के पुत्र होने का पद दिया। १३ जो न तो लोहू से और न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं। १४ और उसी वचन ने अवतार लिया और कृपा और सच्चाई की भरपूरी से हम्में बास किया और हम ने उसकी महिमा को पिता के एकलौते की महिमा के समान देखा। १५ योहन उसके लिये साची दिई और पुकार के कहा कि यह वुह है जिसके बिषय में मैं ने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मुझसे श्रेष्ठ है क्योंकि वुह मुझसे आगे था। १६ और उसकी भरपूरी से हमने कृपा पर कृपा पाई। १७ क्योंकि व्यवस्था मूसा से दिई गई कृपा और सच्चाई यिशु मसीह से पहुंची। १८ ईश्वर को किसी ने कभी न देखा है एकलौते पुत्र ने, जो पिता की गोद में है उसे प्रगट किया।

१९ जब यिहूदियों ने याजकों और लेबियों को यिरूशालम से उसे पूछने को भेजा कि तू कौन है योहन की साची यह थी। २० उसने मान लिया और नाह न किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं। २१ फेर उन्हों ने उसे पूछा तो क्या तू इलिया है? उसने कहा कि नहीं तू वुह भविष्यद्वक्ता है? उसने उत्तर दिया कि नहीं। २२ तब उन्हों ने उसे कहा कि तू कौन है? जिसतें जिन्हों ने हमें भेजा हम उन्हें कुछ उत्तर देवें तू अपने बिषय में क्या कहता है? २३ उसने कहा कि

जैसा ईषाया भविष्यद्वक्ता ने कहा है मैं एक का शब्द हों जो बन में पुकारता है कि परमेश्वर के मार्ग को सीधा करो। २४ और जो भेजे गये सो फिरूसियों में से थे। २५ उन्हों ने उसे पूछा और कहा कि यदि तू मसीह अथवा इलिया नहीं अथवा वुह भविष्यद्वक्ता नहीं तो फेर क्यों स्नान देता है? २६ योहन ने उन्हें उत्तर देके कहा कि मैं जल से स्नान देता हों परन्तु तुम्हारे मध्य में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। २७ सो वुह है जो मेरे पीछे आके मुझ से श्रेष्ठ है जिसकी जूती का बन्द खोलने के मैं योग्य नहीं। २८ ये सब अर्दन पार बैतिइबरः में हुए जहां योहन स्नान देता था। २९ दूसरे दिन योहन ने यिशु को अपनी ओर आते देखके कहा कि देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को ले जाता है। ३० यह वुह है जिसके बिषय में मैं ने कहा कि एक मनुष्य मेरे पीछे आता है जो मुझ से श्रेष्ठ है क्योंकि वुह मुझ से आगे था। ३१ और मैं उसे न जानता था पर जिसतें वुह इसराईल पर प्रगट होवे मैं जल से स्नान देता आया हों। ३२ और योहन ने साक्षी देके कहा कि मैं ने आत्मा को कपोत की नाईं स्वर्ग से उतरते और उस पर ठहरते देखा। ३३ और मैं उसे न जानता था परन्तु जिसने मुझे जल से स्नान देने को भेजा उसने मुझे कहा कि जिसपर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे सो वुह है जो धर्म्मात्मा से स्नान देता

है। ३४ और मैं ने देखा और साक्षी देता हों कि यह ईश्वर का पुत्र है।

३५ फेर दूसरे दिन योहन और उसके शिष्यों में से दो खड़े थे। ३६ और यिशु को चलते देखके उसने कहा कि देखो ईश्वर का मेम्ना। ३७ और वे दो शिष्यो उसका बचन सुनके यिशु के पीछे होलिये। ३८ तब यिशु ने पीछे फिरके उन्हें आते देखा और कहा कि तुम क्या ढूंढ़ते हो? उन्हों ने उसे कहा कि हे रब्बी अर्थात हे गुरु आप कहां रहते हैं। ३९ उसने कहा कि आओ, देखो, और जहां वुह रहता था उन्हों ने आके देखा और उस दिन उसके संग रहे क्योंकि दो घंटेके अंटकल दिन रहिगया था। ४० उन दोनों में से जो योहन की सुनके उसके पीछे गये एक शिमोन पथर का भाई अंद्रया था। ४१ उसने पहिले अपने सगे भाई शिमोन को पाया और उसे कहा कि हमने मसीह को पाया जिसका अर्थ अभिषिक्त है। ४२ तब वुह उसे यिशु पास लाया और यिशु ने उसे देखके कहा कि तू यूना का बेटा शिमोन है तू किफास अर्थात पथर कहावेगा।

४३ अगिले दिन यिशु ने गालील को जाने चाहा और फिलिप को पाके उसे कहा कि मेरे पीछे होले। ४४ अब फिलिप अंद्रया और पथर के नगर बैतसैदा का था। ४५ फिलिप ने नातानायेल को पाया और

उसे कहा कि हम ने उसे पाया किसके बिषय में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्तों ने लिखा है कि यूसफ का पुत्र यिशु नासरी। ४६ नातानायेल ने उसे कहा कि कोई अच्छी बस्तु नासर: से निकलसक्ती है? फिलिप ने उसे कहा कि चल और देख। ४७ यिशु ने नातानायेल को अपनी ओर आते देखा और उसके बिषय में कहा कि देखो एक सच्चा इसराईली जिस में कपट नहीं। ४८ नातानायेल ने उसे कहा कि आप मुझे कहां से जानते है? यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि फिलिप के बुलाने से आगे जब तू गूलर पेड़ तले था मैं ने तुझे देखा। ४९ नातानायेल ने उत्तर देके उसे कहा कि हे गुरु आप ईश्वर के पुत्र हैं आप इसराईल के राजा हैं। ५० यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि मैं ने जो तुझे गूलर पेड़ तले देखा इस कहने के कारण तू बिश्वास लाता है? तू इन से बड़े कार्य देखेगा। ५१ फेर उसने उसे कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि इसके पीछे तुम स्वर्ग को खुला और ईश्वर के दूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र पर उतरते देखोगे।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ और तीसरे दिन गालील के काना में एक बियाह हुआ और यिशु की माता वहीं थी। २ यिशु और उसके शिष्य भी उस बियाह में बुलाये गये थे। ३ और जब दाखरस थोड़ा रहा तो यिशु की माता ने उसे कहा

कि उन पास दाखरस नहीं। ४ यिशु ने उसे कहा कि हे स्त्री तुझे मुझे क्या काम? मेरा समय अबलों नहीं आया। ५ उसकी माता ने सेवकों से कहा कि जो कुछ वुह तुम्हें कहे सो कीजियो। ६ और यिहूदियों के पवित्र करने की रीति के समान वहां पत्थर के छः मटके धरे थे हर एक में दो अथवा तीन मन की समाई थी। ७ यिशु ने उन्हें कहा कि मटकों में जल भरो सो उन्हों ने मुंहेमुंह भरा। ८ फेर उसने उन्हें कहा कि अब निकालो और जेवनार के प्रधान पास लेजाओ सो वे लेगये। ९ जब जेवनार के प्रधान ने उस दाखरस को चीखा जो जल से बना था और न जाना कि वुह कहां से था परन्तु जिन सेवकों ने उस जल को निकाला था सो जानते थे उसने दूल्हाको बुलाके कहा। १० कि हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता है और जब लोग पीके चुकते हैं तब मध्यम देता है, पर तू ने अच्छा दाखरस अबलों रखछोड़ा है। ११ यह आश्चर्यों का आरंभ यिशु ने गालील के काना में किया और अपनी महिमा प्रगट किई और उसके शिष्य उस पर विश्वास लाये। १२ उसके पीछे वुह और उसकी माता और भाई और उसके शिष्य कपरनाहम में गये पर वे वहां बहुत दिन न ठहरे।

१३ तब यिहूदियों का पार जाना पर्ब्ब समीप आया और यिशु यिरुशालम को गया। १४ और बैल और

भेड़ और कपोत के बेचवैयों को और खुरदियों को मन्दिर में बैठे ऊए पाया। १५ तब उसने रस्सी का चाबुक बनाके उन सभों को बैलों और भेड़ों समेत मंदिर से बाहर निकाल दिया और खुरदियों के रोकड़ को बिथरा दिया और मंचों को उलट दिया। १६ और कपोत के बेचवैयों से कहा कि इन बस्तुन को यहां से दूर करो मेरे पिता के घर को ब्यापार का घर मत बनाओ। १७ और उसके शिष्यों ने इस लिखे ऊए बचन को, कि तेरे घर के ताप ने मुझे खालिया है। १८ तब यिहूदियों ने उत्तर दिया और उसे कहा कि आप हमें कौनसा लक्षण दिखाते हैं जो यह कार्य करते हैं? १९ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि इस मन्दिर को ढादो और तीन दिन में इसे उठाओंगा। २० तब यिहूदियों ने कहा कि इस मंदिर के बन्ने में छियालीस बरस लगे और उसे तीन दिन में उठावेंगे? २१ परन्तु उसने अपने देह के मंदिर के बिषय में कहा। २२ इस लिये जब वुह मृतकों में से जीउठा उसके शिष्यों ने चेत किया कि उसने उन्हें यह कहा था और वे लिखे ऊए पर और यिशु के कहे ऊए बचन पर विश्वास लाये। २३ और जब वुह पार जाना पर्ब्ब में यिरुशालम में था बऊतेरे उसके आश्चर्य कार्यों को देखके उस पर विश्वास लाये। २४ परन्तु यिशु ने अपने तईं उन पर न छोड़ा क्योंकि वुह सब को जानता था। २५ और अवश्य न था

कि मनुष्य के बिषय में कोई साक्षी देवे क्योंकि वुह जानता था कि मनुष्य में क्या है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ यिहूदियों का एक प्रधान निकूदीम नाम का एक फिरुसी था। २ जो रात को यिशु पास आया और उसे कहा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओर से उपदेशक होके आये हैं क्योंकि कोई मनुष्य यह आश्चर्य जो आप करते हैं जब लों ईश्वर उसके संग न हो नहीं कर सक्ता। ३ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि मैं तुझे सत्य सत्य कहता हों कि जब लों मनुष्य फेर के उत्पन्न न होवे वुह ईश्वर के राज्य को देख नहीं सक्ता। ४ निकूदीम ने उसे कहा कि जब मनुष्य बृद्ध हुआ वुह क्योंकर उत्पन्न हो सक्ता है? क्या वुह फेर के अपनी माता की कोख में जाके उत्पन्न होसक्ता है? ५ यिशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझे सत्य सत्य कहता हों कि जब लों मनुष्य जल से और आत्मा से उत्पन्न न होवे वुह ईश्वर के राज्य में नहीं जासक्ता। ६ जो देह से उत्पन्न हुआ है सो देह है और जो आत्मा से उत्पन्न हुआ है सो आत्मा है। ७ आश्चर्य मत मान कि मैं ने तुझे कहा कि तुम्हें फेर के उत्पन्न होना अवश्य है। ८ पवन जिधर चाहता है उधर चलता है और तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता कि वुह कहां से आता है और किधर को जाता है ऐसाही हर एक है जो आत्मा से उत्पन्न

ङुआ है। ९ निकूदीम ने उत्तर देके उसे कहा कि ये बातें क्योंकर होसक्ती हैं? १० यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि तू इसराईल का उपदेशक होके ये बातें नहीं जानता? ११ मैं तुझे सत्य सत्य कहता हों कि जो हम जानते हैं सो कहते हैं और जो हमने देखा है उस पर साक्षी देते हैं परन्तु तुम हमारी साक्षी नहीं मानते। १२ यदि मैं ने तुम्हें संसारिक बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते तो जब मैं तुम्हें स्वर्गीय बातें कहों तो क्योंकर प्रतीति करोगे? १३ क्योंकि कोई मनुष्य स्वर्ग पर नहीं उठ गया परन्तु केवल वुह जो स्वर्ग से उतरा अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। १४ और जैसा मूसा ने बन में सांप को ऊपर उठाया तैसाही अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी उठाया जाय। १५ जिसतें जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे।

१६ क्योंकि ईश्वर ने जगत पर ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे। १७ क्योंकि ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहरावे परन्तु जिसतें जगत उस्से उद्धार पावे। १८ जो उस पर बिश्वास रखता है सो दोषी नहीं परन्तु जो बिश्वास नहीं रखता सो दोषी होचुका इस लिये कि वुह ईश्वर के एकलौते

पुत्र के नाम पर बिश्वास न लाया। १९ और दोष यह है कि उंजियाला जगत में आया और मनुष्यों ने अंधियारे को उंजियाले से अधिक प्रीति किई इस कारण कि उनके कर्म्म बुरे थे। २० क्योंकि जो कोई बुराई करता है सो उंजियाले से बैर रखता है और उंजियाले के पास नहीं आता न हो कि उसके कर्म्म प्रगट होवें। २१ परन्तु जो सत्य को पालन करता है सो उंजियाले के पास आता है जिसतें उसके कार्य प्रगट होवें कि वे ईश्वर में किये गये हैं। २२ इन बातों के पीछे यिशु और उसके शिष्य यिहूदिय की भूमि में आये और उसने वहां उनके संग कुछ दिन ठहरके स्नान दिया। २३ और योहन भी सालिम के पास ऐनून में स्नान देता था इस कारण कि वहां बहुत जल था और लोग आ आके स्नान पाते थे। २४ क्योंकि योहन अबलों बंदीगृह में डाला न गया था। २५ तब योहन के शिष्यों में और यिहूदियों में पवित्र करने के विषय में बिबाद हुआ। २६ और वे योहन के पास आये और उसे बोले कि गुरुजी जो अर्दन पार आप पास था जिस पर आप ने साक्षी दिई देखिये कि वुह स्नान देता है और सब उसके पास जाते हैं। २७ योहन ने उत्तर देके कहा कि जबलों मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाय वुह कुछ पा नहीं सक्ता। २८ तुम आपही मेरे साक्षी हो कि मैं ने कहा कि मैं मसीह नहीं परन्तु उसके

आगे भेजागया हों। २९ जिसकी दुल्हिन है सो दूल्हा है परन्तु दूल्हा का हित जो खड़ा होके उसकी सुनता है सो दूल्हा के शब्द से बड़ा आनंदित होता है इस लिये मेरा आनंद पूरा हुआ। ३० अवश्य है कि वुह बढ़े और मैं घटों। ३१ जो ऊपर से आता है सो सब से बड़ा है जो पृथिवी का है सो पार्थिव है और पृथिवी की कहता है जो स्वर्ग से आता है सो सब से बड़ा है। ३२ और जो कुछ उसने देखा और सुना है उसकी साक्षी देता है और कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। ३३ जिसने उसकी साक्षी ग्रहण किई है उसने छाप किया है कि ईश्वर सत्य है। ३४ क्योंकि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो ईश्वर की कहता है क्योंकि ईश्वर उसे आत्मा परिमाण से नहीं देता। ३५ पिता पुत्र को प्यार करता है और सब कुछ उसके बश में किया है। ३६ जो पुत्र पर बिश्वास रखता है सो अनन्त जीवन रखता है और जो पुत्र पर बिश्वास नहीं रखता सो जीवन को न देखेगा परन्तु ईश्वर का कोप उस पर धरा है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ प्रभु ने यह जानके कि फिरूसियों ने सुना कि यिशु ने स्नान दे दे के योहन से अधिक शिष्य किये। २ (यद्यपि यिशु आप नहीं परन्तु उसके शिष्य स्नान देते थे)। ३ सब को छोड़ के वुह गालील को फिर गया।

४ और सामरः में होके उसे जाना अवश्य था। ५ तब सामरः के सैकर नाम एक नगर में वुह उस भूमि के पास पहुंचा जो याकूब ने अपने बेटे यूसफ को दिई थी। ६ और याकूब का कूंआ वहीं था सो यिशु यात्रा से थका होके उस कूंए पर योंही बैठगया, यह दो पहर के लग भग था।

७ सामरः की एक स्त्री पानी भरने को आई और यिशु ने उसे कहा कि मुझे पीनेको दे। ८ (क्योंकि उसके शिष्य भोजन मोल लेने नगर में गये थे)। ९ सामरः की उस स्त्री ने उसे कहा कि यह कैसा है कि यिहूदी होके आप मुझ सामरः की स्त्री से पीने को मांगते हैं? क्योंकि यिहूदी सामरियो से व्यवहार नहीं रखते। १० यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि यदि तू ईश्वर के दान को और उसको जानती जो तुझे कहता है कि मुझे पीने को दे तो तू उस्से मांगती और वुह तुझे अमृत जल देता? ११ स्त्री ने उसे कहा, महाशय आप के पास खैंचने को कुछ नहीं और कूंआ गहिरा है फेर आप पास यह अमृत जल कहां से है। १२ क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं जिसने यह कूंआ हमें दिया और उसने आप और उसके बालक ने और उसके पशुन ने उस्से पीआ? १३ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा कि जो कोई यह जल पीता है सो फेर प्यासा होगा। १४ परन्तु जो मेरा दिया ज़आ जल पीता है

और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है जिसतें बोने वाला और लवने वाला मिलके आनन्द करें। ३७ और इस में यह बचन सत्य है कि एक बोता और दूसरा लवता है। ३८ जिसमें तुम ने परिश्रम न किया उसे मैं ने तुम्हें लवने को भेजा है औरों ने परिश्रम किया है और तुम ने उनके परिश्रम में प्रवेश किया।

३९ और उस नगर के बहुत से उस सामरी स्त्री के कहने से उस पर बिश्वास लाये जिसने साची दिई कि जो कुछ मैं ने कभी किया उसने मुझे बता दिया। ४० और सामरियों ने उस पास आके उसकी बिनती किई कि हमारे संग ठहरिये सो वुह दो दिन वहां रहा। ४१ और बहुतेरे उसी के बचन के कारण बिश्वास लाये। ४२ और उस स्त्री को कहा कि अब हम केवल तेरे कहे से बिश्वास नहीं लाते क्योंकि हम ने आपही सुना और जानते हैं कि यह निश्चय जगत का मुक्तिदाता मसीह है।

४३ और दो दिन पीछे वुह वहां से सिधार के गालील को गया। ४४ क्योंकि यिशु ने आप साची दिई कि भविष्यद्वक्ता अपनेही देश में आदर नहीं पाता। ४५ और जब वुह गालील में आया तो गालीलियों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि सब कुछ जो उसने पर्ब्ब के बीच यिरूशालम में किया था उन्हों ने देखा था क्योंकि वे भी पर्ब्ब में गये थे। ४६ और यिशु फेर गालील के

काना में आया, जहां उसने जल को दाखरस बनाया था और वहां एक प्रतिष्ठित मनुष्य था जिसका बेटा कपरनाहुम में रोगी था।

४७ जब उसने सुना कि यिशु यिहूदिय से गालील में आया तो उस पास जाके बिनती किई कि आके मेरे बेटे को चंगा कीजिये क्योंकि वुह मरने पर है। ४८ यिशु ने उसे कहा कि जबलों तुम लक्षण और आश्चर्य न देखो तुम बिश्वास न लाओगे। ४९ उस प्रतिष्ठित मनुष्य ने उसे कहा कि हे महाशय मेरे लड़के के मरनेसे आगे आइये। ५० यिशु ने उसे कहा कि जा तेरा बेटा जीता है और उस मनुष्य ने यिशु के बचन पर प्रतीति किई और चला गया। ५१ वुह जाताही था कि उसके सेवक उसे मिले और कहा कि आप का बेटा जीता है। ५२ तब उसने उन्हें पूछा कि वुह किस घड़ी से चंगा होने लगा उन्हों ने उसे कहा कि कल सातवीं घड़ी से ज्वर ने उसे छोड़ा।

५३ तब उसके पिता ने जाना कि उसी घड़ी में यिशु ने उसे कहा था कि तेरा बेटा जीता है तब वुह आप और उसका सारा घर बिश्वास लाया। ५४ यह फेर दूसरा आश्चर्य है जो यिशु ने यिहूदियः से आके गालील में किया।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ इसके पीछे यिहूदियों का एक पर्ब्ब आया और यिशु यिरूशालम को गया। २ अब यिरूशालम में भेड़ हाट के पास एक कुंड है जिसके पांच ओसारे हैं जो ईबरी भाषा में बैतसदा कहावता है। ३ इस में दुर्बल, अंधे, लंगड़े, और कुराये ऊओं की एक बड़ी मंडली जल के डोलने की आशा में पड़ी थी। ४ क्योंकि एक दूत जब तब उस कुंड में उतर के जल को डोलावता था और जल के डोलने के पीछे जो कोई पहिले उस में उतरता था सो अपने रोग से चंगा होता था। ५ और वहां एक मनुष्य था जो अठतीस बरस से रोगी था। ६ यिशु ने उसे पड़े देखके जाना कि वुह बऊत दिन से उस दशा में है तो उसे कहा कि तू चंगा होने चाहता है? ७ उस दुर्बल मनुष्य ने उसे उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं कि जब जल डोले तो मुझे कुंड में डालदे और जबलों मैं आताहों दूसरा मुझसे आगे उतर पड़ता है। ८ यिशु ने उसे कहा कि उठ अपना बिछौना उठा और चला जा। ९ और तुरन्त वुह चंगा होगया और अपना बिछौना उठाके चल निकला और वुह बिश्राम का दिन था।

१० इस लिये यिहूदियों ने उस चंगे किये गये मनुष्य को कहा कि यह बिश्राम है बिछौना ले जाना तुझे उचित नहीं। ११ उसने उन्हें उत्तर दिया कि

जिसने मुझे चंगा किया उसी ने मुझे कहा कि अपना बिछौना उठाके चला जा। १२ तब उन्हों ने उसे पूछा कि किस मनुष्य ने तुझे अपना बिछौना लेजाने को कहा है। १३ अब उसने जो चंगा हुआ था न जाना कि वुह कौन था क्योंकि उस स्थान में एक भीड़ थी और यिशु वहां से हटगया था। १४ इसके पीछे यिशु ने उसे मन्दिर में पाया और उसे कहा कि देख तू चंगा हुआ फेर पाप न करना नहो कि तू अधिक बिपत्ति में पड़े। १५ उस मनुष्य ने जाके यिहूदियों से कहा कि जिसने मुझे चंगा किया सो यिशु है। १६ इस लिये यिहूदियों ने यिशु को सताया और घात करने को उसके पीछे पड़े क्योंकि उसने बिश्राम दिन में यह किया था।

१७ परन्तु यिशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मेरा पिता अबलों कार्य्य करता है और मैं भी करता हों। १८ इस लिये यिहूदियों ने उसे घात करने को अधिक चाहा क्योंकि उसने केवल बिश्राम को उलंघन न किया परंतु ईश्वर को अपना पिता कहिके आप को ईश्वर के तुल्य किया। १९ तब यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो कुछ पिता को करते देखता है उसे छोड़ पुत्र आप से आप कुछ नहीं कर सक्ता है क्योंकि जो कुछ वुह करता है सोई पुत्र भी करता है। २० क्योंकि पिता पुत्र को प्यार करता है

श्रीर सब जो श्राप करता है उसे दिखाता है श्रीर वुह उसको इन से बड़े कार्य दिखावेगा जिसतें तुम श्राश्चर्य माना। २१ क्योंकि जैसा पिता मृतकों को उठाता है श्रीर जिलाता है तैसा पुत्र भी जिन्हें चाहता है जिलाता है। २२ क्योंकि पिता किसी मनुष्य का विचार नहीं करता परंतु उसने सब बिचार पुत्र को सैांप दिया है। २३ जिसतें जैसा सब पिता का श्रादर करते है तैसा पुत्र का भी श्रादर करें जो पुत्र का श्रादर नहीं करता सो पिता का जिसने उसे भेजा है श्रादर नहीं करता। २४ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो मेरा बचन सुनता है श्रीर मेरे भेजने वाले पर बिश्वास लाता है सो श्रनन्त जीवन रखता है श्रीर दोष में न पड़ेगा परन्तु मृत्यु से छूटके जीवन को पऊंचा है। २५ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि समय श्राता है श्रीर श्रब है कि मृतक ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे श्रीर सुन सुनके जीयेंगे। २६ क्योंकि जैसा पिता श्राप में जीवन रखता है तैसा उसने पुत्र को दिया है कि श्राप में जीवन रक्खे। २७ श्रीर उसे न्याय करने की सामर्थ्य भी दिई है क्योंकि वुह मनुष्य का पुत्र है। २८ इससे श्राश्चर्य मत माना क्योंकि वुह समय श्राता है जिस में सब जो समाधिन में हैं उसका शब्द सुनेंगे। २९ श्रीर निकल श्रावेंगे जिन्हों ने भलाई किई है सो जीवन के लिये जी उठेंगे श्रीर जिन्हों ने बुराई किई है सो

दंड के लिये जी उठेंगे। ३० मैं आप से आप कुछ नहीं करसक्ता जैसा मैं सुनता हों तैसा बिचार करता हों और मेरी आज्ञा ठीक है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं ढूंढ़ता परन्तु पिता की जिसने मुझे भेजा है। ३१ यदि मैं अपने पर साक्षी देउं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं। ३२ दूसरा है जो मुझ पर साक्षी देता है और मैं जानता हों कि जो साक्षी वुह मेरे लिये देता है सो सत्य है। ३३ तुम ने योहन पास भेजा और उसने सचाई पर साक्षी दिई। ३४ परन्तु मैं मनुष्य की साक्षी नहीं चाहता पर तुम्हारी मुक्ति के लिये मैं ने ये बातें कहीं। ३५ वुह जलता और चमकता उंजियाला था और थोड़े दिन लों तुम उसके उंजियाले में मगन होने चाहते थे। ३६ परन्तु योहन कीसे मैं एक बड़ी साक्षी रखता हों क्योंकि जो कार्य्य पिता ने मुझे करने को सैांपा है सोई कार्य्य मैं करता हों जो मेरे लिये साक्षी देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ और पिता जिसने मुझे भेजा है उसने मेरे लिये आप साक्षी दिई है तुम ने कभी उसका शब्द न सुना और न उसका स्वरूप देखा। ३८ और उसका बचन तुम्में नहीं है इस लिये कि जिसे उसने भेजा तुम उसका बिश्वास नहीं करते। ३९ लिखे ऊए में ढूंढ़ो क्योंकि तुम समुझते हो कि उन में तुम्हारे लिये अनन्त जीवन है और वेही मेरे लिये साक्षी देते हैं। ४० और जीवन पाने के लिये

तुम मुझ पास आने नहीं चाहते हो। ४१ मैं मनुष्यों से महिमा नहीं चाहता। ४२ परन्तु मैं तुम्हें जानता हों कि ईश्वर का प्रेम तुम्में नहीं है। ४३ मैं अपने पिता के नाम से आया हों और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते यदि दूसरा अपनेही नाम से आवे तो उसे ग्रहण करोगे। ४४ यदि आपुस में एक दूसरे की प्रतिष्ठा ग्रहण करते हो और उस प्रतिष्ठा को जो केवल ईश्वर से है नहीं ढूंढ़ते तो क्योंकर बिश्वास लासक्ते? ४५ मत समझो कि मैं पिता के आगे तुम पर दोष लगाउंगा तुम्हारा दोष दायक मूसा है जिस पर तुम भरोसा रखते हो। ४६ क्योंकि यदि तुम लोग मूसा पर बिश्वास रखते हो मुझ पर भी बिश्वास रखते इस लिये कि उसने मेरे बिषय में लिखा। ४७ परन्तु यदि तुम लोग उसके लिखे ऊए पर बिश्वास न करो तो मेरे बचन पर कैसे बिश्वास करोगे।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे यिशु तिबिरिया के गालील के समुद्र पार गया। २ और एक बड़ी मंडली उसके पीछे होलिई क्योंकि उन्हों ने उसके आश्चर्य कार्यों के देखा जो उसने रोगियों पर किया था। ३ फेर यिशु एक पहाड़ पर जाके अपने शिष्यों के संग बैठा और यिहूदियों का पार जाना पर्ब्ब समीप ऊआ। ४ यिशु ने आखें ऊपर करके देखा कि बड़ी मंडली आती है।

५ तब उसने फिलिप को कहा कि इन के खाने के लिये हम कहां से रोटी मोल लें। ६ (उसने परीक्षा के लिये यह कहा था क्योंकि जो वुह किया चाहता था सो आप जानता था)। ७ फिलिप ने उत्तर दिया कि उनमें से यदि हर एक को टुकड़ा टुकड़ा दिया जाय तो दो सौ सूकी की रोटी उनके लिये बस न होंगी। ८ उसके शिष्यों में से एक शिमोन पथर के भाई अंद्रयास ने उसे कहा। ९ कि यहां एक छोकरा है जिस पास जव की पांच रोटी और दो मछलियां हैं परन्तु वे इतनों में क्या है। १० यिशु ने कहा कि लोगों को बैठाओ अब उस स्थान में बहुत घास थी सो गिनती के अंटकल में पांच सहस्र बैठ गये। ११ और यिशु ने रोटियां लिईं और धन्यमान के शिष्यों को बांट दीईं और शिष्यों ने पंगतों को दिया और मछलियों से भी जितना वे चाहते थे। १२ जब वे तृप्त हुए उसने अपने शिष्यों से कहा कि बचे हुए चूर चार बटोरो जिसतें कुछ नष्ट न होवे। १३ सो उन्हों ने बटोरा और जव की पांच रोटियों के चूर चार से जो उन जेवनहारियों से बंचरहे थे बारह टोकरियां भरीं।

१४ तब उन मनुष्यों ने यिशु का यह आश्चर्य कर्म्म देखके कहा कि सचमुच यह वही भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आने को था। १५ जब यिशु ने जाना कि वे

उसे आके बरबस राजा बनाने चाहते हैं तो आप अकेला पहाड़ को फिर गया।

१६ और जब सांझ ऊई तो उसके शिष्य समुद्र को गये। १७ और नाव पर चढ़के समुद्र के पार कफर नाहम को चले उस समय अंधियारा होचला था और यिशु उनके पास न आया था। १८ और बड़ी आंधी के मारे समुद्र लहराने लगा। १९ जब वे दो तीन कोस खे चुके तो उन्हों ने यिशु को समुद्र पर चलते और नाव पास आते देखा और डर गये। २० तब यिशु ने उन्हें कहा कि मैं हों मत डरो। २१ फेर उन्हों ने आनन्द से उसे नाव पर चढ़ालिया और तुरन्त जिधर वे जाते थे तिधर नाव जा पऊंची।

२२ दूसरे दिन जब समुद्र पार के लोगों ने देखा कि उस नाव को छोड़ जिस पर उसके शिष्य गये थे कोई नाव न थी और कि यिशु अपने शिष्यों के संग उस नाव पर न गया था परन्तु केवल उसके शिष्य गये थे। २३ (तिस पर भी और नावें तीबिरया से उस स्थान के पास जहां उन्हों ने प्रभु के धन्यमानने के पीछे रोटी खाई थी आई')। २४ जब लोगों ने देखा कि यिशु अथवा उसके शिष्य वहां नहीं हैं तो वे भी नाव पर चढ़के यिशु को ढूंढ़ते कफरनाहम में आये। २५ और उन्हों ने उसे पार पाके कहा कि गुरुजी आप यहां कब आये? २६ यिशु ने उन्हें उत्तर देके कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य

कहता हों कि आश्चर्य कर्म देखने के कारण तुम लोग मुझे नहीं ढूंढ़ते हो परन्तु इस लिये कि तुम लोग रोटियों को खाके तृप्त ऊए। २७ नाशमान भोजन के लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन लों ठहरता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि ईश्वर पिता ने उस पर छाप किया है। २८ तब उन्हों ने उसे कहा कि हम क्या करें जिसतें ईश्वर के कार्य कारी होवें। २९ यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि ईश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर बिश्वास लाओ। ३० तब उन्हों ने उसे कहा फेर आप कौनसा आश्चर्य कर्म दिखाते हैं जो हम देखके आप पर बिश्वास लावें? आप कौनसा कार्य करते हैं? ३१ हमारे पितरों ने बन में मन्न खाया जैसा लिखा है कि उसने उन्हें स्वर्ग से रोटी खाने को दिई। ३२ यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से वुह रोटी न दिई परन्तु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। ३३ क्योंकि ईश्वर की रोटी वुह है जो स्वर्ग से उतरती और जगत को जीवन देती है। ३४ उन्हों ने उसे कहा कि हे प्रभु हमें नित नित यह रोटी दीजिये। ३५ यिशु ने उन्हें कहा कि जीवन की रोटी मैं हों जो मेरे पास आता है सो कभी भूखा न होगा और जो मेरा बिश्वास रखता है कभी प्यासा न होगा। ३६ परन्तु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम

लोग मुझे देखके भी विश्वास नहीं लाते। ३७ सब जो पिता ने मुझे दिया है मुझ पास आवेगे और जो मेरे पास आता है मैं उसे किसी रीति से न त्यागोंगा। ३८ क्योंकि मैं स्वर्ग से इस लिये नहीं उतरा कि अपनीही इच्छा पालों परन्तु उसकी इच्छा जिसने मुझे भेजा है। ३९ और मेरे प्रेरक पिता की इच्छा यह है कि सब जो उसने मुझे दिया है मैं उस में से कुछ न खाओं परन्तु उसे पिछले दिन फेर उठाओं। ४० और जिसने मुझे भेजा है उसकी इच्छा यह है कि हर एक जो पुत्र को देखता है और उस पर विश्वास लाता है अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिन में उठाओंगा।

४१ तब यिहूदी उस पर कुड़कुड़ाए इस कारण कि उसने कहा जो रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं हों। ४२ और उन्हों ने कहा कि क्या यह यिशु यूसफ का पुत्र नहीं है जिसके माता पिता को हम जानते हैं? फेर वुह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग से उतराहों? ४३ तब यिशु ने उत्तर देके उन्हें कहा कि आपुस में मत कुड़कुड़ाओ। ४४ जबलों मेरा प्रेरक पिता मनुष्य को न खैंचे कोई मुझ पास आ नहीं सक्ता और मैं उसे पिछले दिन में उठाओंगा। ४५ भविष्यवाणी में लिखा है कि वे सब ईश्वर से उपदेश पावेंगे इस लिये हर एक मनुष्य जिसने पिता से सुना और सीखा है मेरे पास आता है। ४६ यह नहीं कि किसी मनुष्य ने पिता को देखा है केवल

वुह जो ईश्वर से है उसने पिता को देखा है। ४७ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो मुझ पर बिश्वास लाता है सो अनन्त जीवन रखता है। ४८ जीवन की रोटी मैं हों। ४९ तुम्हारे पितरों ने बन में मन्न खाया और मर गये। ५० स्वर्ग से उतरती रोटी वुह है जिसे मनुष्य खाके न मरे। ५१ जो जीती रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं हों जो कोई इस रोटी में से खाय सो सदा जीता रहेगा और वुह रोटी जो मैं देउंगा सो मेरा शरीर है जिसे मैं जगत के जीवन के लिये देउंगा।

५२ तब यिहूदी आपुस में बिबाद करने लगे कि यह मनुष्य अपना शरीर हमें खाने को कैसे देसक्ता है। ५३ यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि यदि तुम लोग मनुष्य के पुत्र का शरीर न खाओ और उसका लोहू न पीओ तो तुम्में जीवन नहीं है। ५४ जो मेरा शरीर खाता है और मेरा लोहू पीता है सो अनन्त जीवन रखता है और मैं उसे पिछले दिन उठा ओंगा। ५५ क्योंकि मेरा शरीर ठीक भोजन है और मेरा लोहू ठीक पान है। ५६ जो मेरा शरीर खाता है और मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता है और मैं उस में। ५७ जैसा कि जीवन पिता ने मुझे भेजा है और मैं पिता से जीता हों तैसा जो मुझे खाता है सो मुझसे जीयेगा। ५८ यह है वुह रोटी जो स्वर्ग से उतरी जैसा तुम्हारे पितरों ने मन्न खाया और मर गये तैसा

नहीं, जो इस रोटी से खाता है सो सदा जीता रहेगा। ५९ उसने कफरनाहूम में उपदेश करते ज़ए किसी मंडली में ये बातें कहीं। ६० तब उसके शिष्यों में से बज़तों ने सुनके कहा कि यह कठिन बचन है उसे कौन सुनसक्ता? ६१ यिशु ने आप में जानके कि मेरे शिष्य आपुस में सुस्से कुड़कुड़ाते हैं उसने उन्हें कहा कि क्या यह तुम्हें उदास करती है? ६२ पर यदि तुम लोग मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते देखोगे जहां वुह आगे था तो क्या होगा? ६३ आत्मा जिलाता है शरीर लाभ नहीं करता जो बातें मैं तुम्हें कहता हों सो आत्मा और जीवन हैं। ६४ परन्तु तुम्में कितने हैं जो विश्वास नहीं लाते क्योंकि यिशु आरंभ से जानता था कि वे कौन हैं जो बिश्वास न करते थे और कौन उसे पकड़ावेगा। ६५ उसने कहा इस लिये मैं ने तुम्हें कहा कि जबलों किसी मनुष्य को मेरे पिता से दिया न जाय कोई मुझ पास नहीं आसक्ता। ६६ तभी से उसके शिष्यों में से बज़तेरे फिर गये और फेर उसके संग न गये। ६७ तब यिशु ने उन बारह को कहा कि क्या तुम भी चले जाओगे? ६८ शिमोन पथर ने उसे उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किस पास जायं अनन्त जीवन के बचन तो आप पास हैं? ६९ और हम निश्चय जानते हैं कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र मसीह हैं। ७० यिशु ने उन्हें कहा कि क्या मैं ने तुम बारह को नहीं चुना तथापि तुम्में एक पिशाच

है। ७१ उसने शिमोन के यिहूदा यिस्करियती के विषय में कहा क्योंकि बारह में से वुह एक था जो उसे पकड़वाया चाहता था।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे यिशु गालील में फिरा किया क्योंकि उस ने न चाहा कि यिहूदियः में रहे क्योंकि यिहूदी उसके घात में लगे थे। २ अब यिहूदियों के तंबुओं का पर्ब्ब निकट हुआ। ३ इस लिये उसके भाईयों ने उसे कहा कि यहां से यिहूदियः में जा जिसतें जो कार्य तू करता है सो तेरे शिष्य भी देखें। ४ क्योंकि जो कोई आप को प्रगट करने चाहता है सो छिपके कुछ नहीं करता सो यदि तू ये कार्य करता है तो आप को जगत पर प्रगट कर। ५ क्योंकि उसके भाई भी उस पर बिश्वास न लाये। ६ तब यिशु ने उन्हें कहा कि मेरा समय अभी नहीं आया परन्तु तुम्हारा समय सदा धरा है। ७ जगत तुम्हों से बैर नहीं कर सक्ता परन्तु मुझसे बैर करता है क्योंकि मैं उस पर साक्षी देता हों कि उसके कार्य बुरे हैं। ८ तुम लोग इस पर्ब्ब में जाओ मैं अभी इस पर्ब्ब में न जाउंगा क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ। ९ वुह ये बातें कहिके गालील में बना रहा। १० परन्तु जब उसके भाई गये वुह भी पर्ब्ब में प्रगट से नहीं परन्तु गुप्त से गया।

११ तब यिहूदी पर्ब्ब में उसे ढूंढ़ने और कहने लगे

कि वुह कहां है? १२ और लोग उसके विषय में बहुत बड़बड़ाने लगे क्योंकि कितने कहते थे कि वुह उत्तम मनुष्य है और कितने कहते थे कि नहीं परन्तु वुह लोगों को छल देता है। १३ तिस पर भी यिहूदियों के डरके मारे कोई मनुष्य उसके विषय में खोल के नहीं कहता था। १४ और पर्ब्ब के मध्य यिशु ने मन्दिर में जाके उपदेश किया। १५ तब यिहूदी आश्चर्य से बोले कि इस मनुष्य को बिना सीखे बिद्या कहां से है। १६ यिशु ने उन्हें उत्तर देके कहा कि मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु उसका जिसने मुझे भेजा है। १७ यदि कोई उसकी इच्छा पर चले तो इस उपदेश को जानेगा कि ईश्वर से है अथवा मैं आप से कहता हों। १८ जो अपनी ओर से कहता है सो अपनी बड़ाई ढूंढ़ता है परन्तु जो अपने प्रेरक की बड़ाई ढूंढ़ता है सो सच्चा है और उसमें कुछ अधर्म नहीं है। १९ क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था न दिई और कोई तुम्में से व्यवस्था को पालन नहीं करता तुम मेरे घात में क्यों लगे हो? २० लोगों ने उत्तर देके कहा कि तुझ में पिशाच है कौन तेरे घात में लगा है। २१ यिशु ने प्रत्युत्तर में उन्हें कहा कि मैं ने एक कार्य किया है और तुम लोग आश्चर्य मानते हो। २२ (मूसा ने तुम्में खतनः ठहराया है यद्यपि वुह मूसा से नहीं परन्तु पितरों से)। २३ और जिसतें मूसा की व्यवस्था भंग न होय तुम लोग

बिश्राम में मनुष्य का खतनः करते हो यदि बिश्राम में मनुष्य का खतनः किया जाय तो तुम लोग इस लिये मुझ पर रिसियाते हो कि बिश्राम में मैं ने एक मनुष्य को निर्धार चंगा किया। २४ पक्ष से बिचार मत करो परंतु खरा बिचार करो।

२५ तब कितने यिरुशालमियों ने कहा कि क्या यह वुह नहीं जिसे वे घात करने को ढूंढ़ते हैं? २६ परंतु देखो वुह तो हियाव से बोलता है और वे उसे कुछ नहीं कहते क्या प्रधानों ने निश्चय जान लिया है कि ठीक यही मसीह है। २७ परंतु यह जहां से है हम जानते हैं पर जब मसीह आवेगा कोई न जानेगा कि वुह कहां से है।

२८ तब यिशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यों पुकारा कि तुम लोग मुझे पहिचानते और जानते हो कि मैं कहां से हों और मैं आप से नहीं आया परंतु जिसने मुझे भेजा है सो सत्य है उसे तुम लोग नहीं जानते हो। २९ परंतु मैं उसे जानता हों क्योंकि मैं उसकी ओर से हों और उसने मुझे भेजा है। ३० तब उन्हों ने उसे पकड़ने को चाहा पर किसी मनुष्य ने उस पर हाथ न डाले क्योंकि उसका समय अबलों न पहुंचा था। ३१ और लोगों में से बहुतेरे उस पर विश्वास लाये और बोले कि जब मसीह आवेगा तो जो यह करता है क्या वुह इस्से अधिक आश्चर्य कर्म्म करेगा।

३२ फिरूसियों ने सुना कि लोग उसके बिषय में ऐसा बड़बड़ाते हैं तब उन्हों ने और प्रधान याजकों ने धावनों को भेजा कि उसे पकड़लें। ३३ तब यिशु ने उन्हें कहा कि अब थोड़ी बेर लों मैं तुम्हारे संग हों और जिसने मुझे भेजा है उस पास जाता हों। ३४ तुम लोग मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं हों तुम आ नहीं सक्ते। ३५ यिहूदियों ने आपुस में कहा कि वुह किधर जायगा जो हम उसे न पावेंगे? क्या वुह बिथरे हुए यूनानियों में जायगा और यूनानियों को उपदेश करेगा? ३६ यह क्या बात कहता है कि तुम लोग मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओ और जहां मैं हों तहां तुम लोग आ नहीं सक्ते।

३७ पर्ब्ब के पिछले और बड़े दिन में यिशु खड़ा हुआ और यह कहिके पुकारा कि जो प्यासा हो सो मुझ पास आवे और पीये। ३८ जैसा लिखा हुआ कहता है जो मुझ पर बिश्वास रखता है उसके घट से अमृत जल की नदियां बहेंगी। ३९ (उसने आत्मा के बिषय में यह कही जो उसके बिश्वासी पाने पर थे क्योंकि धर्मात्मा अबलों नहीं दिया गया इस कारण कि यिशु अबलों ऐश्वर्यमान न हुआ था)। ४० तब उन लोगों में से बहुतेरों ने यह सुनके कहा कि निश्चय यह वुह भविष्यद्वक्ता है। ४१ औरों ने कहा कि यही मसीह है परन्तु कितने बोले कि क्या मसीह गालील से

निकलेगा ? ४२ क्या लिखा हुआ नहीं कहता है कि मसीह दाऊद के बंश से और बैतुल्लहम की बस्ती से आवेगा जहां दाऊद था ? ४३ सो उसके विषय में लोगों में विभाग हुआ। ४४ और कितनों ने उसे पकड़ने को चाहा परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाले।

४५ तब धावन प्रधान याजकों और फिरूसियों के पास फिर गये तब वे उन्हें बोले कि तुम लोग उसे क्यों न लाये। ४६ धावनों ने कहा कि इस जन के समान किसी ने नहीं कहा। ४७ तब फिरूसियों ने उन्हें उत्तर दिया कि क्या तुम लोग भी भरमाये गये ? ४८ क्या कोई प्रधान अथवा फिरूसियों में से उस पर बिश्वास लाया ? ४९ परन्तु व्यवस्था के ये अज्ञानी लोग स्रापित हैं। ५० नीकूदीम ने, जो रात को यिशु पास आया था और एक उन में से था, उन्हें कहा। ५१ कि बिन सुने और जाने कि मनुष्य ने क्या किया है क्या हमारी व्यवस्था किसी को दोषी ठहराती है ? ५२ उन्हों ने उत्तर देके उसे कहा कि क्या आप भी गालील के हैं ? ढूंढ़िये और देखिये क्योंकि गालील में से कोई भविष्य द्वक्ता नहीं निकलता। ५३ फेर हर एक जन अपने अपने घर गया।

८ आठवां पर्व्व।

१ तब यिशु जलपाई के पहाड़ को गया। २ और बिहान को तड़के मन्दिर में फेर आया और सारे लोग उस पास आये और उसने बैठ के उन्हें उपदेश किया। ३ तब व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री को, अध्यापक और फिरूसी उस पास लाये और उसे मध्य में खड़ी करके। ४ बोले कि हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार करतेही पकड़ी गई। ५ अब मूसा ने तो व्यवस्था में हमें आज्ञा किई कि ऐसाही पत्थरवाह किई जाय परंतु आप क्या कहते हैं? ६ उन्हों ने उसे परखने के लिये यह कहा जिसतें वे उस पर दोष का कारण पावें परंतु यिशु नीचे झुकके अंगुली से भूमि पर लिखने लगा। ७ सो जब वे उसे पूछते गये उसने सीधे होकर उन्हें कहा कि जो तुम्में निष्पाप हो सो पहिले उसे पत्थर मारे। ८ और वुह फेर झुकके भूमि पर लिखने लगा। ९ और जिन्हों ने सुना वे मनहीं मन दोषी होके बृद्ध से लेके पिछले लों एक एक करके चले गये और यिशु अकेला रहिगया और वुह स्त्री मध्य में खड़ी रही। १० जब यिशु ने उठके स्त्री को छोड़ किसी को न देखा तो उसने उसे कहा कि हे स्त्री तेरे दोष दायक कहां हैं? क्या किसी ने तुझे दोषी न ठहराया? ११ उसने कहा कि हे प्रभु किसी ने नहीं यिशु ने उसे कहा कि मैं भी तुझे दोषी नहीं ठहराता जा और फेर पाप मत कर।

१२ यिशु ने फेर उन्हें कहा कि मैं जगत का उंजियाला हों जो मेरे पीछे आता है सो अंधियारे में न चलेगा परंतु जीवन का उंजियाला पावेगा। १३ इस लिये फिरूशियों ने उसे कहा कि तू अपने लिये साची देता है तेरी साची ठीक नहीं। १४ यिशु ने उत्तर देके कहा कि यद्यपि मैं अपने लिये साची देता हों मेरी साची ठीक है क्योंकि मैं जानता हों कि मैं कहां से आया और किधर जाता हों परन्तु तुम लोग नहीं जानते कि मैं कहां से आया और किधर जाता हों। १५ तुम शारीरिक बिचार करते हो मैं किसी मनुष्य पर बिचार नहीं करता। १६ तथापि यदि मैं बिचार करों तो मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं हों परन्तु मैं और पिता जिसने मुझे भेजा। १७ तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो मनुष्य की साची ठीक है। १८ एक तो मैं हों जो अपने लिये साची देता हों और एक पिता जिसने मुझे भेजा है मेरे लिये साची देता है? १९ तब उन्हों ने उसे कहा कि तेरा पिता कहां है? यिशु ने उत्तर दिया कि तुम लोग न मुझे न मेरे पिता को जानते हो यदि मुझे जानते होते तो मेरे पिता को भी जानते।

२० यिशु ने मंदिर में उपदेश करते हुए भंडार में ये बातें कहीं और किसी ने उस पर हाथ न डाले क्योंकि उसका समय अबलों नहीं आया था। २१ तब यिशु ने

फेर उन्हें कहा कि मैं तो जाता हों और तुम लोग मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पापों में मरोगे जिधर मैं जाता हों तुम लोग आ नहीं सक्ते। २२ तब यिहूदियों ने कहा क्या वुह अपने को मार डालेगा? इस कारण कि वुह कहता है कि जिधर मैं जाता हों तुम लोग नहीं आ सक्ते। २३ फेर उसने उन्हें कहा कि तुम लोग तलेसे हो मैं ऊपर से हों तुम लोग इस लोक के हो मैं इस लोक का नहीं। २४ इस लिये मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग अपने पापों में मरोगे क्योंकि यदि बिश्वास न लाओ कि मैं हों तो तुम लोग अपने पापों में मरोगे। २५ तब उन्हों ने उसे कहा कि तू कौन है? यिशु ने उन्हें कहा कि वही जो मैं ने तुम्हें आरंभ से कहा। २६ तुम्हारे बिषय में कहने को और बिचार करने को मुझ पास बहुतसी बातें हैं परन्तु जिसने मुझे भेजा है सुह सत्य है और मैं जगत को वे बातें कहता हों जो मैं ने उससे सुनी हैं। २७ उन्हों ने न समझा कि उसने उन्हें पिता के बिषय में कहा। २८ फेर यिशु ने उन्हें कहा कि जब तुम लोग मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाओगे तब जानोगे कि मैं हों और मैं आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसा मेरे पिता ने मुझे सिखाया है मैं ये बातें कहता हों। २९ और जिसने मुझे भेजा है सो मेरे संग है पिता ने मुझे अकेला न छोड़ा क्योंकि मैं सदा वही कार्य करता हों जो उसे सुहाते हैं। ३० जब वुह ये

बातें कहता था बहुतेरे उस पर बिश्वास लाये। ३१ तब यिशु ने उन यिहूदियों से जो उस पर विश्वास लाये थे कहा कि यदि तुम लोग मेरे बचन पर बने रहोगे तो मेरे शिष्य ठीक होओगे। ३२ और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें निर्बन्ध करेगा। ३३ उन्हों ने उसे उत्तर दिया कि हम इबराहीम के बंश हैं और कधी किसी के बंधन में न थे तू कैसे कहता है कि तुम निर्बन्ध किये जाओगे। ३४ यिशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो पाप करता है सो पाप का दास है। ३५ और दास सदा घर में नहीं रहता परंतु पुत्र सदा रहता है। ३६ इस लिये यदि पुत्र तुम्हें निर्बन्ध करे तो ठीक निर्बन्ध होओगे। ३७ मैं जानता हों कि तुम लोग इबराहीम के सन्तान हो परंतु मुझे मारडालने चाहते हो क्योंकि मेरा बचन तुम्में नहीं है। ३८ जो मैं ने अपने पिता के पास देखा है सोई कहता हों और जो तुम लोगों ने अपने पिता के पास देखा है सो करते हो। ३९ उन्हों ने उत्तर देके उसे कहा कि हमारा पिता इबराहीम है यिशु ने उन्हें कहा कि यदि तुम लोग इबराहीम के सन्तान होते तो इबराहीम के कार्य करते। ४० परन्तु अब तुम लोग मुझे मार डालने चाहते हो और मैं एक मनुष्य हों जिसने तुम्हें सत्य कहा जो मैं ने ईश्वर से सुना है इबराहीम ने यह नहीं किया। ४१ तुम लोग अपने पिता के कार्य करते हो

तब उन्हों ने उसे कहा कि हम लोग व्यभिचार से उत्पन्न नहीं हुए हमारा पिता एक ईश्वर है। ४२ यिशु ने उन्हें कहा कि यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम लोग मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वर से निकल आया हों मैं आप से नहीं आया परन्तु उसने मुझे भेजा। ४३ तुम लोग मेरी बोली क्यों नहीं समझते? इस कारण मेरे वचन नहीं सुन सक्ते? ४४ तुम लोग अपने पिता पिशाच से हो और अपने पिता की बांछा किया चाहते हो वुह तो आरंभ से घातक था और सत्य में स्थिर न रहा क्योंकि उसमें सचाई नहीं जब वुह झूठ कहता है तो अपनेही का बोलता है क्योंकि वुह झूठा है और झूठ का पिता है। ४५ पर इस कारण कि मैं सत्य कहता हों तुम लोग मेरी प्रतीति नहीं करते। ४६ तुम्में कौन मुझ पर पाप ठहराता है? और यदि मैं सत्य कहों तो मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते? ४७ जो ईश्वर से है सो ईश्वर की बातें सुनता है तुम लोग इस लिये नहीं सुनते कि ईश्वर के नहीं हो। ४८ तब यिहूदियों ने उत्तर दिया और उसे कहा कि हम अच्छा नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझ में पिशाच है? ४९ यिशु ने उत्तर दिया कि मुझ में पिशाच नहीं परंतु मैं अपने पिता का आदर करता हों और तुम लोग मेरा अनादर करते हो। ५० और मैं अपना महिमा नहीं ढूढ़ता एक है जो ढूढ़ता है और बिचार

करता है। ५१ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि यदि मनुष्य मेरा बचन पालन करे तो मृत्यु को कभी न देखेगा। ५२ यिहूदियों ने उसे कहा कि अब हम जानते हैं कि तुझ में पिशाच है, इबराहीम और भविष्यद्वक्ता मरगये और तू कहता है कि यदि कोई मेरा बचन पालन करे तो कभी मृत्यु का स्वाद न चीखेगा। ५३ क्या तू हमारे पिता इबराहीम से, जो मरगया बड़ा है और भविष्यद्वक्ता मरगये तू आप को क्या ठहराता है? ५४ यिशु ने उत्तर दिया कि यदि मैं अपना आदर करों तो मेरा आदर कुछ नहीं मेरा पिता जिसे तुम अपना ईश्वर कहते हो मेरा आदर करता है। ५५ तुम्हों ने उसे नहीं जाना परंतु मैं उसे जानता हों और यदि मैं कहों कि मैं उसे नहीं जानता तो तुम्हारी नाईं मैं झूठा होऊंगा परंतु मैं उसे जानता हों और उसका बचन पालन करता हों। ५६ तुम्हारा पिता इबराहीम मेरा समय देखने को तरसता था सो वुह देखके आनंदित हुआ। ५७ यिहूदियों ने उसे कहा कि तेरा बय अबलों पचास बरस का नहीं और तू ने इबराहीम को देखा? ५८ यिशु ने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि इबराहीम के होने से आगे मैं हों। ५९ तब उन्हों ने उसे मारने को पत्थर उठाये परंतु यिशु ने आप को छिपा लिया और मंदिर से बाहर निकल के उनके मध्य में होके चला गया।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ और जाते जाते उसने जन्म के एक अंधे मनुष्य को देखा। २ और उसके शिष्यों ने यह कहिके उसे पूछा कि "हे गुरु किस ने पाप किया इस मनुष्य ने अथवा इसके माता पिता ने जो यह अंधा उत्पन्न हुआ?" ३ यिशु ने उत्तर दिया, न इस मनुष्य ने न इसके माता पिता ने पाप किया परंतु उसके द्वारा से ईश्वर के कार्य प्रगट होने के लिये हुआ। ४ जब लों दिन है अवश्य है कि मैं अपने प्रेरक का कार्य करों रात आती है जब कोई कार्य नहीं करसक्ता। ५ जबलों मैं जगत में हों जगत का उंजियाला हों। ६ यों कहिके उसने भूमि पर थूका और थूक से मिट्टी गूंधी और उस मिट्टी से उस अंधे की आंखों पर लगाई। ७ और उसे कहा कि जा सिलोआम में अर्थात प्रेरित नाम कुंड में स्नान कर वुह गया और स्नान किया और देखते हुए आया। ८ तब परोसी और जिन्हों ने उसे आगे अंधा देखा था क्या बोले यह वुह नहीं जो बैठा भीख मांगता था? ९ कितने बोले कि यह वही है औरों ने कहा कि यह वैसा ही है उसने कहा कि मैं वही हों। १० फेर उन्हों ने उसे कहा कि तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं? ११ उसने उत्तर देके कहा कि एक मनुष्य ने जो यिशु कहावता है मिट्टी गूंधी और मेरी आंखों पर लगाई और मुझे कहा कि सिलोआम के कुंड में जा और स्नान कर

और मैं ने जाके स्नान किया और दृष्टि पाई। १२ उन्हों ने उसे कहा कि वुह कहां है? उसने कहा कि मैं नहीं जानता। १३ तब जो आगे अंधा था लोग उसे फिरूसियों पास लाये। १४ और जब यिशु ने मिट्टी गून्धके उसकी आंखें खोलीं तब विश्राम दिनी था। १५ फिरूसियों ने भी फेर उसे पूछा कि तू ने क्योंकर अपनी दृष्टि पाई उसने उन्हें कहा कि उसने मेरी आंखों पर गीली मिट्टी लगाई और मैं ने नहाया और देखता हों। १६ तब फिरूसियों में से कितनों ने कहा कि यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं क्योंकि वुह विश्राम दिन को नहीं मानता औरों ने कहा कि पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्य कैसे करसक्ता है? और उन में बिभाग ऊआ। १७ उन्हों ने उस अंधे मनुष्य को फेर कहा तुझे दृष्टि देने के लिये तू उसके बिषय में क्या कहता है? उसने कहा कि वुह भविष्यद्वक्ता है। १८ परन्तु जबलों यिऊदियों ने उस मनुष्य के माता पिता को, जिसने दृष्टि पाई थी न बुलाया उन्हों ने प्रतीति न किई कि वुह अंधा था। १९ और उन्हें पूछा कि क्या यह तुम्हारा बेटा है जिसे तुम कहते हो कि अंधा उत्पन्न ऊआ था फेर वुह अब क्योंकर देखता है? २० उसके माता पिता ने उन्हें उत्तर देके कहा हैं कि यह हमारा बेटा है और कि वुह अंधा उत्पन्न ऊआ था हम जानते हैं। २१ परन्तु वुह अब किस रीति से देखता है सो हम

नहीं जानते अथवा उसकी आंखें किसने खोली हम नहीं जानते वुह सयाना है उसे पूछिये वुह अपनी आप कहेगा। २२ उसके माता पिता ने यिहूदियों के डरके मारे कहा क्योंकि यिहूदियों ने ठहरा रक्खा था कि यदि कोई मान लेवे कि वुह मसीह है तो मंडली से बाहर निकाला जाय। २३ इस लिये उसके माता पिता ने कहा कि वुह सयाना है उसी से पूछो।

२४ तब उन्हों ने उस मनुष्य को, जो अंधा था फेर बुलाके कहा कि ईश्वर की स्तुति कर हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। २५ उसने उत्तर देके कहा कि यदि वुह पापी होय मैं नहीं जानता एक बात मैं जानता हों कि मैं आगे अंधा था अब देखता हों। २६ तब उन्हों ने उसे फेर पूछा कि उसने तुझे क्या किया? उसने किस रीति से तेरी आंखें खोलीं? २७ उसने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तो तुम से अभी कहिचुका और क्या तुम ने सुना किस लिये फेर सुना चाहते हो? क्या तुम भी उसके शिष्य होओगे? २८ तब वे उसे दुर्बचन कहिके बोले कि तू उसका शिष्य है हम मूसा के शिष्य हैं। २९ हम जानते हैं कि ईश्वर ने मूसा से बातें किईं पर हम नहीं जानते कि यह कहां का है। ३० उस मनुष्य ने उत्तर देके उन्हें कहा कि उसने मेरी आंखें खोलीं है और तुम नहीं जानते कि वुह कहां से है यह आश्चर्य की बात है। ३१ हम तो जानते हैं कि ईश्वर पापियों

की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई ईश्वर का भक्त होय और उसकी इच्छा पर चलता होय तो वुह उसकी सुनता है। ३२ जगत के आरंभ से कभी सुन्ने में न आया था कि किसी ने एक की आंखें जो अंधा उत्पन्न हुआ खोलीं हों। ३३ यदि वुह मनुष्य ईश्वर की ओर से न होता तो कुछ न करसक्ता। ३४ उन्हों ने उत्तर देके उसे कहा कि तू तो सर्बथा पाप में उत्पन्न हुआ और तू हमें सिखाता है और उन्हों ने उसे बाहर किया।

३५ यिशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया तब उसने उसे पाके कहा कि तू ईश्वर के पुत्र पर बिश्वास रखता है? ३६ उसने उत्तर देके कहा कि हे प्रभु वुह कौन है जिसतें मैं उस पर बिश्वास लाओं? ३७ यिशु ने उसे कहा कि तू ने उसे देखा है और जो तुझसे बोलता है वही है। ३८ उसने कहा कि हे प्रभु मैं बिश्वास लाता हों और उसने उसे दंडवत किई। ३९ तब यिशु ने कहा कि मैं न्याय के लिये जगत में आया हों कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे होवें। ४० फरूसियों में से कितनों ने ये बातें सुनके उसे कहा क्या हम भी अंधे हैं? ४१ यिशु ने उन्हें कहा कि यदि तुम अंधे होते तो तुम्में पाप न होता परन्तु तुम लोग कहते हो कि हम देखते हैं, इस लिये तुम्हारा पाप धरा है।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो द्वार से भेड़ शाला में नहीं जाता परन्तु दूसरी ओर से चढ़जाता है सो चोर और बटमार है। २ परन्तु जो द्वार से भीतर जाता है सो भेड़ों का चरवाहा है। ३ द्वारपाल उसके लिये खोलता है और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं और वुह अपनीही भेड़ों को नाम ले ले बुलाता है और उन्हें बाहर लेजाता है। ४ और वुह अपनी भेड़ों को बाहर ले जाके उनके आगे आगे चलता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे जाती हैं क्योंकि वे उसका शब्द पहिचानती हैं। ५ और वे उपरी के पीछे नहीं जातीं परन्तु उस्से भागती हैं क्योंकि वे उपरी का शब्द नहीं पहिचानतीं। ६ यिशु ने यह दृष्टान्त उन्हें कहा परन्तु उन्हों ने उस बात का भेद न समझा।

७ तब यिशु ने फेर उन्हें कहा, मैं तुम्हें सत्य सत्य कहताहों कि भेड़ों का द्वार मैं हों। ८ जितने मुझसे आगे आये सब चोर और बटमार हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी। ९ द्वार मैं हों यदि कोई मेरी ओर से भीतर जाय वुह मुक्ति पावेगा और बाहर भीतर आया जाया करेगा और चराई पावेगा। १० चोर केवल चोरी और घात और नाश करने को आता है मैं आयाहों जिसतें वे जीवन पावें और उसे अधिकाई से पावें। ११ अच्छा चरवाहा मैं हों अच्छा चरवाहा

भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। १२ परन्तु जो बनिहार है और चरवाहा नहीं भेड़ें जिसकी अपनी नहीं हैं सो ऊंड़ार को आते देखता है और भेड़ों को छोड़ भागता है और ऊंड़ार उन्हें पकड़ता है और भेड़ों को छिन्न भिन्न करता है। १३ बनिहार इसलिये भागता है कि वुह बनिहार है और भेड़ों के लिये चिन्ता नहीं करता। १४ अच्छा चरवाहा मैं हों और अपनी को पहिचानता हों और मेरी मुझे पहिचानती हैं। १५ जैसा पिता मुझे जानता है तैसाही मैं पिता को जानता हों और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हों। १६ मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस झुंड की नहीं अवश्य है कि मैं उन्हें भी लाओं और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुंड और एक चरवाहा होगा। १७ पिता मुझे इस लिये प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हों जिसतें मैं उसे फेरलेउं। १८ उसे कोई मुझसे नहीं लेता परन्तु मैं आप उसे धरदेता हों मैं उसे धर देने का सामर्थ्य और उसे फेर लेने का भी सामर्थ्य रखता हों यही आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई है। १९ तब यिहूदियों में इन बातों के कारण फेर बिभाग हुआ। २० और उन में से बहुतों ने कहा कि उस में पिशाच है और बौड़हा है तुम उसकी क्यों सुनते हो? २१ औरों ने कहा कि जिसमें भूत है उसकी ये बातें नहीं हैं क्या पिशाच अंधे की आंखें खोलसक्ता है?

२२ और यिरूशालम में स्थापित पर्ब्व हुआ और जाड़े का समय था। २३ और यिशु मंदिर में सुलेमान के ओसारे में फिरता था। २४ उस समय यिहूदियों ने उसे आघेरा और कहा कि तू कबलों हमारे मन को अधर में रक्खेगा यदि तू मसीह है तो हमें खोलके कह। २५ यिशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तो तुम्हें कहा और तुम ने विश्वास न किया जो कार्य मैं अपने पिता के नाम से करता हों सो मुझ पर साक्षी देते हैं। २६ परन्तु तुम विश्वास नहीं लाते क्योंकि मैं ने तुम्हें आगे कहा, कि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं। २७ मेरी भेडें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हों और वे मेरे पीछे पीछे आती हैं। २८ और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हों और वे कभी नाश न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न सकेगा। २९ मेरा पिता जिसने उन्हें मुझे दिया है सब से बड़ा है और कोई उन्हें मेरे पिता के हाथों से छीन नहीं सक्ता। ३० मैं और पिता एक हैं।

३१ तब यिहूदियों ने उसे पत्थरवाने के लिये फेर पत्थर उठाए। ३२ यिशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने अपने पिता के अनेक अच्छे कार्य तुम्हें दिखाये हैं उन में से कौन से कार्य के लिये मुझे पत्थरवाते हो? ३३ यिहूदियों ने उसे उत्तर देके कहा कि हम तुझे अच्छे कार्य के लिये नहीं पत्थरवाते हैं परंतु ईश्वर की निंदा

के लिये और इस लिये कि मनुष्य होके तू आप को ईश्वर ठहराता है। ३४ यिशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा कि तुम ईश्वर हो? ३५ उसने तो जिनके पास ईश्वर का बचन पहुंचा उन्हें ईश्वर कहा और लिखित भंग नहीं हो सक्ता। ३६ तुम लोग उसे ईश्वर का निंदक ठहराते हो जिसे ईश्वर ने पवित्र करके जगत में भेजा है क्योंकि मैं ने कहा कि मैं ईश्वर का पुत्र हों? ३७ यदि मैं अपने पिता के कार्य न करों तो मेरी प्रतीति मत करो। ३८ परन्तु यदि मैं करों तो यद्यपि मेरी प्रतीति न करो तथापि कार्यों की प्रतीति करो जिसतें जानो और प्रतीति करो कि पिता मुझ में और मैं उसमें हों।

३९ तब उन्हों ने फेर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वुह उनके हाथों से बच निकला। ४० और यर्दन पार उसी स्थान में जहां योहन पहिले स्नान देता था फेर गया और वहां रहा। ४१ बहुतेरों ने उस पास आके कहा कि योहन ने कोई आश्चर्य न दिखाया परन्तु सब बातें जो योहन ने उसके बिषय में कहीं सत्य हैं। ४२ और वहां बहुत से उस पर बिश्वास लाये।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ अब मरियम और उसकी बहिन मरता के गांव बैतनिया का कोई लाजर रोगी था। २ (वही मरियम जिसने प्रभु पर सुगंध तेल लगाया और अपने बालों से

उसके पांव को पोंछा उसी का भाई लाजर रोगी था)। ३ इस लिये उसकी बहिनों ने उसे कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है।

४ यिशु ने सुनके कहा कि यह मृत्यु का रोग नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के लिये जिसतें उस्से ईश्वर के पुत्र की महिमा होवे। ५ अब मरता और उसकी बहिन और लाजर से यिशु प्रीति रखता था। ६ यह सुन के कि वुह रोगी है जहां था तहां यिशु दो दिन रहा। ७ उसके पीछे उसने अपने शिष्यों से कहा कि चलो हम फेर यिहूदियः में जायें। ८ शिष्यों ने उसे कहा कि हे गुरु अभी तो यिहूदियों ने चाहा था कि आप को पत्थरवावें और आप वहां फेर जाते हैं? ९ यिशु ने उत्तर दिया क्या दिन में बारह घड़ी नहीं है? यदि कोई मनुष्य दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि वुह जगत का उंजियाला देखता है। १० परन्तु यदि कोई मनुष्य रात को चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उसमें उंजियाला नहीं। ११ उसने ये बातें कहीं और फेर उसने कहा कि हमारा मित्र लाजर नींद में है परन्तु मैं उसे जगाने को जाता हों। १२ तब उसके शिष्यों ने कहा हे प्रभु यदि वुह नींद में है तो चंगा होजायगा। १३ यिशु ने तो उसकी मृत्यु की कही परंतु उन्हों ने समझा कि उसके नींद के चैन की कही। १४ तब यिशु ने उन्हें खोल के कहा कि लाजर मरगया।

१५ और वहां न होने से मैं तुम्हारे लिये आनंदित हों जिसतें तुम लोग बिश्वास लाओ तिस पर भी उसके पास चलें। १६ तब तमा ने, जो दिदिमस कहावता हैं अपने गुरु भाईयों से कहा कि चलो हम भी उसके संग मरें।

१७ सो अब यिशु आया तो देखा कि उसे समाधि में चार दिन हो चुके। १८ अब बैतनिया यिरुशालम से कोस एक के टप्पे पर था। १९ और बहुत से यिहूदी मरता और मरियम को उनके भाई के बिषय में शांति देने आये थे। २० जब मरता ने सुना कि यिशु आता है तो उसकी भेंट को गई परंतु मरियम घर में बैठी रही। २१ तब मरता ने यिशु को कहा, हे प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न मरता। २२ परंतु मैं जानती हों कि अब भी जो कुछ आप ईश्वर से चाहेंगे ईश्वर आप को देगा। २३ यिशु ने उसे कहा कि तेरा भाई फेर उठेगा। २४ मरता ने उसे कहा कि मैं जानती हों कि पुनरुत्थान में अंत के दिन वुह फेर उठेगा। २५ यिशु ने उसे कहा कि पुनरुत्थान और जीवन मैं हों जो मुझ पर बिश्वास रखता है यद्यपि वुह मरे तथापि जीएगा। २६ और जो कोई जीता है और मुझ पर बिश्वास रखता है कभी न मरेगा तू इसे प्रतीति करती है? २७ उसने उसे कहा कि हे प्रभु मैं प्रतीति करती हों कि आप मसीह ईश्वर के पुत्र हैं जिसे जगत में आना था।

२८ यह कहिके चली गई और चुपके से अपनी वहिन मरियम को बुलाके बोली, गुरुजी आये हैं और तुझे बुलाते हैं। २९ यह सुनतेही मरता उठी और उस पास आई। ३० अबलों यिशु बस्ती में न आया था परंतु उसी स्थान में था जहां मरता ने उस्से भेंट किई थी। ३१ जब उसके शान्तिदायक यिहूदियों ने जो उसके घर में थे देखा कि मरियम झपस उठी और बाहर गई तो यह कहिके उसके पीछे पीछे गये कि वुह समाधि पर रोने को जाती है। ३२ और जहां यिशु था मरियम वहां आई और उसे देखतेही उसके चरण पर गिरके बोली, हे प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न मरता। ३३ जब यिशु ने उसे रोते और यिहूदियों को भी, जो उसके संग आये थे रोते देखा तो मन में व्याकुल होके हाय किया। ३४ और कहा कि तुम ने उसे कहां धरा है? उन्हों ने कहा कि हे प्रभु आके देखिये। ३५ यिशु रोया। ३६ तब यिहूदियों ने कहा कि देखो वुह उस्से कैसी प्रीति रखता था। ३७ उनमें से कितनों ने कहा कि यह पुरुष जिसने अंधे की आंखें खोलीं न करसका कि यह मनुष्य भी न मरता? ३८ तब यिशु अपने मन में फेर आह करता हुआ समाधि पर आया वुह एक गुहा थी और उस पर एक पत्थर धरा था। ३९ यिशु ने कहा कि पत्थर को अलग करो उस मृतक की वहिन मरता ने उसे कहा

कि हे प्रभु वुह तो अब बसाता है क्योंकि यह चौथा दिन है। ४० यिशु ने उसे कहा क्या मैं ने तुझे नहीं कहा, यदि तू बिश्वास लावे तो ईश्वर की महिमा देखेगी? ४१ तब जहां वुह मृतक पड़ा था वहां से पत्थर को उन्हों ने सरकाया और यिशु ने आंखें ऊपर करके कहा कि हे पिता मैं तेरी स्तुति करता हों कि तू ने मेरी सुनी है। ४२ और मैं ने जाना कि तू मेरी नित्य सुनता है पर लोगों के कारण जो आस पास खड़े हैं मैं ने यह कहा जिसतें वे बिश्वास लावें कि तू ने मुझे भेजा है। ४३ और यह कहिके बड़े शब्द से पुकारा "हे लाजर बाहर निकल"। ४४ तब जो मरा था सो समाधि के बस्त्र समेत हाथ पांव बंधेऊए बाहर निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लपेटा था यिशु ने उन्हें कहा कि उसे खोलो और जाने देओ। ४५ तब बऊतेरे यिहूदी, जो मरियम कने आये थे, और ये कार्य, जो यिशु ने किये थे देखते थे, उस पर बिश्वास लाये। ४६ परन्तु उनमें से कितनों ने फिरूसी पास जाके जो जो कुछ यिशु ने किया था उन्हें सुनाया। ४७ तब प्रधान याजकों और फिरूसियों ने सभा एकट्ठी किई और कहा कि हम क्या करते हैं? क्योंकि यह मनुष्य बऊत आश्चर्य दिखावता है। ४८ यदि हम उसे रहने देवें तो सब उस पर बिश्वास लावेंगे और रूमी आवेंगे और हमारे देश और कुल को भी लेलेंगे।

४९ और उनमें से एक काइफा नाम, जो उस बरस प्रधान याजक था उन्हें बोला कि आप लोग कुछ नहीं जानते। ५० और चिंता नहीं करते कि लोगों की संती एक पुरुष का मरना हमारे लिये भला है जिसतें सारे देशी नाश न होवें। ५१ उसने यह अपनी ओर से न कहा परन्तु उस बरस प्रधान याजक होके यह भविष्य कहा कि यिशु उस देशी के लिये मरेगा। ५२ और केवल उस देशी के लिये नहीं परन्तु जिसतें वुह ईश्वर के बालकों को जो छिन्न भिन्न थे एकट्ठे करे। ५३ सो उसी दिन से उन्हों ने उसे घात करने के लिये परामर्ष किया। ५४ इस लिये यिशु ने यिहूदियों में प्रगट में फिरना छोड़ दिया परन्तु वहां से जाके बनके पास इफराईम नाम एक नगर में अपने शिष्यों के संग रहने लगा।

५५ यिहूदियों का पारजाना पर्ब्ब निकट हुआ और बहुतेरे पर्ब्ब के आगे आप को पवित्र करने को उस देश से यिरुशालम गये। ५६ और यिशु को ढूंढ़ा और मन्दिर में खड़े होके आपुस में कहने लगे कि क्या समझते हो? क्या वुह पर्ब्ब में न आवेगा? ५७ प्रधान याजकों और फिरूसियों ने भी आज्ञा किई थी यदि कोई जानता हो कि वुह कहां है तो बता देवे जिसतें वे उसे पकड़लेवें।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ पारजाना पर्ब्ब से छः दिन आगे यिशु बैतनिया में आया यहां लाजर रहता था जो मरा था और जिसे उसने जिलाया था। २ वहां उन्हों ने उसके लिये बिआरी बनाई और मरता सेवा करती थी परन्तु उसके संग के जेवनहरियों में लाजर एक था।

३ तब मरियम ने आध सेर अति मोल का सुगन्ध तेल लेके यिशु के चरण पर लगाया और अपने बालों से उन्हें पोंछा और तेल के सुगन्ध से घर भरगया। ४ तब शिमोन का बेटा यिहूदा यिस्करियती उसके शिष्यों में से एक जो उसे पकड़वाया चाहता था बोला। ५ यह तेल तीन सौ सूकी को क्यों न बेचके कंगालों को दिया गया? ६ उसने इस लिये नहीं कहा कि कंगालों की चिन्ता करता था परन्तु इस लिये कि वुह चोर था और डोंडा रखता था और जो कुछ उसमें पड़ता था सो ले जाता था। ७ तब यिशु ने कहा उसे मत छेड़ उसने मेरे गाड़ने के दिनके लिये यह रक्खा था। ८ क्योंकि तुम लोग कंगालों को अपने संग नित्य पाओगे परन्तु मुझे नित्य न पाओगे।

९ यह जानके कि वुह वहां है यिहूदियों की एक बड़ी मंडली आई केवल कुछ यिशु के लिये नहीं परंतु जिसतें वे लाजर को भी देखें जिसे उसने मृत्यु से जिलाया था। १० परन्तु प्रधान याजकों ने परामर्ष किया कि

लाजर को भी मार डालें। ११ क्योंकि उसके कारण से बहुत यिहूदी फिर गये और यिशु पर बिश्वास लाये।

१२ दूसरे दिन पर्व्व में के आयेहुए बहुत लोग यह सुन के कि यिशु यिरूशालम में आता है। १३ खजूर की डालियां लेके उस्से मिलने को निकले और पुकारा कि होशाना इसराईल के राजा को जो परमेश्वर के नाम से आता है धन्य। १४ और यिशु गदहे का एक बछेड़ा पाके उस पर चढ़ बैठा जैसा कि लिखा है। १५ हे सैहून की पुत्री मत डर, देख तेरा राजा गदहे के बछेड़े पर चढ़ा आता है। १६ उसके शिष्यों ने आरंभ में ये बातें न समुझीं परन्तु जब यिशु ऐश्वर्यमान हुआ तब उन्हों ने स्मरण किया कि ये बातें उसके बिषय में लिखी थीं और उन्हों ने उस्से ऐसा व्यवहार किया।

१७ तब जिन्हों ने उसे लाजर को समाधि से बाहर बुलाते और जिलाते देखा उन्हों ने साक्षी दिई। १८ इस कारण भी मंडली उस्से मिलने को निकली क्योंकि उन्हों ने सुना था कि उसने यह आश्चर्य किया था। १९ फिरूसियों ने आपुस में कहा कि तुम लोग देखते हो कि तुम से कुछ नहीं बनपड़ता? देखो संसार उसके पीछे होचला।

२० और उनमें जो पर्व्व में सेवा को आये थे कितने यूनानी थे। २१ वे गालीली बैतसैदा के फिलिप पास आये और उसको बिनती किई कि हे महाशय हम

यिशु को देखने चाहते हैं। २२ फिलिप ने आके अंद्रयास से कहा और अंद्रयास और फिलिप ने यिशु को सुनाया। २३ तब यिशु ने उत्तर देके कहा कि घड़ी आपहुंची है कि मनुष्य का पुत्र महिमा पावे। २४ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जबलों गेहूं का दाना भूमि पर न गिरे और मर न जाय तबलों अकेला रहता है परंतु यदि वुह मरे तो उस्से बहुत दाने होते हैं। २५ जो अपने प्राण को प्यार करता है सो उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण से बैर रखता है सो उसे अनन्त जीवन लों रक्षा करेगा। २६ यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे चलाआवे और जहां मैं हों तहां मेरा सेवक भी होगा यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उसका आदर करेगा। २७ अब मेरा प्राण व्याकुल है और मैं क्या कहों? कि हे पिता मुझे इस घड़ी से छुड़ा? परंतु मैं तो इसी लिये इस घड़ी लों आया हों। २८ हे पिता अपने नामकी महिमा कर वहीं आकाशबाणी हुई कि मैं ने महिमा किई है और फेर महिमा करोंगा। २९ तब आस पास के लोगों ने यह सुन के कहा कि मेघ गरजा, औरों ने कहा कि दूत उस्से बोला। ३० यिशु ने उत्तर देके कहा कि यह शब्द मेरे लिये नहीं परंतु तुम्हारे लिये आया। ३१ अब इस जगत का बिचार है अब इस जगत का राजा दूर किया जायगा। ३२ और यदि मैं पृथिवी पर से

ऊपर उठाया जाऊं तो सब को अपनी ओर खींचोंगा। ३३ (उसने यह कहिके पता दिया कि आप किस मृत्यु से मरने पर था)। ३४ लोगों ने उत्तर दिया कि हम ने व्यवस्था में से सुना है कि मसीह नित रहता है फेर आप कैसे कहते हैं कि मनुष्य के पुत्र का उठाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है? ३५ यिशु ने उन्हें कहा कि थोड़ी देर उंजियाला तुम्हारे पास है जबलों उंजियाला तुम्हारे पास है तबलों चलो नहो कि अंधियारा तुम पर आ पड़े क्योंकि जो अंधियारे में चलता है सो नहीं जानता कि किधर जाता है। ३६ जबलों उंजियाला तुम्हारे पास है तब लों उंजियाले पर विश्वास लाओ जिसतें उंजियाले के पुत्र होओ यिशु ने ये बातें कहीं और जाके अपने को उन से छिपाया।

३७ परंतु यद्यपि उसने उनके आगे इतने आश्चर्य किये तथापि वे उस पर बिश्वास न लाये। ३८ जिसतें ईशाया भविष्यद्वक्ता का कहाऊआ बचन पूरा होवे कि हे प्रभु हमारे समाचार पर किसने प्रतीति किई है? और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट ऊई है? ३९ इस लिये वे बिश्वास न लासके क्योंकि ईशाया ने फेर कहा। ४० कि उसने उनकी आंखें अंधी किया और उनका मन कठोर, न होवे कि आंखों से देखें और मन से समझें और फिरजायें और मैं उन्हें चंगा करों। ४१ जब ईशाया ने उसका ऐश्वर्य देखा तब उसने उसके

बिषय में ये बातें कहीं। ४२ तिस पर भी प्रधानों में भी बहुतेरे उस पर बिश्वास लाये परन्तु फिरूसियों के डरके मारे उन्हों ने मान न लिया नहो कि मंडली से निकाले जायं। ४३ क्योंकि वे लोगों का आदर ईश्वर के आदर से अधिक चाहते थे।

४४ यिशु ने पुकार के कहा कि जो मुझ पर बिश्वास लाता है सो मुझ पर नहीं परन्तु मेरे प्रेरक पर बिश्वास लाता है। ४५ और जो मुझे देखता है सो मेरे प्रेरक को देखता है। ४६ मैं जगत में उंजियाला हो आया हों जिसतें जो कोई मुझ पर बिश्वास लावे सो अंधिआरे में न रहे। ४७ और यदि कोई मनुष्य मेरा बचन सुने और बिश्वास न लावे तो मैं उस पर दोष नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने को नहीं आया परन्तु इस लिये कि जगत का उद्धार करों। ४८ जो कोई मेरी निंदा करता और मेरे बचन को नहीं मानता उसका एक दोषदायक है जो बचन मैं ने कहा है सोई अन्तके दिन में उसे दोषी ठहरावेगा। ४९ क्योंकि मैं ने तो अपनी ओर से कुछ न कहा परन्तु मुझे क्या क्या कहना और क्या क्या उपदेश करना है मेरे प्रेरक पिता ने मुझे आज्ञा किई है। ५० और मैं जानता हों कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इस लिये जो कुछ मैं कहता हों सो पिता के कहिने के समान कहता हों।

१३ तेरहवां पर्व्व।

१ अब पारजाना पर्व्व से आगे यिशु ने देखा कि मेरा समय आपहुंचा है कि इस जगत को छोड़के पिता पास जाऊं सो जैसा वुह अपनेही को जो जगत में थे आगे प्यार करता था तैसाही उसने अन्तलों उस प्यार को निबाह दिया। २ और जब बिआरी करचुके तो (शैतान ने शिमोन के बेटे यिहूदा यिस्करियती के मन में डाला कि उसे पकड़वावे)। ३ पिता ने सब कुछ मेरे बश में किया और मैं ईश्वर से आया और ईश्वर के पास जाता हों यिशु ने यह बात जानके। ४ बिआरी से उठा और अपने वस्त्र को उतार रक्खा और एक अंगोछा लेके अपनी कटि बांधी। ५ तब वुह एक पात्र में जल डाल के शिष्यों के पांव धोने लगा और कटिके उस अंगोछे से पोंछने लगा। ६ तब वुह शिमोन पथर पास आया जिसने उसे कहा कि हे प्रभु क्या आप मेरा पांव धोते हैं? ७ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा यदि मैं करता हों सो तू अब नहीं जानता परन्तु आगे को जानेगा। ८ पथर ने उसे कहा कि आप मेरा पांव कधी न धोइयेगा यिशु ने उसे उत्तर दिया कि यदि मैं तुझे न धोओं तो मेरे संग तेरा भाग न होगा। ९ शिमोन पथर ने उसे कहा कि हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु हाथ और सिर भी। १० यिशु ने उसे कहा कि जो धोयागया है पांव धोने से अधिक उसे आवश्यक

नहीं परन्तु निर्धार पवित्र है और तुम लोग पवित्र हो परंतु सब नहीं ? ११ क्योंकि वुह जानता था कि कौन उसे पकड़वावेगा इसी लिये उसने कहा कि तुम सब पवित्र नहीं हो।

१२ सो जब वुह उनके पांव धो चुका और अपने वस्त्र को लिया तो फेर बैठके उन्हें कहा कि तुम जानते हो मैं ने तुम से क्या किया ? १३ तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो और ठीक कहते हो क्योंकि मैं हों। १४ सो प्रभु और गुरु होके यदि मैं ने तुम्हारे पांव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे का पांव धोने को उचित है। १५ क्योंकि मैं ने तुम्हें एक दृष्टान्त दिया है कि जैसा मैं ने तुम से किया है तैसा तुम भी करो। १६ मैं तुम्हों से सत्य सत्य कहता हों कि सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं और प्रेरित अपने प्रेरक से बड़ा नहीं है। १७ यदि ये बातें जानते हो और उन्हें पालन करते हो तो धन्य हो। १८ मैं तुम सभों के बिषय में नहीं कहता, मैं जानता हों जिन्हें मैं ने चुना है परंतु जिसतें लिखा हुआ पूरा होवे कि जो मेरे संग भोजन करता है उसने मुझ पर लात उठाया है। १९ अब मैं तुम्हें आगे से कहता हों कि जब यह पूरा हो जाय तुम प्रतीति करो कि मैं हों। २० मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो मेरे प्रेरित को ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे प्रेरक को ग्रहण करता है।

२१ यों कहिके यिशु मन में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला, मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि तुम्में से एक मुझे पकड़वावेगा। २२ तब शिष्यों ने एक दूसरे को देख देख संदेह किया कि उसने किसके विषय में कहा। २३ अब उसके शिष्यों में से एक जो यिशु का प्रिय था और उसकी छाती पर ओठंगा था। २४ इस लिये शिमोन पथर ने उसे पूछने को सैन किया कि उसने किसके विषय में कहा। २५ तो यिशु की छाती पर ओठंगते हुए उसने उसे कहा कि हे प्रभु वुह कौन है? २६ यिशु ने उत्तर दिया कि जिसे मैं कौर चुभोर के देता हों सोई है और उसने कौर चुभोर के शिमोन के बेटे यिहूदा यिस्करियती को दिया। २७ और कौर के पीछे शैतान उसमें पैठा तब यिशु ने उसे कहा कि जो कुछ तू करता है झट से कर। २८ और भोजन पर किसी ने न जाना कि उसने क्या समझ के उसे यह कहा। २९ क्योंकि कितनों ने समझा कि डोड़ा रखने के कारण यिशु ने यिहूदा से कहा कि जो हमें पर्व्व के लिये आवश्यक है सो मोल ले अथवा कि तू कंगालों को कुछ दे। ३० तब कौर पाके वुह तुरन्त बाहर गया और रात थी।

३१ जब वुह चलागया यिशु ने कहा कि अब मनुष्य के पुत्र ने महिमा पाई और उस्से ईश्वर ने महिमा पाई। ३२ यदि ईश्वर उस्से महिमा पावे तो ईश्वर उसे भी

अपने से महिमा देगा और उसे शीघ्र महिमा देगा। ३३ हे बालको अब थोड़ेलों मैं तुम्हारे संग हों तुम लोग मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैं ने यिहूदियों से कहा कि जिधर मैं जाता हों तुम आ नहीं सक्ते वैसा अब मैं तुम्हें भी कहता हों। ३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हों कि तुम एक दूसरे से प्रीति करो जैसा मैं ने तुम से प्रीति किई वैसा तुम भी एक दूसरे से प्रीति करो। ३५ यदि तुम लोग आपुस में प्रीति रक्खो तो इस्से सब जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

३६ शिमोन पथर ने उसे कहा हे प्रभु आप किधर जाते हैं? यिशु ने उसे उत्तर दिया जिधर मैं जाता हों तू अब मेरे पीछे आ नहीं सक्ता परंतु आगे को मेरे पीछे आवेगा। ३७ पथर ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं आप के पीछे अब क्यों नहीं आ सक्ता? मैं आप के लिये अपना प्राण देउंगा। ३८ यिशु ने उसे उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझे सच सच कहता हों कि कुक्कुट न बोलेगा जबलों तू तीनबार मुझे न मुकरे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ तुम्हारा मन व्याकुल न होने पावे तुम लोग ईश्वर पर बिश्वास रखते हो मुझ पर भी बिश्वास रक्खो। २ मेरे पिता के घर में बहुत से निवास हैं नहीं तो मैं तुम्हें कहता कि मैं जाता हों जिसतें तम्हारे लिये स्थान ठीक

करों। ३ और यदि मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान ठीक करों तो फेर आओंगा और तुम्हें अपने पास लेउंगा जिसतें जहां मैं हों तहां तुम भी होओ। ४ और जहां मैं जाता हों तुम लोग जानते हो और मार्ग भी जानते हो।

५ तमा ने उसे कहा कि हे प्रभु हम नहीं जानते कि आप किधर जाते हैं और हम मार्ग को क्योंकर जानें? ६ यिशु ने उसे कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं हों मुझे छोड़ के पिता पास कोई नहीं आसक्ता। ७ यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से उसे जानते हो और उसे देखा है।

८ फिलिप ने उसे कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखाइये जिसतें हमारा बोध होवे। ९ यिशु ने उसे कहा हे फिलिप क्या इतने दिन से मैं तुम्हारे संग हों और तू ने अबलों मुझे न जाना? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें दिखा? १० क्या तुझे प्रतीति नहीं कि मैं पिता में और पिता मुझ में? ये बातें जो मैं तुम्हें कहता हों मैं आप से नहीं कहता परन्तु पिता जो मुझ में रहता है सो ये कार्य करता है। ११ प्रतीति करो कि मैं पिता में और पिता मुझ में अथवा कार्यों के लिये मेरी प्रतीति करो। १२ मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि जो मुझ पर बिश्वास लाता है जो कार्य मैं करता

हों सो वुह भी करेगा और उन से बड़ा करेगा क्योंकि मैं अपने पिता पास जाता हों। १३ और जो कुछ तुम लोग मेरे नाम से मांगोगे मैं वहीं करोंगा जिसतें पिता पुत्र में महिमा पावे। १४ यदि मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं करोंगा। १५ यदि मुझसे प्रीति रखते हो तो मेरी आज्ञा को पालन करो। १६ और मैं अपने पिता से प्रार्थना करोंगा और वुह तुम्हें दूसरा शान्ति दायक देगा जो सदा तुम्हारे संग रहेगा। १७ अर्थात सच्चाई का आत्मा जिसे जगत ग्रहण नहीं करसक्ता क्योंकि उसे नहीं देखता और न उसे जानता है परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वुह तुम्हारे संग रहता है और तुम्हों में होवेगा। १८ मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ोंगा मैं तुम्हारे पास आओंगा। १९ अब थोड़े लों जगत मुझे फेर न देखेगा परन्तु तुम लोग मुझे देखते हो और इस लिये कि मैं जीता हों तुम भी जीओगे। २० उस दिन तुम जानोगे कि मैं पिता में और तुम मुझ में और मैं तुम्हों में हों। २१ जो मेरी आज्ञा रखता है और उन्हें पालन करता है सोई मुझसे प्रीति रखता है और जो मुझसे प्रीति रखता है सो मेरे पिता का प्रिय होगा और मैं उस्से प्रीति रक्खोंगा और आप को उस पर प्रगट करोंगा।

२२ यिस्करियती को छोड़ दूसरे यिहूदा ने उसे कहा कि हे प्रभु यह कैसा है कि आप अपने को हमपर

प्रगट करेंगे ग्रीर जगत पर नहीं? २३ यिशु ने उत्तर देके उसे कहा यदि कोई मुझ्से प्रीति रक्खेगा तो मेरे बचन को पालेगा ग्रीर मेरा पिता उस्से प्रीति रक्खेगा ग्रीर हम उस पास ग्रावेंगे ग्रीर उसके संग बास करेंगे। २४ जो मुझ्से प्रीति नहीं रखता सो मेरे वचन को पालन नहीं करता ग्रीर जो वचन तुम सुनते हो सो मेरा नहीं परन्तु पिता का जिसने मुझे भेजा।

२५ तुम्हारे संग होते हुए मैं ने ये बातें तुम से कहीं। २६ परन्तु शान्तिदायक धर्मात्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वुह तुम्हें सब बातें सिखावेगा ग्रीर सब बात जो कुछ मैं ने तुम्हें कहीं हैं तुम्हें स्मरण करावेगा। २७ कुशल तुम्हें छोड़ जाता हों ग्रपना कुशल मैं तुम्हें देता हों जगत के देनेके समान मैं तुम्हें नहीं देता हों ग्रपने मनको व्याकुल मत होनेदेउ ग्रीर डरने मतदेउ। २८ तुम ने सुना है कि मैं ने तुम से कहा है कि मैं जाता हों ग्रीर तुम्हारे पास फेर ग्राग्रोंगा यदि तुम मुझ्से प्रीति रखते तो इस कारण ग्रानंदित होते कि मैं ने कहा कि पिता पास जाता हों क्योंकि मेरा पिता मुझ्से बड़ा है। २९ ग्रीर ग्रब मैं ने तुम्हें उसके होने से ग्रागे कहा जिसतें जब वुह होचुके तुम प्रतीति करो। ३० ग्रागे को मैं तुम से बहुत न बोलोंगा क्योंकि इस संसारका राजा ग्राता है ग्रीर मुझ में उसका कुछ नहीं परन्तु जिसतें संसार जाने कि मैं पिता से प्रीति रखता हों जैसा पिता

ने मुझे आज्ञा किई है तैसाही मैं करता हों उठो यहां से चलें।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

१ दाख की सच्ची लता मैं हों और मेरा पिता किसान है। २ हर एक शाखा जो मुझ में नहीं फलती वुह उसे अलग करता है और हर एक जो फलती है वुह उसे शुद्ध करता है जिसतें वुह अधिक फले। ३ अब वचन के कारण जो मैं ने तुम्हें कहा है तुम पवित्र हो। ४ मुझ में बने रहो और मैं तुम्में जिसरीति से लता में जब लों शाखा लगा नहीं वुह फल नहीं सक्ती वैसा जबलों मुझ में बने न रहो तुम भी नहीं फल सक्ते। ५ दाख की लता मैं हों तुम लोग शाखा हो जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें सो बहुत फलता है क्योंकि मुझसे अलग तुम कुछ नहीं करसक्ते। ६ यदि मनुष्य मुझ में बना न रहे तो वुह झुराई हुई शाखा की नाईं फेंका जाता है और लोग उन्हें समेट के आग में झोकते हैं और वे जलती हैं। ७ यदि तुम लोग मुझ में बनेरहो और मेरे बचन तुम्में तो जो चाहोगे सो मांगोगे और तुम्हारे लिये होजायगा। ८ तुम्हारे बहुत फल लाने में मेरे पिता की महिमा है और तुम मेरे शिष्य होओगे। ९ जैसी पिता ने मुझ से प्रीति किई है तैसी मैं ने तुम से प्रीति किई है तुम मेरी प्रीति में बनेरहो। १० यदि तुम मेरी आज्ञाको पालन करोगे तो मेरी प्रीति में बने

रहोगे जैसा मैं ने अपने पिता की आज्ञा को पालन किया है और उसकी प्रीति में बनाहों।

११ मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं जिसतें मेरा आनन्द तुम्में धरा रहे और तुम्हारा आनन्द भरजाय। १२ मेरी यही आज्ञा है कि जैसी प्रीति मैं ने तुम से किई है तुम एक दूसरे से प्रीति करो। १३ इस्से बड़ी प्रीति कोई नहीं रखता कि अपना प्राण अपने मित्रों के लिये देवे। १४ यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानो तो मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें सेवक न कहोंगा क्योंकि स्वामी जो करता है सो सेवक नहीं जानता परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि सब बातें जो मैं ने अपने पिता से सुनी हैं सो मैं ने तुम पर प्रगट किई हैं। १६ तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया है कि जाके फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि जो कुछ तुम लोग मेरे नाम से पिता से मांगो वुह तुम्हें देवे। १७ एक दूसरे से प्रीति रखने की मैं तुम्हें आज्ञा करता हों।

१८ यदि संसार तुम से बैर करे तो जानते हो कि तुम्हों से आगे उसने मुझ्से बैर किया। १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनेही से प्रीति रखता परन्तु मैं ने जो तुम्हें संसार से चुन लिया है और तुम संसारके नहीं हो इस लिये संसार तुम से बैर रखता है। २० मैं ने तुम्हें जो कहा उसे चेत करो कि सेवक अपने स्वामी

से बड़ा नहीं यदि उन्हों ने मुझे सताया तो तुम्हें भी सतावेंगे यदि उन्हों ने मेरा बचन पाला है तो तुम्हारा भी पालेंगे। २१ परन्तु मेरे नाम के लिये वे तुम से यह व्यवहार करेंगे क्योंकि वे मेरे प्रेरक को नहीं जानते। २२ यदि मैं आके उन से न कहता तो उनका पाप न होता परन्तु अब उनके पाप का आड़ नहीं। २३ जो मुझ से बैर रखता है सो मेरे पिता से भी बैर रखता है। २४ यदि मैं उन में ऐसे कार्य न किया होता जो किसी मनुष्य ने नहीं किया तो उनका पाप न होता पर अब तो उन्हों ने उन्हें देखा तथापि मुझ से और मेरे पिता से बैर भी किया। २५ परंतु जिसतें उनकी व्यवस्था का बचन पूरा होवे उन्हों ने मुझ से अकारण बैर किया। २६ परंतु जब वुह शान्तिदायक आवे जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजोंगा अर्थात सच्चाई का आत्मा जो पिता से निकलता है तो मुझ पर साक्षी देगा। २७ और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि आरंभ से मेरे संग रहते हो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं जिसतें ठोकर न खाओ। २ वे तुम्हें मंडलियों से बाहर करेंगे हां वुह समय आता है कि जो कोई तुम्हें घात करेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता हों। ३ और इस कारण वे तुम से यह व्यवहार करेंगे कि उन्हों ने न पिता को न मुझे

जाना है। ४ और मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं कि जब समय आये तो चेत करो कि मैं ने उनको तुम्हें कहीं मैं ने आरंभ में ये बातें तुम्हें न कहीं इस कारण कि मैं तुम्हारे संगी था। ५ पर अब मैं अपने प्रेरक पास जाता हों और तुम्में कोई मुझसे नहीं पूछता कि तू कहां जाता है। ६ परन्तु मेरी इन बातों के कहने के कारण तुम शोक से भर गये। ७ तिसपर भी मैं तुम्हें सत्य कहता हों कि मेरा जाना तुम्हारी भलाई के लिये है क्योंकि यदि मैं नजाऊं तो शान्तिदायक तुम्हारे पास न आवेगा परन्तु यदि मैं जाऊं तो उसे तुम पास भेजोंगा। ८ और जब वुह आवेगा तो संसार को पाप का और धर्म का और बिचार का बिषय जनावेगा। ९ पाप का इस लिये कि वे मुझ पर बिश्वास न लाये। १० धर्म का इस लिये कि मैं अपने पिता पास जाता हों और तुम मुझे फेर न देखोगे। ११ बिचार का इस लिये कि इस संसार के राजा का बिचार किया गया है।

१२ तुम्हें कहने को अब भी मुझ पास बहुतसी बातें हैं परन्तु अब तुम उन्हें सहि नहीं सक्ते। १३ पर जब वुह सत्य का आत्मा आवेगा वुह तुम्हें सारी सच्चाई में पहुंचावेगा क्योंकि वुह अपनी न कहेगा परन्तु जो कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा और वुह तुम्हें आगे का भेद बतावेगा। १४ वुह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वुह मेरी में से पावेगा और तुम्हें बतावेगा। १५ पिता का सब

कुछ मेरा है इस लिये मैं ने कहा कि वुह मेरी में से लेके तुम्हें दिखावेगा। १६ तनिक और तुम मुझे न देखोगे और फेर तनिक मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिता पास जाता हों।

१७ तब उसके कितने शिष्यों ने आपुस में कहा कि यह क्या है जो वुह हमें कहता है कि तनिक और तुम मुझे न देखोगे और फेर तनिक और तुम मुझे देखोगे इस कारण कि मैं पिता पास जाता हों? १८ यह क्या है जो वुह कहता है कि तनिक और हम नहीं जानते वुह क्या कहता है? १९ यह जानके कि उन्हों ने उस्से पूछने चाहा यिशु ने उन्हें कहा कि मैं ने जो कहा कि तनिक और तुम मुझे न देखोगे और फेर तनिक और तुम मुझे देखोगे उसे आपुस में पूछ पाछ करते हो? २० मैं तुम्हें सत्य सत्य कहता हों कि तुम रोओगे और बिलाप करोगे परन्तु संसार आनन्द करेगा तुम लोग दुःखी होओगे परन्तु तुम्हारा दुःख सुख होजायगा। २१ जब स्त्री पीड़ित होती है अपना समय पहुंचने के कारण वुह दुःखी होती है परन्तु ज्योंहीं वुह पुत्र जनी तो एक पुरुष के उत्पन्न होने के आनंद के मारे उस पीड़ा को चेत नहीं करती। २२ सो अब तुम लोग दुःखी हो परन्तु मैं तुम्हें फेर देखोंगा और तुम्हारा मन आनंदित होगा और तुम्हारा आनंद तुम से कोई न लेगा। २३ तुम उस दिन मुझसे कुछ न पूछोगे मैं तुम से

सच सच कहता हों कि मेरे नाम से जो कुछ तुम पिता से मांगोगे वुह तुम्हें देगा। २४ अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा, मागो और तुम पाओगे जिसतें तुम्हारा आनंद परा होवे।

२५ मैं ने ये बातें तुम्हें दृष्टांतों में कहीं परन्तु समय आता है जब मैं तुम्हें दृष्टांतों में फेर न कहोंगा पर मैं पिता के विषय में तुम्हें खोल के देखाओंगा। २६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम्हें नहीं कहता कि मैं तुम्हारे कारण पिता से प्रार्थना करोंगा। २७ क्योंकि पिता आपही इस कारण तुम्हें प्यार करता है कि तुम ने मुझे प्यार किया है और विश्वास लाये हो कि मैं ईश्वर से निकला हों। २८ मैं पिता से निकल के जगत में आया हों फेर जगत को छोड़ के पिता पास जाता हों।

२९ उसके शिष्यों ने उसे कहा, देखो अब आप बिन दृष्टान्त खोलके कहते हैं। ३० अब हमें निश्चय है कि आप सब कुछ जानते हैं और अधीन नहीं कि कोई आप से पूछे इस्से हमें निश्चय हुआ कि आप ईश्वर से निकल आये हैं। ३१ यिशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम लोग अब प्रतीति करते हो? ३२ देखो घड़ी आती है हां अब पहुंची है कि तुम्में से हर एक छिन्न भिन्न होके अपना अपना मार्ग पकड़ेगा और मुझे अकेला छोड़ेगा तथापि मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता

मेरे संग है। ३३ मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं हैं जिसतें मुझ में कुशल पाओ जगत में तुम लोग दुःख पाओगे परन्तु निश्चिन्त रहो मैं ने जगत को जीता है।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

१ यिशु ने यह कथा समाप्त करके स्वर्ग की ओर अपनी आंख उठाके कहा, हे पिता घड़ी पहुंची है अपने पुत्र को महिमा दे जिसतें तेरा पुत्र भी तुझे महिमा देवे। २ जैसा तू ने उसे सकल प्राणी पर पराक्रम दिया है कि वुह उन सभों को जिन्हें तू ने उसे दिया है अनन्त जीवन देवे। ३ और अनन्त जीवन यह है कि तुझे अकेला सच्चा ईश्वर और यिशु मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें। ४ मैं ने पृथिवी पर तेरी महिमा किई है जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया है मैं उसे कर चुका हों। ५ और अब हे पिता तू मुझे अपने संग उस महिमा से महिमा दे जो जगत के होने से आगे मैं तेरे पास रखता था। ६ जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया है मैं ने तेरा नाम उन पर प्रगट किया है वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया है और उन्हों ने तेरे बचन को धारण किया है। ७ अब उन्हों ने जाना है कि सब कुछ जो तू ने मुझे दिया है सो तेरी ओर से हैं। ८ क्योंकि जो बातें तू ने मुझे दिईं हैं सो मैं ने उन्हें दिईं हैं और उन्हों ने ग्रहण किया और निश्चय जाना है कि मैं तुझ से निकला और वे बिश्वास लाये ह

कि तू ने मुझे भेजा। ९ मैं उनके लिये प्रार्थना करता हों मैं संसार के लिये नहीं परन्तु उनके लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है प्रार्थना करता हों क्योंकि वे तेरे हैं। १० और मेरे सब तेरे हैं और तेरे मेरे हैं और मैं ने उनसे महिमा पाई है। ११ मैं जगत में आगे न रहोंगा परन्तु ये जगत में हैं और मैं तेरे पास आता हों हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझे दिया है अपने नाम से उनकी रक्षा कर जिसतें वे हमारी नाईं एक होवें। १२ जब लों मैं उनके संग जगत में था तेरे नाम से मैं उनकी रक्षा करता था जिन्हें तू ने मुझे दिया मैं ने उनकी रक्षा किई है और उनमें से नाश के पुत्र को छोड़ कोई नष्ट न हुआ जिसतें लिखा हुआ पूरा होवे। १३ परन्तु अब मैं तेरे पास आता हों और ये बातें जगत में कहता हों जिसतें मेरा आनंद उनमें पूरा होवे।

१४ मैं ने तेरा वचन उन्हें दिया है और जगत ने उन से बैर किया है क्योंकि वे जगत के नहीं हैं जैसा मैं जगत का नहीं हों। १५ मैं उन्हें जगत से उठालेने के लिये प्रार्थना नहीं करता परन्तु उन्हें दुष्ट से बचालेने को। १६ जैसा मैं जगत का नहीं तैसा वे जगत के नहीं। १७ उन्हें अपनी सच्चाई से पवित्र कर तेरा वचन सच्चाई है। १८ जैसा तू ने मुझे जगत में भेजा है तैसा मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है। १९ उनके लिये मैं

आप को पवित्र करता हों जिसतें वे भी सच्चाई से पवित्र हों।

२० केवल उनके लिये मैं प्रार्थना नहीं करता परंतु उन्हों के लिये भी जो उनके उपदेश से मुझ पर बिश्वास लावेंगे। २१ जिसतें वे सब एक होवें जैसा कि हे पिता तू मुझ में और मैं तुझ में वे भी हम्में एक होवें जिसतें संसार बिश्वास लावे कि तू ने मुझे भेजा है। २२ और वुह महिमा जो तू ने मुझे दिई है मैं ने उन्हें दिई है कि जैसा हम एक हैं तैसा वे एक होवें। २३ मैं उनमें और तू मुझ में कि वे एक में सिद्ध होवें और जिसतें संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा है और जैसा तू ने मुझे प्यार किया है तैसा उन्हें भी प्यार किया है।

२४ हे पिता मैं चाहता हों कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है जहां मैं हों वे भी मेरे संग होवें जिसतें वे मेरी महिमा को, जो तू ने मुझे दिई है देखें क्योंकि तू ने मुझ पर जगत की उत्पत्ति से आगे प्रेम किया है। २५ हे धार्म्मिक पिता संसार ने तुझे नहीं जाना है परन्तु मैं ने तुझे जाना है और इन्हों ने जाना है कि तू ने मुझे भेजा है। २६ और मैं ने तेरा नाम उन पर प्रगट किया है और प्रगट करोंगा कि जिस प्रेम से तू ने मुझ पर प्रेम किया है वुह प्रेम उनमें होवें और मैं उनमें।

१८ अाठारहवां पर्व्ब ।

१ यिशु ये बातें कहिके अपने शिष्यों के संग कदरून नाले पार गया जहां एक बारी थी जिसमें वुह और उसके शिष्य गये। २ और उसका छलदायक यिहूदा भी वुह स्थान जानता था क्योंकि यिशु बारंबार अपने शिष्यों के संग यहां जाया करता था। ३ तब प्रधान याजकों और फिरूसियों से एक जथा और प्यादे पलीता और दीपक और हथियार सहित लेके यिहूदा वहां आया। ४ पर यिशु सब कुछ, जो उस पर बीता था जान के बाहर निकल के उन्हें कहा कि तुम लोग किसे ढूंढ़ते हो? ५ उन्हों ने उत्तर दिया कि यिशु नासरी को यिशु ने उन्हें कहा कि मैं हों उस समय उसका छलदायक यिहूदा भी उनके संग खड़ा था। ६ ज्योंहीं उसने उन्हें कहा कि मैं हों त्योंहीं वे पीछे हट के भूमिपर गिरपड़े। ७ तब उसने उनसे फेर पूछा कि तुम लोग किसे ढूंढ़ते हो वे बोले कि यिशु नाशरी को। ८ यिशु ने उत्तर दिया कि मैं ने तो तुम्हें कहा कि मैं हों सो यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने देउ। ९ जिसतें उसका कहा हुआ बचन पूरा होवे कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है मैं ने उनमें से एक को न खोया। १० तब शिमोन पथर ने अपना खड्ग खींचा और प्रधान याजक के सेवक पर चलाया और उसका दहिना कान उड़ा दिया उस सेवक का नाम मलकूस था। ११ तब

यिशु ने पथर से कहा कि अपना खड्ग काठी में कर जो कटोरा मेरे पिता ने मुझे दिता है क्या मैं उसे न पीओं ?

१२ तब जथा और सेनापति और यिहूदियों के प्यादों ने यिशु को पकड़के बांधा। १३ और उसे पहिले अन्नास पास लेगये क्योंकि वुह कयाफा का ससुर था जो उस बरस प्रधान याजक था। १४ यह वही कयाफा था जिसने यिहूदियों को मंत्र दिया कि लोगों के लिबे एक मनुष्य का मरना आवश्यक है।

१५ तब शिमोन पथर दूसरे शिष्य के संग होके यिशु के पीछे होलिया वुह शिष्य प्रधान याजक का जाना ऊआ था और यिशु के साथ प्रधान याजक के आंगनमें गया। १६ परन्तु पथर द्वार पर बाहर खड़ारहा तब वुह दूसरा शिष्य, जो प्रधान याजक का जाना ऊआ था, बाहर गया और द्वारपाली को कहिके पथर को भीतर लाया। १७ तब द्वारपाली दासी ने पथर को कहा "तूभी इस मनुष्य के शिष्यों में से नहीं?" वुह बोला कि मैं नहीं हों। १८ अब सेवक और प्यादे कोइलोंकी आग सुलगा के जाड़ेके मारे खड़ेहोके तापते थे और पथर उनके संग खड़ा तापरहा था।

१९ तब प्रधान याजक ने यिशु से उसके शिष्यों के और उसके उपदेश के विषय में पूछा। २० यिशु ने उसे उत्तर दिया कि मैं ने संसार को खोलके कहा मैं

ने सदा मंडली में और मन्दिर में जहां यिहूदी नित्य एकट्ठे होते हैं सिखाया और गुप्त में मैं ने कुछ न कहा। २१ आप मुझे क्यों पूछते हैं? जिन्हों ने मुझे सुना उनसे पूछिये कि मैं ने उन्हें क्या कहा जो मैं ने कहा सो वे जानते हैं। २२ जब उसने यों कहा तब पासके खड़े हुए प्यादों में से एकने यिशु को थपेड़ा मार के कहा कि तू प्रधान याजक को ऐसा उत्तर देता है? २३ यिशु ने उसे उत्तर दिया कि यदि मैं ने बुरा कहा तो बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि अच्छा तो तू मुझे क्यों मारता है? २४ और अन्नासने उसे बंधा हुआ कयाफा प्रधान याजक पास भेजा।

२५ तब शिमोन पथर खड़ा ताप रहा था सो उन्हों ने उसे कहा, कि "तू भी उसके शिष्यों में से है? उसने मुकर के कहा कि मैं नहीं हों। २६ प्रधान याजक के सेवकों में से एक ने कहा, जिसके कुटुंब का कान पथर ने काटा था, क्या मैं ने तुझे उसके संग बारी में नहीं देखा? २७ तब पथर फेर मुकर गया और तुरन्त कुक्कुट बोला।

२८ तब वे यिशु को कयाफा कने से बिचारस्थान में लाये और अब बिहान हुआ परन्तु वे आप बिचार स्थान में न गये जिसतें अशुद्ध न हों परन्तु जिसतें वे पारजाना खायें। २९ इस लिये पिलात उन पास निकल आया और बोला कि तुम लोग इस मनुष्य पर

क्या अपबाद लगाते हो? ३० उन्हों ने उत्तर देके कहा कि यदि यह अपराधी न होता तो हम उसे आप को न सौंपते। ३१ पिलात ने उन्हें कहा कि तुम उसे लेजाओ और अपनी व्यवस्था के समान उसका न्याय करो इस लिये यिहूदियों ने उसे कहा कि हमें उचित नहीं कि किसी को घात करें। ३२ यों यिशु का कहा हुआ बचन पूरा हुआ कि वुह किस रीति से मरेगा।

३३ तब पिलात बिचार स्थान में फेर गया और यिशु को बुलाके कहा क्या "तू यिहूदियों का राजा है? ३४ यिशु ने उसे उत्तर दिया कि आप यह बात आप से कहते हैं अथवा औरों ने मेरे विषय में आप से कही? ३५ पिलात ने उत्तर दिया कि क्या मैं यिहूदी हों? तुझे तेरेही लोगों ने और प्रधान याजकों ने मुझे सौंप दिया तू ने क्या किया है? ३६ यिशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यिहूदियों को सौंपा न जाता पर मेरा राज्य तो यहां का नहीं। ३७ तब पिलात ने उसे कहा कि " तू राजा है?" यिशु ने उत्तर दिया कि आप ठीक कहते हैं कि मैं राजा हों मैं इसी लिये उत्पन्न हुआ और इसी कारण मैं जगत में आया कि सच्चाई पर साक्षी देउं जो कोई सत्य से है सो मेरी सुनता है पिलात ने उसे कहा कि सच्चाई क्या है।

३८ और यह कहिके वुह फेर यिहूदियों के पास गया और उन्हें बोला कि मैं उस पर कुछ दोष नहीं पाता। ३९ परन्तु तुम्हारा एक व्यवहार है कि मैं तुम्हारे लिये पारजाना पर्ब्ब में एक को छोड़ देउं, तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियों के राजा को छोड़ देउं ? ४० उन सभों ने फेर चिल्ला के कहा कि इस मनुष्य को नहीं परन्तु बरब्बास को और बरब्बास बटमार था।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ तब पिलात ने यिशु को कोड़ा मारा। २ और योद्धाओं ने कांटों का मुकुट गूंथ के उसके सिर पर रक्खा और उसे बैंजनी वस्त्र पहिना के कहा। ३ कि यिहूदियों के राजा प्रणाम और उन्हों ने उसे थपेड़े मारे। ४ तब पिलात ने फेर बाहर जाके उन्हें कहा कि देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हों जिसतें तुम जानो कि मैं उसका कुछ दोष नहीं पाता। ५ तब यिशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर आया और पिलात ने उन्हें कहा कि इस मनुष्य को देखो। ६ जब प्रधान याजकों और धावनों ने उसे देखा तो चिल्लाके बोले कि "क्रूस पर मारिये क्रूस पर मारिये, पिलात ने उन्हें कहा तुम उसे लेओ और क्रूस पर मारो क्योंकि मैं उस पर कुछ दोष नहीं पाता। ७ यिहूदियों ने उसे उत्तर दिया कि हम व्यवस्था रखते हैं और

हमारी व्यवस्था की रीति से वुह घात के योग्य है क्योंकि उसने अपने को ईश्वर का पुत्र ठहराया।

८ जब पिलात ने यह बचन सुना वुह अधिक डर गया। ९ और बिचार स्थान में फेर जाके यिशु से कहा कि तू कहां का है? परन्तु यिशु ने उसे कुछ उत्तर न दिया। १० तब पिलात ने उसे कहा क्या तू मुझ्से नहीं बोलता? क्या नहीं जानता कि मैं पराक्रम रखता हों चाहों तुझे क्रूस पर मारों चाहों छोड़ देउं। ११ यिशु ने उत्तर दिया कि यदि आप को ऊपर से दिया न जाता तो मुझ पर आप का कुछ पराक्रम न होता सो जिसने आप को मुझे सौंप दिया उसका अधिक पाप है।

१२ उस समय से पिलात ने उसे छोड़ देने चाहा पर यिहूदियों ने चिल्ला के कहा कि यदि आप इस मनुष्य को छोड़ें तो आप कैसर के मित्र नहीं जो अपने को राजा ठहराता है सो कैसर के बिरुद्ध कहता है। १३ पिलात यह बात सुन के यिशु को बाहर लाया और बिचार आसन पर उस स्थान में जो चबूतरा कहावता है बैठा परन्तु इब्री भाषा में गब्बासा है। १४ और अब पारजाना की बनाउरी थी और छठवीं घड़ी के निकट था और उसने यिहूदियों को कहा कि अपने राजा को देखो। १५ तब वे चिल्लाये कि "लेजाइये लेजाइये उसे क्रूस पर मारिये पिलात ने कहा कि मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर मारों? प्रधान याजकों ने

उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं। १६ उसने इसलिये उसके तईं क्रूस पर मारे जाने को उन्हें सैांप दिया ओर उन्हों ने यिशु को पकड़ा ओर लेगये।

१७ ओर अपना क्रूस उठाये ऊए वुह उस स्थान को गया जो खोपड़ी का कहावता है जिसका अर्थ इबरी में गलगता है। १८ वहां उन्हों ने उसे ओर उसके संग ओर दो को दहिने बायें ओर यिशु को बीच में क्रूस पर मारा।

१९ ओर पिलात ने एक नामपत्र लिख के क्रूस पर लगा दिया वुह लिखा ऊआ यह था कि "यिशु नासरी यिह्नदियों का राजा"। २० इस नामपत्र को बऊतेरे यिह्नदियों ने पढ़ा क्योंकि जिस स्थान में यिशु क्रूस पर खींचा गया था सो नगर के पास था ओर वुह इबरी ओर यूनानी ओर लातीनी में लिखा था। २१ तब यिह्नदियों के प्रधान याजकों ने पिलात से कहा कि यिह्नदियों का राजा मत लिख परंतु कि उसने कहा कि मैं यिह्नदियों का राजा हों। २२ पिलात ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिखा सो लिखा।

२३ फेर जब योड्राओं ने यिशु को क्रूस पर टांगा उसके बस्त्रों को लिया ओर चार भाग किये हर योड्रा को एक ओर उसके बागे को भी लिया ओर बागा बिन सीआ ऊपर से नीचलों बुना ऊआ था। २४ इस लिये

वे आपुस में बोले कि हम इसे न फाड़ें परंतु उस पर चिट्ठी डालें कि यह किसे पहुंचता है और वुह लिखा हुआ पूरा हुआ जो कहता है कि उन्हों ने आपुस में मेरे वस्त्र को बांट लिया और मेरे बागे के लिये चिट्ठी डाली सो योद्धाओं ने ऐसाही किया।

२५ अब यिशु के क्रूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहिन क्लेओपास की मरियम और मरियम मजदलिय: खड़ी थीं। २६ यिशु ने अपनी माता को और अपने प्रिय शिष्य को पास खड़े हुए देख के अपनी माता को कहा कि हे स्त्री अपने पुत्र को देख। २७ फेर उसने उस शिष्य को कहा कि अपनी माता को देख और उसी घड़ी से वुह शिष्य उसे अपने घर ले गया।

२८ इसके पीछे यिशु ने जाना कि अब सब कुछ हो चुका जिसतें लिखा हुआ पूरा होवे उसने कहा कि मैं प्यासा हों। २९ अब वहां एक पात्र सिरके से भरा हुआ धरा था उन्हों ने बादल के टुकड़े को सिरके में भिगा के जूफा में लपेट के नल पर रक्खा और उसके मुंह पर लगाया। ३० इस लिये जब यिशु ने सिर के को चीखा तो कहा कि होचुका और सिर झुकाके प्राण सौंप दिया।

३१ और इस लिये कि वुह बनावटी का समय था यिहूदियों ने पिलात से चाहा कि उनकी टांगें तोड़ी

जायें और उतार लेजाये कि लोथ बिश्राम दिन में क्रूस पर न रहने पावे क्योंकि वुह बिश्राम बड़ा दिन था। ३२ तब योद्धाओं ने आके जो उसके साथ क्रूस पर खींचे गये थे पहिले और दूसरे की टांगें तोड़ीं। ३३ परन्तु जब उन्हों ने यिशु पास आके देखा कि वुह मर चुका है तो उन्हों ने उसकी टांगें न तोड़ीं। ३४ परन्तु योद्धाओं में से एक ने भाले से उसका पंजर गोद्दा और तुरन्त उसमें लोहू और पानी निकला।

३५ और जिसने यह देखा उसने साची दिई और उसकी साची सत्य है और वुह जानता है कि सत्य कहता है जिसतें तुम लोग बिश्वास लाओ। ३६ ये बातें इस लिये हुई जिसतें लिखा हुआ पूरा होवे कि उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जायगी। ३७ और फेर लिखा हुआ कहता है कि वे उस पर जिसे उन्हों ने गोदा दृष्टि करेंगे।

३८ और इसके पीछे अरिमतिया के यूसफ ने जो यिहूदियों के डर के मारे छिप के यिशु का शिष्य था आके यिशु की लोथ लेजाने को पिलात से आज्ञा चाही पिलात ने लेने दिया सो वुह आया और यिशु की लोथ को लिया। ३९ और नीकूदीम भी, जो पहिले यिशु पास रात को गया था आया और पचास सेर के लगभग गंधरस और एलुआ मिला के लाया। ४० तब उन्हों ने यिशु की लोथ को लेके यिहूदियों के गाड़ने

की रीति के समान सूती कपड़े में सुगंध के संग लपेटा। ४१ और जिस स्थान में उसे क्रूस पर खींचा था वहां एक बारी थी और उस बारी में एक नई समाधि जिसमें कोई धरा न गया था। ४२ सो उन्हों ने यिशु को यिहूदियों की बनाउरी के लिये वहीं रक्खा क्योंकि वुह समाधि समीप थी।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ अठवारेके आरंभ में मरियम मजद्‌लियः तड़के अंधियारा रहतेही समाधि पर आई और पत्थर को समाधि से टाला हुआ देखा। २ तब वुह शिमोन पथर और उस दूसरे शिष्य के पास, जिसे यिशु प्यार करता था, दौड़ी आई और उन्हें बोली कि कोई प्रभु को समाधि में से लेगये और हम नहीं जानते कि उन्हों ने उसे कहां रक्खा है। ३ इस लिये पथर दूसरे शिष्य के संग होके निकला और समाधि की ओर जाने लगा। ४ सो वे दोनों एकट्ठे दौड़े परन्तु दूसरा शिष्य पथर से आगे बढ़गया और समाधि पर पहिले पहुंचा। ५ उसने झुकके सूती पकड़े पड़े देखे पर भीतर न गया। ६ फेर शिमोन पथर उसके पीछे पहुंचा और समाधि में पैठके सूती कपड़ों को पड़ा देखा। ७ और उसके सिर पर का अंगोछा कपड़े के संग नहीं, परन्तु लपेटा हुआ एक स्थान में अलग पड़ा देखा। ८ तब दूसरा शिष्य भी, जो समाधि पर पहिले आया था, भीतर गया

और देखके प्रतीति किई। ९ क्योंकि वे अब लों लिखे हुए को न जानते थे कि वुह मृतको में से अवश्य जी उठेगा। १० तब शिष्य अपने अपने घर गये।

११ परन्तु मरियम समाधि के पास बाहर रोती खड़ी रही और रोती हुई ज्यों समाधि में देखने को झुकी। १२ तो दो दूतों को श्वेत वस्त्र में एक को सिरहाने और दूसरे को, पैताने में बैठे देखा जहां यिशु की लोथ रक्खी गई थी। १३ उन्हों ने उसे कहा कि हे स्त्री तू क्यों रोती है? उसने उन्हें कहा इस लिये कि वे मेरे प्रभु को लेगये और मैं नहीं जानती कि उन्हों ने उसे कहां रक्खा है। १४ और उसने यों कहिके पीछे फिर के यिशु को खड़े देखा पर न जाना कि वुह यिशु है। १५ यिशु ने उसे कहा कि हे स्त्री तू क्यों रोती है? किसे ढूंढ़ती है? उसने उसे माली समझ के कहा कि हे महाशय यदि आपने उसे यहां से उठाया हो तो मुझे कहिये कि आप ने उसे कहां रक्खा है और मैं उसे लेजाउंगी। १६ यिशु ने उसे कहा कि मरियम उसने फिर के उसे कहा कि रब्बूनी अर्थात हे गुरु। १७ यिशु ने उसे कहा कि मुझे मत छू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता पास ऊपर नहीं गया परन्तु मेरे भाइयों के पास जाके उन्हें कह कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर पास उठ जाता हों। १८ मरियम मजदलियः ने आके शिष्यों से

कहा कि मैं ने प्रभु को देखा और उसने ये बातें मुझे कहीं।

१९ फेर उसी दिन जो अठवारे का पहिला था संध्या के समय में जब सब शिष्य यिहूदियों के डर के मारे स्थान के द्वार बंद करके एकट्ठे थे यिशु आया और मध्य में खड़ा हुआ और उन्हें बोला कि तुम पर कुशल। २० और यों कहिके अपना हाथ और पंजर उन्हें दिखाया तब शिष्य प्रभु को देखके आनंदित हुए। २१ और यिशु ने फेर उन्हें कहा कि तुम पर कल्याण जैसा पिता ने मुझे भेजा है तैसाही मैं तुम्हें भेजता हों। २२ उसने यह कहिके उन पर फूंका और कहा कि धर्मात्मा को लेओ। २३ जिसके पापों को तुम छोड़ते हो उनके लिये छोड़े जाते हैं और जिनके तुम धरते हो उनके धरे हैं।

२४ परन्तु उन बारह में से एक तमा जिसकी पदवी डिदिम थी यिशु के आने में उनके संग न था। २५ इस लिये और शिष्यों ने उसे कहा कि हम ने प्रभु को देखा है परन्तु उसने उन्हें कहा कि जब लों मैं उसके हाथों में कीलों के चिह्न न देखों और कीलों के चिह्न में अपनी अंगुली न करों और अपने हाथ उसके पंजर में न डालों मैं प्रतीति न करोंगा।

२६ आठ दिन के पीछे जब उसके शिष्य फेर भीतर थे और तमा उनके संग था द्वार बंद होते हुए यिशु

आया और बीच में खड़ा होके बोला कि तुम पर कल्याण। २७ तब उसने तमा को कहा कि अपनी अंगुली इधर ला और मेरे हाथों को देख और अपना हाथ इधर बढ़ा और उसे मेरे पंजर में डाल और अप्रतीती मत हो परन्तु प्रतीति कर। २८ तमा ने उत्तर देके उसे कहा कि हे मेरे प्रभु और हे मेरे ईश्वर। २९ यिशु ने उसे कहा कि तमा तू इस लिये प्रतीति करता है कि तू ने मुझे देखा हैं, धन्य वे हैं जिन्हों ने नहीं देखा और प्रतीति करेंगे।

३० और बहुतेरे और लक्षण यिशु ने अपने शिष्यों के आगे दिखाये जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं। ३१ परन्तु ये लिखेगये जिसतें तुम बिश्वास लाओ कि यिशु मसीह ईश्वर का पुत्र है और बिश्वास लाके उसके नाम से अनन्त जीवन पाओ।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे यिशु फेर आप को तिबीरिया के समुद्र के पास शिष्यों को दिखाई दिया और इस रीति से प्रगट हुआ। २ कि शिमोन पथर और तूमा जो डिदिम कहावता है और काना के गालील का नातानाईल और जबदी के बेटे और उसके शिष्यों में से और दो एकट्ठे थे। ३ शिमोन पथर ने उन्हें कहा कि मैं मछली पकड़ने को जाता हों उन्हों ने उसे कहा कि हम भी तेरे संग चलेंगे और निकल के तुरन्त नाव पर

चढ़े और उस रात कुछ न पकड़ा। ४ परन्तु जब बिहान ज़ुआ यिशु तीर पर खड़ा था परन्तु शिष्यों ने न जाना कि वुह यिशु है। ५ तब यिशु ने उन्हें कहा कि हे लड़को तुम्हारे पास कुछ भोजन है? उन्हों ने उसे उत्तर दिया कि नहीं। ६ उसने कहा कि नाव की दहिनी ओर जाल डालो और पाओगे सो उन्हों ने डाला तब मछलियों की बज़ताई के मारे वे उसे खींच न सके। ७ इस लिये उस शिष्य ने, जिसे यिशु प्यार करता था, पथर को कहा कि वुह प्रभु है सो जब शिमोन पथर ने सुना कि वुह प्रभु है उसने अपने मछुए का बस्त्र कटि पर लपेटा (क्योंकि वुह नंगाथा) और आप समुद्र में कूद पड़ा। ८ परन्तु और शिष्य नाव पर जाल को मछलियों समेत खींचते आये क्योंकि वे तीर से दूर न थे परन्तु दोसौ हाथ के अंटकल। ९ ज्यों वे तीर पर आये उन्हों ने वहां कोइलों की आग और उस पर मछली रक्खी ज़ुई और रोटी देखी। १० यिशु ने उन्हें कहा कि उन मछलियों में से जो तुम ने अभी पकड़ी हैं लाओ। ११ शिमोन पथर ने जाके जाल को एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा ज़ुआ खींचा यद्यपि इतनी बज़त थीं तथापि जाल न फटा। १२ यिशु ने उन्हें कहा कि आओ भोजन करें यह जानके कि वुह प्रभु है शिष्यों में से किसी का हियाव न ज़ुआ कि उसे पूछे कि तू कौन है? १३ तब यिशु ने आके रोटी लिई

और उन्हें दिई और मछलियां भी दिईं। १४ यह तीसरे बार है कि यिशु ने जी उठके अपने तईं शिष्यों को दिखाया।

१५ सो जब वे भोजन करचुके यिशु ने शिमोन पथर को कहा कि यूनाके पुत्र शिमोन क्या तू इन से मुझे अधिक प्रीति रखता है? उसने उसे कहा हां हे प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप से प्रीति रखता हों उसने उसे कहा मेरे मेम्नों को चरा। १६ उसने दूसरे बार उसे फेर कहा कि यूना के पुत्र शिमोन त मुझसे प्रीति रखता है? उसने उसे कहा कि हां हे प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप से प्रीति रखता हों उसने उसे कहा कि मेरी भेड़ें चरा। १७ उसने उसे तीसरे बार कहा कि यूना के पुत्र शिमोन तू मुझसे प्रीति रखता है? तब पथर उदास हुआ क्योंकि उसने उसे तीसरे बार कहा कि तू मुझसे प्रीति रखता है तब उसने उसे कहा हे प्रभु आप तो सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि मैं आप से प्रीति रखता हों यिशु ने उसे कहा कि मेरी भेड़ें चरा। १८ मैं तुझे सत्य सत्य कहता हों कि जबलों तू तरुण था तू अपनी कटि बांधता था और जहां कहीं चाहता था जाता था परन्तु जब तू बृद्व होगा तू अपने हाथों को फैलावेगा और दूसरा तेरी कटि बांधेगा और जहां तू न चाहेगा तहां लेजायगा। १९ उसने यह कहिके पता दिया कि वुह किस मृत्यु से ईश्वर की महिमा प्रगट

करेगा और उसने यों कहिके उसे कहा कि मेरे पीछे होले।

२० तब पथर ने फिर के उस शिष्य को पीछे आते देखा जिस्से यिशु प्रीति रखता था (जिसने बिआरी के समय उसकी छाती पर ओठंग के पूछा कि हे प्रभु जो तुझे पकड़वाता है सो कौन है?)। २१ पथर ने उसे देखके यिशु से कहा कि हे प्रभु इस मनुष्य का क्या होगा? २२ यिशु ने उसे कहा कि जो मैं चाहों कि जबलों मैं आओं वुह यहीं ठहरे तो तुझे क्या तू मेरे पीछे चलाआ। २३ तब भाइयों में यह बात फैलगई कि वुह शिष्य न मरेगा परन्तु यिशु ने उसे नहीं कहा कि वुह न मरेगा परन्तु यह कहा कि जो मैं चाहों कि मेरे आने लों वुह ठहरे तो तुझे क्या? २४ यह वुह शिष्य है जिसने इन बातों की साची दिई है और इन्हें लिखा और हमें निश्चय है कि उसकी साची सत्य है। २५ और भी बहुत से कार्य हैं जो यिशु ने किये यदि वे अलग अलग लिखे जाते तो मैं समुझता हों कि उन ग्रंथों को, जो लिखे जाते जगत में भी समाई न होती आमीन।

प्रेरितों की क्रिया ॥

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ हे थियफिल जो कुछ यिशु उस दिन लों करता और सिखावता रहा। २ जब वुह धर्मात्मा के द्वारा से अपने चुनेहुए प्रेरितों को आज्ञा देके ऊपर उठायागया मैं उन्हें अगिले पुस्तक में वर्णन कर चुका। ३ अपने कष्ट के पीछे वुह उनमें बहुत प्रमाणों से जीवता प्रगट हुआ और चालीस दिन लों उन्हें दिखाई दे दे के ईश्वर के राज्य की बातें कहता रहा। ४ और उन्हें एकट्ठे करके आज्ञा किई कि यिरुशालम से बाहर मत जाओ परन्तु पिता की बाचा के लिये बाट जोहो जो मुझ से सुन चुके हो। ५ क्योंकि योहन ने तो जल से स्नान दिया परंतु थोड़े दिन के पीछे तुम धर्मात्मा से स्नान पाओगे।

६ सो अब वे एकट्ठे हुए उन्हों ने यह कहिके उसे पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी समय इसराईल को फेर राज्य देंगे। ७ उसने उन्हें कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि उन समयों अथवा ऋतुन को जानो जिन्हें पिता ने अपनेही बश में रख छोड़ा है। ८ परन्तु जब धर्मात्मा तुम पर आवेगा तब तुमलोग सामर्थ्य पाओगे

और यिरूशालम में और सारे यिहूदियः और सामरः में और पृथिवी के अत्यन्त लों मेरे साक्षी होओगे।

९ और इन बातों को कहिके उनके देखते देखते वुह ऊपर उठाया गया और मेघ ने उसे उनकी दृष्टि से आड़ कर लिया। १० और जब वे उसे ऊपर जाते आकाश की ओर तक रहे थे तो दो मनुष्य उजला वस्त्र पहिने उनके पास खड़े हुए। ११ और कहने लगे कि हे गालीली लोगो तुम लोग खड़े ऊपर स्वर्ग की ओर क्यों ताक रहे हो यही यिशु जो तुम से स्वर्ग पर उठाया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग पर जाते देखा उसी रीति से आवेगा।

१२ तब वे उस पहाड़ से, जो जलपाई का कहावता है, और यिरूशालम से एक बिश्राम दिन के टप्पे पर है, यिरूशालम को फिरे। १३ और वे भीतर आके एक उपरौटी कोठरी में गये जहां पथर और याकूब और योहन और अंद्रया और फिलिप और तमा और बारतलमा और मत्ती और हल्फा का बेटा याकूब और शिमोन ज्वलन और याकूब का भाई यिहूदा रहते थे। १४ ये सब स्त्रियों सहित और यिशु की माता मरियम के और उसके भाइयों के संग मन लगाके प्रार्थना और बिनती कर रहे थे।

१५ और उन्हीं दिनों में शिष्यों के मध्य म, जो अट्ठ काल में एक सौ बीस थे पथर खड़ा होके बोला। १६ हे

मनुष्य भाइयो उस लिखे हुए का पूरा होना अवश्य था जो धर्मात्मा ने दाऊद के द्वारा यिहूदा के विषय में आगे से कहा था जो यिशु के पकड़ने वालों का अगुआ हुआ। १७ क्योंकि वुह हम्में गिना जाता था और उसने इस सेवकाई का भाग पाया। १८ अब इस मनुष्य ने बुराई के दाम से एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके उसका पेट फटगया और उसकी सारी अतड़ियां निकल पड़ीं। १९ और यह बात यिरूशालम के सारे बासियों पर जानी गई यहां लों कि वुह खेत उनकी भाषा में हकलदमा कहावता है अर्थात लोहू का खेत। २० क्योंकि भजन की पुस्तक में लिखा है कि उसका घर उजाड़ होवे और उनमें कोई न बसे और उसका पद दूसरा लेवे। २१ सो जो लोग उस समय से हमारे संग सदा चलते थे अर्थात जब से प्रभु यिशु हम्में आया जाया करता था। २२ योहन के स्नान से आरंभ करके उस दिन लों कि वुह हम्में से उठाया गया उनमें से उचित है कि एक जन जो उसके फेर उठने की साक्षी हो हमारे संग ठहराया जाय।

२३ तब उन्हों ने दो को ठहराया एक यूषफ जो बारसबा कहावता है जिसकी पदवी जसतस हैं और दूसरा मतिया। २४ और वे प्रार्थना में बोले, हे प्रभु जो सब का अन्तर्जामी है दिखा कि इन दोनों में से तू ने किसको चुना है। २५ जिसतें वुह इस सेवकाई और

प्रेरिताई का भाग लेवे जिस्से यिहूदा पाप करके भ्रष्ट हुआ जिसतें अपनेही स्थान को जाय। २६ और उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी मतिया के नाम पर निकली तब वुह ग्यारह प्रेरितो में गिना गया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ और जब पचासवां दिन संपूर्ण आपहुंचा वे सब एक मत होके एक स्थान में एकट्ठे थे। २ तब आकस्मात स्वर्ग से बहुत बड़ी आंधी के शब्द के समान एक शब्द हुआ और उस्से सारा घर जहां वे बैठे थे भरगया। ३ और उन्हें आग की सी जीभ अलग अलग दिखाई दिईं और उनमें से हर एक पर पड़ीं। ४ तब सब के सब धर्मात्मा से भर गये अरु आन आन भाषा से कहने लगे जैसा कि आत्मा ने उन से कहवाया था।

५ और कितने भक्त यिहूदी स्वर्ग के तले के हरएक देश से यिरुशालम में आ रहे थे। ६ और जब यह बात फैलगई तब मंडली एकट्ठी होके व्याकुल हुई क्योंकि हर एक ने उन्हें अपनी अपनी भाषा में बोलते सुना। ७ और सब आश्चर्यित और विस्मित हो आपुस में कहने लगे कि देखो क्या ये सब जो बोलते हैं गालीली नहीं? ८ सो कैसा है कि हर एक हम्में से अपने अपने देश की बोली में सुनता है। ९ पर्ती और मादी और ऐलामी और इराकिअजम के बासी और यिहूदिय और कपादूकियः और पनतस और आसिया के। १० और

फ्रिजियः और पंफूलियः और मिसर और लिबिया के उस सिवाने के बासी जो कूरीनी के आस पास है और रूम के परदेशी और यिहूदी और नये यिहूदी। ११ क्रिती और अरबी सुनते हैं कि वे हमारी भाषा में ईश्वर की सुदंर बातें कहते हैं। १२ और उन सभों ने आश्चर्य माना और संदेह में होके एक दूसरे को कहने लगा कि क्या होगा? १३ कितनों ने ठट्ठा करके कहा कि ये लोग नई मदिरा के अमल में हैं।

१४ तब पथर ने उन ग्यारह के संग खड़ा होके उन्हें बड़े शब्द से कहा कि हे यिहूदी मनुष्यो और यिरूशालम के सारे बासियो तुम पर यह जानाजाय और मेरा वचन कान लगाके सुनो। १५ क्योंकि ये जन जैसा तुम लोग समुझते हो मद के अमल में नहीं हैं इस लिये कि यह दिन की तीसरी घड़ी है। १६ परन्तु यह वुह है जो योईल भविष्यद्वक्ता की ओर से कहागया। १७ ईश्वर कहता है कि अंत्य समय में ऐसा होगा कि मैं हर एक जन पर अपना आत्मा उंडेलोंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्य कहेंगी और तुम्हारे तरुण दर्शन देखेंगे और तुम्हारे बृद्ध स्वप्न देखेंगे। १८ मैं उन दिनों में अपने दास और अपनी दासियों पर अपना आत्मा उंडेलोंगा और वे भविष्य कहेंगे। १९ और मैं ऊपर स्वर्ग में अचरज और नीचे पृथिवी पर लक्षण दिखाओंगा अर्थात लोहू और आग और धूए के

उठान। २० प्रभु के उस बड़े और प्रसिद्ध दिन के पहिले सूर्य अंधियारा और चंद्रमा लोहू हो जायगा। २१ और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु के नाम की दोहाई देगा सो उद्धार पावेगा।

२२ हे इसराईली लोगो ये बातें सुनो कि यिशु नासरी एक मनुष्य था जिसका ईश्वर की ओर से होना उन पराक्रमों और आश्चर्यों और लक्षणों से तुम्हें ठहर गया जो ईश्वर ने उसके द्वारा से तुम्हारे मध्य में दिखाया जिन्हें तुम भी जानते हो। २३ ईश्वर के ठहराये गये मत और पूर्व्वज्ञान से सौंपे हुए को तुम्हों ने पकड़ा और पापियों के हाथों से कील गाड़के क्रूस पर टांगकर घात किया। २४ जिसे ईश्वर ने मृत्यु के बंधन को खोल के फेर उठाया क्योंकि यह अनहोना था कि वुह उसके बश में पड़ा रहे। २५ क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है कि मैं ने प्रभु को आगे से सर्बदा अपने आगे देखा कि वुह मेरी दहिनी ओर है न हो कि मैं टल जाऊं। २६ इस लिये मेरा मन मगन है और मेरी जीभ आनन्द मेरा शरीर भी आशा में चैन से रहेगा। २७ क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न छोड़ेगा न अपने धर्मी को सड़ने देगा। २८ तू ने मुझे जीवन के मार्ग का पहिचान दिया है और तू अपने स्वरूप से मुझे आनन्द से भर देगा।

२९ हे मनुष्य भाइयो मैं पित्राध्यक्ष दाऊद के विषय

में तुम्हें मन खोल के कहों वुह तो मरगया और गाड़ा भी गया और आज लों उसकी समाधि हम्में है। ३० सो वुह भविष्यद्वक्ता होके जानता था कि ईश्वर ने उस्से किरिया खाके कहा कि मैं मसीह को शरीर के विषय में तेरे बंश में से उठाओंगा जिसतें तेरे सिंहासन पर बैठे। ३१ इसे आगे देख के उसने मसीह के जीउठने की कही कि उसका प्राण परलोक में छोड़ा न जायगा न उसका देह सड़ने पावेगा। ३२ इस यिशु को ईश्वर ने उठाया है जिस बात के हम सब साची हैं। ३३ सो ईश्वर की दहिनी और बढ़ाया जाके और पिता से बाचा पाके उसने यह बहाया जो तुम लोग अब देखते और सुनते हो। ३४ क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं गया परन्तु उसने कहा कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा। ३५ जब लों मैं तेरे बैरियों को तेरे पांव की पीढ़ी करों तू मेरी दहिनी ओर बैठ। ३६ सो इसराईल का सारा घराना निश्चय जाने कि ईश्वर ने उसी यिशु को जिसे तुमलोगों ने क्रूश पर टांगा प्रभु और मसीह किया।

३७ जब उन्हों ने यह सुना तो उनके मन बेधगये और पथर और और प्रेरितों को बोले कि हे मनुष्य भाइयो हम क्या करें? ३८ तब पथर ने उन्हें कहा कि पछताओ और तुम्में से हरएक पाप मोचन के कारण यिशु मसीह के नाम से स्नान पावें और तुम लोग धर्मात्मा दान पाओगे। ३९ क्योंकि यह बाचा तुम से

और तुम्हारे बालकों से है और उन सभों से जो दूर हैं जितनों को हमारा प्रभु ईश्वर बुलावेगा। ४० और उसने बज्जतेरे और बचन से साची ला ला के और उपदेश कर करके कहा कि आपको इस हठीली पीढ़ी से बचाओ।

४१ तब जिन्हों ने उसका बचन आनंद से ग्रहण किया उन्हों ने स्नान पाया और उसी दिन अंटकल में तीन सहस्र प्राणी उन में मिलगये। ४२ और वे प्रेरितों के उपदेश और संगति और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में नित्य बने रहे। ४३ और हर एक प्राणी पर डर पड़ी और बज्जत से आश्चर्य और लक्षण प्रेरितो से दिखाये गये। ४४ और सब जो बिश्वास लाये एकट्ठे थे और सब बस्तें सब की थीं। ४५ और अपनी अपनी संपत्ति और सामग्री को बेच बेच हरएक के आवश्यक के समान सभों को बांटते थे। ४६ और वे एक मता होके प्रतिदिन मंदिर में रहते थे और घर घर रोटी तोड़ के प्रसन्नता और मन की खराई से खाते थे। ४७ और ईश्वर की स्तुति करते और सारे लोगों में आदर पाते थे और प्रभु मंडली में उद्धारितों को प्रतिदिन अधिक करता था।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ फेर पथर और योहन एकसाथ प्रार्थना की जून नवई घड़ी मंदिर में जाने लगे। २ और लोग जन्म के

एक लंगड़े को लेके प्रतिदिन मंदिर के सुन्दर नाम द्वार पर, रखते थे कि उनसे जो मन्दिर में जाते थे भीख मांगे। ३ जब उसने पथर और योहन को मन्दिर में जाते देखा तो उनसे भीख मांगी। ४ तब पथर ने योहन सहित उसे टक लगा के देखके कहा कि हमें ताक रख। ५ और वुह उनसे कुछ पावने की आशा से उन्हें तक रहा। ६ तब पथर ने कहा कि सोना चांदी मेरे पास नहीं परन्तु जो मेरे पास है मैं तुझे देता हों यिशु मसीह नासरी के नाम से उठ और चल। ७ और उसने उसका दहिना हाथ पकड़ के उठाया और तुरन्त उसके पांओं और घुट्टियां बल पा गईं। ८ और कूद के वुह उठ खड़ा हुआ और चलता फिरता और उछलता कूदता और ईश्वर की स्तुति करता हुआ उनके संग मंदिर में गया। ९ और सब लोगों ने उसे चलते फिरते और ईश्वर की स्तुति करते देखा। १० और चीन्हा कि यह वही है जो मन्दिर के सुन्दर द्वार पर भीख मांगते बैठता था और जो उस पर बीत गया था वे उस्से निपट आश्चर्य करके बिस्मित हुए।

११ और जब वुह चंगा किया गया लंगड़ा पथर और योहन को लपटा जाता था सारे लोग सुलेमानी ओसारे में बड़े आश्चर्य से उसकी ओर दौड़े आये। १२ तब पथर ने देख के मंडली से कहा, हे इसराईली मनुष्यो तुम लोग इस्से क्यों आश्चर्य करते हो? अथवा

क्यों हमें देखरहे हो जैसा कि हम ने अपने पराक्रम अथवा भक्ति से इस मनुष्य को चलाया। १३ इब्राहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे पितरों के ईश्वर ने अपने पुत्र यिशु को ऐश्वर्य्यमान किया जिसे तुम्हों ने सौंप दिया और पिलात के आगे उस्से मुकर गये जब उसने उसे छुड़ाने को ठहराया था। १४ परन्तु तुम उस पवित्र और धर्ममय से मुकर गये और एक बधिक को चाहा कि तुम्हारे लिये छोड़ा जाय। १५ और जीवन के अध्यक्ष को मार डाला जिसे ईश्वर ने मृतकों में से उठाया और उस बात के हम साक्षी हैं। १६ और उसके नाम पर विश्वास लाने के द्वारा से उसने इस मनुष्य को, जिसे तुम लोग देखते और जानते हो दृढ़ किया हां उसका नाम और बिश्वास लो उस्से है तुमसब के सन्मुख उसे ऐसा ठीक चंगा किया।

१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हों कि तुम लोग और तुम्हारे प्रधानों ने भी यह अज्ञानता से किया। १८ परन्तु जो कुछ ईश्वर ने अपने सारे भविष्यद्वक्तों के द्वारा से आगे कहा था कि मसीह कष्ट पावेगा इसी रीति से उसने पूरा किया। १९ सो अब पछताओ और फिरो जिसतें तुम्हारे पाप मिटाए जांये और प्रभु के पास से शांत होने के समय आवे। २० और वुह यिशु मसीह को भेजेगा जिसका समाचार तुम्हें आगे से दिया गया है। २१ क्योंकि जब लों सारी बातें, जो

ईश्वर ने अपने सारे पवित्र भविष्यद्वक्तों के द्वारा आदि से कहा पूरा न हों अवश्य है कि स्वर्ग उसे लिये रहे। २२ क्योंकि मूसा ने पितरों से ठीक कहा था कि प्रभु जो तुम्हारा ईश्वर है तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये एक भविष्यद्वक्ता को मेरे समान उठावेगा तुम सारी बातों में, जो वुह तुम्हें कहे उसे मानियो। २३ और ऐसा होगा कि हर एक प्राणी जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुनेगा सो लोगों में से निकाल दिया जायगा। २४ हां और सारे भविष्यद्वक्तों ने, समुईल से लेके और वे जो उसके पीछे आये हैं जितनों ने कहा है इन दिनों का भी सन्देश दिया है। २५ तुम लोग उन भविष्यद्वक्तों के सन्तान हो और उस नियम के जो ईश्वर ने हमारे पितरों से करके इबराहीम से कहा कि तेरे बंश से पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे। २६ ईश्वर ने अपने पुत्र यिशु को उठाके तुम्हों से हरएक को उसकी बुराइयों से फिराके पहिले तुम्हें आशीष देने को भेजा।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ और जब वे लोगों से कहि रहे थे याजक और मंदिर के प्रधान और जादूकी। २ लोगों को सिखाने से और यिशु से मृतक का जी उठना प्रचारने से उदास होके उन पर चढ़ आये। ३ उन्हों ने उन पर हाथ डाले और दूसरे दिन लों बंदीगृह में रक्खा क्योंकि अब

सांझ ऊई थी। ४ तदभी जिन्हों ने बचन सुना उनमें से बज़तेरे विश्वास लाये ओर वे अंटकल में पांच सहस्र ऊए।

५ और दूसरे दिन उनके प्रधान और प्राचीन और अध्यापक। ६ और प्रधान याजक हन्ना और कयफा और योहन और सिकंदर और जितने प्रधान याजक के कुटुंब थे यिरूशालम में एकट्ठे ऊए। ७ और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछा कि तुम ने किस पराक्रम और किस नाम से यह किया? ८ तब पथर ने धर्मात्मा से भरपूर होके उन्हें कहा कि हे लोगों के प्रधानों और इसराईल के प्राचीनो। ९ यदि उस अच्छे कार्य के बिषय में इस रोगी मनुष्य पर किया गया है हम से आज पूछाजाता है कि वुह क्योंकर चंगा ऊआ। १० तो तुम्हें और इसराईल के लोगों को जाना जाय कि यिशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुमलोगों ने क्रूस पर मारा उसे ईश्वर ने मृतक में से जिलाया उसी से यह मनुष्य तुम्हारे आगे चंगा खड़ा है। ११ यह वुह पत्थर है जिसे तुम थवइयों ने निकम्मा ठहराया जो कोने का सिरा ऊआ है। १२ और किसी दूसरे में मुक्ति नहीं क्योंकि स्वर्ग के तले कोई दूसरा नाम मनुष्यों को नहीं दिया गया है जिस्से हमलोग उद्धार पासकें।

१३ और जब उन्हों ने पथर और योहन का हियाव देखा और समझा कि वे अपढ़े और ऐसे वैसे हैं वे

बिस्मित ज्ञए श्रीर जान गये कि वे यिशु के संग थे। १४ श्रीर उस चंगा कियागया मनुष्य को उनके संग खड़ा देखके निरुत्तर ज्ञए। १५ परन्तु उन्हें सभा से बाहर करके आपुस में बिचारने लगे। १६ कि हम इन मनुष्यों को क्या करें क्योंकि यह यिरूशालम के सारे बासियों पर प्रगट है कि उन्हों ने एक बड़ा आश्चर्य दिखाया श्रीर हम लोग उसे नाह नहीं कर सक्ते। १७ परन्तु जिसतें यह बात लोगों में अधिक न फैले आओ हम उन्हें बज्जत धमकावें कि वे इस नाम की चर्चा फेर किसी से न करें। १८ श्रीर उन्हें बुला के चिता दिया कि यिशु के नाम से फेर मत कहो श्रीर मत सिखाओ।

१९ तब पथर श्रीर योहन ने उत्तर देके उन्हें कहा ईश्वर के आगे क्या ठीक है हम तुम्हें अथवा ईश्वर को अधिक मानें तुमहीं बिचारो। २० क्योंकि यह अनहोना है कि हम उन बातों को जिन्हें हम ने देखा श्रीर सुना है न कहें। २१ श्रीर लोगों के डरके मारे उन्हें दंड देने का कारण कुछ न पाके फेर धमका के उन्हें छोड़ दिया क्योंकि उस कार्य के लिये सब ईश्वर की स्तुति करते थे। २२ श्रीर जिसपर चंगा होने का आश्चर्य ज्ञआ वुह चालीस बरस से ऊपर का था।

२३ श्रीर बिदा होके वे अपने संगियों के पास गये श्रीर सब कुछ जो प्रधान याजकों श्रीर प्राचीनों ने कहा था उन्हें कहि सुनाये। २४ श्रीर वे सुनके एक साथ ईश्वर

की ओर बड़े शब्द से बोले कि हे प्रभु तू वुह ईश्वर है जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उनमें हैं बनाया। २५ तू ने अपने दास दाऊद के द्वारा से कहा कि अन्यदेशी क्यों कुड़कुड़ाते हैं और लोग क्यों बृथा सोचते हैं। २६ पृथिवी के राजा लैस हुए और प्रधान प्रभु के और मसीह के बिरोध में एकट्ठे हुए। २७ क्योंकि सच मुच तेरे धर्म्मी पुत्र यिशु के बिरोध में जिसे तू ने अभिषिक्त किया। २८ जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मंत्र ने पहिले ठहरा रक्खा था उसे हिरोद और पन्तिय पिलात अन्यदेशियों और इसराईली लोगों के संग करने को युक्ति बांधी है। २९ और हे प्रभु अब उनकी धमकियों को बूझ और अपने दासों को अपने बचन निर्भय से कहने को बर दे। ३० और अब इस लिये अपना हाथ चंगा करने को बढ़ा कि तेरे पवित्र पुत्र यिशु के नाम से लक्षण और आश्चर्य प्रगट होवें। ३१ और उनके प्रार्थना करते हुए जिस स्थान में वे एकट्ठे थे सो हिलगया और वे सब धर्म्मात्मा से भरगये और ईश्वर का बचन निर्भय से बोले।

३२ और बिश्वासियों की मंडली एक मन और एक जीव थी और किसी ने अपनी किसी संपत्ति को अपनी न समझा परन्तु सारी वस्तु सब की थी। ३३ और प्रेरितों ने बड़े पराक्रम से प्रभु यिशु के फेर उठने पर साक्षी दिई और उन सभों पर बड़ा अनुग्रह हुआ।

३४ और उनमें कोई कंगाल न था क्योंकि जितने भूमि अथवा घर रखते थे उन्हें बेंच बेंच उसके दाम को लाते थे। ३५ और प्रेरितों के चरण पर धरते थे और हर एक के आवश्यक के समान भाग दिया जाता था। ३६ और योसे जिसको प्रेरितों ने बरनबा करके कहा अर्थात शांति का पुत्र जो एक लेवी और कुपरसी था। ३७ सो अपने अधिकार को बेंचके रोकड़ को ले प्रेरितों के चरण पर रक्खा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ परन्तु हनानिया नाम एक मनुष्य ने अपनी पत्नी सफीरा के संग एक संपत्ति बेंची। २ और मोल में से कुछ रख छोड़ा उसकी पत्नी भी जानती थी और कुछ लाके प्रेरितों के चरण पर रक्खा। ३ तब पथर ने कहा, हे हनानिया क्यों तेरे मन में शैतान समागया? तू धर्मात्मा के आगे झूठा हुआ और भूमि के मोल में से कुछ रखछोड़ा? ४ जब लों यह धरी थी क्या तेरी न थी? और जब बेंची गई तो क्या तेरे बंश में न रही? तू ने अपने मन में इस बात को क्यों आने दिया? तू मनुष्य के आगे नहीं परन्तु ईश्वर के आगे झूठा हुआ। ५ और हनानिया ये बातें सुनतेही गिरपड़ा और मरगया तब जिन्हों ने ये बातें सुनीं उन पर बड़ी डर पड़ी। ६ तब तरुणों ने आके उसे वस्त्र में लपेट बाहर लेजाके गाड़ दिया।

७ और पहर भर के अंटकल बीते उसकी स्त्री उस बात को अजाने हुए आई। ८ तब पथर ने उसे कहा, मुझे बतला तू ने इतने को बेंची वुह बोली हां इतने को। ९ फेर पथर ने उसे कहा कि यह कैसा है कि तुम ने ईश्वर के आत्मा को परखने को युक्ति किया देख जिन्हों ने तेरे पति को गाड़ा उनके पांव द्वार पर हैं और तुझे भी लेजायंगे। १० तब तुरन्त वुह उसके चरण पर गिरके मरगई और तरुणों ने आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले जा उसके पतिके लग गाड़ा। ११ तब सारी मंडली पर और इन बातों के सारे सुनवैयों पर बड़ी डर बड़ी।

१२ और लोगों में प्रेरितों के हाथों से बहुत से आश्चर्य और लक्षण दिखाये गये और वे एकमता हो सुलेमान के ओसारे में रहते थे। १३ और रहे हुए लोगों में से किसी को उनमें मिलने को साहस न हुआ परन्तु मंडली ने उनकी प्रतिष्ठा किई। १४ तब पुरुष और स्त्री मंडली की मंडली बिश्वास लाते हुए प्रभु में आनंद से मिलते गये। १५ यहांलों कि लोग रोगियों को मार्गों में ला ला के बिछौने और खाटों पर रखते थे जिसतें चलते हुए पथर की परछाहीं उनमें से किसी पर पड़े। १६ और बहुत से लोग चारों ओर के नगरों के भी रोगियों को और अपवित्र आत्मा से ग्रस्तों को यिरुशालम में लाते थे और सब चंगे होते थे।

१७ तब प्रधान याजक और उसके सारे संगी जो जादूकियों के मत के थे ज्वलित हो। १८ प्रेरितो पर हाथ डाले और उन्हें सामान्य बन्दीगृह में बन्द किया। १९ परन्तु प्रभु के एक दूत ने रात को बन्दीगृह के द्वारों को खोला और उन्हें बाहर लेजाके कहा। २० जाओ मंदिर में खड़े होके इस जीवन के सारे बचन लोगों से कहो। २१ यह सुन वे बड़े तड़के मंदिर में जाके उपदेश करने लगे परन्तु प्रधान याजक और उसके संगियों ने आके सभा को और ईसराईल के सन्तानों के सारे प्राचीनों को एकट्ठे बुलाया और बन्दीगृह में भेजके उन्हें मंगाया। २२ परन्तु धावनों ने आके उन्हें बन्दीगृह में न पाया तब लौट के उन्हें संदेश दिया। २३ कि हम ने तो बड़ी चौकसी से बंदीगृह को बंद और पहरों को द्वारों के आगे खड़ा पाया परन्तु खोल के किसी को भीतर न पाया। २४ सो जब श्रेष्ठ याजक और मंदिर के प्रधान और प्रधान याजकों ने ये बातें सुनीं तो उनके विषय में संदेह में पड़े कि यह क्या होगा। २५ परन्तु एक ने आके उनसे कहा, देखो जिन मनुष्यों को तुम ने बंदीगृह में डालाथा मंदिर में खड़े ऊए लोगों को उपदेश करते हैं।

२६ तब धावनों को लेके प्रधान गया और उन पर बिना उपद्रव किये ऊए ले आया क्योंकि वे लोगों से डरे ऐसा न हो कहीं पथराये जायें। २७ और उन्हें लाके

सभा के आगे खड़ा किया और प्रधान याजक ने उनसे पूछा। २८ कि हम ने तुम्हें दृढ़ता से न चिताया कि इस नाम से उपदेश मत करो और देखो तुम लोगों ने यिरुशालम को अपने उपदेश से भरदिया है और चाहते हो कि इस मनुष्य का लोहू हम पर धरो। २९ तब पथर और रहे हुए प्रेरितों ने उत्तर देके कहा, हमें उचित है कि ईश्वर को मनुष्य से पहिले मानें। ३० हमारे पितरों के ईश्वर ने यिशु को उठाया जिसे तुम लोगों ने पेड़ पर टांगके घात किया। ३१ उसे ईश्वर ने अगुआ और मुक्तिदाता करके अपनी दहिनी ओर बढ़ाया जिसतें इसराईल को पश्चात्ताप करवाके पापों से छुड़ावे। ३२ और इन बातों के हम लोग साक्षी हैं और धर्म्मात्मा भी जिसे ईश्वर ने आज्ञा पालकों को दिया है।

३३ यह सुन के वे उन पर दांत किचकिचाने लगे और उन सभों को घात करने को परामर्ष किया। ३४ तब समलईल नाम एक फरीसी ने, जो व्यवस्था का ज्ञाता और सब लोगों में आदरमान था उठके प्रेरितों को तनिक बाहर करने की आज्ञा किई। ३५ और उन्हें कहा हे इसराईली मनुष्यो तुम लोग जो कुछ उन मनुष्यों को किया चाहते हो उस्से चौकस रहो। ३६ क्योंकि इन दिनों से आगे तूदा ने उठके आप को कोई महा पुरुष ठहराया और अंटकल में चार सहस्र

जन उस्से मिलगये वुह मारा गया और जितनों ने उसे मान लिया था सब के सब छिन्न भिन्न होके मिटगये। ३७ उसके पीछे यिहूदा गालीली कर लेने के दिनों में उठा और अपने पीछे बहुत से लोगों को खींच लाया वुह भी नष्ट हुआ और जितनों ने उसे माना था वे सब बिथर गये। ३८ सो अब मैं तुम्हों से कहता हों कि इन मनुष्यों से रुके रहो और उन्हें रहने देउ क्योंकि यदि यह मंत्र अथवा यह कार्य मनुष्य से है तो मिट जायगा। ३९ परन्तु यदि यह ईश्वर से है तो तुम लोग उसे मिटा नहीं सक्ते, नहो कि ईश्वर के बिरुद्ध संग्रामी ठहरो। ४० और उन्हों ने उसे माना और प्रेरितों को बुलाके मारा और चिता दिया कि यिशु के नाम से कुछ न बोलें और उन्हें छोड़ दिया। ४१ सो वे सभा के आगे से आनंद करते चले गये कि हम उसके नाम के लिये सताये जाने के योग्य गिने गये। ४२ और वे प्रतिदिन मंदिर और घर घर में उपदेश करने से और यिशु मसीह को प्रचारने से अलग न रहे।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ और उन दिनों में जब शिष्यन की बढ़ती होने लगी यूनानी इबरियों के बिरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि प्रतिदिन की सेवा में उनकी बिधवा छोड़ी जाती थीं। २ तब उन बारह ने शिष्यों की मंडली को बुलाके कहा, यह उचित नहीं कि हम ईश्वर के वचन को छोड़ के

खाने पीने की धंधा में रहें। ३ सो हे भाइयो अपने में से सात परखेहुए मनुष्य को चुनो जो धर्मात्मा और बुद्धि से भरे हुए हों जिन्हें हम इस कार्य पर ठहरावें। ४ और हम आप प्रार्थना में और बचन की सेवा में नित्य लवलीन रहेंगे। ५ सो उस बचन से सारी मंडली प्रसन्न हुई और उन्हों ने स्तीफान को, जो बिश्वास और धर्मात्मा से भरा हुआ था और फिलिप और परकर और नीकानूर और तैमून और परमना और अंताकी नया यिहूदी निकलाऊ को चुन लिया। ६ जिन्हें उन्हों ने प्रेरितों के आगे धरा और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रक्खे। ७ और ईश्वर का बचन बढ़ा और यिरुशालम में शिष्यों की गिनती बहुत बढ़गई और याजकों की बड़ी मंडली भी बिश्वास के अधीन हुई।

८ और स्तीफान अनुग्रह और सामर्थ्य से पूर्ण होके बड़े बड़े आश्चर्य और लक्षण लोगों को दिखाया किया। ९ तब लीबर्त्तियों और करनियों और स्कन्दरियों और कलकिया और आसिया के लोगों की मंडली में से कितने उठके स्तीफान से बिबाद करने लगे। १० और वे उसके ज्ञान और आत्मा की बार्त्ता के साम्ने ठहर न सके। ११ तब वे लोगों को उभाड़ के बोलवाये कि हम ने उसे मूसा और ईश्वर के बिषय में निंदा बकते सुना है। १२ और उन्हों ने लोगों को और प्राचीनों और अध्यापकों को उसकाया और लपक के उसे पकड़ा और

सभा में खींच लेगये। १३ और झूठे साक्षी खड़े किये जिन्हों ने कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान के और व्यवस्था के विषय में निंदा बकना नहीं छोड़ता है। १४ क्योंकि हम ने उसे कहते सुना है कि यह यिशु नासरी इस स्थान को नाश करेगा और उन व्यवहारों को, जो मूसा ने हम सभों को सौंपा पलट डालेगा। १५ और सभाके सारे बैठवैयों ने उस पर टक लगाके दृष्टि किई और उसके रूप को देखा कि दूत के समान हुआ।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ तब प्रधान याजक ने पूछा कि ये बातें योंहीं हैं? २ वुह बोला कि हे मनुष्य भाइयो और हे पितरो सुनो खरान में बसने से पहिले जब हमारा पिता इबराहीम ईरमनहर में था तेजोमय ईश्वर उसपर प्रगट हुआ। ३ और उसे कहा कि अपने देश और अपने कुटुंब में से निकलजा और जो देश मैं तुझे दिखाओंगा उस में चलाआ। ४ तब उसने कल्दियों के देश से निकल के खरान में बास किया और जब उसका पिता मरगया वुह वहां से इस देश में उठआया जिसमें अब तुम लोग बसते हो। ५ और उसने उसे वहां कुछ अधिकार पैर भर भूमिलों न दिई पर उसने बचन दिया कि मैं इसे तेरे और तेरे पीछे तेरे बंश के बश में करोंगा और तब उसका कोई पुत्र न था। ६ और ईश्वर ने उसे यों कहा कि तेरा बंश परदेश में जारहेगा और वे उन्हें बंधुआ

करेंगे और चार सौ बरसलों उनको दुर्दशा करेंगे। ७ और ईश्वर ने कहा कि जिन लोगों के वे दास होंगे मैं उनका न्याय करोंगा और उसके पीछे वे बाहर आवेंगे और इस स्थान में मेरी सेवा करेंगे। ८ और उसने उसे खतन: का नियम दिया और उस्से इसहाक उत्पन्न हुआ और आठवें दिन उसका खतन: किया और इसहाक से याकूब और याकूब से घराने के बाहर पित्रध्यत्र उत्पन्न हुए। ९ और पित्रध्यत्रों ने डाहके मारे यूसफ को मिसर में बेंचा परन्तु ईश्वर उसके संग था। १० और उसने उसको सारे कष्ट से छुड़ाया और मिसर के राजा फरऊन के आगे उसे अनुग्रह और बुद्धि दिई और उसने उसे मिसर और अपने सारे घराने का अध्यक्ष किया। ११ अब मिसर के सारे देश और किनान में अकाल पड़ा और बड़ा क्लेश हुआ और हमारे पितरों को कुछ जीविका न मिलती थी। १२ परन्तु जब याकूब ने सुना कि मिसर में अन्न है उसने पहिले हमारे पितरों को भेजा। १३ और दूसरे बेर यूसफ ने आपको अपने भाइयों पर प्रगट किया और यूसफ का घराना फरऊन को जानागया। १४ तब यूसफ ने भेजकर अपने पिता याकूब और अपने सारे घराने को जो पचहत्तर प्राणी थे बुलवाया। १५ सो याकूब मिसर को उतर गया और वुह और हमारे पितर मर गये। १६ और उन्हें शखीम में लेगये और

उस समाधि में गाड़ा जिसे इबराहीम ने कुछ दाम देके हमूर के बेटे शखीम के पिता से मोल लिया था। १७ परन्तु जब उस बचन का समय निकट पहुंचा जिस पर ईश्वर ने इबराहीम से किरिया खाई थी तब लोग अधिक हुए और मिसर में बढ़ गये। १८ जबलों दूसरा राजा हुआ जो यूसफ को न जानता था। १९ उसने हमारी जाति पांति से छल करके हमारे पितरों से बुरा व्यवहार किया इहां लों कि उनके बंश को नष्ट करने को उसने उनके बालकों को भी बाहर निकलवा दिया। २० उसी समय में मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत रूपमान था और तीन मास लों अपने पिता के घर में पालागया। २१ और जब वुह निकालागया तो फरऊन की पुत्री ने उसे लेके अपनाही पुत्र करके पाला। २२ और मूसा ने मिसरियों की सारी बिद्या पढ़ा और वुह बोलचाल में निपुण था। २३ और जब पूरे चालीस बरस का हुआ तो उसके मन में आया कि अपने भाईबंद इसराईल के सन्तानों से भेंट करे। २४ और उनमें से एक को सताया हुआ देख के उसने सहाय किई और उस मिसरी को घात करके उसका पलटा लिआ जिस पर उपद्रव हुआ था। २५ क्योंकि उसने समझा था कि मेरे भाईबंद जान जायेंगे कि ईश्वर उन्हें मेरे हाथ से उद्धार देगा परन्तु उन्हों ने न समझा। २६ फेर दूसरे दिन जब वे झगड़ रहे थे वुह उन पास

आया और चाहा कि उन्हें मिला देवे और बोला कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो तुम एक दूसरे को क्यों सताते हो? २७ परन्तु जिसने अपने परोसी को सताया था उसे हटाके कहा कि तुझे किसने हमपर अध्यक्ष और आज्ञाकारी किया है? २८ क्या जैसा तू ने कल मिसरी को घात किया तैसा मुझे भी घात करेगा? २९ उस कहने पर मूसा भागा और मदियून देश में जारहा जहां उस्से दो बेटे उत्पन्न ज़ए। ३० और जब चालीस बरस बीतगये तब प्रभुका दूत सीना पर्बत के बनकी एक झाड़ी में आग की लवर में उस पर प्रगट ज़आ। ३१ उसे देखतेही मूसा उस दर्शन से बिस्मित ज़आ और जब वुह पास गया कि उसे अच्छी रीति से देखे तो प्रभु का शब्द यह कहते ज़ए उस पास आया। ३२ कि मैं तेरे पितरों का ईश्वर इबराहीम का ईश्वर इसहाक का ईश्वर याकूब का ईश्वर हों तब मूसा कांप गया और उसे देखने को हियाव न ज़आ। ३३ तब प्रभु ने उसे कहा कि जूती अपने पांओं से उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो पवित्र भूमि है। ३४ अपने लोगों की दुर्दशा जो मिसर में हैं निश्चय मैं देख रहाहों और मैं ने उनका बिलाप सुना और उन्हें छुड़ाने को उतराहों अब तू इधर आ मैं तुझे मिसर में भेजोंगा। ३५ यह मूसा जिसे उन्हों ने मुकर के कहा कि किसने तुझे हम पर प्रधान और न्यायी किया? उसी को उस दूत की

ओर से, जो झाड़ी में उसपर दिखाई दिया ईश्वर ने प्रधान और उद्धारक करके भेजा। ३६ वही मिसर के देश में और लाल समुद्र में और बन में चालीस बरस आश्चर्य और लक्षण दिखाके उन्हें बाहर निकाल लाया। ३७ यही है वुह मूसा जिसने इसराईल के सन्तान को कहा कि प्रभु ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उदय करेगा तुम उसकी सुनियो। ३८ यह वुह है जो मंडली के बीच बन में उस दूत और हमारे पितरों के संग, जो सीना पर्वत में उस्से बोला उसी ने हमें देने को जीवत बचन पाया। ३९ हमारे पितर उसे मान्ने को न चाहते थे परन्तु अपने पास से दूर किया और अपने मन से मिसर को फिर गये। ४० और हारून को कहा कि हमारे लिये ऐसे देव बनाओ जो हमारे आगे आगे चलें क्योंकि जिस मूसा ने हमें मिसर की भूमि से बाहर निकाला हम नहीं जानते कि वुह क्या हुआ। ४१ और उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा बनाया और मूर्त्ति के लिये बलि चढ़ाया और अपने हाथ के कार्यों से मगन हुए। ४२ तब ईश्वर ने फिरके आकाश के सेना की पूजा करने को उन्हें छोड़ दिया जैसा कि भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में लिखा है कि हे इसराईल के घराने तुम्हीं लोगों ने चालीस बरस बन में मुझे भेंट और बलिदान चढ़ाये। ४३ हां तुम सभों ने मलूक के तंबू को और अपने देव

रंफान की तारा को, अर्थात उन मूर्त्तिन को उठाया जो तुम लोगों ने पूजा करने को बनाई इस लिये मैं तुम्हें बाबिल से परे लेजाऊंगा। ४४ हमारे पितरों के साथ साक्षी का तंबू बन में था जैसा उसने ठहराया था जिसने मूसा से बातें किई कि जैसा तू ने देखा था उसी डौल का एक बना। ४५ उसे हमारे बापदादे पाके यशूअ के संग अन्यदेशियों के देश में लाये उन्हें ईश्वर हमारे पितरों के आगे से दाऊद के समय लों दूर करता रहा। ४६ उसने ईश्वर के आगे अनुग्रह पाके चाहा कि याकूब के ईश्वर के लिये एक तंबू बनावे। ४७ परन्तु सुलेमान ने उसके लिये मंदिर बनाया। ४८ तथापि हाथ के बनाये हुए मंदिरों में अति महान नहीं रहता जैसा कि भविष्यद्वक्ता कहता है। ४९ कि स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे पांव की पीढ़ी है प्रभु कहता है तुम लोग मेरे लिये कौनसा घर बनाओगे? अथवा मेरे विश्राम का कौनसा स्थान है? ५० क्या मेरे हाथ ने ये सारी बस्तें नहीं बनाईं? ५१ हे कठोर गले और मन और कान के अखतनः तुम लोग अपने पितरों के समान नित्य धर्मात्मा का विरोध करते हो। ५२ कौन से भविष्यद्वक्तों को तुम्हारे पितरों ने न सताया? और उन्हों ने उन्हें मारडाला जिन्हों ने उस धर्मी के आने के आगे से संदेश दिया और तुम लोग अब उसके

विश्वास घातक श्चार बधिक हुए हो। ५३ तुम ने व्यवस्था को दूतों के द्वारा से पाया श्चार न माना।

५४ ये बातें सुनतेही वे मनही मन कटगये श्चार उस पर दांत किच किचाने लगे। ५५ परन्तु धर्मात्मा से पूर्ण होके उसने स्वर्ग की श्चार ध्यान से देखा श्चार ईश्वर के ऐश्वर्य को श्चार यिशु को ईश्वर की दहिने हाथ खड़ा देखा। ५६ श्चार कहा कि देखो मैं स्वर्गों को खुला श्चार मनुष्य के पुत्र को ईश्वर के दहिने हाथ खड़े देखता हों। ५७ तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने अपने कान को मूंद लिया श्चार एक साथ उस पर लपके। ५८ श्चार नगर से बाहर करके उस पर पथर वाह किया श्चार साक्षियों ने अपने कपड़े को साेल नाम एक तरुण के पांव पास रख दिया। ५९ श्चार स्तीफान को यह कहिके प्रार्थना करते कि हे प्रभु यिशु मेरे प्राण को ग्रहण कर उन्हों ने पथरवाह किया। ६० श्चार वुह घुटने टेकके बड़े शब्द से पुकारके बोला कि हे प्रभु यह पाप उन पर मत धर श्चार यह कहिके सो गया।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ श्चार साेल भी उसके घात से प्रसन्न था श्चार उस समय में यिरूशालम की मंडली पर बड़ा उपद्रव हुआ श्चार प्रेरितों को छोड़ सब के सब यिहूदिय श्चार सामरः के देश में बिथर गये। २ श्चार भक्तों ने स्तीफान को

गाड़ा और उसके लिये बड़ा बिलाप किया। ३ और सौल घर घर घुसके मंडली को सत्या नाश किया करता था और पुरुषों और स्त्रियों को खींच खींच बंदीगृह में डालता था। ४ पर जो छिन्न भिन्न ऊए थे सो हर एक स्थान में जा जा के बचन को प्रचारते गये।

५ तब फिलिप ने सामरः के नगर में जाके मसीह का उपदेश किया। ६ और लोगों ने उन लक्षण को, जो फिलिप दिखावता था सुनके और देखके एक मत हो उसकी बातें चित्त लगाके सुनी। ७ क्योंकि अपवित्र आत्मा बऊतेरे ग्रस्तों से बड़े शब्द से चिल्लाके निकले और बऊतेरे अर्द्धांगी और लंगड़े चंगे ऊए। ८ और उस नगर में बड़ा आनंद ऊआ।

९ परन्तु उसी नगर में उस्से पहिले शिमोन नाम एक मनुष्य था जिसने टोना से सामरः के लोगों को मोह लिया था और कहता था कि मैं बड़ा कोई हों। १० और छोटे से बड़े लों सब उसकी प्रतीत करके कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वर का महा पराक्रम है। ११ और उसके टोना से उन्हें मोहलेने के कारण वे उसके बिश्वासी होरहे थे। १२ परन्तु जब उन्हों ने ईश्वर का राज्य और यिशु मसीह के नाम के बिषय में फिलिप को प्रचारते सुना तो क्या पुरुष क्या स्त्री बिश्वास लाला स्नान पावने लगे। १३ तब शिमोन आप भी बिश्वास लाया और स्नान पाके फिलिप के संग रहा किया और

आश्चर्य कर्म्म और बड़े लक्षण, जो प्रगट ऊए थे देख के विस्मित ऊआ।

१४ जब यिरूशालम में के प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने ईश्वर के वचन को ग्रहण किया तो उन्हों ने पथर और योहन को उन पास भेजा। १५ जिन्हों ने वहां जाके उनके लिये प्रार्थना किई जिसतें वे धर्म्मात्मा को पावें। १६ (क्योंकि अबलों वुह उन में से किसी पर न पड़ा था केवल उन्हों ने प्रभु यिशु के नाम से स्नान पाया था)। १७ तब उन्हों ने उन पर हाथ धरे और उन्हों ने धर्म्मात्मा को पाया।

१८ और जब शिमोन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ धरने से धर्म्मात्मा दिया जाता है तो उन्हें रोकड़ देने लगा। १९ कि मुझे भी यही पराक्रम देउ कि जिस पर मैं अपना हाथ धरों वुह धर्म्मात्मा पावे। २० तब पथर ने उसे कहा कि तेरा रोकड़ तेरे संग नष्ट होय इस लिये कि तू ने समुझा कि ईश्वर का दान रोकड़ से मोल लिया जाता है। २१ इस बात में तेरा भाग अथवा अधिकार नहीं है क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में तेरा मन खरा नहीं है। २२ इस लिये अपनी इस दुष्टता से पश्चात्ताप कर और ईश्वर से प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मन की भावना क्षमा किई जाय। २३ क्योंकि मैं देखता हों कि तू कड़ुआहट के पित्त में और पाप के बंधन में है। २४ तब शिमोन ने उत्तर देके कहा

कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि उन बातों में से जो तुम ने कही हैं कुछ मुझ पर न पड़े। २५ और वे साक्षी देके और प्रभु का बचन प्रचार के यिरूशालम को फिरे और सामरियों के बहुत से गांओं में मंगल समाचार प्रचारा।

२६ और प्रभु का दूत फिलिप को यह कहिके बोला कि उठ और दक्खिन की ओर उस मार्ग में जा जो यिरूशालम से गजः को जाता है और बन है। २७ वुह उठके गया और क्या देखता है कि एक हबशी नपुंसक जो हबश की रानी कंदाकी का एक बड़ा प्रधान और उसके सारे धन का भंडारी था और यिरूशालम में सेवा के लिये आया था। २८ वुह फिरा चलाजाता था और अपने रथ पर बैठाहुआ अशैया भविष्यद्वक्ता के बचन को पढ़ता था। २९ तब आत्मा ने फिलिप को कहा कि पास जा और अपने को इस रथ से मिला। ३० तब फिलिप ने उधर दौड़के उसे अशैया भविष्यद्वक्ता का पढ़ते सुना और उसे कहा कि जो आप पढ़ते हैं सो समुझते हैं? ३१ वुह बोला कि बिना किसी के बताये मैं क्योंकर समझसकों और उसने फिलिप को चढ़ा लिया और अपने पास बैठाया। ३२ और उस लिखे हुए का स्थल जो वुह पढ़ता था यह था कि वुह भेड़ की नाईं घात के लिये पहुंचाया गया और मेम्ना की नाईं अपने कतरवैया के आगे चुपचाप है सो उसने अपना

मुंह नहीं खोला। ३३ उसकी दीनताई से उसका बिचार न होनेपाया और उसकी पीढ़ी के लोगों की चर्चा कौन करेगा? क्योंकि उसका जीवन पृथिवी से उठाया गया। ३४ और उस नपुंसक ने फ़िलिप को उत्तर देके कहा कि मैं बिनती करता हों कि भविष्यद्वक्ता किसके विषय में यह कहता है? अपने अथवा दूसरे मनुष्य के? ३५ तब फ़िलिप अपना मुंह खोल के उसी बचन से यिशु का भेद प्रचारने लगा।

३६ और जाते जाते वे किसी जल के पास पहुंचे तब नपुंसक ने कहा देखिये जल, अब मुझे स्नान पावने से कौनसी बात रोकती है? ३७ फ़िलिप ने कहा कि जो आप सारे अन्तःकरण से बिश्वास लाये हैं तो योग्य है उसने उत्तर देके कहा कि मैं बिश्वास लाता हों कि यिशु मसीह ईश्वर का पुत्र है। ३८ तब उसने रथ खड़ा करने को आज्ञा किई और फ़िलिप और नपुंसक दोनों जल में उतरे और उसने उसे स्नान दिया। ३९ और जब वे जल से बाहर निकले प्रभु के आत्मा ने फ़िलिप को उठा लिया और नपुंसक ने उसे फेर न देखा और वुह आनन्द से अपने मार्ग चला गया। ४० परन्तु फ़िलिप आज़ोतूस में दिखाई दिया और उसने जाते जाते सारे नगरों में कैसरिया में पहुंचने लों उपदेश किया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ और अबलों सौल प्रभु के शिष्यों के बिरोध में धमकी और घात करने पर जी चलाके प्रधान याजक के पास गया। २ और उस्से दमिश्क की मण्डलियों के लिये इस रीति की पत्री मांगी कि यदि मैं किसी को इस मत में पाओं क्या स्त्री क्या पुरुष तो उन्हें बांधके यिरुशालम में लाओं। ३ और जब वुह चलाजाता था और दमिश्क के पास आया तो ऐसा ज़आ कि आकस्मात एक ज्योति स्वर्ग से उसके चारोंओर चमकी। ४ तब वुह भूमि पर गिरपड़ा और यह कहते ज़ए एक शब्द सुना कि सौल सौल तू मुझे क्यों सताता है? ५ उसने पूछा कि हे प्रभु तू कौन हैं? प्रभु ने कहा कि मैं यिशु हों जिसे तू सताता है अरइयों पर लात चलाने में तेरे लिये कठिन हैं। ६ वुह कंपित और बिस्मित होके बोला, हे प्रभु मैं क्या करों तेरी इच्छा क्या? प्रभु ने उसे कहा कि उठ और नगर में जा और जो कुछ तुझे करना उचित है सो बताया जायगा। ७ और उसके संगी पथिक बिस्मित खड़े रहिगये क्योंकि शब्द को तो सुनते थे परन्तु किसी को न देखते थे। ८ तब सौल भूमि पर से उठा और आंखें खोलते ज़ए उसे कुछ सूझ न पड़ा परन्तु वे उसका हाथ पकड़ के दमिश्क में लाये। ९ और वुह तीन दिन लों बिना दृष्टि रहा और न खाया न पीया।

१० और दमिश्क में हनानिया नाम एक शिष्य था जिसे प्रभु ने दर्शन में कहा कि हे हनानिया वुह बोला, हे प्रभु देख मैं हों। ११ प्रभु ने उसे कहा कि उठ के सीधी नाम गली में जा और सौल नाम एक तरसी मनुष्य को यिहूदा के घर में ढूंढ़ क्योंकि देख वुह प्रार्थना करता है। १२ और जिसतें वुह अपनी दृष्टि फेर पावे उसने दर्शन में हनानिया नाम एक जन को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ धरते देखा। १३ तब हनानिया ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बहुतों से उस मनुष्य के विषय में सुना है कि उसने यिरूशालम में तेरे सिद्धों के संग बहुत बुराई किई है। १४ और जो तेरा नाम लेते हैं उन सभों को बांधने के लिये यहां भी प्रधान याजकों की ओर से पराक्रम रखता है। १५ परन्तु प्रभु ने उसे कहा कि चला जा क्योंकि अन्यदेशियों के और राजा के और इसराईल के सन्तानों के आगे मेरा नाम पहुंचाने को वुह मेरे लिये चुना हुआ पात्र है। १६ क्योंकि मेरे नाम के लिये उसे कैसा बड़ा दुःख उठाना अवश्य है मैं उसे दिखाओंगा। १७ तब हनानिया निकल के उस घर में गया और अपने हाथ उस पर रखके कहा हे भाई सौल यात्रा में जिस प्रभु यिशु ने, तुझे दर्शन दिया उसने मुझे भेजा है जिसतें तू अपनी दृष्टि पाके धर्मात्मा से भर जाय। १८ और तुरन्त उसकी आंखों से कुछ छिलके से गिरे और

उसने तत्काल अपनी दृष्टि पाई और उठके स्नान पाया। १९ और कुछ भोजन करके बल पाया फेर सौल कई दिन दमिश्क में शिष्यों के संग रहा।

२० और तुरन्त मंडलियों में वुह प्रचारने लगा कि मसीह ईश्वर का पुत्र है। २१ परन्तु सारे सुन्नेवाले विस्मित हो बोले क्या यह वुह नहीं जिसने यिरुशालम में इस नाम के लेनेवालों पर उपद्रव किया और यहां इस लिये आया कि उन्हें बांधके प्रधान याजकों के पास लेजाय। २२ परन्तु सौल ने और भी दृढ़ता किई और दमिश्क के बासी यिहूदियों को प्रमाण ला ला के घबराया कि वही निश्चय मसीह है। २३ और बहुत दिन के बीतने में यिहूदियों ने उसे घात करने को परामर्श किया। २४ परन्तु उनका मनसा सौल को जान पड़ा और उसे घात करने को उन्हों ने रात दिन फाटकों की चौकसी किई। २५ तब शिष्यों ने रात को उसे लेके भीत परसे टोकरे में उतार दिया।

२६ और सौल ने यिरुशालम में आके शिष्यों में मिलने चाहा परन्तु उसका शिष्य होना प्रतीति न करके वे उस्से डर गये। २७ तब बरनबास ने उसे लेके प्रेरितों पास पहुंचाया और जिस रीति से अपने प्रभु को मार्ग में देखा था और उस्से वार्त्ता किई और जिस रीति से दमिश्क में यिशु के नाम को साहस से प्रचारा उनसे बर्णन किया। २८ और वुह यिरुशालम में उनके संग

आताजाता था। २९ और प्रभु यिशु के नामतें ढियाव से प्रचारता था और यूनानियों से विवाद करता था परन्तु वे उसके घात में लगे। ३० यह जानके भाईयों ने उसे कैसरिया में पहुंचाया और तरसस की ओर बिदा किया। ३१ तब सारी यिहूदियः और गालील और सामरः की मंडलियों ने बिश्राम पाया और सुधर गये और प्रभु के भय में और धर्मात्मा की शान्ति में निवाह कर कर बढ़ गये।

३२ और ऐसा हुआ कि पथर सर्बत्र फिरते लद्दा में के साधुन पास आया। ३३ और वहां अनियास नाम एक मनुष्य को पाया जो अर्द्धांगी होके आठ बरस से खाट पर पड़ा था। ३४ पथर ने उसे कहा कि अनियास यिशु मसीह तुझे चंगा करता है उठ अपना बिछौना सुधार और वुह तुरन्त उठा। ३५ तब लद्दा और सारून के बासी उसे देख के प्रभु की ओर फिरे।

३६ अब याफा में ताबीता नाम एक शिष्यिन थी जिसका अर्थ दरकास है वुह सुकर्म और दान से भरपूर थी। ३७ ऐसा हुआ कि वुह उन दिनों में रोगी होके मरगई और उसे नहला के एक उपरौटी कोठरी में रक्खा। ३८ और जैसा कि लद्दा याफा के समीप था शिष्यों ने पथर का वहां होना सुन के दो मनुष्य को भेजके उसकी बिनती किई कि हमारे पास आवने में बिलंब न कीजिये।

३९ तब पथर उठके उनके संग होलिया ज्योंहीं वुह वहां पहुंचा वे उसे उपरौटी कोठरी में लाये और सारी रांड़ें उसपास खड़ी होके रोती, कुढ़ती और ओढ़ने दिखाती थीं जो दरकास ने उनके संग रहते हुए बनाये थे। ४० तब पथर ने उन सभों को बाहर किया और घुठना टेक के प्रार्थना किई और लोथ की ओर फिर के कहा कि ताबीता उठ तब उसने अपनी आंखें खोलीं और पथर को देख के उठबैठी। ४१ और उसने हाथ देके उसे उठाया और साधुन को और रांड़ों को बुलाके उसे जीवती उन्हें सौंप दिया। ४२ तब यह सारी याफा में फैलगई और बहुतेरे प्रभु पर बिश्वास लाये। ४३ और वुह बहुत दिनलों शिमोन नाम एक चर्मकार के संग याफा में रहा किया।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ कैसरियः में करनीलियूस नाम एक मनुष्य था जो अतालीकी नाम जथा का एक शतपति था। २ वुह भक्त जन था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरता था और लोगों को बहुत दान भी देता था और नित्य ईश्वर की प्रार्थना करता था। ३ उसने दिन की नवईं घड़ी के अंटकल दर्शन में ईश्वर के दूत को अपने पास आते देखा जिसने उसे कहा कि करनीलियूस। ४ वुह उसे देख के डर गया और कहा कि हे प्रभु क्या है? उसने उसे कहा तेरी प्रार्थना और तेरे दान स्मरण

के लिये ईश्वर के आगे पहुंचे। ५ अब याफा में लोगों को भेज और पथर नाम के शिमोन को बुला। ६ वुह एक शिमोन चर्मकार के संग रहता है जिसका घर सागर तीर है जो कुछ तुझे करना उचित है वुह तुझे बतावेगा। ७ और जब दूत करनीलियूस से कहिके चलागया तो उसने अपने सेवकों में से दोको और उन में से जो नित उसके पास रहते थे एक योद्धाभक्त को बुलाया। ८ और सब बातें उन्हें कहिके याफा में भेजा।

९ अगिले दिन जाते जाते ज्यों वे नगर के पास पहुंचे तो पथर छठवीं घड़ी के अंटकल में कोठे पर प्रार्थना करने को चढ़ा। १० और उसे बड़ी भूख लगी और कुछ खाने चाहा परन्तु जब वे बना रहे थे वुह बे सुधि हुआ। ११ और स्वर्ग को खुला और एक पात्रको चारोंखूंट से बंधे हुए एक बड़े वस्त्र की नाईं अपने पास भूमि लों उतरते देखा। १२ जिसमें पृथिवी के सारे प्रकार के चैापाए और बन पशु और रेंगवैये और आकाश के पंछी थे। १३ और एक शब्द उस पास आया कि उठ पथर मार और खा। १४ तब पथर बोला कि हे प्रभु ऐसा नहीं क्योंकि मैं ने कधी कोई सामान्य अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई। १५ तब दूसरे बेर उस पास फेर शब्द आया कि जो ईश्वर ने पवित्र किया है तू सामान्य मत कह। १६ यह तीन बार हुआ और वुह पात्र फेर स्वर्ग पर उठाया गया।

१७ सो जबलों पथर मन में अपने दर्शन के अर्थ का संदेह कर रहा था तो वहीं करनीलियूस के भेजे हुए मनुष्य शिमोन का घर पूछके द्वार पर खड़े हुए। १८ और पुकार के पूछा, क्या पथर नाम का शिमोन यहां रहता है? १९ जब पथर उस दर्शन को सोचरहा था तो आत्मा ने उसे कहा कि देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ते हैं। २० इस लिये उठ और उतर के बेखटके उनके संग चला जा क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है। २१ तब पथर ने करनीलियूस के भेजे हुए मनुष्यों के पास उतर के कहा कि देखो वुह जिसे तुम ढूंढ़ते हो मैं हों क्या कारण है किस लिये आये हो? २२ वे बोले कि धर्म्मी और ईश्वर से डरनेवाले मनुष्य करनीलियूस शतपति को जो यिहूदियों के सारे लोगों में शुभनाम है ईश्वर के एक पवित्र दूत ने कहा कि तुझे अपने घर बुलावे और तुझसे बार्त्ता सुने। २३ तब उसने उन्हें भीतर बुलाके उनका शिष्टाचार किया और दूसरे दिन पथर उनके संग गया और याफामें के कई भाई उसके संग होलिये।

२४ और दूसरे दिन वे कैसरियः में पहुंचे और करनीलियूस अपने कुटुंब और परममित्रों को एकट्ठे कर के उनकी बाट जोहता था। २५ पथर के भीतर जाते जाते करनीलियूस ने उसे भेंट कर उसके चरण पर गिर दंडवत किई। २६ परन्तु पथर ने उसे उठाके कहा कि खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हों। २७ और वुह उससे

बातें करता हुआ भीतर गया और बहुत से लोगों को एकट्ठे पाया। २८ और उन्हें कहा कि तुम जानते हो कि अन्यदेशियों से संगति करना यिहूदियों को अनुचित है अथवा उसके यहां जायें परन्तु ईश्वर ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी मनुष्य को सामान्य अथवा अशुद्ध न कहों। २९ इस लिये मैं जो बुलाया गया बेखटके आया सो मैं पूछता हों कि तुम ने मुझे किस लिये बुलाया है? ३० करनीलियूस ने कहा, चार दिन बीते मैं इस घड़ी लों ब्रत करता और नवईं घड़ी अपने घर में प्रार्थना करता था और क्या देखता हों कि एक मनुष्य झलकते बस्त्र में मेरे सन्मुख खड़ा है। ३१ और बोला कि हे करनीलियूस तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरे दान ईश्वर के आगे स्मरण किये गये। ३२ सो याफा में भेज और पथर नामके शिमोन को, यहां बुला वुह सागर तीर शिमोन चर्मकार के घर में टिका है वही जब आवेगा तुझे बतावेगा। ३३ इस लिये तुरन्त मैं ने आप पास भेजा और आने में आपने अच्छा किया सो अब हम सब यहां ईश्वर के आगे बट्टुरे हैं जिसतें सब बातें जो आप से ईश्वर ने कहीं हैं सुनें।

३४ तब पथर ने मुंह खोल के कहा कि मुझे ठीक समुझ पड़ता है कि ईश्वर मनुष्यों में भिन्न भाव नहीं करता। ३५ परन्तु हर एक जाति में जो उस्से डरता है और धर्मका कार्य करता है सो उसको ग्राह्य है।

३६ यह वही संदेश है जिसे ईश्वर ने यिशु मसीह के द्वारा से कुशल प्रचारते ज्ञए इसराईल के सन्तानों को कहला भेजा वुह सब का प्रभु है। ३७ तुम यिशु का वुह समाचार जानते हो जो योहन के स्नान के प्रचारने के पीछे जलील से आरंभ होके सारे यिज्ञदियः में होता रहा। ३८ कि ईश्वर ने किस रीति से उसे धर्मात्मा और पराक्रम से अभिषेक किया और वुह भलाई करता रहा और पिशाच से सताये ज्ञए लोगों को चंगा करता रहा क्योंकि ईश्वर उसके संग था। ३९ और उन सब बातों के जो उसने यिज्ञदियों के देश और यिरूशालम में किये हम साक्षी हैं जिसे उन्हों ने लकड़े पर टांग के मारडाला। ४० परन्तु ईश्वर ने उसे तीसरे दिन उठाया और उसे प्रगट के दिखाया। ४१ पर सब लोगों को नहीं परन्तु साक्षियों को अर्थात हम लोगों को जो पहिले से ईश्वर के चुने ज्ञए थे जिन्हों ने उसके जीउठने के पीछे उसके संग खाया पीया। ४२ और उसने लोगों में प्रचारने और साक्षी देने को हमें आज्ञा किई कि जीवतों और मृतकों का न्यायी होने को ईश्वर ने मुझे ठहराया है। ४३ उस पर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर बिश्वास लावेगा उसके नाम से पाप का मोचन पावेगा।

४४ जब पथर ये बातें कहिरहा था तो सारे सुनवैयों पर धर्मात्मा पड़ा। ४५ और खतनिक बिश्वासी

जो, पथर के संग आये थे बिस्मित ऊए कि अन्यदेशियों पर भी धर्मात्मा का दान उंडेला गया। ४६ क्योंकि उन्हों ने उन्हें भांति भांति की बोली बोलते और ईश्वर की स्तुति करते सुना। ४७ तब पथर ने उत्तर दिया कि इन्हें स्नान देने के लिये क्या कोई जल को रोक सक्ता है? जिन्हों ने हमारी नाईं धर्मात्मा को पाया है। ४८ तब उसने उन्हें प्रभु के नाम से स्नान देने की आज्ञा किई फेर उन्हों ने कई दिन अपने इहां रहने को उसकी बिनती किई।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ अब प्रेरितों और यिक्रदिय में के भाइयों ने सुना कि अन्यदेशियों ने भी ईश्वर का बचन ग्रहण किया। २ और जब पथर यिरूशालम में आया तो खतनिकों ने उस्से बिवाद करके कहा। ३ कि तू अखतनिकों के पास गया और उनके संग खाया है। ४ तब पथर ने आरंभ से उस बात को दोहराया और उनके आगे ढब से बर्णन करके कहने लगा।

५ कि मैं याफा के नगर में प्रार्थना करता था और बसुधि होके मैं ने स्वर्ग से उतरते ऊए चारों खूंट बंधे ऊए एक बस्त्र की नाईं अपने पास आते एक दर्शन देखा। ६ ध्यान से ताकते ऊए मैं ने भूमि के चौपाए और बन पशु और कीड़े मकोड़े और आकाश के पंछियों को देखा। ७ और मुझे कहते ऊए मैं ने एक

शब्द सुना कि उठ पथर मार और खा। ८ तब मैं बोला कि ऐसा नहीं हे प्रभु क्योंकि कोई सामान्य अथवा अपवित्र बस्तु मेरे मुंह में कधी नहीं पड़ी। ९ और स्वर्ग से उत्तर में मुझे फेर शब्द आया कि जो कुछ ईश्वर ने पवित्र किया है उसे तू सामान्य मत कह। १० यह तीन बार हुआ तब सब स्वर्ग में फेर खींचगये। ११ और क्या देखता हों कि तत्काल उस घर में जहां मैं था कैसरिया से भेजे हुए तीन मनुष्य मेरे पास पहुंचे। १२ और आत्मा ने बेखटके उनके संग जाने को मुझे आज्ञा किई और ये छः भाई भी मेरे संग हुए और हम उस मनुष्य के घर में पहुंचे। १३ तब उसने हमें कहा कि मैं ने अपने घर में दूत को देखा जिसने खड़े होके कहा कि लोगों को याफा में भेज और पथर नाम के शिमोन को बुला। १४ वुह तुझे ऐसी बातें बता देगा जिनसे तू अपने सारे घराने समेत मुक्ति पावेगा। १५ और ज्यों मैं ने कहना आरंभ किया तो किस रीति से आरंभ में धर्मात्मा हम सब पर पड़ा था तैसा उन पर भी पड़ा। १६ तब मैं ने प्रभु का वचन चेत किया कि उसने कैसा कहा था कि योहन ने तो जल से स्नान दिया परन्तु तुमलोग धर्मात्मा से स्नान पाओगे। १७ सो जैसा कि जब हम प्रभु यिशु मसीह पर बिश्वास लाये ईश्वर ने हमें दान दिया तैसा उन्हें भी दिया मैं कौन था जो ईश्वर को रोक सक्ता? १८ और जब उन्हों ने ये बातें

सुनीं तो मान लिया और यह कहिके ईश्वर की स्तुति किई, तो ईश्वर ने अन्यदेशियों को भी जीवन के लिये पश्चात्ताप दिया।

१९ अब वे जो स्तीफान के समय की विपत्ति के कारण छिन्न भिन्न ऊए थे उन्हों ने फूनीकी और कबरस और अन्ताकिय: लों चले जाके यिहूदियों को छोड़ किसी को बचन का उपदेश न किया। २० परन्तु उनमें से कितने कबरस और कुरीन: के बासी थे जिन्हों ने अन्ताकिय: में जाके यूनानियों से प्रभु यिशु का उपदेश करके बातें किईं। २१ और प्रभु उनका सहायक था और बऊत से लोग बिश्वास लाके प्रभु की ओर फिरे। २२ तब उन बातों का समाचार यिरुशालम की मंडली के कान लों पहुंचा और उन्हों ने अंताकिय: लों जाने के लिये बरनबा को भेजा। २३ वुह आया और ईश्वर के अनुग्रह को देखके आनंद ऊआ और उन्हें उभाड़ा कि मन की पूरी दृढ़ता से प्रभु से मिलचे रहें। २४ क्योंकि वुह उत्तम मनुष्य और धर्मात्मा और बिश्वास से भरा ऊआ था और बऊत लोग प्रभु की ओर बढ़गये।

२५ तब बरनबा सोल को ढूंढ़ने को तरसूस को चला गया। २६ और उसे पाके अन्ताकिय: में लाया और ऐसा ऊआ कि वे बरस भर मंडली में एकट्ठे रहे और बऊत से लोगों को उपदेश किया और शिष्य लोग पहिले अन्ताकिय: में ख्रीष्टिआन कहलाये।

२७ और इन्हीं दिनों में भविष्यद्वक्ता यिरूशालम से अन्ताकियः में आये। २८ और उनमें से अगबस नाम एक ने उठके आत्मा की ओर से बतलाया कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ेगा जो कलादियूस कैसर के दिनों में पूरा हुआ। २९ उस समय शिष्यों में से हरएक ने अपनी बिसात के समान चाहा कि यिहूदियः में के भाइयों के लिये कुछ भेजें। ३० सो उन्हों ने किया और बरनबास और सूलूस के हाथ से प्राचीनों के पास भेजा।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ और उसी समय में हिरोद राजा ने मंडली में के कितनों को सताने के लिये हाथ बढ़ाये। २ और योहन के भाई याकूब को तलवार से मार डाला। ३ और जब उसने देखा कि यिहूदी इस बात से प्रसन्न हुए तो उसने यह देख के पथर को भी अखमीरी रोटी के दिनों में पकड़ लिया। ४ और उसने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला और उसकी चौकसी के लिये योद्धाओं के चार पहरे को इस इच्छा से सौंपा कि पारजाना पर्ब्ब के पीछे उसे लोगों कने पहुंचावे। ५ सो बन्दीगृह में पथर पड़ा था परन्तु मंडली में उसके लिये निरन्तर ईश्वर की प्रार्थना हो रही थी। ६ और जब हिरोद ने उसे बाहर निकालने चाहा उसी रात दो योद्धाओं के मध्य में पथर दो सीकरों से जकड़ा

हुआ सोता था और पहरू बंदीगृह के द्वार के आगे चैाकसी करते थे। ७ और तत्काल ईश्वर का दूत दिखाई दिया और उस घर में एक उंजियाला चमका और उसने पथर के पंजर पर मारा और उसे यह कहिके जगाया कि तुरन्त उठ, और उसके हाथों से सीकरें गिर पड़ीं। ८ और दूतने उसे कहा कि कटि बांध और जता पहिन ले और उसने वैसाही किया तब उसने कहा कि अपना ओढ़ना ओढ़ के मेरे पीछे होले। ९ वुह निकल के उसके पीछे होलिया और न जाना कि यह जो दूत ने किया सत्य है परन्तु कुछ धोखासा समझा। १० जब वे पहिले और दूसरे पहरे में से निकल गये तो नगर में जाने के लोहे के फाटक पर पहुंचे वुह आप से आप उनके लिये खुलगया और निकल के वे सड़क में होके चले गये और उसी घड़ी दूत उसपास से जाता रहा। ११ तब पथर ने चेत में आके कहा अब मैं ठीक जानता हों कि ईश्वर ने अपने दूत को भेजा और हिरोद के हाथ से और यिहूदियों की सारी आशा से मुझे छुड़ाया।

१२ और सोच के योहन अर्थात मरक की माता मरियम के घर आया जहां बहुत से एकट्ठे हो प्रार्थना कर रहे थे। १३ और ज्यों पथर ने द्वार के बाहरी फाटक को खटखटाया तो रूदा नाम एक कन्या बूझने को गई कि वुह कैान है। १४ और पथर का शब्द

पहिचान के उसने मारे आनन्द के फाटक न खोला परन्तु भीतर दौड़ के उन्हें कहा कि पथर फाटक पर खड़ा है। १५ वे बोले कि तू बौड़ही है उसने निश्चय से कहा कि योंहीं हैं तब वे बोले कि उसका दूत है। १६ परन्तु पथर खटखटातागया और जब उन्हों ने खोल के उसे देखा तो आश्चर्य माना। १७ और उसने उन्हें चुप कराने को हाथ से सैन करके कहा और बर्णन किया कि प्रभु मुझे बंदीगृह से इस इस रीति से निकाल लाया और कहा कि इन बातों को याकूब और भाइयों को जनाओ फेर वुह निकल के किसी और स्थान में गया।

१८ और जब बिहान ज़ुआ तो योद्धाओं में बड़ी घबराहट ज़ुई कि पथर क्या ज़ुआ। १९ और हिरोद ने उसका खोज किया पर जब न पाया तो पहरूओं को जांच के उन्हें घात करने की आज्ञा दिई और वुह यिहूदियः से कैसरिया में आरहा।

२० और हिरोद सूर और सैदा के लोगों से निपट कोपित था परन्तु वे एक मता होके उसपास आये और उन्हों ने राजा के शयनस्थान के अध्यक्ष अर्थात बलासतू को अपनी ओर कर के मिलाप चाहा इस कारण कि उनके देश का उपजीवन राजा के देश से होता था। २१ और ठहराये ज़ुए दिन में हिरोद ने राज बस्त्र पहिन सिंहासन पर बैठकर उनसे बातें किईं। २२ तब

लोग पुकार के बोले कि यह तो देव का शब्द है मनुष्य का नहीं। २३ परन्तु जैसा कि उसने ईश्वर की महिमा न किई ईश्वर के दूत ने उसे मारा और वुह कीड़ों से खाया जाके मरगया। २४ और ईश्वर का बचन बढ़ा और बहुत हुआ। २५ और बरनबा और सौल अपनी सेवकाई को पूरी करके योहन को, जिसकी पदवी मरक थी अपने संग लिये हुए यिरुशालम को लौट आये

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ अब अन्ताकियः की मंडली में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे निज करके बरनबा और शिमोन जो निजार कहावता था और कुरीनी लूकिय और मानायन जो चौथाई के स्वामी हिरोद का दूधभाई था और सौल। २ जब वे मंडली में प्रभु की प्रार्थना और ब्रत करते थे धर्मात्मा ने कहा कि मेरे लिये बरनबा और सौल को उस कार्य के निमित्त अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है। ३ तब उन्हों ने ब्रत और प्रार्थना किई और हाथ उन पर रखके उन्हें बिदा किया। ४ सो वे धर्मात्मा के भेजे हुए सलूकियः को गये और वहां से खोलके कबरस को चले। ५ और सलामीस में पहुंचके यिहूदियों के सेवागृह में ईश्वर के बचन का उपदेश किया और योहन उनका सहायक था। ६ और उस टापू में पफस लों सर्व्वत्र फिरके उन्हों ने बारीशू

नाम एक यिहूदी को पाया जो टोनहा और झूठा भविष्यद्वक्ता था। ७ जो उस देश के अध्यक्ष सर्जिय पौल एक प्रतिष्ठित मनुष्य के संग था उसने बरनबा और सौल को बुलाके ईश्वर का बचन सुन्ने चाहा। ८ परन्तु एलुमा ने, जिसका अर्थ टोनहा है इस इच्छा से उसका सामना किया कि अध्यक्ष को बिश्वास से फेर देवे। ९ तब सौल, अर्थात पौल ने धर्मात्मा से भरपूर होके उसे तकके कहा। १० अरे तू जो निरे कपट और सारी दुष्टता से भरा है पिशाच के पुत्र और सारे धर्म के बैरी क्या तू ईश्वर के सीधे मार्ग को टेढ़ा करने से अलग न रहेगा? ११ और अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर पड़ा है और तू अंधा होजायगा और कितने दिन लों सूर्य को न देखेगा और तुरन्त उस पर कुहिरा और अंधकार पड़ा और वुह ढूंढ़ता फिरा कि कोई उसका हाथ पकड़ के लेजाय। १२ इस बात को देख के अध्यक्ष प्रभु के उपदेश से बिस्मित होके बिश्वास लाया।

१३ तब पफस से खोल के पौल और उसके साथी पंफूलिय: के पर्गा में आये परन्तु योहन उन से अलग होके यिरुशलम को फिरगया। १४ तथापि वे पर्गा से होके पिसिदिय: के अन्ताकिय: में आये और बिश्राम दिन मंडली में जा बैठे। १५ और व्यवस्था और भविष्य बचन के पढ़ने के पीछे मंडली के प्रधानों ने उन्हें कहला भेजा कि हे मनुष्य, भाइयो यदि लोगों के

लिये कोई उपदेश का बचन तुम्हारे पास होवे तो कहो। १६ तब पौल खड़ा हुआ और हाथ से सैन करके बोला कि हे इसराईली मनुष्यो और जो ईश्वर से डरते हो सुनो। १७ इसराईल के इन लोगों के ईश्वर ने हमारे पितरों को चुन लिया और जब कि वे मिसर देश में परदेशी थे लोगों को बढ़ाया और सामर्थी हाथ से उन्हें वहां से निकाल लाया। १८ और चालीस बरस लों वुह बन में उनकी चाल सहता था। १९ और जब उसने किनान के देश में सात राज्यगणों को खेद दिया उसने उनके देश को अधिकार के लिये बांट दिया। २० और उसके पीछे साढ़े चार सौ बरस समुईल भविष्यद्वक्ता लों न्यायी भेजे। २१ और तब से उन्हों ने एक राजा चाहा और ईश्वर ने चालीस बरस लों बनियामीन की गोष्ठी का एक जन अर्थात कीश के बेटे साऊल को उन्हें दिया। २२ और उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा किया और उसके लिये यह साक्षी दिई कि मैं ने यस्से के बेटे दाऊद को अपना मनोनीत पाया जो मेरी सारी इच्छा को पूरा करेगा। २३ इसी मनुष्य के बंश से ईश्वर ने अपनी बाचा के समान इसराईल के लिये एक मुक्तिदायक यिशु को उदय किया। २४ और उसके आने से आगे योहन ने इसराईल के सारे लोगों को पछताव के स्नान का उपदेश दिया। २५ और जब योहन अपनी दौर को पूरा करने पर था तब वुह

बोला कि तुम लोग मुझे क्या समुझते हो मैं वुह नहीं हों परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिसके पांव की जूती खोलने के योग्य मैं नहीं हों। २६ हे मनुष्य भाइयो इबराहीम के सन्तान और हे लोगो जो ईश्वर से डरते हो तुम्हारे पास मुक्ति का यह बचन भेजा गया है। २७ क्योंकि यिरूशालम बासियों ने और उनके प्रधानों ने नतो उसको और न भविष्यद्वक्तों की उन बातों को जाना जो हर बिश्राम दिन में पढ़ी जाती हैं उसे दोषी ठहरा के उन्हें पूरा किया। २८ और यद्यपि उन्हों ने उस पर घात का कारण न पाया। २९ तथापि उन्हों ने पिलात से चाहा कि वुह घात किया जाय और जब उन्हों ने सब कुछ जो उसके बिषय में लिखा था पूरा किया तो उसे क्रूस पर से उतार के समाधि में रक्खा। ३० परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया। ३१ और जो उसके संग जलील से यिरूशालम में आये थे वुह उन्हें बज्जत दिन लों दिखाई दिया जो लोगों के आगे उसके साक्षी है। ३२ और हम तुम्हें मंगल समाचार सुनाते हैं कि जो बाचा पितरों से किई गई थी। ३३ उसे ईश्वर ने यिशु को फेर जिलाने से हम पर जो उनके सन्तान है पूरा किया है जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है आज तू मुझसे उत्पन्न ज्ञआ। ३४ और इस कारण से उसे जिलाया जिसतें वुह सड़ न जाय उसने यों कहा कि मैं तुझे दाऊद की

ठीक दया देउंगा। ३५ इस लिये उसने दूसरे स्थल में भी यों कहा कि तू अपने धार्म्मिक को सड़ने न देगा। ३६ दाऊद तो अपने समय को पूरा करके ईश्वर की इच्छा पर सोगया और अपने पितरों में बटुर के सड़ गया। ३७ परन्तु जिसे ईश्वर ने उठाया सो सड़ न गया। ३८ इस लिये हे मनुष्य भाइयो तुम्हें जाना जाय कि पापों से उद्धार उसी के द्वारा से तुम सभों के लिये पाप मोचन का उपदेश किया जाता है। ३९ और हर एक विश्वासी उसी के द्वारा सारे बस्तुन से निर्दोष है जिन से तुम लोग मूसा की व्यवस्था से निर्दोष नहीं हो सक्ते थे। ४० इस लिये चौकस होओ न होवे कि जो भविष्यद्वक्ता की पुस्तकों में कहागया है सो तुम पर आपड़े। ४१ कि देखो हे निन्दको और आश्चर्य करो और नाश होजाओ कि मैं तुम्हारे समय में एक ऐसा कार्य करता हों कि यद्यपि कोई तुम्हें सुनावें तुम लोग उसकी प्रतीति न करोगे।

४२ परन्तु जब यिहूदी मंडली से निकल जाते थे अन्यदेशियों ने चाहा कि ये बचन अगिले बिश्राम में हम सभो से कहेजायें। ४३ और जब भीड़ छूटगई तो बहुत से यिहूदी और नये भक्त पौल और बरनबा के संग होलिये और उन्हों ने उन से बातें करके उपदेश किया कि तुम लोग ईश्वर के अनुग्रह में बने रहो।

४४ और अगिले बिश्राम में सारे नगर के लगभग

ईश्वर का बचन सुन्ने को एकट्ठे आये। ४५ परन्तु यिहूदी मंडलियों को देख डाह से भरगये और विरोध करते और ईश्वर की निंद्दा बकते पौल के बचन के विरुद्ध कहा। ४६ तब पौल और बरनबा ने मन मन्ता कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हें कहा जाता परन्तु जैसा कि तुम लोग उसे टाल देते हो और अपने को अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर जाते हैं। ४७ क्योंकि प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा किई कि मैं ने तुझे अन्यदेशियों का उंजियाला कर रक्खा है जिसतें तू पृथिवी के अन्तलों मुक्ति का कारण होवे।

४८ और अन्यदेशी यह सुनतेही आनन्द हुए और प्रभु के बचन की स्तुति किई और जितने कि अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे बिश्वास लाये। ४९ और प्रभु का वचन उस सारे देश में फैल गया। ५० परन्तु यिहूदियों ने प्रतिष्ठित भक्तिन स्त्रियों को और नगर के प्रधानों को उसकाया और पौल और बरनबा पर उपद्रव किया और अपने सिवानों में से खेददिया। ५१ परन्तु वे अपने पांव की धूल उनके विरुद्ध झाड़ के यिकनियः को गये। ५२ परन्तु शिष्य आनंद और धर्मात्मा से भरगये।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ और यिकनियः में ऐसा हुआ कि वे यिहूदियों की मंडली में एक साथ गये और ऐसी कथा कही कि यिहूदियों की और यूनानियों की भी बड़ी मंडली बिश्वास लाई। २ परन्तु अबिश्वासी यिहूदियों ने अन्य देशियों को भड़काया और भाइयों के बिरुद्ध उनके मन में बैर डाला। ३ सो वे बहुत दिन लों रहिके प्रभु के बिषय में हियाव से कहते रहे और वुह अपने अनुग्रह के बचन पर साक्षी देता और कृपा करके लक्षण और आश्चर्य उनके हाथों से प्रगट करता रहा। ४ परन्तु नगर की मंडली बिभाग हुई कुछ तो यिहूदियों के संग रहे और कुछ प्रेरितों के। ५ परन्तु जब अन्यदेशियों ने और यिहूदियों ने प्रधानों के साथी होके उन्हें सताने को और पथरवाने को हल्ला किया। ६ वे उस्से चौकस होके लकऊनिया के नगर लुस्तरा और दर्बा और उस सिवाने के देश में भाग गये। ७ और वहां मंगल समाचार प्रचारा।

८ और लुस्तरा का एक मनुष्य पाओं का दुर्बल बैठा था जो अपनी माता के गर्भ से लंगड़ा था और कभी न चला था। ९ उसी ने पावल को बार्त्ता करते सुना जिसने उस पर टकटकी लगा के देखा कि उसको चंगा होने का बिश्वास है। १० उसने बड़े शब्द से कहा कि अपने पाओं पर सीधा खड़ा हो वुह तुरन्त उछला और चलने

लगा। ११ और लोग पाल का किया हुआ देखके लकाउनिया की भाषा में चिल्ला के कहने लगे कि देव मनुष्य के भेष में हम पास उतर आये हैं। १२ और उन्हों ने बरनबा का नाम बृहस्पति और पौल का बुध रक्खा क्योंकि वुह प्रधान बक्ता था। १३ और वे बृहस्पति को अपने नगर का उपकारी जानते थे और उसके पुरोहितों ने मंडली समेत बैल और फूलों के हार द्वारों पर लाके चाहा कि बलि चढ़ावें। १४ परन्तु बरनबा और पौल दोनो प्रेरितों ने सुन के अपने ओढ़ने फाड़े और मंडलियों में दौड़ गये और चिल्लाके बोले। १५ कि हे मनुष्यो तुम लोग ये सब क्यों करते हो? तुम सरी के हम भी दुर्बल मनुष्य हैं और तुम्हें मंगल समाचार का उपदेश करते हैं जिसतें इन व्यर्थ भावना को छोड़ के जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उनमें हैं बनाया। १६ उसने अगिले समयों में अपने अपने मार्गों में सारे जातिगणों को चलने दिया। १७ तथापि उसने भलाई करके स्वर्ग से बृष्टि और फलवंत रितुन को हमें देके हमारे अंतःकरण को भोजन से भरके सन्तुष्ट किया उसने अपने को बिना साक्षी न छोड़ा। १८ और इन बातों को कहिके उन्हों ने बड़े कठिन से लोगों को बलि चढ़ाने से रोक रक्खा।

१९ परन्तु कितने यिहूदियों ने अन्ताकिया और

यकूनिया से आके मंडली को बहकाया और पौल को पथरवाह किया और उसे मृतक समझ के नगर के बाहर खिंचवाया। २० परन्तु जब शिष्य उसके आसपास एकट्ठे ऊए तो उठके वुह नगर में आया और अगिले दिन बरनबा के संग दर्बा को चलागया।

२१ और उस नगर में मंगल समाचार प्रचारा और बऊतों को शिष्य करके वे लस्तरा और यकूनिया और अंताकिया को फिर आये। २२ और शिष्यों के मन को दृढ़ करके उन्हें विश्वास पर स्थिर रहने को उपदेश किया और साची दिई कि हमें अवश्य है कि बऊत परिश्रम से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करें। २३ और उन्हों ने हर एक मंडली के लिये प्राचीन ठहराये और ब्रत और प्रार्थना करके उन्हें प्रभु को सौंप दिया जिसपर वे बिश्वास लाये थे। २४ और फिसिदियः से होके पंफूलियः में आये। २५ और पर्गा में वचन का उपदेश करके अतालियः को उतर पड़े। २६ और वहां से खोल के अंताकिया को गये जहां से वे उस कार्य के कारण ईश्वर के अनुग्रह से सैंपे गये थे जिसे उन्हों ने संपूर्ण किया था। २७ और आके मंडली को एकट्ठे करके जो कि ईश्वर ने उनको ओर से किया था और कि उसने किस रीति से अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार खोला बर्णन किया। २८ और वे बऊत दिन लों शिष्यों के संग वहां रहे।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

१ और कितनों ने यिहूदियः से आके भाइयों को सिखाया कि यदि तुम सब मूसा की रीति के समान खतनः न कराओ तो उद्धार नहीं पासक्ते। २ इस लिये जब पौल और बरनबा से और उनसे पच्ची पच्ची और बादानुबाद हुआ तब उन्हों ने ठहराया कि पौल और बरनबा और उनमें से कई एक यिरुशालम को प्रेरितों और प्राचीनों कने इस प्रश्न के कारण जावें। ३ सो वे मंडली से बढ़ाये गये और फूनीकी और सामरः से होके अन्यदेशियों के मन के फिरने का संदेश देते चलेगये और वे भाइयों के अति आनंद के कारण हुए। ४ और जब वे यिरुशालम में आये तो मंडली के लोग और प्रेरितों और प्राचीनों ने उन्हें ग्रहण किया और सब कुछ जो ईश्वर ने उनके द्वारा से किया था उन्हें कहिसुनाया। ५ परन्तु फरीसियों के मत के कितने विश्वासी उठके कहने लगे कि उनका खतनः करवाना और मूसा की व्यवस्था पर चलने की उन्हें आज्ञा करनी उचित है।

६ तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में निर्णय करने को एकट्ठे हुए। ७ और बहुत बादानुबाद के पीछे पथर खड़ा होके उन से बोला कि हे मनुष्य भाइयो तुम लोग जानते हो कि बहुत दिन बीते ईश्वर ने हम्में से चुना कि अन्यदेशी मेरे मुंह से मंगल समाचार

के बचन को सुन के बिश्वास लावें। ८ और अंतर्जामी ईश्वर ने उनके लिये साक्षी दिई जैसा उसने हमें धर्म्मात्मा दिया तैसा उन्हें भी दिया। ९ और उनके अंत:करण को बिश्वास से पवित्र करके हमें और उनमें कुछ भेद न रक्खा। १० सो अब तुम लोग क्यों ईश्वर की परीक्षा करते हो और शिष्यों के गले पर जूआ रखते हो जिसे न हम न हमारे पितर सह सक्ते थे? ११ और हमें निश्चय है कि हम प्रभु यिशु मसीह के अनुग्रह से उनके समान मुक्ति पावेंगे। १२ तब सारी मंडली चुप हुई और बरनबा और पैाल से उन सारे लक्षण और आश्चर्य का बर्णन सुन्ने लगे जो जो ईश्वर ने उनके द्वारा अन्यदेशियों में दिखलाये।

१३ और जब वे चुपरहे तो याकूब ने उत्तर में कहा कि हे मनुष्य भाइयो मेरी सुनो। १४ शिमोन ने बर्णन किया है कि ईश्वर ने पहिले अन्यदेशियों पर किस रीति से दृष्टि किई कि उनमें से अपने नाम के लिये एक मंडली चुनलेवे। १५ और भविष्यद्वक्तों के बचन उस्से मिलते हैं जैसा कि लिखा है। १६ इसके पीछे मैं फिर आके दाऊद के गिरे हुए तंबू को फेर खड़ा करोंगा और उसके उजाड़ों को फेर बनाके सुधारोंगा। १७ कि जो लोग रहिगये हैं अर्थात सारे अन्यदेशी जो मेरे नाम के हैं प्रभु को ढूंढ़ें यह परमेश्वर की कही हुई है जो इन बस्तुन को पूरा करता है। १८ ईश्वर के

सारे कार्य सनातन से जाने ऊए हैं। १९ सो मेरा बिचार यह है कि अन्यदेशियों में से जो ईश्वर की ओर फिरे हैं उन पर अधिक भार न देवें। २० परन्तु हम उनके पास लिखें जिसतें वे मूर्त्तिन की अपवित्रता ओर व्यभिचार ओर गलाघोंटेऊओं ओर लोह्न से परे रहें। २१ क्योंकि पुराचीन पीढ़ियों से हर एक नगर में मूसा के प्रचारक हैं ओर मंडलियों में हर बिश्राम में पढ़ा जाता है।

२२ तब प्रेरित ओर प्राचीन ओर सारे मंडली को अच्छा लगा कि पौल ओर बरनबा के साथ अपने में से चुने ऊए मनुष्यों को अर्थात यिह्नदा को जिसकी पदवी बरसाबास थी ओर सीलास की जो भाइयों में श्रेष्ठ गिना जाता था अन्ताकिया को भेजें। २३ ओर यह लिख के उनके हाथ से भेजा कि भाइयों को जो अन्ताकिया ओर शाम ओर किलकिया में हैं ओर आगे अन्यदेशियों में के थे प्रेरितों ओर प्राचीनों ओर भाइयों का नमस्कार। २४ जैसा कि हमने सुना है कि हम्में से कितनों ने निकल के तुम्हें बातों से व्याकुल किया ओर तुम्हारे मन को यह कहिके चंचल किया कि खतनः करवाने को ओर व्यवस्था पर चलने को तुम्हें अवश्य है जिन्हें हम ने आज्ञा न दिई। २५ सो हम सब ने एक मता होके उचित जाना कि चुने ऊए मनुष्यन को अपने प्रिय बरनबा ओर पौल के संग तुम्हारे पास भेजें।

२६ जिन्हों ने अपने प्राण को हमारे प्रभु यिशु मसीह के नाम के लिये सैांप दिया। २७ सो हम ने यिहूदा और सीलास को भेजा है वे मुंह से भी ये बातें कहेंगे। २८ क्योंकि धर्मात्मा को और हम को अच्छा लगा कि केवल उन कार्यों के जो अवश्य हैं तुम सभों पर अधिक भार न डालें। २९ कि तुम लोग मूर्त्ति पर के बलिदान और लोहू और गलाघोंटेहुओं और व्यभिचार से परे रहो उनसे अपने को अलग रखने में भला करोगे तुम्हारा भला होवे।

३० सो वे बिदा होके अन्ताकिया में आये और मंडली को एकट्ठे करके पत्री पहुंचाई। ३१ वे उस कुशल की पत्री को पढ़के आनन्दित हुए। ३२ और यिहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुतसी बातों से उपदेश करके भाइयों को दृढ़ किया। ३३ और कुछ दिन रहिके वे कुशल से भाइयों से बिदा होके प्रेरितों की ओर गये। ३४ परन्तु सीलास को वहां रहना अच्छा लगा। ३५ पैाल और बरनबा भी और बहुतों के संग प्रभु का वचन उपदेश करते और सिखावते अंताकि में रहि गये।

३६ और कुछ दिन के पीछे पैाल ने बरनबा से कहा कि चलो हम अपने भाइयों से हर एक नगर में जहां हम ने प्रभु के वचन का उपदेश किया है फिरके भेंटकरें और उनकी दशा को देखें। ३७ और बरनबा ने योहन

को, जिसकी पदवी मरक थी अपने संग ले जाने को चाहा। ३८ परन्तु पौल ने उस जन को अपने संग लेना ठीक न समझा जो पंफूलिय: में उनसे अलग होगया था और कार्य के कारण उनके संग न गया। ३९ और उन में ऐसा बड़ा विवाद हुआ कि एक दूसरे से अलग होगया और बरनबा मरक को संग लेके कुपर को नाव पर चला गया। ४० परन्तु पौल ने सीला को चुनलिया और भाइयों से ईश्वर के अनुग्रह को सौंपा जाके बिदा हुआ। ४१ और वुह शाम और किलिकिय: से मंडलियों को दृढ़ करता हुआ चला गया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ तब वुह दर्बा और लस्तरा में पहुंचा और वहां तीमताउस नाम एक बिश्वासिनी यिहूदनी का पुत्र था परन्तु उसका पिता यूनानी था। २ लस्तरा और यकूनिया के भाई लोग जिसकी सुचाल के जानकार थे। ३ उसको पौल ने अपने संग लेजाने को चाहा सो उधर के यिहूदियों के लिये उसने उसे लेके खतन: कराया क्योंकि वे सब जानते थे कि उसका पिता यूनानी था। ४ और नगरों में होके जाते हुए उन्हों ने यिरूशालम में के प्रेरितों और प्राचीनों की ठहराई हुई आज्ञाओं को उन्हें सौंपी। ५ इस लिये मंडलियां बिश्वास में दृढ़ हुईं और प्रति दिन गिनती में बढ़ती गईं।

६ और वे फरजः और गलतियः के देश में होके

निकल गये और आसिया में बचन प्रचारने को धर्मात्मा ने उन्हें बरजा। ७ जब वे मूसिय: में आये तो बतूनिय: को जाने चाहा परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। ८ सो वे मूसिय: से होके तरवास में उतर पड़े। ९ और रात को पौल पर दर्शन हुआ कि कोई मकदूनी यह कहिके उसकी बिनती कर रहा है कि मकदूनिय: में पार आ और हमारा उपकार कर। १० और जब उसने यह दर्शन पाया तुरन्त हम ने मकदूनिय: में जाने को ठाना यह निश्चय जान के कि प्रभु ने उन में मंगल समाचार प्रचारने को हमें बुलाया।

११ हम तरवास से खोल के सीधे साम्रतराकी को आये और दूसरे दिन नेयापूलस को। १२ और वहां से फिलिप्पी में आये जो मकदूनिय: के उधर के नगरों में बड़ा नगर और परदेशियों का निवास है उसी नगर में कुछ दिन रहे। १३ और बिश्राम के दिन हम उस नगर से निकल के नदी के तीर गये जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके उन स्त्रियों से बातें किईं जो वहां एकट्ठी थीं। १४ और सुआतीर: के नगर की बैजनी की व्यापारिनी लूदिय: नाम एक स्त्री थी जो ईश्वर को भजती थी हमारी सुनी जिसके मन को पौल के बचन सुन्ने को ईश्वर ने खोला। १५ और जब उसने अपने परिवार समेत स्नान पाया तो हमारी बिनती करने लगी कि यदि आप मुझे प्रभु की बिश्वासिनी जानते हैं

तो चल के मेरे घर उतरिये और वुह हमें बरबस ले गई।

१६ और जब हम प्रार्थना को जाते थे तो ऐसा हुआ कि एक कन्या हम को मिली जो गुप्तज्ञानी पिशाच से ग्रस्त थी और भविष्य कहि कहिके अपने स्वामियों को बहुत कुछ कमवादेती थी। १७ वुह पौल के और हमारे पीछे पीछे चली और चिल्लाके कहने लगी कि ये मनुष्य अतिमहान ईश्वर के सेवक हैं और हमें मुक्ति का मार्ग बताते हैं। १८ और वुह कई दिन लों यह करती रही परन्तु पौल उदास होके फिरा और उस पिशाच को कहा मैं यिशु मसीह के नाम से तुझे आज्ञा करता हों उस पर से उतर वुह उसी घड़ी उस पर से उतर गया।

१९ परन्तु जब उसके स्वामियों ने देखा कि लाभ की आशा जाती रही तो पौल और सीलास को पकड़ा और हाट में खैंचेहुए अध्यक्षों कने लेचले। २० और उन्हें प्रधानों पास लाके बोले कि ये मनुष्य यिहूदी होके हमारे नगर को निपट सताते हैं। २१ और ग्रहण करने और पालन करने को व्यवहार सिखाते हैं जो हम रूमियों के लिये अनुचित हैं। २२ तब लोग उसके विरोध में एकट्ठे उठे और प्रधानों ने उनके कपड़े फाड़े और उन्हें छड़ियों से मारने की आज्ञा किई। २३ और उन्हें बहुतसा मारके बंदीगृह में डाला और वहां

के प्रधान को आज्ञा किई कि उन्हें बहुत चौकसी से रक्खो। २४ उसने यह दृढ़ आज्ञा पाके उन्हें भीतर के बंदीगृह में ढकेला और उनके पाओं को काठ में डाला।

२५ परन्तु आधी रात को पौल और सीला प्रार्थना में ईश्वर की भजन गाने लगे और बन्धुए सुनते थे। २६ और आकस्मात एक बड़ा भुइंडोल हुआ यहां लों कि बंदीगृह की नेवें हिलगईं और तुरन्त सारे द्वार खुल गये और सभों के बन्धन उसक गये। २७ तब बंदीगृह का प्रधान नींद से उठा और बंदीगृह के द्वार खुले देखके समुझा कि बन्धुए भाग गये और तलवार खींच के अपने तईं घात करने चाहा। २८ इतने में पौल ने बड़े शब्द से पुकार के कहा कि अपने को दुःख न दे क्योंकि हम सब यहीं हैं। २९ तब वुह दीआ मंगवाके भीतर लपका और थर्थराता हुआ पौल और सीला के आगे गिर पड़ा। ३० और उन्हें बाहर लाके कहा कि हे महाशय मुक्ति के लिये मुझे क्या करना अवश्य है? ३१ वे बोले कि प्रभु यिशु मसीह पर बिश्वास लाओ तब आप और आप के घराने मुक्ति पावेंगे। ३२ तब उन्हों ने उसे और उसके घर के सारे लोगों को प्रभु का बचन सुनाया और। ३३ उन्हें रात को उसी घड़ी लेके उसने उनके घावों को धोया और वहीं उसने और उसके सभों ने स्नान पाया। ३४ और उन्हें अपने घर

खाके उसने उनके आगे भोजन रक्खा और अपने सारे घर समेत ईश्वर पर बिश्वास लाके मगन हुआ।

३५ और जब दिन हुआ उन्हें छोड़ देने को अध्यक्षों ने धावनों की ओर से कहला भेजा। ३६ और बंदीगृह के रक्षक ने ये बातें पौल को कहीं कि अध्यक्षों ने तुम्हें छोड़ देने को कहला भेजा है सो अब निकल के कुशल से जाइये। ३७ परन्तु पौल ने उन्हें कहा कि हम रूमियों को बिन दोषी ठहराए प्रगट में मारा और बंदीगृह में डाला है और अब वे हमें चुपके से निकाल देते हैं कधी न होगा परन्तु वे आप आके हमें बाहर पहुंचावें। ३८ तब धावनों ने जाके ये बातें अध्यक्षों को सुनाईं और जब उन्हों ने सुना कि वे रूमी हैं तो डरगये। ३९ और आके उन्हें समझाया और बाहर पहुंचा के उनकी बिनती किई कि नगर से चले जावें। ४० सो वे बंदी गृह से निकल के लूदियः के घर गये और भाइयों को देख के उन्हें शांति दिई और बिदा हुए।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

१ तब वे अंफिपोलिस और अपल्लोनियः से होके तस्सलोनीकी में आये जहां यिहूदियों का एक सेवागृह था। २ और पौल अपने ब्यवहार पर उनमें जाके तीन बिश्रामों में धर्म्म पुस्तकों से उपदेश करता रहा। ३ और खोल खोलके और प्रमाण लालाके कहता था कि मसीह को दुःख उठाना और जी उठना उचित था

और कि यह यिशु जिसका मैं तुम्हें सुनाता हों मसीह है। ४ तब उनमें से कितने बिश्वास लाये और पैाल और सीला से मिल गये और भक्त यूनानियों में से बक्कत और बिशेष स्त्रियों में से थाेड़ी नहीं। ५ परन्तु अबिश्वासी यिहूदियों ने डाह से भर के कितने नीच और कुचालियों को एकट्ठे लिया और भीड़ किया और बटुर के नगर में हौरा मचाया और यासोन के घर पर हल्ला किया और उन्हें लोगों के पास लाने चाहा। ६ परन्तु उन्हें न पाके यासोन को कितने भाइयों समेत नगर के प्रधानों पास खींच लेगये और चिल्लाते जाते थे कि इन लोगों ने जगत को उलट दिया और यहां भी आये हैं। ७ उनको यासोन ने घर में उतारा और ये सब कैसर की आज्ञा बिरुद्ध कहते हैं कि दूसरा राजा कोई यिशु है। ८ सो उन्हों ने मंडली और नगर के अध्यक्षों को वे सुनाकर व्याकुल किया। ९ तब उन्हों ने यासोन से अरु औरों से बिचवई लेके छोड़ दिया।

१० परन्तु भाइयों ने तुरन्त पैाल और सीला को रातेरात बरिया को बिदा किया और वे वहां पहुंचके यिहूदियों के सेवा गृह में गये। ११ यहां के लोग तस्सलोनीकी के लोगों से अधिक प्रतिष्ठित थे क्योंकि उन्हों ने बचन बड़े आनन्द से ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म पुस्तक में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें योंहीं हैं अथवा

नहीं। १२ इस लिये बहुत उनमें से और युनानी उत्तम स्त्रियों में से भी और पुरुषों में से बहुतेरे बिश्वास लाये। १३ परन्तु जब तस्सलोनीकी के यिहूदियों ने सुना कि पौल बरिया में भी ईश्वर के बचन प्रचारता है तो उन्हों ने वहां भी आके लोगों में हौरा मचाया। १४ और भाइयों ने उसी समय पौल को बिदा किया जैसा कि वुह समुद्र से जाता है परन्तु सीला और तीमती वहीं रहे। १५ और जो पौल को पहुंचाने गये सो उसे अथीनः लों लाये और सीला और तीमती के लिये आज्ञा लेके चल निकले कि शीघ्र जैसे हो सके उस पास आवें।

१६ सो जब पौल अथीनः में उनकी बाट जोह रहा था और नगर को देवपूजा के बश में देखा तो उसका मन भीतर से उभड़ा। १७ इस लिये वुह यिहूदियों से और भक्तों से, जो उनके साथ सेवा में रहते थे मंडली में और प्रतिदिन जो उसे हाटों में मिलते थे बिवाद करता था। १८ तब एपिकूरी और स्तैकी के पण्डितों में से कितनों ने उसका साम्हना किया और कितनों ने कहा कि यह बकवादी क्या कहेगा? और कितने बोले कि यह उपरी देवों का प्रचारक दिखाई देता है क्योंकि वुह उन्हें यिशु का और जी उठने का संदेश देता था। १९ सो उन्हों ने उसे लेके मिरीख के पहाड़ पर लाके कहा कि जो नई शिक्षा तू सुनाता है हम लोग उसे जान

सक्ते हैं? २० क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है हम लोग उन बस्तुन का भेद जान्ने चाहते हैं? २१ क्योंकि सारे अथीनी और उनमें के परदेश बासी केवल नई नई बात कहने अथवा सुन्ने के अपना समय और बात में न काटते थे।

२२ तब पौल मिरींख के पहाड़ के मध्य में खड़ा होके बोला कि हे अथीनः के मनुष्यो मैं तुम्हें अदृश्य पराक्रमों का अति पूजेरी देखता हों। २३ क्योंकि जाते ऊए मैं ने तुम्हारे पूज्यों में एक बेदी पर यह लिखा ऊआ पाया कि अजाना ईश्वर के लिये सो जिसे तुम सब अजाने ऊए पूजते हो मैं तुम्हें उसी का संदेश देता हों। २४ ईश्वर जिसने संसार और उसमें के सब कुछ उत्पन्न किया आकाश और पृथिवी का प्रभु होके हाथों के मन्दिरों में बास नहीं करता। २५ और वुह इसी लिये मनुष्य के हाथों से सेवा नहीं करवाता कि वुह किसी बस्तु का अधीन है क्योंकि उसी ने सब को जीवन और श्वास और सब कुछ दिया। २६ और उसने एकही लोहू से मनुष्यों के सारे जातिगणों को सारी पृथिवी में बसने को बनाया है और उनके निवास के सिवानों को और हर एक समय को ठहराया है। २७ जिसतें प्रभु को ढूंढ़े क्या जानें उसे टटोल के पावें यद्यपि वुह हम्में किसी से दूर नहीं। २८ क्योंकि हम लोग उसी से जीते चलते फिरते और स्थिर हैं जैसा कि तुम्हारेही

कितने कबितों ने भी कहा है कि हम तो उसी के बंश हैं। २९ सो यदि हम ईश्वर के बंश हैं तो हमें समुझने को उचित नहीं कि ईश्वर सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के समान है जो मनुष्य की भावना और बनावट से है। ३० क्योंकि यद्यपि ईश्वर ने अज्ञानता के समयों से आनाकानी किया तथापि अब आज्ञा करता है कि हर एक मनुष्य जो जहां है सो पश्चात्ताप करे। ३१ इस कारण कि उसने एक दिन ठहराया है अब कि वुह धर्म से उस मनुष्य के द्वारा जिसे उसने स्थापित किया है संसार का न्याय करेगा और उसे फेर जिलाने से इस बात को निश्चय किया। ३२ और जब उन्हों ने मृतकों के जी उठने की बात सुनी तो कितनों ने ठट्ठा किया परन्तु औरों ने कहा कि हम तुझ से इस बात के बिषय में फेर सुनेंगे। ३३ सो पौल उनमें से जातारहा। ३४ तथापि कितने लोग उस्से मिलके बिश्वास लाये जिनमें देयोनीस मंत्री था और दमरिस नाम एक स्त्री अरु उनके संग और कितने थे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे पौल अथीने से बिदा होके करिन्थी में आया। २ और पन्तस देशी अकिला नाम एक यिहूदी को पाया जो थोड़े दिन हुए अपनी स्त्री प्रिसकिला के संग ऐतालिया से आया था इस लिये कि क्लौदिय ने सारे यिहूदियों को रूम से निकलजाने

की आज्ञा किई थी से वुह उनके पास आया। ३ और इस लिये कि वुह उनकेसा उद्यमी था उनके संग रहा और कार्य किया क्योंकि उनका कार्य तंबू बनानेका था। ४ और उसने हर बिश्राम को सेवागृह में बिवाद्ने किया और यिहूदियों और यूनानियों को मनालिया। ५ और जब सीला और तीमती मकदूनिया से आये तो मन के उभड़ने से पौल ने यिहूदियों के आगे साची दिई कि यिशु वही मसीह है। ६ परन्तु जब वे विरोध करके ईश्वर की निंदा उच्चारने लगे उसने अपने वस्त्र को भाड़के उन्हें कहा कि तुम्हारा लोहू तुम्हारे सिरपर मैं निदोष हों सो अब से मैं अन्यदेशियों की ओर जाता हों।

७ और वहां से होके वुह यूस्तुस नाम ईश्वर के एक भक्त के घर गया जिसका घर सेवागृह से मिला हुआ था। ८ परन्तु मंडली का प्रधान क्रिसपस अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास लाया और सुनके बहुत से करिन्ती बिश्वास लाये और स्नान पाया। ९ परन्तु प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौल को कहा कि मत डर परन्तु कहे जा और चुपका मत रह। १० क्योंकि मैं तेरे संग हों तुझे सताने को किसी का हाथ तुझ पर न पड़ेगा क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं। ११ सो वुह डेढ़ बरस वहां रहके ईश्वर का वचन उनमें प्रचारता रहा।

१२ परन्तु जब गलिय अखाया का अध्यक्ष हुआ यिहूदियों ने एक मन से पौल पर हल्ला करके उसे बिचार स्थान में लाके कहा। १३ कि यह जन व्यवस्था बिरुद्ध ईश्वर की सेवा करने के लिये लोगों को उभाड़ता है। १४ और जब पौल ने उत्तर देने चाहा तो गलिय ने यिहूदियों से कहा कि हे यिहूदियो यदि यह कुछ अंधेर अथवा उपद्रव की बात होती तो तुम्हारी सहाय करने में उचित होता। १५ परन्तु यदि यह बचन के और नाम के और तुम्हारे शास्त्र के बिषय का बिवाद है तो तुम्हीं जानो क्योंकि मैं इन बातों का बिचारी न होंगा। १६ और उसने बिचार स्थान से उन्हें हांक दिया। १७ तब सारे यूनानियों ने सेवागृह के प्रधान सूस्तनीस को पकड़ के बिचार स्थान के आगे मारा परन्तु गलिय ने उन बातों को कुछ न समझा।

१८ और पौल और भी बहुत दिन लों वहां रहा तब भाइयों से बिदा होके कनकरिया में मनौती के लिये अपना सिर मुंड़ाके प्रिसकिला और अकिला के संग सिरिया की ओर चल निकला। १९ और उसने एफसस में आके वहां उन्हें छोड़ा परन्तु आप सेवागृह में जाके यिहूदियों से चर्चा किई। २० यद्यपि उन्हों ने कुछ दिन अपने यहां ठहरने को उसकी बिनती किई तथापि उसने न माना। २१ परन्तु उन से यह कहिके बिदा हुआ कि आवैया पर्ब्ब में मुझे यिरुशालम में

होना अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आओंगा और वुह एफसस से खोल चला। २२ और कैसरिया में पहुंच के उतर पड़ा और मंडली को नमस्कार करके अन्ताकियः में उतर पड़ा। २३ और वहां कुछ दिन रहिके चलागया और सारे शिष्यों को दृढ़ करता हुआ क्रम से गलतियः के देश और फ्रिगिय में सर्बत्र फिरा।

२४ अब इस्कन्दरानी एक यिहूदी अपलस नाम जो सुबक्ता और धर्म पुस्तक में बड़ा निपुण था एफसस में आया। २५ इस जन ने प्रभु के मत की शिक्षा पाई थी और मन के तेज से प्रभु की बातें कहता और ठीक रीति से सिखाता था परंतु केवल योहन के स्नान का जानकार था। २६ उसने साहस से सेवागृह में कहना आरंभ किया और अक्किला और प्रिसकिला उसे सुनके अपने घर लाये और ईश्वर का मत अति अच्छी रीति से उस पर खोला। २७ और जब उसने अखायः में पार जाने चाहा तो उसे ग्रहण करने को भाइयों ने शिष्यों पास लिखा और पहुंचके जो अनुग्रह के द्वारा से बिश्वास लाये थे उसने उनकी बड़ी सहाय किई। २८ क्योंकि उसने बड़ी दृढ़ता से धर्म्म पुस्तकों से दिखा दिखा के कि यिशु वही मसीह है यिहूदियों से बिवाद किया।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और जब अपलोस करिन्त में था तो ऐसा हुआ कि पौल ऊपर के सिवाने से फिर के एफसस में आया और कितने शिष्यों को पाके। २ उन्हें कहा कि जब से बिश्वास लाये तुम ने धर्मात्मा को पाया उन्हों ने उत्तर दिया कि हम ने तो धर्मात्मा का होना नहीं सुना। ३ उसने उन्हें कहा तो तुम ने किस बात का स्नान पाया? वे बोले कि हम ने योहन का स्नान पाया। ४ तब पौल ने कहा कि योहन ने निश्चय पश्चात्ताप का स्नान देते हुए लोगों को यों कहा कि जो मेरे पीछे आता है उस पर बिश्वास लाओ अर्थात यिशु मसीह पर। ५ उन्हों ने यह सुन के प्रभु यिशु के नाम से स्नान पाया। ६ और पौल के उन पर हाथ धरतेही धर्मात्मा उन पर उतरा और वे भांति भांति की भाषा बोले और भविष्य कहने लगे। ७ और वे सब मनुष्य बारह एक थे।

८ और सेवागृह में जाके वुह तीन मास लों साहस से ईश्वर के राज्य के बिषय में बिवाद करता और समुझाता रहा। ९ परन्तु जब कितने कठोर और अबिश्वासी होके इस मत को मंडली के आगे बुरा कहने लगे वुह उन से अलग हो शिष्यों को एकान्त में लेके तरसस की पाठशाला में प्रतिदिन बिबाद करने लगा। १० और दो बरस लों यही हुआ किया यहां लों कि आसिया के निबासियों ने क्या यिहूदी क्या यूनानी सभों ने प्रभु

यिशु का बचन सुना। ११ और पौल के हाथों से ईश्वर परम आश्चर्य करता रहा। १२ यहां लों कि अंगोछा और वस्त्र उसके देह से रोगियों पर लेजाते थे और उनका रोग जाता रहता था और दुष्टात्मा उन पर से उतर जाते थे।

१३ तब बहेतू और मंत्र जापक यिहूदियों में से कितने प्रभु यिशु का नाम लेके दुष्टात्मा ग्रस्तों को कहने लगे कि जिस यिशु का प्रचारक पौल है हम तुम्हें उसकी किरिया देते हैं। १४ और सुकवा यिहूदी प्रधान याजक के सात बेटे यही करते थे। १५ तब दुष्टात्मा ने उत्तर देके कहा कि यिशु को मैं जानता हों और पौल का जानकार हों परन्तु तुम कौन हो? १६ और दुष्टात्मा ग्रस्त मनुष्य उन पर लपका और उन पर प्रबल होके उन्हें बश में किया यहां लों कि वे घर से नंगे और घायल निकल भागे। १७ और यह बात एफसस बासी सारे यिहूदियों और यूनानियों को जान पड़ी और उन सभों पर डर पड़ी और प्रभु यिशु के नाम की महिमा ऊई। १८ और बऊतेरे बिश्वासियों ने आ आ के मान लिया और अपने अपने कर्म्म को प्रगट किया। १९ और बऊतेरे इंद्रजाली अपनी पुस्तकों को एकट्ठे लाये और सब के आगे फूंक दिये और उन्हों ने उनके मोल का जो लेखा किया तो पचास सहस्र टुकड़े चांदी ऊए।

२० ऐसे पराक्रम से ईश्वर का बचन बढ़ा और प्रबल हुआ।

२१ जब ये बातें हो चुकीं तब पौल ने मकदूनिया और अखाय: से हो यिरुशालम में यह कहिके जाने को ठाना कि वहां से मुझे रूम को भी देखना अवश्य है। २२ और अपनी सेवाकारियों में से दो को अर्थात तीमती और एरास्तस को मकदूनिया को भेजा और आप आसिया में कुछ दिन रहा। २३ और उस समय उस मत के विषय में वहां बड़ा हौरा हुआ। २४ क्योंकि दिमीतरय नाम एक सुनार था जो एरतमस की मूर्त्ति चांदी से बना बना कार्य्यकारियों को बहुत काम लाता था। २५ उसने ऐसे कार्यकारियों को एकट्ठे बटोर के कहा कि हे मनुष्यो तुम लोग जानते हो कि हमारी जीविका इसी उद्यम से है। २६ और देखते और सुनते हो कि केवल एफसस में नहीं परन्तु सारे आसिया में इस पौल ने बहुत से लोगों को मना मना के भटकाया है और कहता है कि जो हाथों से बने हैं सो देव नहीं होते। २७ सो केवल यही तो खटका नहीं कि हमारे उद्यम का निरादर होजाय परन्तु महेश्वरी अर्तमिस का मंदिर भी निन्दित होजायगा और जिसकी पूजा सारे आसिया और संसार करते हैं उसकी महिमा जाती रहेगी। २८ यह सुन के वे कोप से भर गये और चिल्ला उठे कि एफेसियों की अर्तमिस महान है। २९ तब सारे

नगर में बड़ा कोलाहल हुआ और गाय और मकदूनी अरिस्तर्ख को जो पौल के संगी पथिक थे घसीट के एक मत से क्रीड़ा स्थान को दौड़ गये। ३० और जब पौल ने लोगों में जाने चाहा तब शिष्यों ने उसे न छोड़ा। ३१ और आसिया के श्रेष्ठ प्रधानों में से भी उसके हितकारी होके कितनों ने कहला भेजा कि तू क्रीड़ा स्थान में जाने से परे रह। ३२ तब कितने कुछ चिल्लाये और कितने कुछ क्योंकि मंडली गड़बड़ा गई और बहुतेरे न जानते थे कि हम किस लिये एकट्ठे हुए हैं। ३३ और यिहूदियों ने सिकन्दर को आगे धकिआया और लोगों ने मंडली में से उसे बढ़ा दिया और अलकन्दर ने हाथ से सैन करके लोगों के आगे बचाव की बात करने चाहा। ३४ परन्तु जब उन्हों ने जाना कि वुह यिहूदी है तो सब के सब दो घड़ी लों एक सात चिल्लाये कि एफेसियों की अर्तमिस महान है। ३५ परन्तु अध्यापक ने मंडली को शान्ति करके कहा कि हे एफेसी मनुष्यो कौन मनुष्य नहीं जानता कि एफसस का नगर महेश्वरी अर्तमिस का और उस मूर्त्ति का पूजेरी है जो बृहस्पति से गिरी है? ३६ अब जैसा कि ये बातें अखंडित हैं तुम्हें उचित है कि चुपके रहो और उतावली से कुछ न करो। ३७ क्योंकि तुम लोग इन मनुष्यों को यहां लाये हो जो न तो मन्दिर के चोर और न तुम्हारी देवी के निंदक हैं।

३८ इस लिये यदि दिमीतरय और उसके संगी कार्य्य कारी किसी पर अपबाद रखते हों तो न्याय होरहा है और अध्यक्ष हैं एक दूसरे से बिबाद करें। ३९ परन्तु यदि तुम लोग आन आन बात के खोजी हो तो वुह बिचार सभा में निर्णय किया जायगा। ४० क्योंकि आज के दंगा के लिये हम लोग लेखा देने के खटके में हैं कि हमारे पास कोई ऐसा कारण नहीं जो इस भीड़ का कुछ उत्तर हो सके। ४१ और इन बातों को कहिके उसने उस सभा को बिदा किया।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ जब हुल्लड़ थीमा हुआ तो पौल शिष्यों को बुलाया और उन से मिल के मकदूनियः की ओर चल निकला। २ और उधर के स्थानों में से होके गया और उन्हें बहुत उपदेश करके यूनान में आया। ३ और वहां तीन मास रहिके जब वुह जहाज पर सुरिया में जाने को था यिहूदी उसके घात में लगे तब उसने मकदूनियः के मार्ग से लौटने को ठाना। ४ और बराई का सूपतर और अरिस्तर्खस और सिकंदस तसलोनीकी और गाय दरबी और तीमती और आसिया का तुखिकस और त्रूफिमस उसके संग आसिया लों गये। ५ ये आगे जाके त्रूया में हमारे लिये ठहरे। ६ और अखमीरी रोटी के दिनों के पीछे हम ने फिलिप्पी से खोली और पांच

दिन में त्रया को उन पास पहुंचे? और वहां सात दिन रहे।

७ और अठवारे के पहिले दिन जब शिष्य रोटी तोड़ने को एकट्ठे हुए बिहान को बिदा होने के लिये पौल उन्हें उपदेश करने लगा और कथा को आधी रात लों बढ़ाया। ८ और ऊपर के स्थान में जहां वे एकट्ठे थे बहुत से दीपक थे वहां एक तरुण यूतखस नाम का एक खिड़की पर बैठा सो गया। ९ और जैसा कि पौल ने अपनी कथा अबेर लों बढ़ाई वुह नींद के वश में होके तीसरी अंटारी से गिरपड़ा और मृतक उठाया गया। १० तब पौल उतर के उसे लपटगया और गोद में उठाके कहा, मत घबराओ क्योंकि उसका प्राण उसमें है। ११ तब ऊपर आये और रोटी तोड़ के खाया और सबेर अर्थात भोर लों बातें करता रहा तब बिदा हुआ। १२ और वे उस तरुण को जीता लाये और बहुत शान्त हुए।

१३ परन्तु हम आगे जहाज पर जाके असस को चले जहां पौल को चढ़ालेना था क्योंकि आप पांव पांव जाने की इच्छा करके ऐसा ठहराया था। १४ और जब वुह असस में हम को मिला तो उसे चढ़ाके हम मितलीनी में आये। १५ और वहां से खोलके दूसरे दिन खियू के साम्ने आये और अगिले दिन सामस में हो त्रगलियून में ठहर के अगिले दिन मिलितस में आये। १६ क्योंकि

पौल ने एफसस में होके जाने को ठहराया था जिसतें आसिया में कुछ समय रहने न पड़े इस लिये उसने बहुतसा उपाय किया कि यदि होसके तो पचासवें दिन का पर्ब्ब यिरुशालम में करें।

१७ परन्तु उसने मिलितस से एफसस की ओर संदेश भेजवाके मंडली के प्राचीनों को बुलाया। १८ और जब वे उस पास आये तो उन्हें कहा तुम लोग जानते हो कि आरंभ से जब मैं आसिया में आया और तुम्में रहा किया। १९ और कैसी बड़ी दीनताई से बहुत आंसू बहा बहा के उन परीक्षों में प्रभु की सेवा करता था जो यिहूदियों के घात में लगने से मुझ पर पड़ा था। २० और कैसा मैं ने कोई लाभ की बात न रख छोड़ी और तुम्हें उपदेश करके प्रगट में और घर घर सिखलाया किया। २१ और यिहूदियों और यूनानियों के आगे साक्षी दिई कि ईश्वर के आगे पछताओ और हमारे प्रभु यिशु मसीह पर बिश्वास लाओ। २२ और अब देखो मैं आत्मा में बंधा हुआ यिरुशालम को जाता हों और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा। २३ परन्तु इतना कि धर्मात्मा हर एक बस्ती में यह कहिके साक्षी देता है कि सीकरें और कष्ट मेरे लिये धरे हैं। २४ पर मैं इन बातों को कुछ नहीं बूझता और न मैं आप अपने प्राण को प्रिय जानता हों जिसतें मैं अपने दौड़ को और उस सेवा

को जो मैं ने प्रभु यिशु से पाया है आनंद से पूरा करों जिसतें ईश्वर के अनुग्रह के मंगल समाचार की साक्षी देउं। २५ और अब देखो मैं जानता हों कि तुम्में से जिनके मध्य में मैं ईश्वर के राज्य को प्रचारा और फिरा हों कोई मेरा मुंह फेर न देखेगा। २६ इस लिये मैं आज तुम्हारे आगे साक्षी देता हों कि हर एक के लोहू से मैं निर्दोष हों। २७ क्योंकि मैं तुम्हारे आगे ईश्वर की सारी मता बर्णन करने से अलग न रहा। २८ अब अपने और सारे झुंड के लिये जिस पर धर्मात्मा ने तुम्हें रखवाल किया सौचेत होके ईश्वर की मंडली को चराओ जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। २९ क्योंकि मैं यह जानता हों कि मेरे जाने के पीछे फड़वैये ऊंड़ार तुम्में पैठके झुंड पर दया न करेंगे। ३० हां तुम्हीं में से कितने मनुष्य उठेंगे जो शिष्यों को अपनी ओर खींचने को हठीली बातें कहेंगे। ३१ इस लिये चौकस रहो और चेत करो कि तीन बरस लों मैं रात दिन आंसू बहा बहा के हर एक को नित चिताता रहा। ३२ और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और उसके अनुग्रह के बचन को सौंपता हों जो तुम्हें सुधार सक्ता है और सभों में जो पवित्र किये गये हैं तुम्हें अधिकार दे सक्ता है। ३३ मैं ने किसी के सोने चांदी अथवा बस्त्र का लोभ न किया। ३४ हां तुम्हीं लोग जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरे और मेरे

संगियों की आवश्यक सेवा किई। ३५ मैं ने तुम्हें सब कुछ बता दिया है कि क्योंकर तुम्हें उचित है कि परिश्रम करके दुर्बलों का प्रतिपाल करो और प्रभु यिशु के बचन को स्मरण करो क्योंकि उसने आपही कहा है कि देना, लेने से अधिक धन्य है।

३६ और उसने यों कहिके घुठने टेके और उन सभों के संग प्रार्थना किई। ३७ और वे सब निपट रोये और पौल के गले पर गिर गिर उसे चूमा। ३८ विशेष उस बात के लिये जो उसने कही कि तुम सब मेरा मुंह फेर न देखोगे बहुत उदासीन हुए और जहाज लों उसे पहुंचाया।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

१ और उनसे अलग होके खोलो और सीधे कौस में आये और दूसरे दिन रूदस को और वहां से पतर: को गये। २ और एक जहाज को पार फैनीकी को जाते पाके हम लोग उस पर चढ़ बैठे और चल निकले। ३ और कुपरस को देख बायें हाथ छोड़ सुरिया को चले और सूर में उतर पड़े क्योंकि वहां नाव की बोझाई उतारनी थी। ४ और शिष्यों को पाके सात दिन ठहरे और उन्हों ने आत्मा की प्रेरणा से पौल को कहा कि यिरुशालम को मत जा। ५ परन्तु उन दिनों को पूरा करके हम चल निकले और बिदा हो अपना मार्ग पकड़ा और स्त्रियों और बालकों समेत वे सब नगर के

बाहर लों हमारे संग आये और हम ने नदी के तीर घुटने टेकके प्रार्थना किई। ६ और आपुस में बिदा होके जहाज पर चढ़ बैठे और वे अपने अपने घर को फिरे।

७ और अपनी दौड़ पूरी करके हम सूर से तलमाऊस में आये और भाइयों से मिलके एक दिन उनके संग रहे। ८ और विहान को पौल और उसके संगी विदा होके कैसरिया में आये और फ़िलिप मंगल समाचार प्रचारक के यहां, जो उन सात में से था उतर के उस कने टिके। ९ अब उस मनुष्य की चार कुआंरी बेटियां थीं जो भविष्यद्वक्ती थीं। १० और वहां बहुत दिन रहते हुए यिहूदियों से अजबस नाम का एक भविष्यद्वक्ता आया उसने हमारे पास आके पौल का पटुका उठालिया और अपने हाथ पांव बांधके कहा कि धर्मात्मा यों कहता है कि यिरुशालम में यिहूदी उस मनुष्य को, जिसका यह पटुका है यों बांधेंगे और अन्य देशियों के हाथ सौंपेंगे। १२ जब हम ने ये बातें सुनी तो हमने और वहां के बासियों ने उसकी बिनती किई कि यिरुशालम को न जावे। १३ परन्तु पौल ने उत्तर दिया कि क्यों बिलाप करके मेरे मन को तोड़ते हो? क्योंकि मैं तो केवल बांधे जाने को नहीं परंतु यिरुशालम में प्रभु यिशु के नाम के लिये मरने को भी लैस हों।

१४ और जब उसने न माना तो हम यों कहिके चुप हुए कि प्रभु की इच्छा होवे।

१५ और उन दिनों के पीछे हम अपनी सामग्री लेके यिरूशालम को चले। १६ तब हमारे संग कैसरिया में के कितने शिष्य भी गये और हमें एक मनसून कुपरसी पुराने शिष्य के घर पड़ंचाया जहां हमें टिकना था।

१७ और जब हम यिरूशालम में पहुंचे तो भाई आनन्द से हमें आगे से आ मिले। १८ और दूसरे दिन पौल हमारे संग याकूब कने आया और सारे प्राचीन भी एकट्ठे थे। १९ और उनसे मिलके सब कार्य्यन को जो ईश्वर ने अन्यदेशियों में उसकी सेवा की ओर से किये थे अलग अलग वर्णन किया। २० उन्हों ने सुनके प्रभु की स्तुति किई और उसे कहा कि भाई तू देखता है कि कितने सहस्र विश्वासी यिहूदी हैं और सबके सब व्यवस्था के लिये ज्वलित हैं। २१ उन्हों ने तेरे बिषय में सुना है कि तू अन्यदेशियों में के सारे यिहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है और कहता है कि अपने पुत्रों का खतनः करने और व्यवहार पर चलने को उचित नहीं। २२ सो यह क्या है? मंडली निःसंदेह एकट्ठी होगी क्योंकि तेरे आनेका सुनेंगे। २३ सो हमारे कहने के समान कर हमारे पास चार मनुष्य हैं जिनकी मनौती है। २४ उन्हें लेके आप को उनको संग पवित्र कर और उनके साझे में

कुछ उठान कर जिसतें वे अपना सिर मुंडावें और सब जानजायंगे कि जो बातें हमलोगों ने उसके विषय में सुनी थी सो कुछ नहीं परन्तु वुह भी व्यवस्था को पालन करके उसकी रीति पर चलता है। २५ और बिश्वासी अन्यदेशियों के विषय में हम ने लिखके ठहराया है कि वे इन बातों को न मानें परन्तु केवल इतना करें कि मूर्त्तिन के प्रसाद और लोहू और गला घोंटी हुई बस्तु के खाने और व्यभिचार से परे रहें।

२६ तब पौल उन मनुष्यों को लेके दूसरे दिन उनके संग पवित्र होके मन्दिर में गया और कहिदिया कि जब लों उनमेंसे हरएक का बलिदान चढ़ायाजाय पवित्रता के दिन पूरे होजायेंगे। २७ परन्तु जब सात दिन बीतने पर आये तो आसिया के यिहूदियों ने उसे मन्दिर में देखकर सारी मंडलियों को उभाड़ा और उसपर हाथ डालके चिल्लाये। २८ कि हे इसराईली मनुष्यो सहाय करो यह वुह जन है जो हर स्थान में लोगों और व्यवस्था के और इस स्थान के विरोध में सबको सर्व्वत्र सिखाता है और यूनानियों को भी मन्दिर में लाया और इस पवित्र स्थान को अशुद्ध किया। २९ इस लिये कि उन्हों ने आगे नगर में एफसस के त्रफिमस को देखा और समझा था कि पौल उसे मन्दिर में लाया। ३० तब सारा नगर चंचल हुआ और लोगों

की भीड़ ऊई और पौल को पकड़के मन्दिर में से बाहर घसीटा और झट द्वारों को बन्द किया।

३१ और जब वे उसे घात करने पर ऊए तो प्रधान सेनापति को संदेश पऊंचा कि सारे यिरूशालम में कोलाहल ऊआ है। ३२ तब वुह तुरन्त योद्धा और शतपतिन को लेके उनपर दौड़पड़ा और वे प्रधान और योद्धाओं को देखके पौल को मारने से अलग रहे। ३३ तब प्रधान ने पास आके उसे पकड़ा और दो सीकरों से बांधने की आज्ञा किई और पूछा कि यह कौन है और इसने क्या किया है? ३४ तब कितने कुछ बड़बड़ाए और कितने कुछ और जब वुह कोलाहल के मारे ठीक न जानसका तो उसे गढ़ में लेजाने की आज्ञा किई। ३५ परन्तु जब वुह सीढ़ी पर पऊंचा तो ऐसा ऊआ कि लोगों के कारण योद्धाओं ने उसे उठाया। ३६ क्योंकि लोगों की एक बड़ी मण्डली चिल्लाती आती थी कि उसे उठा डालो।

३७ परन्तु जब पौल को गढ़ में लेजाने लगे तो उसने प्रधान को कहा कि मैं आप से कुछ कहों वुह बोला क्या तू यूनानी बोल सक्ता है? ३८ तू वुह मिसरी नहीं जिसने इन दिनों से आगे दंगा मचाया और चार सहस्त्र हत्यारे को बन में लेगया? ३९ परन्तु पौल ने कहा कि मैं तो किलकिय: के तरसस का एक यिहूदी हों जो ऐसा हलुक नगर नहीं और मैं बिनती करता

हों कि मुझे लोगों से बोलने दीजिये। ४० उसने उसकी इच्छा पा सीढ़ी पर खड़े होके लोगों को हाथ से सैन किया और जब वे चुप चाप हुए तब वुह इबरी भाषा में यह कहिके बोला।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ हे मनुष्यों और पितरों मेरे बचाव की बात सुनो जो अब तुम से कही जाती है। २ जब उन्हों ने उसे इबरी भाषा में बातें करते सुना तो वे तनिक न बोले। ३ तब उसने कहा कि मैं यिहूदी मनुष्य हों जो किलकियः के तरसस में उत्पन्न हुआ परन्तु इस नगर में गमलईल के चरण पास बिद्या पाई और पितरों की व्यवस्था में ठीक उपदेश पाया और ईश्वर के लिये ऐसा ज्वलित था जैसा तुम लोग आज के दिन हो। ४ और मैं इस मत के लोगों को मृत्यु लों बैर करता रहा और क्या पुरुष क्या स्त्री को बंदीगृह में सौंपा किया। ५ जैसा कि प्रधान याजक और सारे प्राचीन मेरे साक्षी हैं उनसे मैं भाइयों के लिये पत्री पाके दमिश्क को जाता था जिसतें वहां के लोगों को ताड़ना कराने के लिये बांधके यिरूशालम में लाओं। ६ और जाते जाते जब मैं दमिश्क पास पहुंचा तो दो पहर के अंटकल में ऐसा हुआ कि मेरी चारों ओर अकस्मात स्वर्ग से बड़ी ज्योति चमकी। ७ और मैं भूमि पर गिरपड़ा और मुझे कहते हुए मैं ने एक शब्द सुना कि साऊल साऊल

तू मुझे क्यों सताता है? ८ तब मैं ने उत्तर देके कहा हे प्रभु तू कौन है? उसने मुझे कहा कि मैं यिशु नासरी हों जिसे तू सताता है। ९ और मेरे संगियों ने उस ज्योति को तो देखा ठीक और डर गये परन्तु जिसने मुझसे कहा उन्हों ने उसका शब्द न सुना। १० तब मैं ने कहा कि हे प्रभु मैं क्या करों? प्रभु ने मुझे कहा कि उठके दमिश्क में जा और वहां सारी बातें जो तुझे करने के लिये ठहराई गई हैं सो कही जायेंगी। ११ और जैसा कि उस ज्योति के तेज के मारे मैं देख न सका तो अपने संगियों का हाथ धरे हुए दमिश्क में आया। १२ और व्यवस्था की रीति का एक भक्तजन, हनानिया, जिसकी भलाई सारे यिहूदी मानते थे। १३ मेरे पास आया और खड़े होके मुझे कहा, हे भाई साऊल ऊपर देख और उसी घड़ी मैं ने उसे देखा। १४ उसने कहा कि अपनी इच्छा जान्ने और उस धर्मी को देखने और उसके मुंह का शब्द सुन्ने को हमारे पितरों के ईश्वर ने तुझे ठहरा रक्खा है। १५ सो उन बस्तुन के लिये जो तू ने देखीं और सुनीं हैं तू सब लोगों के आगे साक्षी होगा। १६ और अब बिलंब क्यों करता है? उठके स्नान पा और प्रभु का नाम लेके अपने पापों को धोडाल। १७ और जब मैं यिरूशालम में फेरगया और मंदिर में प्रार्थना करने लगा तो यों हुआ कि मैं बेसुधि होगया। १८ और अपने से कहते मैं ने उसे

देखा कि शीघ्र करके यिरूशालम से निकल जा इस लिये कि मेरे विषय में वे तेरी साची न मानेंगे। १९ तब मैं ने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि मैं तेरे बिश्वासियों को बन्दीगृह में डालता रहा और हर एक मंडली में उन्हें मारा किया। २० और जब तेरे साची स्तीफान का लोहू बहाया गया तो मैं भी वहां था और उसके घात में संगी था और उसके बधिकों के बस्त्र की रखवाली करता था। २१ तब उसने मुझे कहा कि चलाजा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजोंगा?

२२ और उन्हों ने इस बात लों उसकी सुनी तब वे चिल्लाके बोले कि ऐसों को भूमि पर से उठाडाला क्योंकि इसका जीना योग्य नहीं। २३ और जब वे चिल्लाये और अपने कपड़े फाड़के धूल उड़ाने लगे। २४ तब अध्यक्ष ने उसे गढ़ में लाने की आज्ञा किई और कहा कि उसे कोड़े मारके ताड़ें जिसतें जानें कि वे क्यों उसके बिरोध में यों चिल्लाये। २५ और जब वे उसे चमोटी से बांधते थे तो पौल ने पास खड़े ऊए शतपति को कहा क्या तुम्हारे लिये योग्य है कि एक रूमी मनुष्य को बिन दोषी ठहराये ताड़ना करो। २६ शतपति सुनके अध्यक्ष से जा बोला कि जो आप किया चाहते हैं सो सोचें कि यह मनुष्य तो रूमी है। २७ तब अध्यक्ष ने पास आके उसे कहा कि मुझे कह क्या तू रूमी है उसने कहा कि हां। २८ तब अध्यक्ष ने कहा कि मैं ने बऊतसा रोकड़

देके इस पद को पाया पौल बोला परन्तु मैं निर्बंध उत्पन्न हुआ। २९ तब जो उसे ताड़ा चाहते थे उन्हों ने उससे हाथ उठाये और अध्यक्ष भी उसे रूमी जानके और कि मैं ने उसे बांधा डर गये।

३० और उस पर यिहूदियों के दोष निश्चय जान्ने को उसने अगिले दिन उसके बंधन खोल के प्रधान याजकों और उनके मत की सारी सभा को एकट्ठे होने की आज्ञा किई और पौल को उतार के उनके आगे खड़ा किया।

२३ तेईसवां पर्व्व।

१ तब पौल ने सभा को ताक के कहा कि हे मनुष्य भाइयो मन की सारी भलाई से मैं आज लों ईश्वर के आगे चला। २ तब प्रधान याजक हनानिया ने उन्हें, जो उस पास खड़े थे उसे थपराने की आज्ञा किई। ३ पौल ने उसे कहा कि हे उजलित भीत ईश्वर तुझे थपरावेगा क्योंकि व्यवस्था की रीति पर तू मेरे न्याय के लिये बैठा है और व्यवस्था बिरुद्ध मुझे थपराने की आज्ञा करता है। ४ तब आस पास के लोग बोल उठे कि क्या तू ईश्वर के प्रधान याजक को कुवचन कहता है। ५ पौल ने कहा हे भाइयो मैं न जानता था कि यह प्रधान याजक है क्योंकि लिखा है कि तू अपने लोगों के प्रधान को बुरा मत कह।

६ और जब पौल ने देखा कि उन में एक भाग

साटूकी और दूसरे भाग फरीसी हैं तो सभा में पुकारा कि हे मनुष्य भाइयो मैं फरीसी और फरीसी का बेटा हों मृत्यु से जी उठने की आशा के लिये मैं बिचार स्थान में पक्कंचाया गया। ७ उसके यों कहतेही फरीसियों और साटूकियों में बिबाद ज्ञआ और मंडली के दो भाग हो गये। ८ क्योंकि साटूकी कहते हैं कि न जी उठना और न दूत और न आत्मा है परन्तु फरीसी सब को मानते हैं। ९ तब बड़ा हौरा मचा और फरीसियों की ओर के अध्यापक उठे और चुप करके कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते परन्तु यदि किसी आत्मा अथवा दूत ने उस्से कहा है तो हम लोग ईश्वर से लड़ाई न करें। १० और जब बड़ा झगड़ा ज्ञआ तो उनसे पौल का टुकड़ा टुकड़ा किये जाने के डर के मारे सेना के प्रधान ने योद्धाओं को आज्ञा किई कि उनके मध्य में से उसे प्रबलता से लेके गढ़ में लावें। ११ अगिले रात को प्रभु ने उस पास खड़ा होके कहा कि हे पौल धीरज धर क्योंकि जैसा तू ने मेरे बिषय यिरूशालम में साची दिई है तैसा रूम में भी साची देना तुझे अवश्य है।

१२ और जब दिन ज्ञआ यिह्रदियों में से कितनों ने यह कहिके युक्ति बांधी कि हम पर धिक्कार है बिना पौल को घात किये हम न खायेंगे न पीयेंगे। १३ और जिन्हों ने यह एका किया था वो चालीस से ऊपर थे।

१४ और उन्हों ने प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास आके कहा कि हम ने अपने पर धिक्कार किया है कि बिना पौल को घात किये हम लोग कुछ न चीखेंगे। १५ अब सभा के संग होके सेना के प्रधान को कहियो कि कल उसे हमारे पास उतार लाईये जिसतें हम उसके समाचार को अच्छी रीति से बूझें और तुम्हारे पास न पहुंचतेही हम लोग उसे घात करने को सिद्ध हो रहेंगे।

१६ परन्तु पौल का भांजा उनके ढूके की बात सुनके गया और गढ़ में आके पौल को कहा। १७ तब पौल ने शतपतिन में से एक को बुलाके कहा कि इस तरुण को सेना के प्रधान पास लेजा क्योंकि उसे कुछ कहना है। १८ वुह उसे लेगया और सेना के प्रधान पास लाके कहा कि पौल बंधुआ ने मुझे बुलाके चाहा कि इस तरुण को आप पास लाओं जो आप से कुछ कहा चाहता है। १९ तब सेना का प्रधान उसका हाथ पकड़ के एकान्त में लेगया और उसे पूछा कि तू मुझे क्या कहा चाहता है? २० उसने कहा कि यिहूदियों ने अच्छी रीति से पौल का बिचार करने की बनावट से एका किया है कि आप से कहिके पौल को कल सभा में उतार लावें। २१ परन्तु आप उनकी बात न मानिये क्योंकि उनमें चालीस से ऊपर उसके ढूके में हैं जिन्हों ने आपुस में किरिया खाई है कि जब लों उसे घात न

करें हम न खायेंगे न पीयेंगे और अब वे लैस होके आप की आज्ञा की बाट जोहरहे हैं। २२ तब सेना के अध्यक्ष ने उस तरुण को बिदा करके चिताया कि देख कोई न जाने कि तू ने ये बातें मुझे कहीं।

२३ और उसने शतपतिन में से दो को बुलाके कहा कि कैसरिया को जाने के लिये दो सौ योद्धा और सत्तर घोड़ चढ़े और दो सौ भलइत पहर रात लों लैस कर रक्खो। २४ और बाहन सहे जो जिसतें वे पौल को चढ़ाके फीलकस अध्यक्ष पास पहुंचावें। २५ और उसने इस उतार की निमित्त पत्री लिखी। २६ फीलकस महा महिमन अध्यक्ष को कलादियूस लिसियास का नमस्कार। २७ इस मनुष्य को यिहूदियों ने पकड़ा और उनके हाथ से घात होने पर था तब उसे रूमी जानके मैं ने योद्धाओं को लेके उसे जा छुड़ाया। २८ और उस पर उनके अपराध का दोष जान्ने को मैं उसे उनकी सभा में लेगया। २९ और मैं ने उनकी व्यवस्था के प्रश्न के बिषय में उस पर दोष लगाते पाया परन्तु उसे घात करने अथवा बंधन में डालने को मैं ने कोई बात न पाई। ३० परन्तु जब मुझे संदेश पहुंचा कि यिहूदी उसके ढूके में लगे हैं तब मैं ने तुरन्त उसे आप पास भेजा और उसके दोषदायकों को भी आज्ञा किई कि जो उस पर अपबाद रखते हों सो आप के आगे बर्णन करें कुशल होवे।

३१ योद्धा आज्ञा के समान पौल को लेके राते रात अन्तपतरस में लाये। ३२ और दूसरे दिन घोड़ चढ़ों को उसके साथी छोड़ के वे गढ़ को फिरे। ३३ सो कैसरिया में आके पत्री अध्यक्ष को दिई और पौल को भी उसके आगे किया। ३४ अध्यक्ष ने पत्री पढ़ के पूछा कि वुह किस प्रदेश का है और उसे किलकियः का बूझ के। ३५ उसने कहा कि जब तेरे दोषदायक भी आवेंगे तब मैं तेरी सुनोंगा और उसे हिरूदीस के बिचार स्थान में रखने की आज्ञा किई।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ पांच दिन पीछे प्रधान याजक हनानिया प्राचीनों के और तरतलस नाम एक सुबक्ता के संग उतर आया और वे अध्यक्ष के आगे पौल के बिरुद्ध जा खड़े हुए। २ और जब वुह बुलाया गया तरतलस ने यों कहिके उसे दोष देना आरंभ किया कि हे महा राज फीलकस हम सब पूरा धन्य मानके हर समय और हर स्थान में बड़े कुशल से रहते हैं। ३ क्योंकि हम लोग आप के कारण से बड़ा चैन पाते हैं और आप की प्रवीणता से इन लोगों को बहुत से लाभ हैं। ४ तथापि जिसतें मैं आप को अधिक क्लेश न देऊं मैं आप की बिनती करता हों कि कृपा करके हमारी तनिक बातें सुनिये। ५ क्योंकि हमने इस मनुष्य को सब यिहूदियों में जो जगत में हैं बिगाड़ और दंगइत पाया और नसरानियों

के पंथ का अगुआ है। ६ उसने मंदिर को भी अपवित्र करने चाहा उसे हमने पकड़ा और अपनी व्यवस्था की रीति पर उसका न्याय करने चाहा। ७ परन्तु लसियास अध्यक्ष बड़ी सेना लेके हम पर चढ़ आया और उसे हमारे हाथ से छुड़ा लेके। ८ उसके दोषदायकों को आप पास आने की आज्ञा किई जिसतें आप उसे जांचके हमारे दोष लगाने की बातों को बूझें। ९ और यिहूदियों ने भी यह कहिके मानलिया कि ये बातें योंहीं हैं।

१० फेर जब अध्यक्ष ने पैाल को सैन किया तब उसने उत्तर दिया कि हे फीलकस जैसा मैं जानता हों कि आप बरसों से इन लोगों के न्यायी हैं मैं अधिक सुचिताई से अपना उत्तर देता हों। ११ आप बूझ सक्ते हैं कि बारह दिन से अधिक नहीं हुए जब से मैं सेवाके लिये यिरूशालम में गया था। १२ और उन्हों ने मुझे किसी के संग मंदिर में बिवाद करते अथवा लोगों को भड़काते न पाया न तो मंडली में न नगर में। १३ और जिन बातों के विषय में मुझ पर दोष लगाते हैं वे ठहरा नहीं सक्ते हैं। १४ परन्तु मैं आप के आगे यह बात मानलेता हों कि उस मत के समान जिसे वे उपद्रव कहते हैं मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हों और सब बातों का जो व्यवस्था और भविष्य बाणियों में लिखी हैं बिश्वास रखता हों। १५ और

ईश्वर से यह आशा रखता हों जिसे वे आप भी मानाते हैं कि मृतकों का जी उठना होगा क्या धर्मी क्या अधर्मी का। १६ और इसी बात के लिये मैं ईश्वर के और मनुष्यों के आगे मन को निर्दोष रखने को साधन करता हों। १७ अब बज्जत बरसों के पीछे मैं दान और भेंट अपने लोगों के लिये लाया। १८ इस में आसिया के कितने यिहूदियों ने मुझे न मंडली से न दंगा से मंदिर में पवित्र किया ज्ञआ पाया। १९ और यदि उनका मुझ पर कुछ अपबाद होवे तो उचित था कि वे आप के आगे आके मुझ पर दोष लगाते। २० अथवा जब मैं सभा के आगे खड़ा था तब यदि इन्हों ने मुझ में कुछ अपराध पाया हो तो कहें। २१ केवल इस एक बात के विषय के लिये कि मैं उनमें खड़े ज्ञए पुकारा कि मृतकों के जी उठने के कारण से आज मैं तुम से पूछा जाता हों।

२२ और जब फीलिक्स ने ये बातें सुनीं तो यह कहिके उन्हें टाल दिया कि जब सेना का प्रधान लुसियास आवेगा तो मैं तुम्हारी बात अच्छी रीति से बूझोंगा। २३ फेर उसने पौल को दृष्टि में रखने और उसे छुट्टी देने और उसके मित्रों को उस पास आने जाने और सहाय करने को एक शतपति को आज्ञा किई।

२४ और कितने दिनों के पीछे फीलिक्स अपनी पत्नी द्रूसिल: यिहूदिनी के संग आया और पौल को बुलाके

मसीह के बिश्वास के विषय में उस्से सुना। २५ और जब वुह धर्म के और संयम के और आवैया न्याय के विषय में कहिरहा था तो फीलकस ने कांपते ऊए उत्तर दिया कि अब तो तू जा मैं अवकाश पाके फेर तुझे बुला भेजोंगा। २६ उसे यह आशा भी थी कि पौल से कुछ रोकड़ पावे जिसतें उसे छोड़ देवे इस लिये वुह उसे बारंबार बुला के उस्से बातें करता था। २७ और दो बरस पीछे पर्कयूस फसतस फीलकस की सन्ती आया और फीलकस ने यिहूदियों की प्रसन्नता के लिये पौल को बंधुआई में छोड़ा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

१ इस लिये जब फसतस उस प्रदेश में पऊंचा तो तीन दिन पीछे कैसरिया से यिरूशालम को गया। २ तब प्रधान याजक और यिहूदियों के मुखियों ने उसके आगे हो पौल के बिरोध में बिनती करके इतना अनुग्रह चाहा। ३ कि वुह उसे यिरूशालम में मंगवावे और उसे मार्ग में घात करने को ढूके में ऊए। ४ परन्तु फसतस ने उत्तर देके कहा कि पौल कैसरिया में रहे और मैं आप भी शीघ्र वहां जानेपर हों। ५ और तुम्में से जो मेरे संग जासकें सो चलें और यदि उसमें कुछ अपराध होय तो उसपर दोष लगावें।

६ सो उनमें दस दिन से ऊपर रहके वुह कैसरिया को गया और दूसरे दिन बिचार आसन पर बैठा और

पौल को लाने की आज्ञा किई। ७ और जब वुह सन्मुख हुआ तो यिरूशालम से आये हुए यिहूदियों ने चारो ओर खड़े होके पौल पर बहुत भारी भारी दोष लगाये जो ठहरा न सके। ८ तब उसने अपने बिषय में उत्तर दिया कि मैं ने कोई अपराध न तो यिहूदियों की व्यवस्थों न मन्दिर और न कैसर के बिरोध में किया। ९ तब फसतस ने यिहूदियों का मन रखने के लिये पौल को उत्तर देके कहा क्या तू इन बातों के बिषय में मेरे न्याय के लिये यिरूशालम को जायगा? १० परन्तु पौल ने कहा कि मैं कैसर के बिचार स्थान में खड़ा हों उचित है कि मेरा बिचार यहीं किया जाय यिहूदियों का मैं ने कुछ अपराध न किया यह आप भी अच्छी रीति से जानते हैं। ११ क्योंकि यदि मैं ने अपराध अथवा घात के योग्य कुछ किया है तो घात होने से नाह नहीं करता परन्तु जो उन दोषों में से जो ये मुझ पर लगाते हैं कुछ नहीं है तो कोई मुझ को उन्हें सौंप नहीं सक्ता मैं कैसर की दोहाई देता हों। १२ तब फसतस ने सभा से बातें करके उत्तर में कहा कि तू कैसर की दोहाई देता है तू कैसरही के पास भेजा जायगा।

१३ और कितने दिनों के पीछे अग्रिपा राजा और बरनीकी फसतस को नमस्कार करने के लिये कैसरिया में आये। १४ और उनके वहां बहुत दिन होतेहुए फसतस ने पौल का समाचार राजा से कहा कि यहां

एक मनुष्य है जिसे फीलकस बंधन में छोड़ गया। १५ जब मैं यिरुशालम में था तो प्रधान याजकों और यिहूदियों के प्राचीनों ने उसके विषय में कहा और मुझ से उसपर दण्ड की आज्ञा चाही। १६ और मैं ने उन्हें उत्तर दिया कि रूमियों का यह व्यवहार नहीं कि जबलों दोषी अपने दोषदायकों के सन्मुख न होवे और बचाव की बात करने न पावे किसी को घातक को सैांपें। १७ इस लिये जब वे यहां एकट्ठे आये मैं ने बिना बिलंब अगिले दिन बिचार आसन पर बैठ के उस मनुष्य को लाने की आज्ञा किई। १८ और जब उसके दोषदायक खड़े होके उन दोषों में से जो मैं समुझता था कोई दोष न लाये। १९ परन्तु वे अपने निज मत की और किसी यिशु के विषय में, जो मर गया जिसे पैाल कहता है कि जीता है कुछ अपबाद उसपर करते थे। २० परन्तु जैसा कि उसके बिषय की बात में मुझे सन्देह था मैं ने उसे कहा यदि तू चाहे तो यिरुशालम को चल और वहां इन बातों के विषय में तेरा विचार किया जाय। २१ परन्तु जब पैाल ने दोहाई दिई कि मेरा न्याय महाराज के विचार पर छोड़ा जाय तब मैं ने उसे रख छोड़ने की आज्ञा किई जबलों उसे कैसर कने भेजों। २२ तब अपा ने फसतस से कहा कि मैं भी उस मनुष्य की सुन्ने चाहता हों वुह बोला कि कल उसे सुनियेगा।

२३ सो दूसरे दिन जब अपा और बरनीकी बड़े बिभव से प्रधान सेनापतिन और नगर के श्रेष्ठों के संग बिचार स्थान में आये तब फसतस की आज्ञा से पौल को लाये। २४ तब फसतस ने कहा कि हे राजा अपा और हे सारे लोगो तुम लोग इस मनुष्य को देखते हो जिसके बिषय में यिहूदियों की सारी मण्डली यिरुशालम से लेके यहां लों मेरे पीछे पड़ी हैं और दोहाई देती हैं कि आगे को यह जीने के योग्य नहीं है। २५ परन्तु मैं ने उसपर घात के योग्य कोई बात न पाई तथापि जैसा उसने महाराज की दोहाई दिई है मैं ने उसे भेजने को ठहराया है। २६ मुझे उसके बिषय में किसी बात का निश्चय नहीं जो मैं अपने महाराज को लिखें इस कारण मैं उसे तुम्हारे आगे और निज करके हे राजा अपा आप के आगे लाया हों जिसतें मैं जाचने के पीछे कुछ लिखसकों। २७ क्योंकि बिनअपराध बर्णन कियेहुए बंधुए को भेजना मुझे अनुचित समझ पड़ता है।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ तब अपा ने पौल को कहा कि अपने बचाव की बात करने को तुझे आज्ञा है तब पौल ने हाथ बढ़ाके अपने बचाव की बात कही। २ कि हे राजा अपा मैं जो आज के दिन आप के आगे उन सब बातों के बिषय में, जो यिहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं अपने बचाव

की बात करों यह मेरी समुझ में मेरा बड़ा भाग्य है। ३ निज करके कि आप यिहूदियों के सारे व्यवहारों और प्रश्नों के जानकार हैं इस कारण मैं आप की बिनती करता हों कि धीरज से मेरी सुनिये। ४ तरुणाई के आरंभ से यिरुशालम में जो मेरी चाल अपने लोगों में थी उसे सारे यिहूदी जानते हैं। ५ यदि वे साची दियाचाहें तो मेरा समाचार पहिले से जानते हैं कि मैं उनके मत के अत्याचार के समान एक फरीसी होरहा था। ६ और अब मैं उस बाचा की आशा के लिये जो ईश्वर ने हमारे पितरों को दिई बिचार स्थान में खड़ा किया गया हों। ७ और हमारी बारह गोष्ठी उस बाचा लों पहुंचने को रात दिन बड़े अभिलाष से प्रार्थना करने में आशा रखती हैं हे राजा अपा इसी आशा के विषय में यिहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। ८ यह क्या आप की समझ में बिश्वास के योग्य नहीं कि ईश्वर मृतकों को जिलावे ? ९ मैं भी निश्चय समझता था कि मुझ पर उचित है कि यिशु नासरी के नाम के बिरोध में बहुत कुछ करों। १० सो मैं ने यिरुशालम में यही किया और प्रधान याजकों से पराक्रम पाके बहुतेरे सिद्धों को बंदीगृह में डाला और जब वे घात किये जाते थे तो मैं उनके बिरुद्ध कहता था। ११ और मैं ने बारंबार सारी मंडली में उन्हें ताड़ना किई और उनसे निंदा करवाई और उनके बैर में अत्यंत बौड़ाहपन से

मैं उपरी नगर लों उन्हें सताया किया। १२ इस बात के लिये जब मैं प्रधान याजकों से पराक्रम और आज्ञा पाके दमिष्क को चला जाता था। १३ तो मध्यान्ह को मार्ग में होते हुए हे राजा मैं ने स्वर्ग से एक ज्योति सूर्य से भी अधिक तेजोमय देखी जो मेरे और मेरे संगी पथिकों की चारों ओर चमकी। १४ और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तो इब्री भाषा में मुझे यों कहते मैं ने एक शब्द सुना कि साऊल साऊल तू मुझे क्यों सताता है तुझे अरई पर लात मारना कठिन है। १५ तब मैं ने कहा, हे प्रभु तू कौन है? वुह बोला कि मैं यिशु हों जिसे तू सताता है। १६ परन्तु उठ खड़ा हो क्योंकि तुझे उन बस्तुन का, जो तू ने देखीं हैं और उनका जो मैं तुझे दिखाओंगा सेवक और साची बनाने के लिये तुझे दर्शन दिया है। १७ तुझे अपने लोगों और अन्यदेशियों से बचाओंगा जिन पास उनकी आंखें खोलने को अब मैं तुझे भेजता हों। १८ जिसतें वे अंधियारे से उंजियाले की ओर और शैतान के बश से ईश्वर की ओर फिरें और पाप मोचन और उनमें अधिकार पावें जो मेरे बिश्वास के द्वारा से पवित्र हुए। १९ तब से हे राजा अग्रिपा मैं ने स्वर्ग के दर्शन का बिरुद्ध न किया। २० परन्तु पहिले दमिष्क में और यिरूशालम में और यिहूदियः देश के सारे लोगों को और अन्य देशियों को कहा कि पश्चात्ताप करो और पश्चात्ताप के

योग्य का कार्य करके ईश्वर की ओर फिरो। २१ इन बातों के लिये यिहूदी मुझे मंदिर में पकड़ के घात करने को लैस ऊए। २२ सो ईश्वर से उपकार पाके मैं आज लों छोटे बड़े के आगे साची देता हों और उन बातों को छोड़, कुछ न कहता था जिनके होने का संदेश भविष्यद्वक्तों ने और मूसा ने दिया। २३ कि मसीह कष्ट उठाके मृतकों में से पहिले जी उठके लोगों और अन्यदेशियों के आगे ज्योति को प्रगट करेगा।

२४ और जब वुह अपने बचाव की बात कर रहा था फसतस ने पुकार के कहा कि हे पौल तू आप में नहीं है विद्या की बऊताई ने तुझे सिर्री किया। २५ परन्तु उसने उत्तर दिया कि हे महामहिमन फसतस मैं सिर्री नहीं परन्तु धर्म और सुज्ञान की बातें कहता हों। २६ क्योंकि राजा भी ये बातें जानते हैं जो मैं भी खोल के कहता हों क्योंकि मुझे निश्चय है कि इनमें से कोई बात उस्से छिपी नहीं क्योंकि यह बात कोने में न ऊई। २७ हे राजा अग्रपा आप भविष्यद्वक्तों पर बिश्वास रखते हैं मैं जानता हों कि आप विश्वास रखते हैं। २८ तब अग्रपा ने पौल से कहा, तनिक है कि तू मुझे मना के क्रीष्टियान बनाडाले। २९ पौल बोला मैं तो ईश्वर से चाहता हों कि केवल आप नहीं परन्तु सबकेसब भी जो आज मेरी सुनते हैं तनिक क्या उन सीकरों को छोड़ पूरे मेरे समान होवें।

३० और जब उसने यों कहा तो राजा और अध्यक्ष और बरनीकी और उनके संगी उठे। ३१ और वे अलग होके आपुस में कहने लगे कि इस मनुष्य ने घात होने अथवा बंधन के योग्य कुछ नहीं किया। ३२ तब अपा ने फसतस से कहा, कि यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता तो छुड़ाया जा सक्ता।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१ और जैसा कि जहाज पर ऐतलियः को हमारा जाना ठहराया गया उन्हों ने पौल को कितने बंधुओं के संग अगसतूसी सेना में के यूलियूस नाम शतपति को सौंप दिया। २ और हमने अदरमतीनी जहाज पर चढ़ के आसिया के तीर तीर होके जाने का मन करके लंगर उठाया और तसलूनी का एक मकदूनी अरिस्तर खस हमारे संग था। ३ दूसरे दिन हम सैदालों पक्षंचे और यूलियूस ने पौल पर दया करके उसे अपने मित्रों के पास जाके चैन करने दिया। ४ वहां से लंगर उठाके हम कपरस के नीचे होके पक्षंचे क्योंकि बयार सन्मुख की थी। ५ और किलकियः और पंफूलियः के सन्मुख के समुद्र में से हम लूकियः के मरा में आये।

६ वहां उस शतपति ने ऐतलियः को जाते क्षए एक अस्कन्दरानी जहाज पाके हमें उस पर चढ़ाया। ७ और जब हम बक्षत दिनों धीरे धीरे चले गये और बयार के रोकने से कठिन से कन्दस के सन्मुख आके

क्रीत के तले सलमूनी के सन्मुख चले। ८ तो कठिन से वहां से आगे बढ़के एक स्थान में, जो सुन्दर घाट कहावता है आये और लासिया का नगर उसके परोस था। ९ और जब समय बहुत बीतगया और चलेजाने में जोखिम था, क्योंकि ब्रत का समय बीत गया था तो पौल ने उन्हें चिताके कहा,। १० हे महाशय मैं देखता हों कि इस यात्रा में दुःख और बहुत टूटी होगी केवल जहाज और बोझाई की नहीं परन्तु हमारे प्राण की भी। ११ परन्तु पौल के कहने से शतपति को मांझी का और जहाजपति का अधिक मान था। १२ और जैसा कि वुह घाट जाड़ा काटने को फैलाव न था बहुतेरों ने वहां से चलनिकलने को कहा जिसतें जो होसके तो फुनीकी लों पहुंच के जाड़ा काटें वुह क्रीत का घाट दक्खिन पच्छिम और उत्तर पच्छिम की ओर को था।

१३ और जब दक्खिनी बयार रसायन रसायन बहने लगी तो उन्हों ने अपने अभिलाष को पूरा समझ के लंगर उठाया और क्रीत के पास से चले गये। १४ परन्तु तनिक पीछे जहाज सन्मुख एक आंधी की बयार उठी जो यूरक्लीदून कहावती है। १५ और जब जहाज को उड़ाई चली गई और बयार के सन्मुख न ठहर सकी तब हमने हाथ उठाया। १६ और कलादी नाम किसी टापू के तले जाते जाते बड़े कठिन से डोंगी को बश में किया। १७ सो जब उन्हों ने उसे खींचलिया

तब जतन कर कर जहाज को बांधके चोर बालू में फंसने की डरके मारे पाल गिरादिया और यों उड़ाये गये। १८ और आंधी से निपट सताये जाके दूसरे दिन उन्हों ने जहाज को हलुक किया। १९ और तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से जहाज की सामग्री को फेंक दिया। २० और जब बक्षत दिन लों सूर्य और दिखाई न दिये और आंधी भी न थमी अन्त को बचने की सारी आशा हम से जाती रही।

२१ और बक्षतसे उपवास के पीछे पौल उनके मध्य में खड़ा होके बोला कि हे महाशय तुम्हें मेरी सुन्ने को उचित था और क्रीत से खोलना न था जिसतें दुःख और टूटी न उठाते। २२ तथापि अब भी मैं तुम्हारी बिनती करता हों कि धीरज धरो क्योंकि तुम्में से किसी के प्राण का नाश न होगा परन्तु केवल जहाज का। २३ क्योंकि जिस ईश्वर का मैं हों और जिसकी सेवा करता हों उसके दूतने रात को मुझे दर्शन में कहा। २४ कि हे पौल मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वर ने इन सभों को, जो जहाज में तेरे साथ हैं तुझे दिया। २५ इस कारण हे महाशय धीरज धरो क्योंकि मैं ईश्वर पर भरोसा रखता हों कि जैसा मुझे कहागया वैसाही होगा। २६ परन्तु किसी टापू में हम अवश्य जा पड़ेंगे।

२७ और जब चौदहवीं रात झई और हम अद्रिया

के समुद्र में मारे फिरे आधी रात के समय में डांड़ियों ने अटकल से जाना कि किसी देश के निकट पहुंचे। २८ और थाह लेते उन्हों ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे जाके फेर थाह लिई तो पंद्रह पुरसे पाये। २९ तब पत्थरैले तीर पर पड़ने की डर के मारे उन्हों ने पछवार की ओर से चार लंगर डाले और बिहान होने की आशा में रहे।

३० परन्तु जब डांड़ियों ने जहाज पर से भागने की युक्ति किई और गलही से लंगर डालने के छल से डोंगी उतारी। ३१ तो पौल ने शतपति और योद्धाओं को कहा कि जहाज में बेढ़न के रहने से तुम लोग बच नहीं सक्ते। ३२ तब योद्धाओं ने डोंगी की रस्सियों को काट के उसे गिरा दिया।

३३ और दिन निकलते निकलते पौल ने उन्हें कुछ खाने को बिनती किई कि तुम लोग चौदह दिन से तकते हो और उपवास कर रहे हो और कुछ नहीं खाये हो। ३४ अब मैं तुम्हारी बिनती करता हों कि कुछ खालो कि इस में तुम्हारा बचाव है क्योंकि तुम्में से किसी के सिर का एक बाल नष्ट न होगा। ३५ उसने यों कहिके रोटी लिई और सभों के आगे ईश्वर का धन्य माना और तोड़ के खाने लगा। ३६ और मन में धीरज पाके सभों ने रोटी खाई। ३७ और हम सबके सब जहाज पर दो सौ छिहत्तर प्राणी थे। ३८ और

भोजन से तृप्त होके उन्हों ने अन्न को समुद्र में डाल के जहाज को हलुक किया।

३९ और जब दिन हुआ तो उन्हों ने उस भूमि को न पहिचाना परन्तु एक कोल देखी जिसकी तीर था जिसमें उन्हों ने चाहा कि जो होसके तो जहाज को उसमें घुसा देवे। ४० और जब उन्हों ने लंगर उठाये तो तुरन्त पतवार की रस्सी खोल के समुद्र में छोड़ी और बयार के रुख पर बड़ी पाल चढ़ा के तीर की ओर चले। ४१ परन्तु एक स्थान में जहां दो समुद्र का संगम था पहुंच के जहाज को तीर पर दौड़ा दिया तब गलही फंसगई और रुक गई और लहरों के लहरे के मारे पतवार की धज्जियां उड़गईं। ४२ तब योद्धाओं का मंत्र हुआ कि बंधुओं को मार डालें नहो कि उनमें से कोई पवंर के चलदे। ४३ परन्तु पौल को बचाने की इच्छा से शतपति ने उनके ठहराये हुए से उन्हें रोक रक्खा और जो पवंर सक्ते थे पहिले उन्हें समुद्र में कूद के तीर पर जाने की आज्ञा किई। ४४ अरु और कितनी सिलियों पर और कितने जहाज के टुकड़ों पर और योंहीं हुआ कि वे सबके सब भूमि पर कुशल से पहुंच गये।

२८ अट्टाईसवां पर्ब्ब।

१ और उनके बचने के पीछे वे जान गये कि उस टापू का नाम मलिता था। २ और वहां के बनैले

लोगों ने हम सभों पर बड़ा अनुग्रह किया क्योंकि मेंह की झोड़ी और जाड़े के मारे उन्हों ने आग सुलगा के हम सभों को पास बुलाया।

३ और जब पौल ने लकड़ियों की आंटी एकट्ठी करके आग पर रक्खी तो एक नाग ताप पाके निकला और उसके हाथ पर लपटा गया। ४ तब उन बनैले लोगों ने उस जंतु को उसके हाथ पर लटकते देखके आपुस में कहा कि निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है यद्यपि यह समुद्र से बच निकला तथापि दंड दायक उसे जीने नहीं देता। ५ परन्तु उसने उस जन्तु को आग में झटक के कुछ दुःख न पाया। ६ और वे देखते रहे कि वुह सूजजायगा अथवा आकस्मात गिर के मरजायगा परन्तु जब उन्हों ने बड़ी बेरलों अगोरा और उस पर कुछ दुःख पड़ते न देखा तब कुछ और ही समझ के बोले कि यह देव हैं।

७ और इस सिवाने में उस टापू के ठाकुर का अधिकार था जिसका नाम पबलयूस था उसने हम लोगों को घर लेजाके तीन दिन लों हमारा शिष्टाचार किया। ८ और यों ऊआ कि पबलयूस का पिता ज्वर से और आंवलोह्ह से रोगी पड़ा था तो पौल ने उस पास जाके प्रार्थना किई और अपने हाथ उस पर रखके उसे चंगा किया। ९ सो जब यह ऊआ तो और भी जो उस टापू में रोगी थे आये और चंगे ऊये।

१० उन्हों ने भी बहुत आदर से हमारा सन्मान किया और जब हम लोग चलने लगे तो जो जो हमें आवश्यक था सो सो उन्हों ने लाद दिया।

११ और तीन मास पीछे हमलोग एक अस्कन्दरियः जहाज पर चलनिकले जिसने उस टापू में जाड़ा काटा था जिसके चिन्ह दो देव बचे थे। १२ और सीराकोसी में पहुंचके तीन दिन रहे। १३ फेर वहां से तीर तीर घूम के रीजयूम के सन्मुख आये और एक दिन पीछे दक्खिन की बयार चली तब हमलोग दो दिन में पत यूली में पहुंचे। १४ वहां हमलोग भाइयों को पाके उनकी बिनती से सात दिन ठहरे और रूम को चले गये। १५ वहां से भाइयों ने हमारा संदेश सुन के अपीकोरम और तीन सरा लों हमारी भेंट को आये पौल ने उन्हें देख के ईश्वर का धन्य माना और जीव पाया।

१६ और जब हम रूम में आये तो शतपति ने बंधुओं को निज सेना के प्रधान को सौंप दिया परन्तु पौल अपने रखवाल योद्धा के साथ अकेला अपनेही घर में रहने पाया। १७ और ऐसा हुआ कि तीन दिन पीछे पौल ने श्रेष्ठ यिहूदियों को बुलाया और जब वे एकट्ठे आये तो उन्हें कहा कि हे भाइयो यद्यपि मैं ने कोई कर्म लोगों के व्यवहार का अथवा पितरों के बिरुद्ध न किया तथापि मैं बंधुआ होके यिरूशालम से

रूमियों के हाथ में सौंपागया। १८ उन्हों ने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा इस लिये कि घात किये जाने का मुझ में कोई कारण न था। १९ पर जब यिहूदियों ने बिरोध किया तो मैं ने सकेती से कैसर की दोहाई दिई इस लिये नहीं कि मैं अपने लोगों पर किसी बात का दोष देओं। २० सो इसी कारण से मैं ने तुम्हें देखने को और बात चीत करने को बिनती किई क्योंकि इसराईल की आशा के लिये मैं इस सीकर से बंधाहों। २१ उन्हों ने उसे कहा कि हम सभों ने तेरे बिषय में यिहूदियः से पत्री न पाई और न किसी ने भाइयों में से आके कुछ संदेश दिया अथवा कुछ तेरे विषय में बुरी कही। २२ परन्तु जो तू समझता है हम तुझी से सुन्ने चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हर एक स्थान में इस मत के बिषय में निंदा किई जाती है।

२३ और वे उसके लिये एक दिन ठहराके उसके टिकाव में बहुताई से आये उनके आगे वुह बर्णन करके मूसा की व्यवस्था से और भविष्यद्वाणियों से बिहान से लेके सांझलों ईश्वर के राज्य पर साक्षी देता और यिशु के मत पर प्रमाण लाता था। २४ तब कितनों ने उन बातों पर जो कहीजाती थी विश्वास किया और कितनों ने न किया। २५ जब वे आपुस में एक मता न हुए उस्से पहिले कि वे चलेजांय पौल ने उन्हें यह बचन

कहा कि धर्मात्मा ने हमारे पितरों से आशिया भविष्य द्वक्ता के द्वारा से ठीक कहा। २६ कि इन लोगों के पास जा और कह कि सुनते हुए सुनेगो और न समुझोगे देखते हुए देखोगे और न सूझेगा। २७ क्योंकि इन लोगों का मन चिकना गया और उनके कान सुन्ने में भारी हुए हैं और उन्हों ने अपनी आंखें मूंद लियां हैं न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन में समझें और फिर जांय और मैं उन्हें चंगा करों। २८ तो यह तुम्हें जाना जाय की ईश्वर की मुक्ति अन्य देशियों के पास भेजी गई और वे सुन लेंगे। २९ जब वुह ये बातें कहचुका तो यिहूदी आपुस में बड़ा बिवाद करते हुए चले गये।

३० परन्तु दो बरस भर के पौल अपनेही भाड़े के घर में रहा किया और सभों को जो उस पास आते थे ग्रहण करके। ३१ बिना रोक से बचन खोल खोल ईश्वर के राज्य का उपदेश करता रहा और प्रभु यिशु मसीह के बिषय की बातें सिखाता रहा।